सभी प्रसंगों व विवादों का न्याय क्षेत्र बालोतरा ही होगा।

संवत्-२०८२

"त्रिकाल ज्योति" समाचार पत्र का पंचांग विशेषांक

राजा, फलेश-शनि

उपराजा, मंत्री, मेघेश, दुर्गेश-सूर्य

।।श्री महालक्ष्म्यै नमः।।

सस्येश, नीरसेश, धनेश -बुध

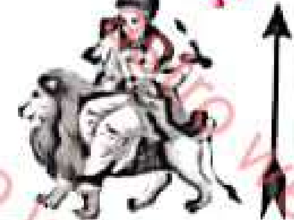

धान्येश- मंगल

चतुरंग बलोराजा जगती वशमानयेतु ।
अहं पंचांग बलवान् आकाश वशमानये।।

त्रिकाल ज्योति पंचांगम् सर्व शास्त्र समन्वितम्।
सरलं सुलभं सर्वमान्यं भारतादि देशकम् ।।

पंचांग प्रवर्तक
देवऋ स्व.पं. भवानीशंकर द्विवेदी

प्रकाशन वर्ष
वर्ष ४४ अंक १ पत्र १

सर्वाधिकार सुरक्षित

ग्रामे नगरे पुरे प्रान्ते प्रचारं बहुवर्तते । त्रिकाल ज्योति पंचांगम् ब्रह्मपक्षादिनिर्मितम्।।

त्रिकाल ज्योति

श्री विक्रम संवत् २०८२ शाकः १९४७ सन् 2025–26 ई.

प्रकाशक एवं मुद्रक पं. पृथ्वीराज द्विवेदी-गणित फलित हस्तरेखा विशेषज्ञ

सम्पादक-अरुण दवे, वास्तुविज्ञ, याज्ञिक व स्नातक
त्रिकाल ज्योति पंचांग कार्यालय, बालोतरा 344022 (राज.)
फोन-कार्यालय-02988 224230, मो.9414688805, 9460666431, 9414755236

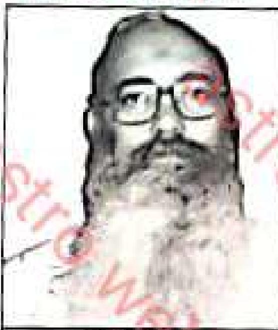

पंचांगकर्ता
पं. पृथ्वीराज द्विवेदी

प्रकाशन तिथि
ता. १ जनवरी २०२५ ई.

मूल्य 120/-

रसेश- शुक्र

गुरु

चंद

संवत्सरः	काल
वर्ष नाम	मार्गशीर्ष
रोहिणी निवास	संधि
समय निवास	वैश्य
मेघ नाम	नील
संवत्सुविश्वा-	द्वादश

राहु

केतु

झलकियाँ

राठौड़ वंश की कुलदेवी माँ नागणेची के शक्ति पीठ पर नवकुंडी यज्ञशाला की पूर्णाहुति पर ब्राह्मणों से आशिर्वाद लेने के बाद त्रिकाल ज्योति पंचांग के नवीन प्रकाशन का विमोचन करते हिजाइनेस श्री महाराजा गजसिंह व महारानी साहिबा श्री हेमलता राजे के कर कमलों में करवाते आचार्य पं. अरूण द्विवेदी, पं. योगेश दवे

राठौड़ वंश की कुलदेवी माँ नागणेची के शक्ति पीठ पर नवनिर्मित नवकुंडी यज्ञशाला प्रधानकुंड में प्रथम यज्ञ व अग्नि स्थापना करते हुए जोधपुर हिजाइनेस श्री महाराजा गजसिंह व महारानी साहिबा श्री हेमलता राजे शिखर स्वर्ण कलश व ध्वज स्थापना करवाते आचार्य पं. अरूण दवे पं.शिवप्रसाद दवे, पं.योगेश दवे

झलकियाँ

स्व. श्री रामगोपाल आजाद के आशीर्वाद व प्रेरणा से जोधपुर रोड़ स्थित शनिधाम व नव निर्मित शनि, जगदम्बा व रामदेव मंदिर की वास्तु प्रतिष्ठा एवं मूर्ति संस्कार यज्ञ करते श्री भरत आजाद, प्रकाश आजाद व राजेन्द्र आजाद एवं यज्ञ का सम्पादन करवाते पं. अरूण द्विवेदी, पं. शिवप्रकाश द्विवेदी, पं. योगेश द्विवेदी

श्री भरत कुमार रामगोपाल जी आजाद द्वारा जोधपुर रोड़ स्थित शनि धाम, जगदम्बा व रामदेव मंदिर पर शिखर कलश, ध्वजदंड, सहित ध्वज स्थापना करने जाते हुए श्री लक्ष्मीनारायण, श्री भरत, श्रीराजेन्द्र, श्रीमहेन्द्र सहित स्थापना करवाते आचार्य पं. शिवप्रसाद द्विवेदी सहित समस्त आजाद परिवार व भक्तगण।

प्राक्कथन

अहोरूप महोध्वनि !!!

सौर ब्रह्मपक्षादि पंचांग समाप्त प्रायः!

अब दृक्पक्षाभिमत (निर्णय) एक होगे। मतभेद मिटेगा। ऐकरूपता होगी। भारत सरकार को चित्रा पक्षीय गणना मान्य। पी.ए.सी.कलकत्ता से 12 भाषाओं में चित्रापक्षीय राष्ट्रीय पंचांग प्रकाशित जो इंग्लिश में "**दी इण्डियन ऐफेमेरिस एण्ड नेशनल अल्मानक**" में छपे व्रतपर्व सभी पंचागकारों को मानने होगें, बाधित! चित्रा, रेवतपक्षीय पंचांग एकमत। भूपृष्ठीय भेद समाप्त। एक केन्द्रस्थलीय पंचांग के तिथ्यादि मान्य। प्राचीन धर्मशास्त्र सूत्रों से दृष्य पंचांग धर्मकृत्य व्यवस्था एक। साम्प्रदायिक भेद समाप्त। ग्रीक, अरब, यवन, युरोपीय अंग्रेजिदा ज्योतिषी खुश! अब भारतीय आर्ष ज्योतिष अनुसंधान समाप्त, एकाधिपत्य! केरोपन्त, वैंकटेश बापू केतकर के **नाटिकल आल्मनाक प्रोंच ग्रंथ के ज्योतिर्गणित** से निर्मित पंचांग अब मान्य। वेधशालाओं से भी मान्य। सायन निरयन भेद समाप्त। सूर्य चंद्रग्रहणादि प्रमाणित। अब हमारा धर्मशास्त्र चलेगा। सबकी छोटी हमारे हाथ में। प्राचीन अर्वाचीन समर्थक पण्डित परमुखानुपेक्षी। किंकर्तव्य विमूढ, हमारा मुंह ताकेंगे। आपने क्या खेल खेला है **अहोरूप महोध्वनि** वत् प्रशंसा!

वस्तुतः शताब्दी पंचांग के तिथ्यादि में कुछ हेराफेरी करके पंचांगकर्ता अब खुश! **मार्त्तण्ड पंचांगकर्ता** प्रियव्रत जी शर्मा ने भी मुझे बताया था कि पी.ए.सी. कलकत्ता राष्ट्रीय पंचांग समिति का मैं भी सदस्य हूँ वहां से अंग्रेजी में प्राप्त पंचांग की हिन्दी में रूपान्तरित कर मार्त्तण्ड पंचांग छपता हूँ। आपको भी वहां का सदस्य बनवा दूं, इत्यादि! बहुमत बढ़ रहा है! वोटर बढ़ रहे हैं। आर्ष पंचांगकर्ता घट रहे हैं। अब बहुमत से निर्णय मान्य होंगे। सरकार बहुमत देखेगी। इनको अब कोई रोकनें, टोकनें वाला नहीं है। सम्मेलन में अपने अपनों के परस्पर हस्तोन्मेलन करतल ध्वनि से निर्णय मान्य, विजय होगी। **अहोरूप महोध्वनि गुंजायमान!**! अब दीपावली प्रदोष, निशीथ काल में नहीं, दिन में "**दीप ज्योति नमोस्तुते**" की दुंदुभी बजेगी, एक्यता होगी! ऋषियों, पूर्वाचार्यों के आर्ष ज्योतिष प्रमाण सब समाप्त। अपनें पैरों पर कुल्हाड़ी मारने की कृतघ्नता! कृतकृत्य हो गये। ऐसा हर्षोल्लास "**अहोरूप महोध्वनी**" वराहमिहर कहते हैं कि **मत्तःशास्त्रैकदेशेन त्याज्यस्तादृङ् महीक्षिता**- थोड़े से ही ज्ञान से मतवाले होने वाले दैवज्ञ को राजा त्याग दे।

आस्तिन के सॉंप : वेदांग ज्योतिष ह्रास के कारण!

पूर्वाचार्यों के अनुसार- **लक्षंतु चतुरो वेदा, लक्षं भारत मेवच। लक्षं व्याकरणं प्रोक्तं, चतुर्लक्षंतु ज्योतिषः ॥1॥** वस्तुतः संपूर्ण विश्व में एक मात्र भारत ऐसा देश है जहां एक लाख वेद विज्ञान के ग्रंथ, एक लाख महाभारतादि ग्रंथ व एक लाख व्याकरणादि ग्रंथ परन्तु इन सब में ज्योतिष विज्ञान के **चार लाख ग्रंथ** ऋषि प्रणीत, अनुसंधानरत पूर्वाचार्यों द्वारा लिखे होने की गणना है। संसार के बुद्धिजीवी इसे असंभव मानते हैं! ऐसा क्या लिख दिया? बिना कम्प्युटर के कैसे लिख दिया? ऐसी कम्प्युटर बुद्धि किसकी? बिना यान, दूरबीन के ब्रह्माण्ड को कैसे छानमारा? पुरुषों में ऐसी अपूरुषेय शक्ति कैसे? आदि अनेकानेक प्रश्नों से उद्वेलित है! समाधान खोज रहे हैं! इनका समाधान भी भारत की देवभूमि में ही मिलेगा यथा- **यत्पिण्डे तत्ब्रह्माण्डे, यत्ब्रह्माण्डे तत्पिण्डे**" यह भारत का योग शास्त्र कह रहा है। ऋषि मुनि ब्रह्मवेत्ता इसी योग क्रिया से अपने इस स्थूल शरीर में सूक्ष्मातिसूक्ष्म सारे ब्रह्माण्ड के लोकों भू, भुव, स्व, मह, जन, तप, सत्यं आदि सप्तलोकों में प्रवेश कर सब कुछ जान लेते थे। ग्रह तारा पितृलोकादि को छान मारा था। नचिकेता तो सशरीर यमलोक जाकर **मृत्यु के उस पार का सारा रहस्य** जान आया था। **चिरंजीवी हनुमान "बाल समय रवि भक्ष लियो तब तीनहुं लोक भयो अंधियारो"** के अनुसार बालक हनुमान नें सूर्य को मुंह में रख दिया था। भारतीय मय राक्षस तो अपने बनाये सोना चांदी, ताम्र इन तीनों धातुओं के विमानों से ब्रह्माण्ड में विचरण करता था। सूर्य सिद्धान्त इस सूर्यांश शिष्य मय द्वारा निर्मित भारतीय ज्योतिष गणना का प्रमुख ग्रंथ है। भगवान वामन ने तीन पांव में पृथ्वी व आकाश को नापकर दानवीर राक्षस राजा बली की परीक्षा लेकर भूगर्भ में (1) तल (2)वितल (3) सुतल (4) तलातल (5) रसातल (6)महातल (7) पाताल लोक का उसे राजा बना दिया । ये अवतारों के कथानक पुराणों में सारी सृष्टि के कल्याण करने के प्रतीक है। महाभारत को लिखने के लिये वेदव्यास जी ने गणेश जी से लिखने का निवेदन किया कि मैं बोलु आप लिखे। तब गणेश जी ने कहा कि- **श्रुत्वैतत् प्राह विघ्नेशो यदि मे लेखनी क्षणम् । लिखितो नाव तिष्ठेत तदास्यां लेखको ह्यहम्** (महाभारत) मैं सुनता रहूंगा लिखता रहूंगा, मेरी एक क्षण भी लेखनी आपके कारण रुक गयी मैं लिखना छोड़ दूंगा। एतदर्थ अविराम महा भारत लिखा गया। सत्य है कि इस विशाल ज्ञान सम्पन्न इस आर्यावत देश व सोनें की चिड़ियां कहे जाने वाले भारत को म्लेच्छों ने लूटा नष्ट भ्रष्ट किया। यथा- **चातुर्वर्ण्य व्यवस्थानं यस्मिन्देशे न विद्यते। स म्लेच्छ देशो विज्ञेय आर्यावर्तं स्ततः परः।** (धर्मशास्त्र) अर्थात् जहां वर्ण

व्यवस्था नहीं तो म्लेच्छ देश है। यथार्थत: करीब एक हजार वर्ष तक मुगलों, यवनों ने इस देश को लूटा। सरस्वती के भण्डार नालंदा विश्व विद्यालय को जलाकर भस्म भूत कर दिया, सहस्त्रों ग्रंथ स्वाहा हो गये। इनके बाद एक सौ वर्ष तक अंग्रेजों ने इस देश को लूटा। लॉर्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली ने करीब चार हजार शिक्षा के केन्द्र गुरुकुलों को बंद करवा लिया। देश के लोगों का सब हुनर छीन लिया। पैसे लो, नौकरी करो। आज भी यह रोग भारतीय युवा को भटका रहा है। आरक्षण, नौकरी के आन्दोलन पूरे देश को परेशान किये हुए है। अंग्रेजों ने अपनी झूठन अंग्रेजी सिखा कर ''आस्तिन के सांप' पैदा कर दिये। इन अंग्रेजी सांपों ने देश को खण्ड खण्ड कर दिया। ''**पयपानं भुजंगानाम् केवलं विषवर्धनम्**'' केवल विष वर्धन कर रहे हैं। इनका कहना है यूरोपियों, यवनों, अंग्रेजों से भारतीयों ने ज्योतिष सीखा है आर्ष गणना के पंचांग स्थूल, दूर भ्रष्ट अदृश्य है। इस प्रकार ये आर्ष पंचांगों के लिये प्राण घातक व अंग्रेजीदा पंचांगों के जीवन रक्षक है। सौर ब्रह्म पंचांगकर्ता पूर्णायु को प्राप्त कर गये, पंचांग बनना बंद, दृश्य पंचांगाभिमानी हर्षोल्लासित प्रसन्न है। इनके द्वारा किया जाने वाला खण्डन भी आर्ष पंचांगों के ह्रास का मुख्य कारण है।

गुरुकुल समाप्त। वंशानुगत ज्योतिषादि विद्याओं का पठन पाठन नहीं रहा, नौकरी की चाह ने इस गुरुतर विद्या को पढ़ने से मुंह मोड़ दिया। कुछ अंग्रेजीदा नौकरों ने पैतृक विद्या का आधा अधूरा ज्ञान लिया ''**यदा किंचिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवं**'' किंचित ज्ञान से भी मदांध हो गये। कहते हैं कि ''**अधूरा डाक्टर व अधूरा ज्योतिषी** ''प्राण घातक होते हैं इस विद्या के ह्रास के कारण बने। पुराने वडील कहते थे कि ''**ज्योतिषं गारुडी विद्या पिता पुत्रो न दीयते**'' योग्यताहीन कुपुत्र को भी ज्योतिष के दिव्य चक्षु का ज्ञान नहीं देते थे। शास्त्रभिज्ञ कहते हैं कि ''**आपद्यपि हि घोरायां न त्वेनामिरिणे वपेत्**'' - अर्थात् आपात काल में विद्या सहित मर जावे किन्तु अपात्र में विद्यारूपी बीज नहीं बोवे। **विद्या ब्राह्मणमेत्याह शेवधिस्तेऽस्मि रक्षमाम्। असूयकाया मां मादा स्तथा स्यां वीर्यवत्तमा।।** (धर्मशास्त्र) अर्थात् विद्या ब्राह्मण के समीप आकर बोली कि मैं तुम्हारी निधि हूं, तुम मुझे यत्नपूर्वक रक्षा करो श्रद्धाहीन आदि दोषों से दूषित अपात्रों को मुझे मत देवो, ऐसा करने से मैं बलवती रहूंगी। तात्पर्य: ब्राह्मण कर्मभ्रष्ट, नौकर हो गये, ब्राह्मण ब्राह्मण नहीं रहे, मां भारती सरस्वती बलवती नहीं हुई। आस्तिन के सांपों ने उसे कमजोर कर दिया। पूत कपूत हो गये! विद्या का ह्रास हो गया!

पंचांगों में एकरूपता : चिन्तनीय बिन्दु

(1) दृश्य गणित – दृक् दृग् तथा दृश्य गणना से अभिप्राय आंखों से वह सब कुछ जो दर्शक को दृष्टि गोचर हो जाता है। सूर्यसिद्धान्त, ब्रह्मसिद्धान्त, ग्रह लाघव, मकरंद, करण कुतूहल, जय विनोद आदि आर्ष सिद्धान्तों पर बनने वाले भारतीय आर्ष पंचांग दृक्सिद्ध, वेधसिद्ध नहीं है। शताब्दी पंचांगकर्ता ने सौ वर्ष पूर्व सब देख लिया? इस प्रकार की निंदा व प्रोपेगण्डा को छोड़ना होगा, समाधान करना होगा? पढ़ें संवत् 2039 (त्रिकाल ज्योति पंचांग) के प्राक्कथन में।

(2) सूक्ष्म दृष्टि - मनुष्य को उदय दिखाई देने के तीन चार दिन बाद तक भी मन्द दृष्टि को दिखाई नहीं देता, ऐसा अनुभव हुआ है(भारतीय ज्योतिषी पं.बालकृष्ण पृ.586)

(3) तिथि वृद्धि:क्षय - आर्ष पंचांग ''**बाणवृद्धि रसक्षय**'' गणनासे तिथियां चलती है परन्तु दृकपक्षीय शताब्दी पंचांग में ''**सप्तवृद्धि:दशक्षय:** ''का उल्लंघन कर ''**अंकवृद्धि सार्द्धैकादश क्षय**'' ही नहीं अष्टमी तिथि के आसन्न दिनों में **15 घटी** तक का अंतर हो जाता है जो झगड़े का मूल कारण है सुधारना होगा? पढ़ें संवत् 2041 का प्राक्कथन।

(4) सौर वर्षमान से- ''**तिलक पंचांग पुणे**'' के विद्वानों को अन्य पंचांगों से चार पांच दिन पूर्व शुद्ध निरयन संक्राति सूर्य दृश्यमान कैसे हो रहा है? चित्रापक्षीय निरयन दृक्सिद्ध मार्तण्ड के सौर वर्षमान अन्य स्वमतीय केतकी पंचांगों से खराब घड़ी के सुईयों की तरह आगे पीछे सांतरित रहने पर भी दृक्सिद्ध कैसे? शताब्दी पंचांग से निर्णयसागर पंचांग नीमच व श्रीधर पंचांग किशनगढ़ **तीस पल** की हेरा फेरी से वेधसिद्ध जोधपुर चण्डू संज्ञक कैसे? ठीक इसी प्रकार 2 पल की हेराफेरी से बिसाऊ निवासी पं.भोलाराम भवानीशंकर शर्मा चण्डू पंचांग निकाल रहे हैं चण्डू वंशियों की बपौती के नाम धोखाधड़ी क्यों? **पंचांगों में एक रूपता:अधूरा प्रयास**- भारत सरकार द्वारा गठित ''**भारतीय समायन और ज्योतिष गणित पुनर्विचार समिति**'' का परिपत्र संयोजक कमोडर एस.के.चटर्जी द्वारा भेजा था। जवाब दिया गया, समाधान नहीं। पढ़ें सं.2044(त्रि.ज्यो.)के प्राक्कथन में।

(5) धर्मशास्त्रीय वचनों से तिथि उत्पत्ति नहीं ?- पं.ईश्वरदत्त जी के धर्मशास्त्रीय 15 वचनों को अर्थ सहित छापकर सिद्ध किया कि इन वचनों से तिथि गणितागत उत्पत्ति नहीं है? आगे एक पत्र में **पू.पा.जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री निरंजन देवतीर्थ** लिखते है कि ईश्वदत्त की आदत निरंतर झूठ बोलने की है। वे सदा हारने पर अपने को जीता बताते है। पढ़ें (त्रिकाल ज्योति) संवत् 2046के व 2049 के प्राक्कथन में

(6) तिथि मान- भारतीय गणना से बने पंचांगों से अलग ही नवीन दृक्पक्ष के तिथिमान होते हैं व करीब करीब हर पक्ष में तिथि टूटना व जल्दी तिथि बढ़ जाना होता ही रहता है। कभी कभी तो 10 या 15 घटी तक के फेरफार से व्रत पर्व, उत्सव बदल जाते हैं। बार- बार 13 दिन का पक्ष आ जाता है **अगस्त्योदय भिन्न** क्यों? पढ़ें (त्रिकाल ज्योति)

संवत् 2047 के प्राक्कथन में।

(7) शक प्रवेश कब?- प्राचीन आर्ष गणित के पंचांगों में शक लिखने की प्राथमिकता थी। गणितागत शक कब बदलता है यह आधुनिक पंचांग कर्ताओं को ज्ञात नहीं है वस्तुतः **ब्रह्मपंचांग** आर्ष पंचांग गणना के उपकरण से शक प्रवेशः उस दिन शुद्धि वाली तिथि, अब्दप वाला वार होगा, उसी दिन शक प्रवेश, गण प्रवेश होगा। यह मेषेऽर्क के दो दिन बाद होगा। परन्तु नये शक का लिखना चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को कर दिया जाता है। परन्तु चैत्र शुक्ला 1 को पुराना शक गणितागत रहता है। इस भेद को समझ कर ही ब्रह्मपक्षादि पंचांग में **अयनांश गणना, चैत्र अधिक** का होना सिद्ध होता है। भास्करीय सूत्र- **असंक्रांतिमासोधिमास...... सत्यप्रमाणित होता है।**

(8) विक्रम संवत् प्रवेशः- वीर विक्रमादित्य के सम्मान व कीर्ति की स्थिरता में चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से संवत् प्रारंभ लिखा जाता है। यह गणितागत - नहीं है। दक्षिण भारत में चैत्र शुक्ल पक्ष पहिले फिर चैत्र कृष्ण पक्ष (वैशाख कृष्ण की जगह) सब मास लिखे जाते है। राजस्थान व मध्य उत्तर भारत में यथावत् मास लिखे जाते हैं।

(9) अयन चलन(अयनांश) - आधुनिक दृक्पक्ष की गणना आर्ष पद्धति से मेल नहीं खाती। ब्रह्मपक्षीय गणनाकार **शक पंचाब्धि वेदोनः(445) षष्टि भक्तोऽयनांशकाः** अर्थात् शक में से 445 हीन कर 60 का भाग देनें से अयनांश व कला आयेगी। ब्रह्मपक्षीय चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को ही गणितागत आगामी शकः लिख देने के कारण 445 हीन करते है व ग्रहलाघवीय गणितागत शक मेषेऽर्क के दो दिन बाद प्रवेश होने के पहिले वाले शक में 444 हीन करते हैं यही गूढ़ता है भिन्नता है। इस प्रकार 60 वर्षों से अयन चलन बिंदु एक अंश निरयन अक्षांश सारिणी में बदलता है। **अब अयनांश** 25 है जो गत वर्षों के 6 अंश से आगे खिसक कर निरयन सारिणी में 5 अंश पर आ गया है। पहले की निरयन सारिणी अब हमने बदल दी है परन्तु **अन्य पंचांग अयनांश 24 के अंदर ही लिये** बैठे हैं। वृद्ध आर्ष ज्योतिषी चले गये, अनुभव चला गया! इस अयन चलन से ऋतु परिवर्तन, सूर्योदयास्त में अभी स्वल्पान्तर होगा तो भी अयनांश की सत्यता लग सकती है। तथापि ब्रह्मपक्षाभिमत पंचांग सायन संक्रांतियों को **मेषे भानु वृषे भानु** इत्यादि से लिखते है व ऋतु सूर्योदयास्त भी **भानु प्रवेश** से ही लिखते हैं ग्रहण साधन भी सायन से करते हैं। जिससे सायन गणना विलुप्त न हो, प्रभाव बना रहे। निरयन विभ्रष्ट न हो। यह पूर्वाचार्यों का अनुसंधान यथार्थ में टिका हुआ है। इस टिकाऊ व्यवस्था को कैसे तोड़ा जाय अंग्रेजी ज्योतिषी प्रयत्नरत है! तड़फड़ा रहे है। मेकाले पैदा हो रहे है!

(10) सायन और निरयन मानों का ग्राह्याग्राह्यत्व- भारतीय ज्योतिष में पं.शंकर बालकृष्ण दीक्षित लिखते हैं कि- (1) **केरोपन्ती पंचांग** में भी मकर, कर्क संक्रांति (निरयन) उत्तर दक्षिण अयन लिखा रहता है पृ.544(2) **बापूदेव** तो अयन लिखते ही नहीं है। पृ.548 पर "सर्वत्र निरयण गणना का प्रचार होने के कारण में भी निरयन पंचांग ही बनाता हूं(बापूदेव)(3) एक ही अड़चन है "**यद्यपि शुद्धं लोक विरुद्धं नाचरणीयं नोकरणीयम्**"(बापूदेव)(4)केरोपन्त और तिलक का मत यह है कि पंचांग की पद्धति निरयन ही रहनी चाहिए, परन्तु उसमें कुछ संशोधन आवश्यक है। पृ.549(5) चैत्रादि मासों के नाम अश्वन्यादि नक्षत्रों (तारों)के ही आधार पर रखे गये हैं पृ.554,(6) पृ. 567 - **धर्मशास्त्र परिवर्तन असम्भव** - वर्षारम्भ एक एक मास पहिले लाना और चैत्र के धर्मकृत्यों को फाल्गुन में करना धर्मशास्त्र बदलने के समान ही है। (7) पृ.568 से 571 तक **अनिवार्य कठिनाईयां**- कुछ कर्म ऋतु मास तिथि के साथ नक्षत्र से भी सम्बंध है। शरद ऋतु विजया 10 आश्विन शुक्ला 10 - श्रवण योग जो एक मास पहिले भाद्रपद शुक्ला 10 श्रवण नहीं होगा। उस समय दशहरा या दशमी शब्द भी लागु नहीं हो सकेगा। **नया धर्मशास्त्र मान्य कैसे हो**- यह पद्धति धर्मशास्त्र सम्मत प्रचलित नहीं है नवीन धर्मशास्त्र बनाना पड़ेगा। विद्वानों की समिति द्वारा नवीन धर्मशास्त्र ग्रंथ बनवाया जा सकता है पर उसका मान्य होना अत्यन्त कठिन है। शंकराचार्य की सम्मति मिल जाय, इतना ही नहीं उसे कानून का रूप देकर पास करालिया जाय तो भी उसका प्रचार होना कठिन है। हमारे देश में धर्मशास्त्र के सहस्त्रों ग्रन्थ और उनकी लाखों प्रतियां विद्यमान है। उन सब को नष्ट करना होगा। उनका त्याग करने पर भी अन्य विषयों के ग्रन्थ लुप्त नहीं किये जा सकते। उन सहस्त्रों ग्रन्थों में वर्णित तथा करोड़ों मनुष्यों के हृदय पर अंकित पद्धति को बदलना असंभव है। **व्यावहारिक दृष्टि से विचार** -इस प्रकार अधिकांश व्यवहार के लिये सायन न होने पर भी कोई बाधा न पड़ेगी। सायन पंचांग को कुछ लोग स्वीकार करले परन्तु सभी स्वीकार कर लेंगे ऐसा नहीं कहा जा सकता। **जातक स्कन्ध की दृष्टि से विचार**- हमारे देश में इस समय सर्वत्र निरयनमान से पत्रिकायें बनाते है। सायनमान से पत्रिका ठीक सिद्ध कर दो तो हम सायनमान स्वीकार कर लेंगे। ऐसे कहने वाले मुझे कई मिले हैं किन्तु मुझे लगता है कि किसी भी मान से वह सर्वांश से साध्य नहीं है।

अन्ततो दीक्षित जी भारतीय ज्योतिष की विशालता से भिज्ञ होते हुये भी। पृ.680 से 681 तक में सुझाव देते है कि (1) **अंग्रेजी नाटिकल आल्मनाक अथवा फ्रेंच काल ज्ञान पंचांग** जिन ग्रंथों के आधार पर बनाते हैं वैसे पंचांग बनाने के लिए कहना व भारतीय ज्योतिष विज्ञान से विमुख करना मानो इनको किसी ने इन यूरोपियनों की झूठन खिलाने के लिए अधिकृत किया हो? भारतीय विद्वान तो म्लेच्छ देशों में जाने वाले को प्रायश्चित से

शुद्ध करके ही घर में प्रवेश देते थे। वर्ण शंकर किसी का भी नहीं हो सकता, आज भी युरोपियन परम्परा भारत समूल नष्ट करने के लिये दो वर्षों से युद्ध लड़ रहे हैं भारत पर अब भी इनकी क्रू दृष्टि है भारत को सावधान व जाग्रत होना होगा। जैसे कि राम राज्यच्युत वनवास भेज देने के बाद भी वे कहते हैं कि- लक्ष्मण! मे न रोचते स्वर्णमयी लंका, जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी- '' के उद्घोष के ममत्व में मैं भी स्पष्ट कहता हूं ''**मे न रोचते युरोपियन उच्छिष्ट (झूठन) तदा-** ''**नवीन गतिविधि कल्पक महामतिमान् शास्त्रकार: कृति जयति विष्णु जो गणक चक्र चूड़ामणि:**''- भास्करोक्त ब्रह्मसिद्धान्त गरीयसी श्रेष्ठ है रुचिकर है।

(11) भूपृष्ठीय भेद- विभिन्न देशों में सुदूर नगरों में अक्षांश, रेखांशों के आधार पर तिथियों में मतभेद ज्यादातर आज के दृक्पक्षों के कारण 15घटी तक का फर्क पड़ जाने से होने लगा है। सम्पूर्ण भारत में तिथि न्यूनतम **डेढ़ घटी व अधिकतम साढ़े तीन घटीतक** होती है। धर्मशास्त्रों में इन तिथ्यादि भूपृष्ठिय अंतर को देख कर धर्मकृत्य की व्यवस्थायें होती रहती है। परन्तु विदेशों में भारतीय पर्व कैसे मनायेंगे ?यह भी यहां रात व विदेशों में दिन आदि अंतर को देखकर पर्व मनाते ही है! उत्तरीय ध्रुव में छमहीने की रात में पर्व मनाने वाले अपने हिसाब से मनाते ही होंगे! भारत में अगस्त्योदयास्त का विशेष प्रभाव है तो दैवज्ञों ने यहां की व्यवस्था लिखी है। विदेशों में अगस्त्य अस्त ही नहीं होता है परन्तु वहां भी दिन के सूर्योदय में तो नहीं दिखता होगा ? रात्रि में दिखता होगा, तब वहां के लोग इसके प्रभाव को देखते ही होंगे। इस प्रकार की उलझनों में भी आज के दृश्यपक्षाभिमानी विमुख है!

(12) साम्प्रदायिक त्यौहारों में भेद- (1) स्मार्त- धर्मशास्त्र वेद पुराणों को मानने वाले साधु ,संत, गृहस्थी होते हैं। (2) वैष्णव- विष्णु पूजन, यती, संत, विष्णु चरण तिलक, तुलसी की कंठी द्वारा (मठ) की कंठी ही गौत्र है। द्वारा (मठ) की कंठी पहने वाले भुजाओं पर विष्णुपदादि तप्त मुद्राओं के अंकित करने वाले होते हैं। इनमें **गुरुद्वारा वाले मतानुयायी जो पर्व मनाने का निर्णय देते हैं वो मनाते है**। यह मत भिन्नता पंचांग में भी दो पर्व स्मार्त, वैष्णव के नाम से वर्षों से लिख रहे हैं। मठ, मंदिर में दोनों पर्व मनाये जाते है दो-दो पर्व के कारण अच्छी पूजा आ जाती है अत: इन परम्पराओं को तोड़ना भी असंभव है! ''**यद्यपि शुद्धं लोक विरुद्धं न करणीयं न करणीयं**'' के विपरीत जाना दुष्कर है !मुख्यत: हिन्दू पर्वों में विघ्न पैदा करना, धर्मशास्त्र विमुख चलना धर्मानुकूल नहीं है।

(13) ग्रहणम्- भारत की ज्योतिष शास्त्र में चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण की प्रत्यक्ष दृष्य गणना पर ''**चंद्रार्कौ यत्र साक्षिणौ**'' से विश्व श्रृद्धान्वित नतमस्तक है। मैंने सं.2044 के प्राक्कथन में परिपत्र संयोजक एक.के.चटर्जी को जवाब लिखा था कि..(2) प्रपत्र के बिन्दु नं.7 में आपने लिखा है कि ''हाँ सूर्यग्रहण तथा चंद्रग्रहण का निर्देश करने में सभी पंचांगकार समान रूप से आधुनिक ज्योतिष्क सारिणियों का उपयोग करते हैं जिससे स्पष्ट है कि यदि प्राचीन गणित सूत्रों से सूर्यचंद्र के भोगांशों से गणना की जाए तो वह प्राय: अशुद्ध होगी।'' वस्तुत: यह बात कह देना अपरिपक्वता है। तिथि घटी पलों में अष्टमी के आसन्न 15, 16 घटी तक का फर्क प्राचीन व आधुनिक गणित के पंचांगों में पड़ता है अगर इन दिनों में ग्रहण होते तो स्पष्ट फर्क किससे है दिखाई दे सकता था। परन्तु अमा.पूर्णिमा को दोनों की गणित से तिथिमान करीब करीब समान होते हैं व ग्रहणों में कभी कभी स्वल्पान्तर ही रहता है। इतना स्वल्पान्तर तो आधुनिक गणित के पंचांगो में भी देख सकते हैं तब फिर प्राचीन सूर्यचंद्र के भोगांशों की गणना अशुद्ध कैसे ? हम आधुनिक ग्रहण गणित सारणियों को जानते भी नहीं हैं, पूर्व में भी ये सारणियां नहीं थी फिर भी ग्रहणों की सत्यता पर भारतीय ज्योतिष प्रसिद्धि को प्राप्त किये हुए था, अगर अशुद्ध है तो शुद्ध क्यों था ?जब अमा पूर्णिमा की तिथि में स्वल्पान्तर रहता है तो अष्टमी के आसन्न तिथि में ज्यादा फर्क क्यों ? इतने बड़े तिथ्यादिमान के फेर को अनदेखा क्यों किया जाता है ? क्या यह फर्क मूल झगड़े की जड़ व तालमेल में बाधक नहीं है!

ग्रहण नहीं दिखने के संदर्भ- (1)शा.1615 वैशाख शु.15चंद्रग्रहण ग्रहलाघव गणितज्ञों से नहीं आया परन्तु दिखा था!(2) शक: 1806 ग्रहलाघवीय पंचांग में चैत्र में चन्द्रग्रहण नहीं था। सायन केरोपन्ती निर्यन पंचांगो में ग्रस्तोदित था।(3) शक: 1814 के ग्रहलाघवीय पंचांग में वैशाख में चंद्र ग्रहण सूर्योदय के पूर्व ही मोक्ष हो जाता था सायनादि पंचांगों में ग्रस्तास्त था(भारतीय ज्यो.पृ.542)(4) **द्विचत्वारिंश द्वि सहस्त्रे वैशाखे चंद्र पर्वणि। स्वयोक्त: समय:सत्यो मिथ्योक्तो पर भाषितम्**।।(पं.भवानीशंकर जी कनाना) त्रिकाल ज्योति पंचांग सं.2042 वैशाख चंद्र ग्रहण के समय प्रत्यक्ष देख कर लिखा है। स्पर्श में 43 मिनट व मोक्ष में 24 मिनट का फर्क दृष्य पंचांगों से था।(5) सं.2070 चैत्र शुक्ला 15गुरु खण्डग्रास चंद्रग्रहण निर्णय सागर में नहीं दिखेगा लिखा परन्तु त्रिकाल ज्योति पंचांग के अनुसार दिखा। हनुमान जयंति मनाने वालों ने पट्ट खुले रखे थे। तब मैंने सं.2071 के पंचांग में लिखा था कि- **सर्वेषामेव वर्णानां सूतकं राहु दर्शने**- ग्रहण देखने से सभी वर्ण सूतकी(अस्पृशीय) हो गये। **मुक्ती यस्तु न कुर्वीत स्नानं ग्रहण सूतके। स सूतकी भवेत्तावद् यावत् स्यापरोग्रहः** (त्रिकाल ज्योति से पृ.85) अर्थात् उन सूतकियों को जब तक दूसरे ग्रहण के सूतक के स्नान से ही उस लगे सूतक की निवृत्ति होती है। अगले वर्ष भी ग्रहण नहीं! सूतक लम्बा इस प्रकार ग्रहणों की क्लीष्ट गणना में गणित की चूक आदि किसी भी प्रकार से हुई हो उसके कारण सारा सिद्धान्त गलत नहीं गणितज्ञ की चूक है।

दृक् पक्षांगीय पंचांग एक दूसरे की नकल से बहुमत प्राप्त किये है तब वह भूल सबमें एकसी है उसमें दूसरे आर्ष पंचांग को गलत कहना भी अपनी भूल को छिपाना है। ग्रहण सूर्य, चंद्र की छाया अर्थात् राहु, केतु से ग्रसित होने पर ग्रहण होता है। वर्तमान आर्ष पंचांगों में दृक्पक्ष का राहु, केतु 17 दिन पीछे चलता है तब ग्रहण में अंतर तो आयेगा ही।

(13) फलित को नहीं मानते- सायन पंचांग मताभिमानयों का भविष्यफल नहीं मिलने के संदर्भ पूछा जाता है तब उनका तुनक मिजाजी जबाब हम भविष्यफल(फल) को नहीं मानते। वस्तुत: फल के बिना वृक्ष भी क्या काम का? नष्ट कर दिया जाता है अगर फलित की सार्थकता नहीं होती तो भारत का ज्योतिष विज्ञान कभी नष्ट हो गया होता। अंकों व वर्णाक्षरों का साकार ज्ञान ही निराकार की ओर ले जाता है तब अहम् ब्रह्मास्मी हो जाते हैं। यही प्रत्यक्ष फल है। फिर साकार के फल की कृतघ्नता अपने **मातृदेवो भव:, पितृदेवो भव:** को नहीं मानने जैसी कही जा सकती है। भारत की ज्योतिष पंचतत्वों अग्नि, पृथ्वी, वायु जल आकाश के कुपित होने का फल बताता है **ग्रहणों, ग्रहों के उदयास्त** का फल घटित होने पर उस गणना के आंकड़े सत्य प्रमाणित होते हैं **अधिक मास** की गणना प्रकृति मौसम का यथावत् समायोजन बनाये रखने का प्रयोजन है। निरयन पंचांगों के तिथ्यादि मान चंद्रोदय की सार्थकता को प्रमाणित करते हैं। निरयन संक्रांतियों से किसान वर्षा, सर्दी गर्मी देख बीज बोना आदि करते हैं। मारवाड़ में **डंकक भड्डली** (घाघ भड्डली) की कहावतें किसान बहुत मानते है। **हस्त चिन्हों** पर जन्म का ज्ञान, जन्माक्षर बनाना, शंख चक्र सीप, हस्त के पर्वतों से ग्रहों का ज्ञान व फल कथन **सामुद्रिक शास्त्र** की विशेष देने है। मुखाकृति व शरीर के नाक कान, ललाट, ललाट की रेखाओं व हाथ पैर अंगुलियों आदि से कुण्डली बनाना व भविष्य कथन से तत्कालीन निरयन गणना की सत्यता प्रमाणित होती है। भृगु संहिताओं के हस्तलिखित ताड़पत्रादिक ग्रंथों के फल को भी झुठाया नहीं जा सकता। **दीक्षित जी** ने लिखा है कि काशीनाथ पटवर्धन द्वारा मुखचर्या देख कर जन्म काल व कुण्डली बना लेते हैं व पिता की मुखाकृति से पुत्र की कुण्डली बनाने का प्रत्यक्ष चमत्कार देखा है **यह भी लिखते हैं** कि गोविन्दचेट्टी (शूद्र है) केवल जन्म काल ही नहीं, किसी भी भाषा का प्रश्न उत्तर बतला देते थे। (भारतीय ज्योतिष पृ. 627,628) **स्वरशास्त्र, स्वरोदय** से भारतीय योगियों ने अंग्रेजों को चमत्कृत कर दिया था। इन सब विद्याओं का लुप्त होना भरतीयों की दासता काल रहा है हमारा बहुत बड़ा ह्रास हुआ है।

(14) वेधशालाओं की सत्यता का निर्णय आँख से!

वेधाशालाओं की सत्याऽसत्य का निर्णय भी आखें ही करती है। दूरबीन भी दूर दृष्टि की प्रतीक है। वैज्ञानिकों की खोज भी सान्तरित बदलती रहती है। आज के वैज्ञानिक रॉकेटयानों से ग्रहों के धरातल पर उतर कर खोज करते हैं। परन्तु भारतीय ऋषियों की खोज तक नहीं पहुंच सके हैं। इन्हें कालान्तरों में भारतीय ब्रह्माण्डीय खोज सत्य प्रमाणित होती है। शताब्दियों पूर्व भारतीय पण्डित शंकु, दूरबीन, नलिकायन्त्र, पीतल आदि यंत्रों से आकाशीय ग्रहों नक्षत्रों का परीक्षण करते रहते हैं। भारतीय ऋषियों ने ताराओं की संख्याओं से नक्षत्रों का ज्ञान, राशियों की आकृतियां का चित्रण किया था जो आज भी यथावत् व परीक्षित है। घड़ियां नहीं थी तब मेरे दादाजी, पिता जी- पुरुष की छाया से पाद गिन कर या शंकु की छाया से इष्टज्ञान, समय(टाईम) का ज्ञान, लग्न पत्रादि बना देते थे। आकाश में कौन सा नक्षत्र तारा ग्रह कहां है बता देते थे। आजकल पंचांगों में तिथियों की भिन्नता का विवाद होता रहता है। कहते हैं कि तिथि आकाश में दिखती नहीं है। परन्तु एक अनपढ़ किसान ने आकाश में चंद्र को देख कहा कि आज तिथि यह है मेरे पंचांग में भी यही तिथि थी दृक्पक्षीय में भिन्न थी। कहा कि दूसरी गलत है यह ज्ञान धीरे धीरे लुप्त होता देख कर वेधशालाओं का निर्माण हुआ। जयपुर के राजा जयसिंह जी ने जयपुर, मथुरा, काशी, उज्जैन आदि में वेधशालायें बनाई। आज ये वेधशालायें पर्यटकों के लिये "**तंत्र मंत्र वेधशालायें**" कहलाती है। इस प्रपंच में राजा बादशाह सब थक गये। आंखों की दृष्य दृष्टि से अशुद्ध सिद्ध हो गयी। तदर्थ दीक्षित जी लिखते हैं कि "**सर्वव्यापक ईश्वर की शक्ति के ज्ञान में मनुष्य बिल्कुल असमर्थ है**"(भारतीय ज्योतिष पृ.464) निष्कर्षत: भारत का यह गोपनीय ज्ञान भी गुप्त व सुप्त हो गया!

वेद वेदांगों के रक्षक कौन? अभ्युदय कब?

भारत देव भूमि है यहां देवता रमण करते हैं इस भूमि की रक्षा भगवान् स्वयं करते हैं। श्री कृष्ण का गीता में उद्घोष है कि **यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत**(4/7) एवं **धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे**(4/8) अर्थात् जब जब धर्म की हानि होती है। तब तब मैं धर्म की संस्थापना के लिये युग युग में प्रकट होता हूं। धर्मशास्त्रों में गृहस्थ धर्म के पितृयों के संदर्भ में लिखा है कि -**पितृयानो अजवीथ्याश्च यदगस्त्यस्य चान्तरम्**- अर्थात् अजवीथी (देवमार्ग) और अगस्त्य तारा के बीच जो पितृयान नामक स्थान है उसी मार्ग से अग्निहोत्री(यज्ञकर्ता) आदि लोग स्वर्ग में जाते हैं। उस पितृयान में **तत्राष्टाशीति साहस्त्रा मुनयो गृहमेधिना:**- गृहस्थ धर्मवाले 88 हजार मुनि रहते हैं। वे लोग **पुन: पुन: पुनरावर्तिनो बीजभूता धर्मप्रवर्तका:**।। बीज बनकर धर्म प्रवर्तक जन्म लेते हैं। एवं च - **सप्तर्षि नाग वीथ्यन्तर्देवलोके समाश्रिता:। तावन्त एव मुनय: सर्वारम्भ विवर्जिता:**।। अर्थात् सप्तर्षि मण्डल और नागवीथी (ऐरावत पथ) के बीच में देवलोक में रहने वाले उतने 88 हजार मुनि जो सब आरम्भों से रहित (तत्वज्ञानी) प्रलय तक स्थिर रहते है। उन्हीं से वेद पुराण

संपूर्ण वाङ्गमय शास्त्र प्रचलित होते हैं। **द्रष्टव्य स्तव्य मन्तव्यः श्रोतव्यश्च द्विजातिभिः ।।** सब द्विजातियां(ब्राह्म क्षत्रिय वैश्य) उस आत्मा को जानने, देखने, सुनने का उद्योग करें। **पितृलोकं चन्द्रमासं वायुं वृष्टिं जलं महीम्। क्रमात्ते सम्भवन्तीह पुनरेव व्रजन्ति च।।** अर्थात् पितृलोक, चंद्रलोक से वायु वृष्टि, जल और भूमि को प्राप्त होकर अन्नरूप से वीर्य होकर संसार में आते हैं। गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि - **मम योनिर्महद् ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम्**(14/3) अर्थात् मेरी ब्रह्मरूप(प्रकृति) योनि में उस बीज को स्थापन करता हूं तब सब श्रृष्टि की उत्पत्ति होती है। **निष्कर्षतः**पापाचारी पाप योनि में व पुण्यात्मायें, देवांश- **क्षेत्रक्षेत्रज्ञ संयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ**।। (गीता13/26) स्व स्व क्षेत्र योनियों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यादि पूर्व पितृ पुरुष जन्म लेते हैं इस प्रकार विधिवेत्ता विधाता उन जीवों को अपने अपने कर्त्तव्य पूरे करनें, कर्म भोगनें, लेनदेन पूरा करनें को पृथ्वी पर भेजते हैं। राजधर्म को पालने राजा, वीर योद्धा प्रकट होते हैं। ब्राह्मण धर्म में ऋषि मुनि विद्वान शास्त्रवेत्ता, शास्त्र निर्माणक आते है। वैश्य धर्म में अर्थशास्त्री, दानी, कृषि, गोरक्षा, वाणिज्यादि कर्मकर्ता आते है। शूद्रकर्मा धर्मी भी पाप पुण्य भोगकर कर्मानुबंधन भोगते है। ऐतदर्थ स्वपितृयों की तृप्ति से उस कुलके महापुरुष '**पांचवी पीढ़ी में पीर पाके**'' की कहावतानुसार प्रकट होते हैं। अपना काम संस्कृति संस्कार विद्या विज्ञान, वंश व स्वर्गादपि गरीयशी मातृ भूमि की रक्षा करने आते हैं। अपने पितृओं के अलावा जो अन्य भूत प्रेत पितर, पिशाचादि को पूजते हैं गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं वो उसी योनि में जन्म लेते हैं। **योग भ्रष्टाभि जायते** का भी लिखा है। **वाराहमिहर** तो लिखते हैं कि करणग्रंथों के उलटे अन्यान्य अर्थकर भ्रमित करता है वह दैवज्ञ **अंधतामिस्र नरक** में पड़ता है। ब्रह्मगुप्त के लिये तभी तो ज्योतिष के उद्‌भट्ट विद्वान् भास्कराचार्य सिद्धान्तशिरोमणी ग्रंथकर्ता लिखते हैं कि **यदा पुनर्महता कालेन महदन्तरं भविष्यति तदा महामतिमन्तो ब्रह्मगुप्त समान धर्मिण एवोत्पत्स्यन्ते तदुपलब्ध्यनु सारिणीं गतिमुररीकृत्य शास्त्राणि करिष्यन्ति**'' - अर्थात् बड़े कालान्तर में बहुत बड़ा अंतर होगा तब महा बुद्धिमान ब्रह्मगुप्त के समान धर्मि पैदा होंगे तब उपलब्ध सारिणियों को परिष्कृत शास्त्र लिखेंगे। ऐतदर्थ भारतीय वेद वेदांग कभी नष्ट नहीं होगें। उनके अभ्युदय के लिये वेदधर्मी पूर्वपुरुषों को विधाता स्वयं भारत भूमि पर भेजेंगे।

राजा ही युग धर्म है- धर्मशास्त्रों का मंथन है कि "**राजा हि युग मुच्यते**" अर्थात् राजा को युग कहते हैं। अर्थात् राजा ही युगधर्म है। **कलिः प्रसुप्तो भवति स जाग्रद् द्वापरं युगम्। कर्म स्वभ्युद्यत स्त्रेता, विचरंस्तु कृतं युगम्** ।।1।। अर्थात् जो राजा सोता रहता है तब **कलियुग,** जो राजा जागता रहता है तब **द्वापर युग**, जब राजा राज्य कार्य में उद्यत रहता है तब **त्रेता** और जो राजा शास्त्रानुसार कार्य करता है तब सतयुग वर्तता है। निष्कर्षतः हर युग में हर अधिकारी, शासक, राजा के समय में, हर देश ग्राम नगर, जाति घर का मुखिया भी राजधर्म की श्रेणी में सब आता है। इन सबों के कार्यकाल में चार युगों के वर्तावों का ध्यान रखना आवश्यक है। सब पापाचार अनैतिक कार्य ही कलियुग है। वह कलिकाल राजकाज व घर में घुस गया तो नाश निश्चित है। जागते रहे, सावधान हो जाय! **सतयुग**-में विष्णु, मच्छ, वराह, नृसिंहावतार हुये। इस युग में पापी प्रकट हुये, नाश किया। **त्रैतायुग**- वामन, परशुराम, श्रीरामचन्द हुये। इस युग में भी पापी प्रकट हुये, नाश किया। **द्वापरयुग**- श्रीकृष्ण बलराम हुये। कृष्ण की कूटनीति, बलराम की हलधर कृषि नीति ने पापियों का नाश किया। अब **कलियुग** चल रहा है बुधावतार हो गया, कल्कि अवतार की प्रतिक्षा है। भारत में ही नहीं संपूर्ण विश्व पाप (कलियुग) की आपाधापी में फंसा है। तृतीय विश्वयुद्ध का ताण्डव अब पाप का ही अंत करेगा? हर मुखिया, अधिकारी, राजा अपने घर में पाप(कलि)को घुसने नहीं दे। अगर घुस गया तो आपको, आपके घर परिवार, क्षैत्र का अंत कर देगा। राजा मोदी जी भारत में ही नहीं विश्व के अन्य देशों को पाप(कलि)को घुसनें से सावधान कर रहे हैं! विदेशी पापाचारियों का रेला भारत में भी उत्पात करते दिख रहा है। आस्तिन के सांप डसनें का प्रयास कर रहे हैं घर के **भेदी लंका ढावे** का प्रयास चल रहा है अतः कृष्ण की कूटनीति, अर्जुन के लक्ष्य भेदन से ही पापी मरेंगे। चल कपट से सोने का मुकुट नहीं पहनें उसमें काल घुसा है स्पष्ट नीति है- **धर्मो रक्षति रक्षितः**। अर्थात् वेद वेदांग धर्म संस्कृति की रक्षा, उत्थान करनें से ही आपकी रक्षा होगी, अभ्युदय होगा!

श्रुति स्मृति विहितो धर्मः।

तद्वेदनेत्रं जयतीह लोके- वेद के चक्षु ज्योतिष शास्त्र की इस संसार में जय हो।

ब्रह्मलोके प्रतिष्ठां च लभते दैव चिन्तकः- दैव चिन्तक (दैवज्ञ) ज्योतिषी ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

दशदिन कृतपापं हन्ति सिद्धान्तवेत्ता- सिद्धान्त गणितज्ञ के संपर्क से दस दिनों के पाप नष्ट हो जाते हैं।

नक्कालों से सावधान
त्रिकाल ज्योति के नाम में कुछ हेराफेरी जैसे त्रिकाल ज्योतिष आदि करके ज्योतिष के नाम पर ठगी कर रहे हैं सावधान रहें।

दुर्लभं भारते जन्मः-
विद्वद्जन चरण चंचरीक
पंचांगकर्ता-पं.पृथ्वीराज द्विवेदी
त्रिकाल ज्योति, कार्यालय
बालोतरा, जि.बाड़मेर(राज.)

व्रत पर्वोत्सव निर्णय:

नक्षत्र सूचको दिष्ट मुपवासं करोति य: स व्रजत्यन्धाता मिस्त्रं सार्धमृक्ष विड्विना(वाराहचार्य) अर्थात् नक्षत्र सूचक (अविदित्वैव य:शास्त्रं दैवज्ञत्वं प्रपद्यते) जो पुरुष बिना शास्त्र के जाने दैवज्ञ हो जाय, के उपदेश किये हुए उपवासादि को जो पुरुष करता हैं वह उस नक्षत्र सूचक के साथ अंधतामिस्र नामक नरक में पड़ता है। निष्कर्षत: आर्ष प्रमाणों से व्रतोत्सवों का निर्णय करना हैं तो आर्ष पंचांग सूर्य सिद्धांत, ग्रहसिद्धान्तादि गणित से बनने वाले पंचांग ''**पंचवृद्धि:रसक्षय:**(65घटी-54घटी)के तिथ्यादिमानों से निर्णय करें। आज के शताब्दी पंचांग या अंग्रेजी पंचांगों की नकल से बने नकलची पंचांगों की तिथि अपने ही सूत्र '**सप्तवृद्धि दशक्षय:**'' का भी अतिक्रमण कर पंचदशघटी(15घटी) तक बढ़ जाती है। कृष्ण पक्ष शुक्लपक्ष की अष्टमी के आसन्न इन पंचांगों की तिथियों में बहुत फर्क रहता है जो मुख्य विवाद की जड़ है। ये आर्ष सूत्रों को तोड़मरोड़ कर अपने व्रतपर्वो को सही बताते है जिससे पंचांग पढ़ने वाले भ्रमित हो जाते है। गणित पूर्वाचार्यों की व निर्णय भी पूर्वाचार्यो के सूत्रों से करना शास्त्र सम्मत है। यही वाराहमिहराचार्य का निर्देश है। शास्त्रों में कटु वचनों से सावधान किया है **धर्मेण हीना पशुभि समाना:** - तो कहते हैं कि अच्छे बोल नहीं है जहां अभ्युदय के वचन भी कहे हो तो पालन में विमुख गुठबंधी करते हैं अभ्युदय कैसे ? **धर्मो रक्षति रक्षित:** धर्म की रक्षा करोगे तो धर्म आपकी रक्षा करेगा।

-:निर्णयार्थ आर्ष सूत्र:-

(1)**वार - उदयादुदयंवार-** सूर्योदय से सूर्योदय तक वार रहता है।
रात 12 बजे से वार तारीख अंग्रेज बदलते हैं।

(2)**व्रतादि** - दिन व्रत दिन में, रात्रिव्रत रात में। **व्रत**- एक समय भोजन।
उपवास- पूरे दिन भोजन नहीं।

(3)**अहोरात्र**-(दिनरात)६०घटी(24घंटा)एक घटी = 0.24मिनट, 1घंटा-2.३०घटी
होरा-दिनरात में 24 होरा 1घंटे में 1 होर। वार से 6ठा वार दूसरी होरा क्रम से वार होरा होगी। सौम्य वार शुभ होरा, क्रूर वार अशुभ होरा।

(4)**प्रहर(याम)**- दिन में 4प्रहर+रात में 4प्रहर कुल 8 प्रहर। एक प्रहर 3 घंटे का।

(5)**दिनमान/2** = (1)पूर्वान्ह - सूर्य से आधा दिन 6 घंटा के आसन्न
(2)अपरान्ह - मध्यान्ह से सायं तक 6घंटे के आसन्न।

(6)**तिथि**- घटी के अनुसार तिथि रहती है। कम घटी या ज्यादा घटी के बाद तिथि बदल जाती है जिस का ज्ञान- **उदयव्यापिनी**- सूर्योदय से सूर्यास्त समय तक। **रात्रि व्यापिनी**- सूर्यास्त के बाद में चंद्रोदय के समय में हो तक। **शुद्धातिथि(पूर्णा)**-सूर्योदय से सूर्यास्त तक। **<u>चंद्रोदय व्यापिनी</u>**-चंद्रोदय के समय में हो। **<u>सिनीवाली</u>**-चतुर्दशी मिश्रित अमा जिसमें चंद्र दर्शन होवे। **कुहू**- चंददर्शन नहीं होवे प्रतिपदा मिश्रित अमावस्या।

(7) अरुणोदय (उष:काल, संध्याकाल, ब्रह्ममुहूर्त)- सूर्योदय से 1.30 डेढ़ घंटापहिले का समय। <u>अरुणोदय / संध्याकाल</u>- सूर्योदय से3 घटी अर्थात 1घंटा 12 मिनट पूर्व का अरुणोदय व 2 घंटा पूर्व उषाकाल समय। इस समय संध्या में सूर्योदय व्यापिनी अगली तिथि वारादि का संकल्प होता है।

(8)**पंचधाभक्ता** = दिनमान/5 = (1)**प्रात:काल**- सूर्योदय से 48मिनट पूर्व व 3 मुहूर्त (6घटी)तक = सूर्योदय +2घंटा 24 मिनट तक।

(2)**संगवकाल**(प्रात: काल)के बाद 6 मुहूर्त(12 घटी)तक =
सूर्योदय + 4घंटा 48 मिनट तक।

(3)मध्यान्ह काल (मध्यान्ह दिन) - आगे 9 मुहूर्त (18घटी)तक =
सूर्योदय+7घंटा 12 मिनट तक मध्यान्ह संध्या का समय पूर्वा 36 पर 36 मिनट।

(4)**अपरान्ह अभिजित**(विजय)के मुहूर्त- मध्यान्ह 24 मिनट पूर्व व मध्यान्ह +24 बाद का 48 मिनट का समय कुतुपकाल भी कहते हैं अपरांन्ह।

सायान्ह काल- मध्यान्ह के बाद 12 मुहूर्त(24 घटी)तक = सूर्योदय +9घंटा .36मिनट तक यह समय पितृकार्य में ग्राह्य है।

(5)**सायान्ह(प्रदोष)काल**- आगे के बाद 15 मुहूर्त(30 घटी)तक = सूर्योदय + 12 घंटा सूर्यास्त तक। प्रदोष = सूर्यास्त+2.24 = बजे तक तारा दिखने से नक्त(रात्री) मानते हैं। 13+शनिवार प्रदोष व्रत महापुण्यदायक है।

(9)**दिनमान/15** = मुहूर्त 8वां भाग कुतुप काल = 1 मुहूर्त(48मिनट) = सूर्योदय+6 घंटा24मिनट तक कुतुपकाल। **कुतुपकाल** = मध्यान्ह-24 मिनट व मध्यान्ह +24 तक यह अभिजित(विजय)भी है। **रात्रिमान/15** = मुहूर्त 8वां भाग **निशीथ**(अर्धरात्रि)काल = 1 मुहूर्त(48 मिनट) = सूर्यास्त +6.24 तक निशीथ काल।

(10)**तिथिवेध**- (1)**पूर्वविद्धा तिथि**- जो तिथि पहिली तिथि से विद्ध(वेध, मिली) हो वो पूर्वविद्धा कहलाती है। अर्थात् पहिली तिथि में 3 मुहूर्त (2घं.24मिनट)तक मिली है। या 12 घटी(4 घं.48मिनट) तक पहिली तिथि से मिली हो तो पूर्वविद्धा, उस पहिले दिन व्रत करें।

(2)**परविद्धा तिथि**- जो तिथि आगे की तिथि में 3 मुहूर्त के बाद मिली हो या 12 मुहूर्त के बाद मिली(विद्ध, वेध)हो तो दूसरे दिन उसी उदय व्यापिनी तिथि में व्रत करें।

<u>तिथिव्रत निर्णय</u>- कर्मणो यस्य य: काल: तत्काल व्यापिनी तिथि- व्रतपर्व का कर्म काल

समय शास्त्र सम्मत तिथि हो उसका व्रत पर्व उसी समय में करें।

(11) श्राद्ध ज्ञान- (1) महालय श्राद्ध- भाद्रपद शु.15 से आश्विन कृष्ण पक्ष अमा तक।(2) पार्वणश्राद्ध -नाना श्राद्ध आश्विन शुक्ला प्रतिपद पिता आदि तीन का पार्वण। (3) एकोदिष्ट श्राद्ध-वार्षिक संवत्सरीश्राद्ध: या क्षयाह: संवत्सरी श्राद्ध:। सपत्निक पिता आदि तीन का पार्वण।

(12) नवरात्र(प्रगट दो)- (1) चैत्र शुक्ला 1 से वासंत नवरात्र (2) आश्विन शुक्ला 1 से शारदीय नवरात्र - इसमें गर्बा आदि उत्सव होते हैं।(2) गुप्त दो- (1) आषाढ़ शुक्ला 1 से (2) माघ शुक्ला 1 से - इन में दसमहाविद्यादि गुप्त विद्याओं का अनुष्ठान। <u>घटस्थापन-</u> (1) प्रतिपदा क्षय हो तो अमायुक्ता ग्राह्य:(2) द्वितिया क्षय हो तो मुहूर्त मात्र प्रतिपदा ग्राह्य:। (3) प्रतिपदा वृद्धि हो तो प्रथम प्रतिपदा ग्राह्य (4) अमा वृद्धि: हो तो अमायुक्ता प्रतिपदा में करें। अर्थात् प्रतिदा में ही घट स्थापन करें, द्वितिया में नहीं। आश्विन प्रतिपदा में यदि वैधृत और चित्रा का संयोग हो तो वैधृत जन्य दोष नहीं वरना वैधृत त्याग करके करें। अभिजित में वैधृतादि दोष नहीं।

(13) हरिवासर- आषाढ़ शु.12 को अनुराधा प्रथम चरण, भाद्रपद शु.12 को श्रवण द्वितिय चर्ण, कार्तिक शु. 12 को रेवती चतुर्थ चर्ण का संयोग, हो तो हरिवासर कहलाता है इन नक्षत्रों के चर्णो को त्याग कर पारणा करें, नहीं तो एकादशी का व्रत भंग हो जाता है।

(14) एकादशी व्रत- (1) स्मार्त- (1) यदि दशमी में एकादशी का क्षय हो तो उसी दिन स्मार्त व्रत करें द्वादशी में पारणा करें।(2) दशमी विद्धा हो या द्वादशी क्षया हो तो भी एकादशी में व्रत करें। एकादशी पूर्ण या वृद्धि हो तो भी पूर्ण एकादशी को व्रत करें। हरिवासर त्याग कर पारणा करें।(2) वैष्णव- (1) एकादशी क्षय हो तो द्वादशी को व्रत करें।(2) दशमी 56घटी से एक पल भी अधिक हो तो द्वादशी को व्रत करें।(3) दो दिन 11 हो तो अगले दिन एकादशी करें।(4) भागवत(निम्बार्क)-दशमी 45 घटी से एक पल भी अधिक हो तो निम्बार्क द्वादशी को व्रत करते हैं। शेष दिनों में यथात् एकादशी को ही करते हैं।

(15) महारात्रियाँ - (1) मोहरात्रि (श्रीकृष्ण जन्माष्टमी)-अर्द्धरात्रि व्यापिनी (सूर्यास्त + 6घं.24मि.) या चंद्रोदय व्यापिनी को सप्तमी विद्धा अष्टमी हो तो स्मार्त व दोनों दिन अर्द्धरात्रि को हो तो अष्टमी को व्रत करें। अगर रोहिणी हो तो श्रेष्ठ नहीं हो तो भी चंद्रोदय व्यापिनी अष्टमी में ही व्रत करते हैं। सप्तमी विद्धा को वैष्णव व्रत नहीं करते हैं। परन्तु रोहिणी युत हो तो विशेष फलदायी है।

(2) कालरात्री (दीपावली) -सायं प्रदोष से मध्यरात्रि तक अमा हो उसी दिन दीपोत्सव प्रदोष से वृष, सिंह लग्न तक कालरात्रि को मनावें। अमावस्या पूर्ण हो तो अमावस्या को मनावें, नहीं तो चतुर्दशी युत अमा. को मनावें। अमावस्या को विशेष महत्व है अमा नीशान्त होता है। ग्रहण हो तो सूतक व ग्रहणकाल को त्यागे में पितृतृप्ति हेतु दीपक श्राद्ध करने का होता है। ग्रहण हो तो सूतक व ग्रहणकाल को त्यागे

(3) महारात्रि(महाशिवरात्रि) - यह व्रत चतुर्दशी तिथि निशीथ व्यापिनी (अर्धरात्रि = सूर्यास्त + 6घं.24मि.)में आवे या त्रयोदशी न्यूनाधिक हो तो चतुर्दशी विद्धा हो तो उसी दिन की तिथि 14 में मनावें।

(4) होलिका रात्रि- दिन में, भद्रा में, प्रतिपदा तिथि में होलिका दहन नहीं करें। पूर्णिमा ब्रह्म मुहूर्त तक हो उस समय तक होलिका दहन करें। भद्रोपरांत पूर्णिमा के होते भद्रापुच्छ (भद्रा के तृतीय चरण अंत तीन घटी 1.12मिनट का समय) में होलिका दहन करते हैं परन्तु असिते सर्पिणी ज्ञेया सिते विष्टिस्तु वृश्चिकी भद्रा का डंक त्याज्य है यथा- सर्पिण्यास्तु मुखं त्याज्यं वृश्चिक्या: पुच्छमेव च।।" त्याज्य है (मुहू.चिं.पीयूष धारा) तब राष्ट्र, ग्राम, उस स्थान "भद्रायां देशनाशनम्" विनाशक घटनायें घटती है। यह भद्रापुच्छ में तो कृष्ण पक्ष की भद्रा में विशेष परिस्थिति पूर्णिमा अभाव न हो, में करने का निर्देश है। चंद्र ग्रहण काल को त्याग कर दहन करें। रात्रौ भद्रावसाने तु होलिका दीपयते तदा- रात को भद्रा की समाप्ति पर होलिका का दहन करें।

इस वर्ष के विवादास्पद व्रत पर्व का निर्णय-

(1) दीपावली विवाद- शताब्दि पंचांग में (1) विक्रम संवत् 2081 को अमावस्या 29 घटी/32पल (सूर्यास्त के बाद मात्र 42 मिनट व निर्णय सागर में 25मिनट) तक है व (2) संवत् 2082 को अमा 28/41 (सूर्यास्त के बाद मात्र 15 मिनट) ही है तो भी शताब्दि पंचांग में इस अत्याल्प अमावस्या को दीपावली पर्व लिख दिया है। इस पंचांग की न्यूनाधिक घटी पल घटा बढ़ा के नकलची पंचांगकर्ताओं ने भी इस अत्याल्पमान के दिन ही दीपावली लिख दी है। जबकि आर्ष पंचांगों के घट्यादिमान इससे कम होने से दीपावली चतुर्दशीयुक्ता अमा को लिखी है इससे दीपोत्सव का विवाद खड़ा हो गया है। भूपृष्ठीय भेद आर्ष प्रमाणों में नहीं है, फिर भी फंस गये हैं। जनता जनार्दन भ्रमित है कि दीपोत्सव कौनसा मनावें। बहुमत नकलचियों का व हो हल्लाधि नकलचियों का ज्यादा होने से पंचांग पढ़कर बताने वाले पण्डित भी भ्रमित हो गये है। वस्तुत: **आर्ष (ऋषि) प्रमाण आर्ष पंचांग पर ही लागु होते है**। परन्तु जोड़तोड़ की उच्छिष्ट गणित वाले पंचांग अपने को आर्ष प्रमाणों से सत्य साबित करना चाहते हैं तो संभव नहीं है। यथा **दीपावली कालरात्रि है**। लक्ष्मी में महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती तीनों का समावेश है। अत: इस रात्रि को काली स्वरूप स्याही कलम दवात, लक्ष्मी स्वरूप स्वर्णा भूषण, "गौ धन गजधन बाजीधनऔर रतन धन खान" आदि धन की पूजा होती है। सरस्वती स्वरूप चौपड़ा पूजन होता है। एंतदर्थ- **ब्रह्मणोक्तेश्च प्रदोषार्ध रात्र व्यापिनी मुख्या।।1।।** अमावस्या प्रदोष और अर्ध रात्रि व्यापिनी मुख्य है। कश्यप संहितायां दीपावलि दर्श प्रकम्प।।2।। दीपावली अमावस्या (कार्तिकी) को ही होती है उसी अमा में मनावें।

अर्धरात्रे भ्रमत्येव लक्ष्मीराश्रयितुं गृहम्।।3।। (ब्रह्मपुराण) आधी रात के समय घरों में आश्रय प्राप्त करने के लिये लक्ष्मी घुमती है। **दर्श पर रात्रे अलक्ष्मी नि:सारण मुक्तं।।4।।** दरिद (अलक्ष्मी) को घर से निकालने के लिये दिवाली की अमावस्या को पिछली रात(ब्रह्ममुहूर्त) में गृह लक्ष्मीयें सूप थाली बाजा आदि बजाकर बाहर निकालती है। **अमा नीशान्ते दीपक श्राद्धं कुर्यात्।।5।।** दिवंगत आत्मा के निमित्त दीपक श्राद्ध भी इसी अमा को निशान्त में किया जाता है। अर्थात् यह सब अमावस्या को ही होना है प्रतिपदा की रात्रि में नहीं। एवं च- **अमावस्या यदा रात्रौ दिवा भागे चतुर्दशी। पूजनीया तदा लक्ष्मी विज्ञेया सुखरात्रिका।।6।।** अर्थात् दिन को चौदस व रात में अमा की रात्रि में लक्ष्मी पूजन करें। लक्ष्मी के लिये यह सुखरात्रिका है। **शरत्काले च देवेशि! दीपयात्रा दिने तथा। अमावास्यां समासाद्य मध्यरात्रौ विचक्षण:।।7।।** बुद्धिमान् लोग शारदीय दीपावली अमावस्या मध्यरात्रि में होती है तब मनाते हैं। **अर्धरात्रे महेशानि! अमावस्या सदा भवेत्। चतुर्दशीयुता ग्राह्य चामुण्डा पूजने सदा।।8।।** अर्थात् चौदस को अमावस्या अर्धरात्रि में हो उस दीवाली के दिन चामुण्डादि अपनी-अपनी कुलदेवियों को सदा पूजें। इन सब प्रमाणों को त्याग कर **दण्डैक रजनी योगे दर्श:स्यात्तु परेऽहनि।।9।।** अर्थात् चौदस,अमा दोनों दिन प्रदोष व्यापिनी एक घटी(24मिनट) भी रात्रि का योग हो तो दूसरे दिन अमा को दीपावली करने का लिखा है। निर्णय सागर पंचांग ता.1.11.2024 को गणना दीपावली अमा 28.36 घटी को जांच की तब अमा 28.31 घटी ही आती है। सूर्यास्त बाद 23 मिनट ही रहती है अर्थात् एक घटी (24मि.) से भी कम है। इसे इन्होंने तोड़ मरोड़ कर एक घटी से आगे 25 मिनट अर्थात् दो मिनट बढ़ा कर दीपावली घोषित कर दिया। ये गोधूलिक में ही पूजन मानते हैं पंचांग में सिंह लग्न तक पूजन क्यों छापते हैं ? इनकी गणना की बाल की खाल निकालने बैठे तो ये दो घटी से हतोभ्रष्ट हो जायेंगे। गणितज्ञ इनकी गणना को जाँच कर भ्रम का निवारण कर देवें। इसी प्रकार ता.21.10.25 की इनकी दीपावली शताब्दी में मात्र सूर्यास्त के बाद 15 मिनट ही है। एक घटी(24मि.) भी नहीं हैं फिर भी इस दिन दीपावली लिखकर भ्रमित कर रहे हैं। इस वर्ष देखते हैं कि नकलची किस प्रकार पिष्टपेषण करते हैं। परन्तु दीपावली ता.20.10.25 को ही आर्ष ग्राह्य है। नकल में भी अकल लगाकर काम करेंगे तो अच्छा होगा। **सुज्ञेषु किं बहुना।।**

होलिका दहन- ता.2.3.26 फाल्गुन शु.14चंद्रवार भद्रा 52.18(रात 3.59बजे तक) अर्थात् ब्रह्ममुहूर्त में 4 बजे से 5 बजे तक होली दहन कर देवे। इसके पूर्व भद्रा त्याज्य:है। भद्रापुच्छ जो भद्रा के पीछे तृतीयचरण में पूंछ 3 घटी(72मिनट) भद्रा समाप्ति के पूर्व में करने का लिखते हैं यह भी उतावलापन हानिप्रद है यथा- **भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपतिं हन्ति, ग्रामं दहति फाल्गुनी।।1।।** अर्थात् रक्षाबंधन भद्रा में यजमान व भाई आदि के लिये घातक है। होलिका ग्राम को घातक है अशुभ है। नहीं करें।

ग्रहण विवरण

खग्रास चंद्र ग्रहण

संवत्२०८२ भाद्रपद शु.१५ सूर्यवार ता.७.९.२०२५ई.।

समय	स्पर्श	सम्मीलन	मध्य	उन्मीलन	मोक्ष:	पर्व:
घटी पल	३८ २९	४१ १३	४२ ५९	४४ ५३	४७ ३७	९ ८
घंटा मिन.	२१ ४९	२२ ५५	२३ ३७	२४ २३	२५ २८	३ ३९

<u>ग्रहण विवरण</u>- इस ग्रहण का स्पर्श सायं 9.49 बजे व मोक्ष रात 1.28 बजे होगा। सूतक दोपहन 12.49 बजे(9 घंटा पूर्व लगेगा) मोक्ष 1.28 बजे के बाद सूतक निवृत्ति होगी। यह ग्रहण पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र कुंभ राशि पर लगेगा। यह खग्रास पिशंगवर्ण(ललाई लिये भूरे रंग) का होगा। राशियों पर प्रभाव-(1) मेष पर शुभ,वृषभ पर शुभ,मिथुन पर मध्यम, कर्क को मृत्युवत् कष्ट, सिंह को मध्यम,कन्या शुभ, तुला मध्यम,वृश्चिक अनिष्ट,धनु शुभ, मकर मध्यम,कुंभ अनिष्ट,मीन पर अनिष्ट प्रभाव रहेगा।

ग्रस्तोदित खग्रास चंद्र ग्रहण

संवत्२०८२ फाल्गुन सुदी १५ मंगलवार ता.३.३.२०२६ई.

समय	स्पर्श	सम्मीलन	मध्य	उन्मीलन	मोक्ष:	पर्व:
घटी पल	२१ १०	२४ ४८	२५ १२	२५ ५४	२९ ३२	८ २२
घंटा मिन	१५ ३१	१६ ५८	१७ ७	१७ २४	१८ ५१	३ २०

<u>ग्रहण विवरण</u>- इस ग्रहण का स्पर्श दिन को 3.31 बजे मोक्ष सूर्यास्त के बाद 6.51 बजे होगा। सूतक प्रात: 6.31 बजे(9घंटा पूर्व) लगेगा। सूतक निवृत्ति सायं 6.51 बजे मोक्ष के बाद होगी। यह ग्रहण पूर्वा फाल्गुनि नक्षत्र,सिंह राशि पर लगेगा। इस ग्रहण का रंग पिशंग वर्ण ललाई लिये भूरे रंग का होगा। राशियों पर प्रभाव- मेष- मध्यम, वृषभ- अनिष्ट, मिथुन- शुभ, कर्क-मध्यम, सिंह-अनिष्ट, कन्या- अनिष्ट, तुला-शुभ, वृश्चिक-शुभ, धनु-मध्यम, मकर-मृत्युवत् कष्ट, कुंभ-मध्यम एवं मीन पर शुभ रहेगा।

राजस्थानी भाषा में नवों टीपणों वाचवा री विगत

।। **श्री गणेशाय नमः।। सुण्डालो दुख भंजणो, सदाज बालक वेश,सारो पेला सिवरिये गवरी पुत्र गणेश।।१।।** सुणजो नवी काशी री पोथी,सुणतो पिण्ड रा पाप जासी, सुणजो नवां टीपणां री बातों,नही दूखे छाती ने माथो। सुणजो नवा टीपणा री घड़िया, नही दुखे पांव ने कडियो।। सुणजो नवा टीपणा रा मंत्रभाव,नही दूखे हाथ ने पांव। एक चित सू सांभले तो छः महिनों रा पाप जाय छः महिनो रीआवरदा वधे। स्वस्ति श्री जोधपुर नगरे महाराजाधिराज श्री..........आयुष्मान् भवः। आपरे एक छत्र राज मे ओ नवो टीपणो संवत्२०८२ रो वाचीजे। पेलीपेल ब्रह्माजी ऐ श्रृष्टि रचना कीनी जरे सतयुग हतों, सतयुगरा १७,२८००० वर्ष गया है। उनमे भगवान विष्णु मत्स्य कच्छप, वराह, नरसिंह रा अवतार हुआ है। पछे त्रेतायुग रा १२,९६००० वर्ष गया जिणमें भगवान वामन् परशुराम, श्रीरामचन्द रा अवतार हुआ है। पछे द्वापर जुग आयो,द्वापर जुग रा वर्ष८,६४००० गया है। जरे भगवान श्री कृष्णचंद,बलराम जी रा अवतार हुआ है। इण बाद कलयुग आयो जो चाल रयो है। कलयुग रा वर्ष ४,३२०००है। इणमें बुधा अवतार हुआ है। अरु कल्कि अवतार होवसी। **कलियुग रा ५१२६वर्ष बीत्या है जरे ४२६८७४ वर्ष बाकी रया है।** हमें बुद्धा अवतार हाले है,मोनवी आपो आपरी बुद्धि रे लारे चाले है। कली आयो जरे कल कारखानो रो जमानो,कुबुध रो जोर, अरु मानवी कुमार्गे चाले है। मां ने बेटो रांड केने बतलावे। एक तो इन्द महाराज है,दोय तो लोचन है। तीन तो त्रिभुवन च्यार तो वेद है। पांच तो पांडव हुआ, षट्कर्म है। सात समुद्र है। अष्टकुल पर्वत है। नवकुल नाग है। दश तो श्री ठाकुरजी रा अवतार है। ग्यारह रुद्र है। बारह मेघमाला है। १३ तेज, १४ रतन, १४ विद्या है। १५ तिथि है। १६ कला है। श्री चंद्रदेव री अठारभार वनस्पति फूल रही है। सतियों में सीता माता है। नदियो मे गंगा नदी। भाईयों मे राम लक्ष्मण री जोड़ी,तीर्थों मे प्रयागराज है। तेजे तेजे सूरज तपे,ब्रह्मा बैठा वेद जपे। राजा प्रजा ने पाले,प्रजा आपरो धर्म कर्म करे। धर्म पाप ने नही जोणे,उण प्राणी ने जमोरा दूत तोणे। जाय नरक खाई मे नोंके। ऊंचा देखे तो कागला चोंच मारें,नीचों देखें तो कीड़ा खावे। पापी पडियो पुकार करें,भगवान मनें मिनक जन्म मे मेलो। पापियो ने वार वार मनुष्य जन्म नहीं मिले,लख चौरासी जीवा जूंण भोगी ने मिनक जन्म मिले है। हे प्राणी। थू पुण्य करजे। **"पुण्येन लभ्यते व्याधि,पुण्येन लभ्यते प्रजाः। पुण्येन लभ्यते शत्रु यतो पुण्य ततो जयः।।१।। पुण्ये करसण पाकरा,पुण्ये वर्षे मेहः। पुण्ये लक्ष्मी आयमिले पुण्यतणों फल ऐह।।२।। करयों सु टळे नही पावरियों नही होवे धर्म री पाल, धन वरसन्तो तिरसो मरे पपीया रो अवतार।।३।। किणरा घोड़ं हाथी, किणरा मां ने बाप जासी अकेलो जीवड़ा,साथे पुण्यने पाप।।४।। खाजों पीजो ने खर्चजो,तीर्थ करजो जाय। राम्या चीसण रा चीसकरो,डण्या खादरा मोय।।५।। बनवंती मत कर धन रो गारबो,मत कर पूतां रो अहंकार। पड़ियक झोलो वायसी धरबर री पणिहार।।६।। सवासेर सोनो पेरवी,मरती मोतियां सु भार बन ने चीवन प्रोमणां चातो नही लागे वार।।७।।** अबे इण वर्ष री साखी भैरव पूछे, अरुभवानीभाखे तको सुणो।। इणबाद वर्ष रा विश्वा,संवत्सर रो फल सुणावणो। चैत्र चिरमिरो है,वैशाख निर्मलो है। ज्येष्ट मे डरडम्बर वायरा वाजे,नवोणी इग्यारस ऊपर कठेइक हिरणियां पावे। आषाढ़ मे आद्रा भरे खाद्रा, सगले वरखा होवे। श्रावण में ७ दिन री झड़ी लागे, नदी नाला घणा ।भादरवो भागे करमे भलो होवे। आसोज दोणी ने भाग पोणी। कातिसरा कण भाव नीपजे। सियाला मे कटक चालसी छत्र टूटसी भाव ताव तेजी मंदी मे चालसी। **मतकर जोशी आल जंजाल,ज्योंहि शनिश्चर त्योंहि काल।।८।।** छोटी बड़ी दो पनोती है ,छोटी २।। वर्ष, बडी ७।। वर्ष चाले है। बड़ी पनोती राजा रामचंद्रजी ने आई, चौदह वर्ष वनवास करायो। औरंगसा बादशाह ने आई झगड़ा में मारा गया। सीतामाता ने आई कूड़ा कलंक लगावियो। हनुमानजी ने आई जद डावो पग खोड़ो किनों,राजा रावण ने आई जद लंका रो नाश कीनो। राजा विक्रमादित्य ने आई जद चौरंगो कीनों,चित्रोम रो मोर हार गिटियों। **आवती झटको देवे तो जावती लाभ देवे। आवती लाभ देवे तो जावती झटको मारे।** बालपणां मे आवे मां बाप दोनु मांयसु एक मरे। जवानी मे टाबर या स्त्री मरे। तीजी पनोती मे खुद मरे। सोना,लोह रे पाये तो आकरी। तांबा,चांदी होवे तो लाभ देवे। बाप बैठो बेटा नें आवे तो बाप ऊपर भार,शनि राजी होवे तो राज देवे,**शनिदेव सारो मे सरे,पूजा भाव सु दुख सारा टरे।।९।।** टालियों टले,बालियों बले। कीड़ी मकोड़ी,गाय पंखेरु ने चुगो नाकजो। गाय ब्राह्मण री प्रति पालना राखजो,पूजियो पुण्य मिले। पुण्य री जड पीयाल में। गुड़ रोटी गायनें देवण सुं गुरु रो दोष टले,लूलों पांगलो ने भोजन देवणसु राहु केतु रो दोष टले। मोटाग्रह पूजिया सु लाभ देवे। **मत कर घमंड ने गुमान,मत कर मुंड सुं बड़ाई। फल फल उमरा जाता है,पग पग जोखम ने जमी पराई।।१०।। अन्याई सु जात है राज तेज और वंश। तीनो ताला लग गया,रावण कौरव और कंस।।११।। कांचो पारो ब्रह्मरस शिव निर्माल्य खाय। नापकडे रे बालक ज्यू झडामूल सु जाय।।१२।। धरके कबरो फूटसी, तलवारे टांटियां टूटसी,भालों के भावरवो नाचसी,कलु रा वर्तमान चाल सी,सवा हाथ री मानवी होसी,**अन्न पाणी,हवा बिगड़ सी। खरणियां छाया मे बैठसी,भीलियों राजा जागसी। हिंजड़ियों राज आवसी। झूठी सांची बातों सु विलमावसी,ताली पटाक सु राज लेसी। **वेश्या वेसी हिंगळू बांध सिर हथियार। सूवण मे मूतण लगे,चलती देख तलवार।।१३।।** चाम कागज रा रुपिया चालसी। आकाश मार्गे वाणी वेसी। चोर उचक्का राज करसी खूनी क्रांति होसी। **सात काल सत्ताईस जमाना, तेसठ सुरिया खाणा। तीन काल ऐका पडे,माँ ने पूत मिले नहीं पणा।।१४।। पग पूंगल धड़ कोटडे,बाहु बाडमेर। कद कद आवे जोधपुर,ठावो जैसलमेर।।१५।।ओ काल रो वासो है।**

अबे छः दुःख सांभलो ने बचने रेवजो–पहलो दुख परायो जोखो,दूजो दुख हाथ मे होको,तीजो दुख लुगाई भोली,चोथो दुख टाबरों री टोली,पांचवों दुख कड़वी बोली छठो दुख दोस्त रो धोखो। **अब सात सुख सुणो**–पहला सुख निरोगी काया,दूजा सुख घर मे माया,तीजो सुख पुत्र आज्ञाकारी, चौथो सुख पतिव्रता नारी,पांचवों सुख राज में पासो,छटो सुख सुस्थाने वासो,सातवों सुख पड़ोसी चोखो,धर्म कर्मसु ऐ सातो सुख देखो।

पण्डित तो निरखे नमे शास्त्र रे परमाण। दगाबाज दूणा नमे चीता चोर कमाण।।१५।। जिणरी छाती होय न बार। उणसुं सदा रहो हुंशियार।।१६।। कीड़ी संचे तीतर खाय,पापी रो धन परले जाय।।१७।। छप्पा री बैठक बुरी परआशी की छांह। निरे रो रसिया बुरा,नित उठि पकड़े बांह।।१८।। फेनिया सेवक,सुन्दर नारि। जीर्ण पट्ट कुराज दुख पारि।।१९।। उधार काढ़ि व्योपार करावे,कुजन लगावे तालो। साला रे संग बहिन पठावे,तीनो रो मुंह कालो।।२०।। बड़े पूत पिता रे धर्मा,बेटी उपजे आपरे कर्मा।।२१।। जिण घर सासू सारखी तिरियां री हो सीख, श्रावण में बिन हल चढ़े तीनों मांगे भीख।।२२।।

आलस नींद किसान नें, नासे चोर ने खांसी । आंखियां कुलम वैस्या ने, वाबो नासे राखे दासी।।२३।। पर प्रय वणिज सविशे खेती,बिना वर देखे ब्याहे बेटी। धन पराये होवत हाती, ये चारों मिल फूटे छाती।।२४।। चोर जुआरी गंठ कट्या,यार अठ नार छिनार। सौ सौगन्धे खायकों,पाव न करो इतवार।।२५।। घर घोड़ा पैदल चले,तीर चलावे बीन। धन धरै दामाद घर, जग में मूरख तीन।।२६।। परमुख देखि अपन मुख नोवै। चूड़ी कंकण वेसहि जोवै। झांकत टेरि के पैट दिखावे। अन छिनारि का ढोल बजावे।।२७।। ओछी बैठक,ओछो काम ओछी बातें आठों याम। ये तीनों करसी काम निकाम, भूल न लीजो इण रो नाम।।२८।। पाप छिपाया ना छिपे,छिपे तो मोटो भाग। दबी दबाई ना रहे, रुई लपेटी आग।।२९।। चालतो चालतो होको पीवे वा रोटी खावे तो कुत्ता रो जमारो आवे। ऊबी ऊबी स्त्री बालक नें धवरावे तो कूतरी रो जमारों आवे,चोणा सू चोणो तोड़े तो ऊदाई रो जमारों आवे। दीवाली दीवों लगावे तो पतंगिया रो जमारो आवे। सासुनें बहु आपस में लड़े तो बोगी रो जमारों आवे। देराणी जैठाणी लडे तो वागल रो जमारो आवे। धणी लुगाई लड़े तो डाकण रो जमारो आवे। पर जात सुं प्रीति करे तो मंडुरी रो जमारो आवे। धणी स्त्री ने मारे,तो ऊंण घर में देवता नहीं रेवे। घर रा धणी री हाजरी उठावे तो उणनें स्वर्गा सुं सांमेला आवे,पाताल री पदमणी होवे। **अपना पति ने छोड़ने पारका पुरुष सुं प्रेम करे तो बाल विधवा होवे।** घराधणी ने जीमाड़ियो वगेर जीमे तो मीनकी रो जमारो आवे। वासी बरतन राखे तो भूख भेला होवे,अन्न देवता री दुराशीष लागे। चूला में पाणी नाक चूलों बुजावे तो कर्जो बढ़े। सांजरो बुआरो काडे तो लक्ष्मी पाछी जावे। घर में धूप दीप होवे तो देवताओं रो वासो,अन्नधन लक्ष्मी भण्डार भरियोड़ा रेवे। घर में तुलसी,गाय,जीमणी सूंड रो शंख, सालगराम, गणेशजी,एक आंख रो नारियल राखण सुं लिछमी बढ़े।

अन्न धन घणो करे,शुभ मंगल दातार। श्री महालक्ष्मी की पूजता भर रखे भंडार।

"जो नर चाले पालसी पुण्य तणां फल जोय" ज्योतिष शास्त्र देखतों जमानों १६ आना आवसी। गौ प्रजारा भाग्य प्रबल छै,पछै श्री विश्वनाथ भगवान करसी सो होसी। आगे ब्रह्माजी विष्णु भगवान ने नवो टीपणो सुणावता जरे सोना री मोहरों सुं ब्रह्माजी रो खड़ियो भगवान भरावता, ऊंण मोहरों सुं ब्रह्माजी जगत रो पालण पोषण करता आ **सतयुगक री वात है। त्रेता में रामजी** ने गुरु वशिष्ट नवों टीपणों सुणावतां जरे रामजी गुरु नें भूमीदान देवता ने गुरुजी सब भूमी गोचर गायों रे चरवा वास्ते पुण्य भूमी छोड़ता। **पछै द्वापर युग में** पाण्डवों ने गुरु द्रोणाचार्य जी नवो टीपणों सुणावता जरे पाण्डव कपिला गऊ, सोनारी सिंगड़ियों,चांदी री खुरियों, झंवर पूंछ वाली दूजड़ी गाय देवता। **कलयुग में नवों टीपणों सुणें**,टीपणां रो मोल देवे। **गाय दूजे छः महिना टीपणु दूजे बारे महिना।** एक टीपणों ब्राह्मण नें **देवे तो गऊ दान रो पुण्य होवे।** टीपणों सांभलवा में ध्यान राखे,जिणनें आबू अम्बाजी गया रो पुण्य होवे। व्रतक थोड़ो ने दान पुण्य घणों है। **आज वृति वृतकधारी,सूर्य नारायण उदेकरणी,पोडषी प्रतिपाल करणी,दातारों री जय करणी, राक्षसों री क्षय करणी । आज वरती.....तिथि......वार। खेड़ा री पृथ्वी विद्यारं दान, नवों टीपणों सुणें, सांभले जिणने सब कोई साथ ने गंगाजी रा स्नान। सगला नें राम राम।**

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय। नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय,गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।१।।

ॐ गं गणपतये नमः । श्री महालक्ष्म्यैनमः। ह्रीं सरस्वत्यैनमः। श्री गुरुभ्योनमः

पंचांग प्रवर्त्तक दैवज्ञ
स्व.पं. भवानी शंकर द्विवेदी

ॐ नमो भगवते संवत्सराय। अथास्मिन् विक्रमाब्दे शृष्टि तो गताऽब्दा १९५५८८५१२२ तत्र कृतयुग प्रमाण १७,२८००० अस्यां वेलायां विष्णु मत्स्य कच्छप वराह नृसिंहावतार । त्रेतायुग प्रमाण १२,९६०००युगेस्मिन् श्रीवामन, परशुराम, श्रीरामचन्द्राऽवतारः। द्वापरयुग प्रमाणं ८,६४००० अस्मिन् युगे श्रीकृष्णः बलरामयोः अवतारः। कलियुग प्रमाण ४,३२००० तन्मध्ये बुद्धाऽवतारऽभवत्, कलि शेष:८१८ वर्षे कल्कि अवतारस्यात्।। गतकलि:वर्षाणि ५१२६भोग्यकलि: ४,२६८७४ (अयन गणना प्रति वर्ष मेकलिप्तानुसारेण गतकलि:१२,३०१,भोग्यकलि:४,१९,६९९)शास्त्रानुसारेण श्रीराम रावण युद्धगताब्दा:८,८०१६५। श्री कृष्णाऽवतार गताब्दा:५२५१, कौरवपाण्डव युद्धगताब्दा:५१२६, एवं श्रीमन्नृपतिवीर विक्रमा दित्य राज्यात् संवत् २०८२ श्रीशालिवाहन शाक:१९४७**वर्षेस्मिन् (१)राजा शनि** (२)उपराजा **सूर्य(३)मंत्री सूर्य (४)सस्येश बुध** (५) धान्येश मंगल (६) **मेघेश सूर्य (७) रसेश शुक्र** (८) **नीरसेश बुध** (९) **फलेश शनि** (१०) **धनेश बुध (११)दुर्गेश सूर्यः–एते वर्षमध्ये दशाधिकारिणः।** तत्र बार्हस्पत्यमानेन प्रभवादि षष्ट्याब्दानां मध्येरुद्र विंशतिकाया काल**संवत्सर।** गुरूदयमानीय वर्षनाम **'मार्गशीर्ष'।** मेघनाम नील:। रोहिणी निवास संधि,समयनिवास वणिक(वैश्य)**गृहे**,नागनाम वासुकी,संवत्वाहन महिष,**संवत्(वर्ष)विश्वा १२,कृष्णा रोहिणी** आषाढ़क् १४मंगल रोहिणी १२/९,स्तंभ २जल,सोमवती **अमावस्या** ०,सोमवती पंचमी १, अंगार की **चतुर्थी १, बुधाष्टमी १,** रविवारीय सप्तमी २, रविवारीय **दशमी** १,सूर्यग्रहण०,**चंद्रग्रहण** २,शनिदृष्टि उत्तर, उत्पत्ति विश्वा ९३, खपति विश्वा ८१,संवत् मुहूर्ता:३६०,संवत्दिनादि ३५४ **(सुभिक्ष)**, क्षया तिथि:१४, वृद्धि तिथि:७, पूर्णिमा घट्य:३८३/४३, अमावस्या घट्य:३८३/२५ अनयोरन्तरम् ०/१७ पूर्णिमाधिक्ये शुभवर्ष। सौभाग्य पंचमी कार्तिकशुक्ला ५सूर्य ४८/३० **वर्ष मध्ये विश्वा:– वर्षा ११, धान्य ११,तृण ५,शीत १३,तेज १७,वायु १३,वृद्धि १५, क्षय: १५, विग्रह १५, अहंकारेक्य: ११५, क्षुधा ११,तृष्णा ९, निद्रा १५,आलस्य १५,उद्यम १३,शांति १५,क्रोध १३,दंभ ५,लोभ ३,मैथुन १५,रसनिष्पति:९,फलनिष्पत्ति१३,उत्साह११, उग्र १३,पाप१५,पुण्य५,व्याधि ५,व्याधिनाश ५,आचार ३,अनाचार ९,मरण ७,जन्म१७,देशो पद्रव ७,देशस्वस्थ १३,चोरभय३,चोरनाश:१३,कलौ धर्म १भाग,अधर्म३भाग,उद्भिज:(वृक्ष, लता,बेलादि) १३,जरायुज (मनुष्य,गो आदि पशु)३,अण्डज (पक्षी एवं विषजीव:)७, स्वेदज:(जूं,खटमल,मच्छर,कीट)११,पूर्ण विश्वा:२० भवति:। अनुपातानुसारेण फलादेश:।।**

भैरव भवानी संवाद

जग जननी जगदम्बिका,कहो भुवन के हाल।
संवत् बियासी वर्ष का,पूछत भैरव लाल।।१।।
राजा शनि डकेती रोग युद्ध,भूखमरी में देश।
फलेश शनि फल पुष्प नहीं,हिमपात रोग विशेष।।२।।
उपराजा मंत्री रवि,मेघेश दुर्गेश को ताव।
कम वर्षा फल दूध घी,न्याय मार्ग पर राज।।३।।
सस्येश नीरेश धनेश बुध,बहु खेती व्यापार।
यज्ञ यजन बहु विश्व में,हो निरुपद्रव संसार।।४।।
धान्येश मंगल अमंगल करे,बहु तेजी हो जात।
महंगायी की मार सुं,जनता में उत्पात।।५।।
रसेश भृगु उत्सव बहु,मंगल मोद प्रमोद।
निष्पापी हो यज्ञ सुं,छोड़े भोग संस्कृति आमोद।।६।।
काल वर्ष रुद्र विंशति में,रोग मरण बहु लोग।
गुरु वर्ष मिगसिर पड़ो,नृप मरण को योग।।७।।
नील मेघ वर्षे घणो,आनंदित होवे लोग।
वासुकी नाग खेती घणी,उत्तम वर्षण योग।।८।।
रोहिणी बैठी संधि पर,खण्ड वृष्टि को लेख।
समयो बैठो वैश्य घर,बाजार तेजी में देख।।९।।
मकर संक्रांत माली घर,बहु वर्षा बलवार।
बारह विश्वा दो स्तंभ वर्ष,जलतृण हो अपार।।१०।
राजा शनि इण वर्ष में,कुंभ मीन को भोग।
पाप घट फूटे कुंभ में,मत्स्यावतार रक्षक योग।।११।।
शनि पूषा उभा रेवती,राक्षस भूत शनिवार।
शनिवार दिन छोड़कर,शुभ कार्य निर्धार।।१२।।

बुध गुरु शिव संहार में,दुराचारी मिथुने मार।
हिन्दु रक्षक कर्क गुरु,तीन राशि गुरु संचार।।१३।।
मृग पुष्य आश्लेष गुरु,गुरुवार पडंत।
पुत्र धन सुख संपदा,निश्चय काज सरंत।।१४।।
अश्वनी रोहिण उफा चले,हस्त चित्रा बुध देख।
बुधवार दिन कार्य करें,पुत्र सुख को सेव।।१५।।
आश्विन आद्रा चित्रा भृगु,विशा धनिष्ठ शतभीष।
शुक्रवार दिन कार्य सु,मिले धनधान्य आशीष।।१६।।
समुद्र युद्ध मीन राहु में,मारे कन्या केतु व्यभिचार।
पाप घट राहु फोड़ दे,सिंह केतु युद्धोपद्रव संहार।।१७।।
चैत शनि वैशाख रवि,जेठे मंगल पांच।
परचक्र गर्मी घणी,चक्रास्फ जन नाश।।१८।।
हाली अमा रवि वैशाख में,छत्रभंग को योग।
आखातीज को रोहिणी,सुख सुभिक्ष को भोग।।१९।।
वैशाख सुदी नम मंगली,मघा रिख संयोग।
रुण्ड मुण्ड पृथ्वी गिरे,रोग शोक जन भोग।।२०।।
रोहिण माहे रोहिणी,अमा मंगली देख।
हाथ खप्पर ले फिरे,भूखमरी को लेख।।२१।।
गुरु अस्त आषाढ़ में,आद्रा रिख पर देख।
फसल जले गर्मी पड़े,खण्ड वृष्टि को लेख।।२२।।
शकट भिन्न रोहिण भृगु,आषाढ़ श्रावण के मास।
रुण्ड मुण्ड हो मेदिनी,जग जन बहु संत्रास।।२३।।
गुरु उदय आषाढ़ वद,घण बादल वर्षा देख।
कच्छप वाहन पुखे रवि,बाढ़ आवन को लेख।।२४।
मंगल रथ आगे चले,पीछे चालत भाण।
जलनाड़ी मंगल करे,खण्ड वृष्टि जल हाण।।२५।।
भादो नीर नाड़ी ग्रह,मघा कच्छप बाढ़।
रवि आगे मंगल चले,अल्प वृष्टि बहु राढ़।।२६।।
खग्रास ग्रहण भादो सुदी,कुंभ राशि पर देख।
दुर्भिक्ष युद्ध रविवार में,छत्रभंग को लेख।।२७।।

आसो वदी उफा रवि,डेडर वाहन वर्षन्त।
बुध ऊगो आसो सुदी,बहु वर्षा बहु हर्षन्त।।२८।।
कार्तिक वदी प्रतिपदा,टूटी रजस्वला योग।
व्यापारी टूटे घणा,देव दीवाली भरणी योग।।२९।।
दीपावली सोम शुभंकरी,जनता बहु हर्षाय।
जो मंगलवारी करे,दीपावली दुख दर्शाय।।३०।।
बीज भृगु तृतिया शनि,ग्यारस शनिश्चर वार।
मार्गकृष्ण में जनक्षय,छत्रभंग निर्धार।।३१।।
मार्ग सुदी सु क्षय तिथि,लगते पांचो मास।
जन रक्षक जगदीश है,छत्रभंग बहु नाश।।३२।।
एकम रोहिण पोष वदी,पांचम मंगलवार।
छत्रभंग जन नाश हो,प्रकृति ताण्डव वार।।३३।।
राक्षस गण भृगु अस्त में,हिन्दुराष्ट्र उत्पात।
महामारी शोक भय चहुं,प्रकृति कोप आघात।।३४।।
कर्क मकर एकवार की,संक्रांति खर्परयोग।
अमा पूनो रवि सुद सप्तमी,माघे छत्रभंग संयोग।।३५।।
शुक्रोदय माघ शुक्ल में,राक्षस गण विचरंत।
छत्रभंग जग बहु मरे,वर्णशंकर भिडंत।।३६।।
चार पांच ग्रह भेला हुआ,फागुण में तुम देख।
रक्त रंजित पृथ्वी हुवे,जल पूरित पृथ्वी लेख।।३७।।
अमा पूर्णिमा भौम की,फागुण मंगल पांच।
कटाकटी हो जगत में,आवे अग्नि उपद्रव आंच।।३८।
चंद्रग्रहण मंगली,खग्रास सिंह में देख।
फागुण में अमंगल करें,राजभंग को लेख।।३९।।
चैत बेठो बुधवार को,काल पड़ंतो देख।
मीनार्क शनि राक्षसी,रुंड मुंड मही लेख।।४०।।
दो राश शनि चले,तीन राश गुरु चलंत।
दो राश राहु केतु सुं,दो दो हाथ भिडंत।।४१।।
गत वर्ष गर्मी पड़ी,बहु वर्ष्यो घन मेह।
भवानी साँची नीत बिन,उड़े पिछाड़ी खेह।।४२।।
अम्ब कहे भैरव सुणे,लिखताहि पृथ्वीराज।
काल सुगाल राजा लड़े,कहत भवानी आज।।४३।।

पूज्य गुरुदेव

स्व. पं. भवानीशंकरजी द्विवेदी [illegible]

-: संवत्सरफल :-

ॐ ब्रह्मा मुरारि स्त्रिपुरान्तकारी, भानु शशी भूमि सुतो बुधश्च:।
गुरुश्च शुक्र: शनि राहु केतव:, सर्वे ग्रहा: शांतिकरा भवन्तु:।।

राजा शनि- शनैश्चरे भूमिपतौ [illegible] प्रभूत रोगै:परिपीड्यते जन:।
युद्धं नृपाणां [illegible] तस्करादौ भ्रमन्ति लोका:क्षुधितान्च देशान् ।।१।।

उपराजा सूर्य- सूर्ये नृपे स्वल्प फलान्च मेघा:स्वल्पं पयो गौषु जनेषु [illegible]।
स्वल्पं सुधान्यं फलमल्प वृक्षा श्चौराग्नि बाधा निधनं नृपाणाम् २।

मंत्री सूर्य- नृपभयं गदगोपि हि तस्कराद्प्रचुरधान्य धनादि महीतले।
रसचयं हि समर्घतमं तदा रविरमात्यपदं हि समागत: ३।।

सस्येश बुध- जलधराजल राशिमुचो भृशं सुख समृद्धियुतं निरुपद्रवम्।
द्विजगण:श्रुतिपाठ कर:सदा प्रथम सस्यपतौ सति बोधने।।४।।

धान्येश मंगल:- भूमिजे ग्रीष्म धान्येशे ग्रीष्म धान्य महार्घकम्।
शालीषु घृततैलादि महर्घाणि भवन्ति च।।५।।

मेघेश सूर्य :- जलदपे यदि वासरपे तदा सरसिवैरमते जनता रसम्।
[illegible] धनेषु निवार सुवारिभि:सुखचयं सुलभं भुवि वर्तते।।६।।

रसेश शुक्र:- यजन याजनकोत्सव [illegible] जनपदा [illegible] मानसा:।
सुख सुभिक्षसु [illegible] धराधरणिपा इत पापगणप्रिया:।।७।।

नीरसेश बुध- [illegible] चंदनपूर्वकम्।
अर्घ वृद्धि: प्रजायते नीरसेशो बुधोयदि।।८।।

फलेश शनि:- यदि शनि:फलप: फलहानये ज्वलित पुष्प [illegible]:सदा।
[illegible] धर तस्कर जन्तुभी र्जनपदो [illegible] राशि [illegible]:।।९।।

धनेश बुध:- प्रविभपो हिमरश्मि सुतो यदा विविध [illegible] वस्तुफलार्घदा।
द्विजवरा जप यज्ञ सुसंयुता:कृषि विशेष विशेषित मानसा:।।१०।।

दुर्गेश सूर्य:- नय विशेषकर स्तापि स्तथा [illegible] नर राज्यपुरोगमा:।
समधिकोन तथा नृपजोन्यज:स्वपक्षे प्रजतां नमयं क्वचित्।।११।।

[illegible] नाम संवत्सर:- वत्सरे कालयुक्ताख्ये सुखिन: सर्वजंतव:।
सन्त्यवापि [illegible] सस्यानि प्रचुराणि तथा गवा:।।१२।।

गुरुउदीयमान मार्गशीर्ष वर्ष:- मार्गशीर्षेऽब्दस्य वृष्टि:सस्य हानिरनेकधा।
राजानो युद्ध निरता अन्योन्य वध कांक्षिन:।।१३।।

मेघ नाम नील:- सस्यपोषिणी [illegible] गोकुल पूर्णा वसुधा किल मही परि पूर्णा।
नीलनाम्नि [illegible] जल वृष्टि र्जायते सकल मानव तुष्टि:।।१४।।

रोहिणी निवास संधि:- "संधि संस्थं यदा ब्राह्मणं [illegible]।
खंड वृष्टि स्तथा सर्व [illegible]:।।१६।।

नाग नाम वासुकि:- ज्येति [illegible] वत्सरेस वासुकि [illegible]:।
प्रभूतं धान्यदायक:सुवृष्टि: कारक स्तथा।।१७।।

आर्द्रा प्रवेश लग्न:-सवत्२०८२ आषाढकृष्णा १२ सूर्य ३८/२८ भरणी१६/३३,सुकर्मा१६/३६ परं धृति नैतिल कर्णे,ता.२२.६.२०२५ई.प्रात सूर्य २/६/२६/५६ग.५६/५६ आर्द्रायांगवि १३/४६, मेषे चंद्र:

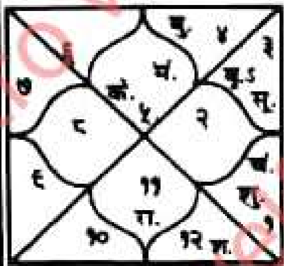

[illegible] शिव नक्षत्रं प्रविष्टश्चे दिवाकर। नानाविध शुभं [illegible]: प्राप्नोति निश्चितम्।।१।। अर्थात् द्वादशी को आर्द्रा प्रवेश से मनुष्यों को नाना प्रकार के शुभ फल मिले। **दिनपतिवारे पशुपतिखिन्नो। दिनपति वेशे सति पशुनाश:।।२।।** रविवार में आर्द्रा से पशुओं का नाश हो। **अर्कस्य रौद्र स्थिते भरणी [illegible] योग बाहुल्यं शुभं नैवकदाचन।।३।।** अर्थात् भरणी नक्षत्र हो तो रोग बाहुल्य हो और शुभ कुछ नही हो। **सुकर्मा नामयोग [illegible] विनिर्दिशेत्। तदा समस्त भूसुरा:सुकर्मकर्तुमुद्यता:।।४।।** अर्थात् सुकर्मा में हो तो सम्पूर्ण ब्राह्मण लोक अच्छे कामों के करने में उद्यत (तैयार) हों।

जगल्लग्न: मेषेऽर्क प्रवेश:

संवतु २०८२वैशाख कृष्णा १ सूर्य ६०/०,चित्रा ३४/५ पर स्वात ,हर्षण ३५/१६पर वज्र,कौलकर्ण। ता.13.4.2025ई.प्रात:सूर्य ११/२९/१०/४२ ग.५८/४६,तुलेचंद्र मेषे ऽर्क५०/२९ल.९/१३ चैत्र मास में गर्मी प्रकोप,राजा प्रभावशाली रहे। वैशाख में अर्थव्यवस्था सुदृढ होवे। ज्येष्ठ में व्यापार अच्छा। आषाढ़ में गर्मी ज्यादा परन्तु राजव्यवस्था सुदृढ़। श्रावण में अच्छी वर्षा,खेतियां अच्छी। भाद्रपद में खंड वृष्टि। आश्विन में खड़ी फसलें सूखे। अग्निउपद्रव होवे। कार्तिक मास अच्छा रहे। व्यापार श्रैष्ठ। माघ फागुण में व्यापार अच्छा कही घाटा पड़े।

वर्ष (संवत्सर)लग्न:विचार

वर्ष लग्न:- अमान्त चैत्र शुक्ला १ प्रवेश विक्रम सं.२०८१ चैत्र कृष्णा ३० शनि २०/५६पर प्रतिपदा,उभा.२८/३०,ब्रह्मा ३६/४ नाग २०/५६ परं किंस्तुघ्न ता.२९.३.२५ई.।प्रात:सूर्य ११/१४/२५/१३ग.५९/२०, मीनेचंद्र: अमा.इष्ट२०/५६ ल.३/२२ **कर्केसुखंच पूर्वस्य मुत्तरस्यांतु [illegible]। स्वाभ्यासन [illegible] दुर्भिक्षं पश्चिमे दिशि।।१।।** कर्क लग्न में वर्ष प्रवेश से पूर्व में सुख,उत्तर में दु:ख तथा आसन (सत्ता) का बल और पश्चिम में दुर्भिक्ष होवे। ईशान व उत्तर दिशा के बीच प्रदूषण से रोग,पीलिया आदि फैले।

लाभ खर्च (अष्टोत्तरी मतेन)

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	१४	८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२
खर्च	१४	८	५	५	१४	५	८	१४	८	२	२	८
फल	क्लेश	विजय	विजय	लाभ	अपयश	विजय	विजय	क्लेश	लाभ	मानयश	मानयश	लाभ

देश विदेश की भविष्यवाणियाँ

(विशेषतः-विश्व परिपेक्ष्य मे ये भविष्यवाणियाँ है। छत्रभंग का अभिप्राय- सत्ता, सत्ताधीश व बड़े नेता से संबंधित जानें। राजा का अभिप्राय सत्ता पर बैठा नेता, मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति व प्रख्यात व्यक्ति से जानें। सत्ता पर क्रूर योगों का फल जल्दी प्रभावी होता है जो इसमें राजनैतिक भविष्य दिया गया है। अच्छे बुरे योगों का फल ''मौसम भविष्य'' मे पढ़ें)

पश्चिमीय देशों में भारी विनाश : मीनावतारवत् बचाव : भारत वंदनीय!!

इस वर्ष में दण्डााधिकारी शनि कुंभ(घड़ा) व मीन(मत्स्य,मत्स्यावतार) इन दो राशियों पर अतिचार,वक्री मार्गी की चाल से वर्षान्त में मीन राशि पर आरूढ़ है। प्रभावतः- **पूभा उभा रेवे शनि,रक्षोभूत हो शनिवार। राक्षस प्रकट हो जगत में,तब युद्ध भूकम्प संहार।। कुंभ छोड़ मीन शनि,प्रभावित राशि दोय। पापी मरे कलि कुंभ में,मीने शनि धर्म रक्षक होय।। म्लेच्छ युद्ध जल विप्लव हुवे, मीन शनि जब आय। स्थान वृद्धि शनि मीन में,भारत वंदनीय होजाय।।१।।** अर्थात् इस वर्ष में पूर्वाभाद्रपद (नीरनाड़ी), उत्तराभाद्रपद (सौम्य नाड़ी) पर शनि गतिशील रहेगा। वस्तुतः पूभा,उभा, रेवती पर शनि होने पर शनिवार के दिन रक्षोभूत(राक्षस भूत) का समय होता है। इस समय में संसार में राक्षस प्रगट होते हैं। तब इस समय में युद्धोपद्रव,भूकम्प आदि से संहारक(विनाशक) घटनायें घटित होती है। इस वर्ष मे कुंभ,मीन दो राशियों को प्रभावित कर रहा है। कुंभ शनि के समय के कलिकाल में पापाचारी मरते हैं और मीन का शनि धर्म व धर्मियों की रक्षा मीना अवतार की तरह करता है। मीन शनि में म्लेच्छों में युद्ध,जल विप्लव होता है। स्थान वृद्धि (धनु मीन गुरु राशि पर) शनि होने से भारत की (धनु राशिपति गुरु) मान बढ़ाने वाला है। जो विश्व में भारत की प्रतिष्ठा मान सम्मान बढ़ायेगा।

वर्ष में कुंभे शनि ता.८ जून २०२५ तक आगे ता.६.८.२०२५ से ता.१३.२.२०२६ तक वक्र मार्ग **शनि कुंभ** पर रहेगा। शास्त्रतः जनता धन,अनाज से सम्पन्न सुखी होवे **धर्माधर्मो विधत्ते सुखि निरत जनों मेघपूर्ण धरित्री। -कुंभगे सूर्य पुत्रो।।१।।**(वर्ष प्रबोध) पृथ्वी जल से पूरित होवे। धर्म अधर्म का विधान(कानून) बने। धर्म का प्रचार होवे। म्लेच्छ देशों में युद्ध होवे। वस्तुतः गत डेढ़ वर्षो के शनि कुंभस्थ में जल विप्लव,भूकम्प,तृतिय विश्वयुद्ध स्थिति रही है शेष इस कुंभ के शनि में राक्षसी कृत्य करनें वालें राक्षसों का विनाश होगा।

आगे **मीन का शनि**- ता.८ जून २०२५ से ६.८.२०२५ तक आगे ता.१२.२.२०२६ से अगले वर्ष में मीन पर (मत्स्या अवतार) राशि पर चलेगा। शास्त्रतः- **अर्क पुत्रो यदा मीने दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। सागराः सर्वनद्यश्च विनश्यन्ति चतुष्पदान्।।२।।** (भवि.भास्कर) अर्थात् मीन शनि में दारुण दुर्भिक्ष पड़े समुद्रों सभी नदियों व पशुओं का विनाश होवे।

पृथ्वी वैकम्प मात्रं प्रचलति पवनःकम्पते नागलोकः। सप्तद्विपेषु सिन्धोगिरिवर गहने सर्व वृक्षादि हानिः।। नाशः पृथ्वीपतीनां जनपद विलयो यान्ति मेघाः प्रणाशं। चक्रावर्तैःसमस्तं भ्रमति जगदिदं मीनगे सूर्य पुत्रे।।३।। (वर्ष प्रबोध) अर्थात् इस मीन के शनि में पृथ्वी कम्पित होवे, पवन चले, पाताल (अमेरिका) आदि में भूकम्प हो। सिंधु तथा पर्वतों में उत्पात हों,सब वृक्षादि की हानि हो,राजाओं का नाश हो,मनुष्यों का विनाश हो,मेघों का अभाव हो और प्रचण्ड पवन से सारा जगत घूमे। पूभा.शनि नीर नाड़ी में होने से **पूर्वा भाद्रपदा ऋक्षे यदा सौरिश्च संस्थितः। मेघश्च वर्षते तत्र लोकानांच हितायवै।।४।।** (अर्घप्रकाश) अर्थात् इस पूरे वर्ष में पू.भा.शनि ता.१४.३.२०२६ तक नीरनाड़ी पर चलेगा लोगों को हितकारक मेघ वर्षेंगे। यह नक्षत्र भी रक्षोभूत में होने से राक्षस के कारण पश्चिम के सम्पूर्ण देशों में अत्यन्त विग्रह और उत्पात होवे। **तदा भूपा विनश्यंति पृथ्वी शोणित पूरिता।।५।।** (भवि.भा.) अर्थात् राजाओं का नाश पृथ्वी रुधिर से पूरित होवे। **मीन शनीश्चर करता वास। सब देशनिका करता नास। अथवा घन हुइ परलोकाल। सागर कीजल तौरै पाल।। पुर पट्टन दीसै जु जलंत। साधु लोक जग घने क्षयंत।।६।।** (घाघ भड्ली) अर्थात् मीन शनि में देशों का नाश,अति वृष्टि,समुद्रतट,टूटे समुद्र जल का उल्लंघन से जल विप्लव, कई देशों में अग्नि उपद्रव में जलें,साधु लोगों व जगत् का क्षय होवे। प्रचण्ड

पवन,तूफान,भूकम्प,भयंकर महामारियों से जनक्षय होवे। शनि का मीन पर चलना, जलजीवों की रक्षा करना व समुद्र समुद्रीय जीवों को बचाना, विनाशक राक्षसों का क्षय करना,दण्डित करने का होता है। भगवान मत्स्यावतार श्रृष्टि के बीजों को बचाने के लिये विकट संकटकाल में हुआ था। ऐसे विकट काल से बचनें के लिये तारणहार नारायण(मत्स्य भगवान) की आराधना अनन्य भक्ति भाव से करें बचाव होगा,नारायण सुनेंगे। गुरु की राशि पर शनि व भारत की धनु राशि पति गुरु **"स्थान वृद्धि करो शनि"** भारत की वृद्धि,प्रगति,मान सम्मान विश्व में बढ़ायेगा।

प्रभावित राशियाँ- कुंभ शनि साढ़े साती पनौती प्रभावित देश मकर,कुंभ, मीन व ढैय्या पनौती धनु,सिंह राशि देश। शनि दृष्टि मेष,वृष,सिंह,कन्या, धनु राशि के देश,ग्राम,मनुष्य प्रभावित होंगें। पूर्व वर्णित शनि के प्रभाव से उक्त राशियें विशेष प्रभावित होगी।

गुरु से – दारुण भय : उच्च सनातन ज्ञान मत लड़ मरो :

इस वर्ष में गुरु जो भारत की **धनु राशि** का मालिक है वह वृषभ(बैल पर शिवरूप) मिथुन पर (दाम्पत्य जीवन,मैथुनी रूप) तथा कर्क पर (उच्चस्थ केकड़ा रूप) तीनों राशियों पर गतिशील होकर पूरी श्रृष्टि को प्रभावित करेगा। यथा- **भारत पति इस वर्ष में,तीन राशि को सेव। वृषे गुरु दानवदलन, यवन रक्षक भृगु देव।। मिथुने गुरु मैं व्यभिचारी मरे,करे राक्षस बुद्धि संहार। चेचक विसूचिका शर्करा,महामारी में संसार।। उच्च राशि गुरु बैठकर,देवे उच्च सनातन ज्ञान। युद्ध समय नहीं मत लड़ मरो,यह भारत प्रधान का आव्हान।।१।।** अर्थात् वर्ष प्रवेश से **वृषे गुरु** ता. ६.५.२०२५ तक शिवरूप में दानव राक्षसी कार्य करने वालों का विनाश करेंगे व दैत्याचार्य भृगु देव जो उनके सदाचार की बात शिवाज्ञा को मानेंगे वे यवनों के रक्षक होंगे। आगे **मिथुने गुरु** ता.७.१०.२५ तक व ता.२१.१०.२०२६ई. से मैथुनी श्रृष्टि में व्यभिचारी,वर्णशंकर मरेंगे जो राक्षस बुद्धि वालें होंगे उनका संहार होगा। सर्वत्र चेचक विसूचिका (हैजा आदि विषाक्त रोग),शर्करा व महामारी में संसार होगा। आगे कर्कस्थ उच्च गुरु ता.२१.१०.२०२६ तक होगा, जो संसार को उच्च सनातन संस्कारों का ज्ञान देगा। यह समय युद्ध का नहीं है लड़ लड़ कर मत मरो। यह आव्हान भारतीय प्रधानमंत्री (प्रधान श्री नरेन्द्र मोदी) ने सारे संसार को कर दिया है। शास्त्र वचन- **यदा जीवो वृषे याति सुभिक्षं सर्व सौख्यम्। गोरसाज्यं महर्घाणि सस्यं च प्रचुरं भवेत्।।२।।** अर्थात् वृषे गुरु में सुभिक्ष,सभी सुख,गोरसादि घी आदि महंगे,फसलें बहुत होवे। आगे इस वर्ष में मिथुने गुरु का प्रभाव ज्यादा रहेगा। अतः **मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारूणं भयम्। नृपाणाम् विग्रह स्तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति।।३।।** अर्थात् मिथुन गुरु में दारूण(भयानक) भय,राजाओं में युद्ध व वर्षा कम होवे। इस ज्येष्ठ वर्ष में बालकों,घोड़ों में पीड़ा,खण्ड वृष्टि होवे। चोरों का उपद्रव,पापियों का नाश होवे। पश्चिम देश(सिंधु देश) वायव्य,उत्तर दिशा के देशों में चित्र विचित्र वर्षा तथा रोग पीड़ा होवे। श्रावण में भैंस,हाथियों को पीड़ा होवे। पूर्व, अग्नि दक्षिण,ईशान देशों में सुभिक्ष होवे। **राजास्वस्थः प्रजावृद्धिः सुभिक्षं मंगलं भुवि।।४।।** राजा लोग स्वस्थ रहें, प्रजा बढ़े,सुभिक्ष हो,पृथ्वी पर मंगल होवे। आगे कर्क गुरु में- **बृहस्पतिर्यदा कर्केस्वल्पं मेघः प्रवर्षति। राजाभिर्विग्रह श्चैव दुर्भिक्षं तत्र जायते।।५।।** अर्थात् कर्क गुरु में वर्षा अल्प,राजाओं में युद्ध व दुर्भिक्ष होता है।

प्रभावित राशियां- इस वर्ष मे वृष,मिथुन,कर्क राशियो पर धर्माचरण व शुभकार्यों से शुभ रहेगा। मनोबल मजबूत होगा। गलत कार्य करने से अशांति रहेगी। गुरु की दृष्टि से कन्या,तुला,वृश्चिक व धनु राशि के देशों मे शिक्षा चिकित्सा,धार्मिक कार्यों में शुभ। जनसंख्या में संतुलन रहेगा। स्त्रियों का उत्थान होगा। मकर राशि के देशों में अशांति उपद्रव,चरित्र पतन, विनाशक घटनायें घटेगी। प्रदूषण बढ़ेगा।

राहु केतु से- आकाश पाताल ब्रह्माण्ड में विस्फोट : परमाणु प्रदूषण से त्राण

इस वर्ष मे मीन (मत्स्यादि जीवों पर) राहु व कन्या (स्त्री) केतु ता.३०.५.

२०२५ई. तक चलेंगे आगे वक्रगामी कुंभे(घड़ा) राहु व सिंहे (सिंहादि व सैनिक) केतु वर्ष पर्यन्त चलेंगे। फलत - **मीन राहु समुद्र के,मरे मत्स्यादि जीव। आकाश पाताल ब्रह्माण्ड विस्फोट विस्फोट हो अतीव।। कुंभ राहु शनि मिलन सुं, दे पाप कुंभ को फोड़। बांध टूटे बादल फटे,जल विप्लव नही तोड़।। कन्या केतु कन्या बिके,सिंह केतु सिंह हाण। रणबंका रण झूंससी,करे परमाणु प्रदूषण त्राण।।१।।** अर्थात् मीने राहु से समुद्रीय मत्स्यादि जीव मरेंगे,आकाश पाताल,ब्रह्माण्ड में अतीव विस्फोट होवे पापाचारी मरेंगे। ब्रह्माण्ड में बहुत विस्फोट होंगे। आगे वर्ष में कुंभे राहु चलेगा व कुंभे शनि+राहु युति ता.६.८.२०२५ से वर्ष पर्यन्त चलेगी, जिससे पाप का घट फूटेगा(पापियों का भण्डाफोड़ होगा) बादल फटेंगे,बांध टूटेंगे,जल विप्लव होगा,बचाव के लिये कोई तोड़ नहीं मिलेगा। कन्या के **केतु में कन्या**(स्त्री जाति) विक्रय होगा। **सिंह केतु** में वन्य जीवों सिंहादि हिंसक जीवों का व सैनिक वीरों की हानी होगी। रणबंका रण में लड़ेंगे,परमाणु प्रदूषण से बचाने का उपाय भी करेंगे। शास्त्रतः- **यस्मिन् संवत्सरे राहुर्मीन राशौ प्रजायते। तस्मिन्मासे भयं विद्युद् दुःख कष्ट समागतः।।२।।** (वर्ष प्रबोध) अर्थात् जिस वर्ष में **मीन का राहु** हो तो उनके आक्रांत मास में बिजली का भय हो और कष्ट का आगमन हो। **पूर्वजाया मंगनाथं नैमिषेशे मुखागतौ-** राहु पू.भा.में अंग देश के राजा का उ.भा.में नैमिष देश के राजा का नाश करता है। **उज्जयिन्यां नृपं हन्या दुत्तरा फाल्गुनीगतः**- केतु उत्तरा फाल्गुनि में उज्जैन देश के स्वामी का,**पूफायां पांड्य नायकम्-** पू.फा. केतु में पाण्ड्य देश का स्वामी व **मघामंगनाथं च-** मघा में अंग देश के पति का नाश होता है। **प्रभावित राशियां-** मीन राहु कन्या केतु से मीन राशि ,कन्या राशि व धनु,सिंह,मेष राशि के देश,ग्राम,मनुष्य आदि के प्रभाव से "**राहु छुड़ावे वास,केतु छुड़ावे खेत**" के अनुसार स्थान परिवर्तन,पलायन व विषाक्त वातावरण,प्रदूषित वायु होवे।

चैत्र शुक्ल पक्ष में- भूकम्प : राजाओं में क्षोभ : जन पलायन

(१) पांच शनि का मास भूकम्प,ईशान देश में भंग, अग्निकाण्ड होवे। (२)चैत्र में पांच शनि,वैशाख में पांच रवि,ज्येष्ठ में पांच मंगल से इस **परचक्र** योग से जन पलायन,जनधन नाश होवे। (३) ता.४.४.२०२५ तक बुध,शुक्र वक्र होने से **यदा द्वौ प्रतिपगौ खेटौ नृपक्षोभयतदा-** राजाओं में क्षोभ, पीड़ित होवे। (४) ता.८ अप्रेल तक कुंभे बु.+शु.+श.तीन ग्रहों की युति **त्रयोऽन्नन्ति नराधिपं-** राजा का मरण होवे। (५) ता.३ अप्रेल से ता. १८ मई तक मंगल पुनः,पुक्ष पर व गुरु मृगसिर पर होने से **अंगारक योग** से भारी गर्मी,अग्नि प्रकोप,अग्निकाण्ड होवे। (६) वर्ष प्रवेश से १३ अप्रेल तक मीने सू.+रा.युति बड़े राष्ट्राध्यक्ष पर घात,परमाणु विस्फोट। (७) ता. ८ से १३ अप्रेल तक मीने सू.+बु.+रा.युति से **ग्रहयुद्धे भवेद् युद्धं** युद्धोपद्रव होवे। राजाओं में क्षोभ होवे। (८) ता.८ से १६ अप्रेल तक कुंभे शु.+श.युति **द्वौ ग्रहौ नृप संक्षोभं** राजाओं में क्षोभ,अशांति होवे। (९) ता. १२ अप्रेल से ता.८ जून तक कर्के भौम,कुंभे शनि से षडाष्टक भूकम्प,भारी गर्मी,ज्वालामुखी फटे,युद्धोपद्रव होवे।

वैशाख में - छत्रभंग : खप्परयोग : कालसर्प से प्रदूषण रोगोपद्रव!

(१) इस मास में पांच रवि "**पांच रवि छत्र टूटि धनणि पड़े।।१।।**" छत्रभंग(बड़े नेता का मरण) होवे। (२) ता.१३.४.२०२५ मेषेऽर्क रविवारी "**रोग घनो रवि पांचते।।२।।**" रोगोपद्रव। ता.२७ अपेल को अमा. रविवारी से **रवि मावस वैशाख,छत्रभंग**" छत्रभंग,सत्ताभंग,बड़े राजपुरुष का मरण होवे। (३) ता.१३ से १६ अप्रेल तक मीने बु.+रा.युति **द्वौ ग्रहो नृप संक्षोभ।।३।।** राजाओं (नेताओं) में क्षोभ। आगे ता.१६ से ३० अप्रेल तक मीने बु.+शु.+रा.युति **त्रयोऽन्नन्ति नराधिपम्।।४।।** राजा पर घात मरण होवे आगे ता.२४ से २६ अप्रेल तक मीने बु.+शु.+च.+रा.युति **चत्वारो राज्य नाशाय।।५।।** राज्य में विनाशक घटना घटे। "**प्लावयंति महिं सर्वा रुधिरेण**"अर्थात् पृथ्वी रुधिर से पूरित होवे। (४) ता.२७ अप्रेल अमा. रविवारी छत्रभंग व **जिनवारा रवि संक्रमे,तिनै अमावस होय। खप्पर हाथ ले**

जग भ्रमे भीख न घाले कोय।।६।। इस खप्परयोग में जनपलायन, सहायता की भीख मांगे। (५) २९ अप्रेल चंद्रोदय कृत्तिका में **आद्रा भद्रा कृत्तिका, आर्द्रा रेव मघाहिं। चन्द्रोदय ऊगे दूज को,सुख में नरा अघाहिं।।७।।** जनता सुख समृद्धि सम्पन्न होवे। (६) ता.३०अप्रेल ता.८ जून तक कुंभे+रा.युति भय,रोग,मरण,महामारी से अशांति **द्वौ ग्रहो नृप संक्षोभः ।।८।।** राजाओं क्षोभ होवे। ता.३ से १४मई तक मेषे बुधादित्य योग शनि दृष्ट होने परस्पर पिता पुत्रवत् नेताओं में वैर विरोध टकराव बढ़े।(७)ता.६ मई वैशा.शु. ९को **रोहिणो चोत्तरास्तिस्त्रो मघा वा रेवती भवेत्। नवम्यां मण्डले रादे तदा कष्टं महद् भुवि।।९।।** अर्थात् नवमी मघा होने से भूमण्डल पर बहुत कष्ट,महाभय होवे। (८) ता.३० अप्रेल से ३० जुलाई तक राहु , केतु के मध्य सभी ग्रहों के कारण कालसर्प योग विषभय, प्रदूषण से मरे।

ज्येष्ठ में – बड़े नेता का मरण : विस्फोट : हिन्दु संतापित

(१) पांच मंगल का मास होने से **''मंगले म्रियते राजा।।१।।''** अर्थात् बड़े नेता,राजपुरुष का मरण होवे। (२) ता.१३.५.२०२५ को १ मंगलवारी **''पंच भौमे भयं महत्''** बहुत भय,छत्रभंग होवे। (३) ता.१९ से २२ मई तक कुंभे चं.+श.+रा.युति से **ग्रहयुद्धे भवेद्युद्धं**- युद्धोपद्रव होवे। ता.२० मई से ता.४ जून तक वृषे सू.+बु.युति से राजाओं में क्षोभ होवे। (४) ता.२६ से २८ मई तक वृषे चं.+सू.+बु.युति **''त्रयोऽन्ननीति नराधिपं''** बड़े राजा का मरण होवे। (५) ता.२७ मई अमा.मंगली युद्धोपद्रव,विस्फोट घटनायें घटे। (६) ता.४ से १५ जून तक मिथुने बु.+वृ.युति व ता.११ मई से ३० जुलाई तक सिंहे मं.+के. की युति **द्वौ ग्रही नृप संक्षोभम्**- राजाओं को क्षोभ, अशांति कारक है। (७) ता.११ जून से ता.३० जुलाई तक सिंहे भौम व मीन शनि का षडाष्टक योग व सिंहे मं.+के.युति ७वें राहु से संहारक है। (८) ता.११ जून से ता.१२ जुलाई तक **मिथुन गुरु अस्त पश्चिम** में हिन्दु व हिन्दुराष्ट्र के लोग संतापित होवे। बलात्कार बढ़े। पलायन होवे।

आषाढ़ में – पश्चिम में युद्ध : पृथ्वी रुंडमुंड कपालव्रत धारण करे!

(१) आषाढ़ में पांच गुरु होने से **यत्रमासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धंच जायते।।१।।** अर्थात् पश्चिम दिशा में,पश्चिमी देशों में युद्ध होवे। (२) ता.१२ जून २०२५ई. को १ मूल भूकम्पादि से जननाशः। (३) ता.१५ जून **मिथुनेऽर्क रविवारी** राजाओं में युद्धोपद्रव होवे। (४) ता.१५ से २२ जून तक मिथुने सू.+बु.+वृ.युति आगे ता.२२ से २४ जून तक मिथुने सू.+चं.+वृ.युति **त्रयोऽन्ननीति नराधिपम्।।२।।** राजाओं,राजपुरुषों का मरण होवे। (५) ता.२४ जून आषाढ़ कृ.१४ मंगल रोहिणी से – **चतुर्दश्यां राजयुद्धं प्रजाशोकाकुला तथा।।३।।** राजाओं में युद्ध,छत्रभंग,प्रजा में शोक से परेशान होवे। (६) ता.५ जुलाई से ता.११ नवम्बर तक शनि वक्री होने से-**''शनि वक्रे च दुर्भिक्षं रुंडमुंडा च मेदिनी।।४।।''** अर्थात् पृथ्वी पर भयानक विनशलीला होवे। **अतिचार गते जीवे वक्री भूते शनैश्चरे। हाहाभूतं जगत्सर्व रुण्डमाला महीयते।।५।।** ता.५ जुलाई से ७अक्टूम्बर तक हाहाकार संसद में होवे,पृथ्वी मुण्डों से पूरित होवे। (७) ता.७ से १९ जुलाई तक रोहिणी शुक्र चलेगा जो शनि से भी दृष्ट रहेगा अतः **रोहिणी शकटं शुक्रो यदा समभि रोहति। चक्रारूढा प्रजाज्ञेया महद्भयं विनिर्दिशेत्।।६।।** अर्थात् चक्रारूढा प्रजा महान् भयभीत होती है। **प्राजापत्ये शकटे भिन्न कृत्वेव पातकं वसुधा। केशास्थि शकला कपालमिव व्रतं धत्ते।।७।।**(वाराही सं.) अर्थात् शुक्र के शकट भिन्न करने से पृथ्वी कपाल व्रत धारण करती है। अर्थात् अत्यन्त मरी पड़ती है। एवं च **पाण्ड्य,केरल,चोल,चेदी,कर्नाटका,चेरा आदि** देश पीड़ित होते हैं। **वृषभ राशि** के देश व ओ व(ब) वी,वु रोहिणी नक्षत्राक्षर वाले पीड़ित होवे।

श्रावण में – हिन्दुओं का अभ्युदय : छत्रभंग : अंगारकयोग से कष्ट

(१) ता.१२.७.२०२५ ई.को **गुरुउदय** पूर्वे से हिन्दुओं व हिन्दु देशों का अभ्युदय। (२)ता.१९ जुलाई ९ शनिवारी से **श्रावणे नवमीयुक्तः शनि**

संताप कारकः। छत्रभंग विजानीया दाश्विनान्ते न संशयः।।१।। अर्थात् आश्विन के अंत मे राजा(नेता) मरे,जनता संतापित होवे। (३) ता.१८ जुलाई से १ अगस्त तक बुध,शनि दो ग्रह वक्र होने से **द्वौ प्रतिपगौ खेटौ नृपं क्षोभयस्तदा।।२।।** राजा(नेता) संतापित होवे। (४) ता.२४ जुलाई से १६ अगस्त तक मिथुने बृ.+शु.युति **गुरु शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।।३।। यदा बृहस्पतिः शुक्रोभिद्येदय विशेषतः। पुरोहिता स्तथाऽमात्याः प्राप्नुवन्ति महद्भयम्।।४।।** अर्थात् युद्धोपद्रव,पुरोहितों,अमात्यों(मंत्री) को बहुत भय प्राप्त होवे। (५) ता.२६ जुलाई चंद्रोदय शनिवारी+आश्लेषा नक्षत्र पर होने से ३० दिन मे छत्रभंग(बड़े नेता) का मरण होवे। (६) ता.७ जुलाई से १५अगस्त तक मंगल उ.फा.पर गुरु पुनर्वसु पर होने से यह अंगारक योग अग्नि विस्फोट से जनता संतापित होवे। व ३० जुलाई से ६ अगस्त तक मंगल से शनि का समसप्तक योग भी ज्वालामुखी ,भूकम्प, अग्निकाण्ड का प्रतीक है।

भाद्रपद में - छत्रभंग : वर्णसंकरों का उत्पात : खग्रास चंद्रग्रहण नृपतिक्षय

(१) इस मास मे पांच रवि - **यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगःस्यात्तथास्ते च महद्भयम्।।१।।** छत्रभंग,बहुत भय होवे। (२) ता. १७.८.२०२५ को **सिंहेऽर्क रविवारी** उग्रवादियों का अंत,विजयोत्सवप्रद है। (३) ता.१६ अगस्त से १३ सितम्बर तक गुरु के आगे शुक्र से **धर्मार्थ काम लुप्यन्ते सम्भ्रमर वर्णसंकरः** वर्ण शंकरों का उत्पात होवे। (४) ता.२३ अगस्त अमा.**शनिवारी भाद्रपद मासे त्वमावस्यां दुर्भिक्षं रौरवघोर,महादुःखं महद्भयम् ,परांगमुखाःपितुःपुत्राव्यसनं शनिवासरेः।।२।।** अर्थात् बहुत दुःख बहुत भय,पिता पुत्र परस्पर विमुख हो जावे। बड़े नेता परस्पर विमुख हो लड़े भिड़े। (५) ता.१७ अगस्त से १ सितम्बर तक सूर्य के आगे मंगल (शनि से प्रभावित) होने से यह **अंगारक योग** हवाई विस्फोट,अग्निकाण्ड से नेता मरे। (६) ता.७ सितम्बर को **खग्रास चंद्रग्रहण** रविवार को राजयुद्ध प्रद है। शनि से प्रभावित चंद्र,सूर्य होने से **क्रूर संयुक्त सूर्येन्दोर्ग्रहणे नृपतिक्षयः। राष्ट्रभंग इति प्राहुर्महाप्राज्ञा मुनीश्वराः।।३।।** नृपतिक्षय,राष्ट्रभंग होवे। **यदा क्षुभ्यन्ति सामन्ता राजा राष्ट्रं च पीड्येत।।४।।** सामन्त,राजा(नेता) राष्ट्र उपद्रवों से पीड़ित रहे। **पंच संवत्सरं घोरं चन्द्रस्य ग्रहणं परम्।।५।।** चंद्रग्रहण के बाद पांच वर्ष तक संकट रहे।

आश्विन में- राजा राज्य राष्ट्र पर घात : सनातन संस्कृति की उच्च मान प्रतिष्ठा

(१) ता.६ सितम्बर से ३ अक्टुम्बर २५ तक श.+रा.युति व ता.१३,१४ सितम्बर कन्या मं.+बु.युति व ता.१७ सितम्बर से १ अक्टूम्बर तक कन्या सू.+बु.युति **द्वौ ग्रहौ नृप संक्षोभं।।१।।** राजाओं मे क्षोभ रहे। (२) ता.१३ से १७ सितम्बर तक सिंहे सू.+शु.+के.युति से **त्रयोघ्ननंति नराधिपं।।२।।** राजा (नेता) पर घात होवे। (३) ता.१६ से २१ सितम्बर तक सिंह सू.+चं.+शु.+के.युति **चत्वारो राज्य नाशाय।।३।। राष्ट्रक्षयोऽपिच।।४।।** राज्य का नाश,राष्ट्रक्षय सत्तापलट आदि होवे। (४) ता.२३ सितम्बर **चंद्रोदय** मंगलवारी अग्निकाण्ड,उपद्रव,राजाओं में विग्रह होवे। (५) ता.२१ से २३ सितम्बर तक कन्या सू.+चं.+बु.युति व ता.३ से ४ अक्टू.तक कुंभे श.+रा.+चं.युति **त्रयोघ्ननंति नराधिपम्।।५।। क्रूरग्रह युतश्चन्द्रो गृह्यते दृश्यतेऽपि वा। यदा क्षुभ्यन्ति सामन्ता राजा राष्ट्रं च पीड्यते।।६।।** राजा, सामन्त,राष्ट्र पीड़ित होवे। नेता मरे। (६) ता.१ से १७ अक्टूम्बर तक तुले मं.+बु.युति से राजाओं(नेताओं) में क्षोभ रहे। (७) कर्क (उच्च राशिस्थ)गुरु ता.७ अक्टूम्बर से २१ दिसम्बर २०२५ तक होने से - **बृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पं मेघःप्रवर्षति। राजाभिर्विग्रहश्चैव दुर्भिक्षं तत्र जायते।।६।।** अर्थात् राजाओं में विग्रह होवे। वस्तुतः आकाशीय भ्रमण में अकस्मात् अतिक्रमण कर **कर्क राशि पर गुरु** का आना हिन्दु,हिन्दु संस्कृति ,हिन्दुराष्ट्र व सनातन पर आये कष्ट को बचाने का उच्च प्रयास है। सनातन धर्म को विश्व में प्रतिष्ठा करेगा।

कार्तिक में- छत्रभंग : बलात्कार बढ़े :

दीपावली सोमवारी शुभद : वर्णसंकरों में भय

(१) ता.७.१०.२०२५कार्तिक कृष्णा १ मंगली से पांच मंगली मास व क्षया तिथि से कार्तिक रजस्वला मास होने से **यत्रमासे महीसूनोर्जायते पंचवासराः । रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत् ।।१।।** पृथ्वी रक्त से पूरित, छत्रभंग होवे। रजस्वला से व्यभिचार(बलात्कार) बढ़े। (२) ता.२० अक्टूम्बर दीपावली सोमवारी श्रेष्ठ। जो भ्रम फैलाकर दीपावली मंगलवारी करेंगे तब वे **सर्वलोक भयावहा।।२।।** तब अशांतिप्रद होवे। **भौमे भूमी महावह्नी।।३।।** भूमी अग्नि उपद्रव से प्रभावित होंगी। (३) ता.१७ से २५ अक्टूम्बर तक तुले सू.+मं.+बु.युति आगे ता.२१ से २३ अक्टूम्बर तक तुले सू.+चं.+मं.युति व आगे, ता.३० अक्टूम्बर से १ नवम्बर तक कुंभे श.+रा.+चं.युति **त्रयोच्चनंति नराधिपं।।४।।** राजा(नेता) का मरण। (४) ता.२८ अक्टूम्बर से १६ नवम्बर तक वृश्चिके मं.+बु.युति गुरु दृष्ट होने से विजयोत्सव प्रद। (५) ता.१ से १२ नवंम्बर तक बुध,**शनि वक्र द्वौ प्रतिपगो खेटौ नृपं क्षोभयस्तदा।।५।।** नेता पीड़ित होवे। (६) ता.३१ अक्टूम्बर से ता.१नवम्बर तक तुले सू.+शु.युति से दिवि मध्ये यदा दृष्येच्छुक्रः सूर्यपथास्थितः। सर्वभूत भयं कुर्याद् विशेषाद् वर्ण संकरम्।।६।। (भद्रबाहु) समस्त प्राणियों में भय होवे विशेषकर वर्णसंकरों के लिए भयप्रद है।

मार्गशीर्ष में - पश्चिम में युद्ध : छत्रभंग : युद्धोपद्रव से क्रंदन

(१) पांच गुरु का मास **विग्रहःपश्चिमे देशे खड्गयुद्धंच जायते।।१।।** पश्चिम देशों में विग्रह,खड्गयुद्ध होवे। (२) ता.७ नवम्बर को २ शुक्रवारी व ता.८ नवम्बर २०२५ई. को ३ शनिवारी होने से **माघस्य कृष्ण पक्षे तु द्वितिया तृतीया दिने। शुक्र सौरी भवेतांविःशस्त्रयुद्धं महीतले।।२।।** पृथ्वी पर युद्धोपद्रव होवे। (३) ता.१२ से २१ नवम्बर तक बुध,गुरु,शनि तीन ग्रहवक्री होने से **प्रतिपगास्त्रयःखेटा युद्ध वृष्टिः भयप्रदाः।।३।।** युद्ध व प्रकृति आपदा का भय बढ़े। (४) ता.१५ नवम्बर को ११ शनिवारी से **अथवा दैवयोगेन शनिवारस्य संगमः। जलशोष प्रजानाश छत्रभंग स्तदा भवेत्।।४।।** प्रजा का नाश,छत्रभंग होवे। (५) ता.१६ से २५नवम्बर तक वृश्चिके सू.+मं.+बु.युति **त्रयोच्चनंति नराधिपम्।।५।।** राजा(नेता) मरे। (६) ता.१८ नवम्बर को १३ वृद्धि से **मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे तिथि वृद्धिश्च जायते। तदा युद्धाकुला पृथ्वी प्रजा क्रंदंति नित्यशः।।६।।** पृथ्वी पर युद्धोपद्रव से प्रजा में क्रंदन होवे। (७) ता.१६ से २२ नवम्बर तक वृश्चिके सू.+चं.+मं.+बु.युति व ता.२५ नवम्बर से ६ दिसम्बर तक वृश्चिके सू.+मं.+बु.+शु.युति **महारोग भयं राष्ट्रक्षयो वृष्टि क्षयोऽपिच।।७।।** रोगोपद्रव ,राज्य राष्ट्रक्षय होवे। (८) ता.३ दिसम्बर को शु.१४ तिथि क्षय पौष शु.८,माघ शु.१३,फाल्गुन शु.७क्षय होने से **मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्ल पक्षे तिथिक्षयः। छत्रभंगं प्रजापीडां दुर्भिक्षं च समादिशेत्।।८।।** अर्थात् मार्गशीर्षादि फाल्गुन शुक्ला तक तिथिक्षय होने से छत्रभंग,प्रजापीड़ित होवे।

पौष में- हिन्दु देशों में विग्रह : समुद्रीय जहाजों विमानों का नाश : नया रुपया चले

(१) इस मास में **पांच भृगु** से स्त्री सत्ता की जीत। (२) ता.८ से १६ दिसम्बर २०२५ तक वृश्चिके सू.+बु.+शु.युति **रवि बुध भृगु इक रासजू ,राजभंग उत्पात। बरनि पावत कष्ट को,व्यास भणी इहु भांत।।१।।** फल घटित होवे। (३) ता.१५ दिसम्बर को शुक्रास्त पू.ज्येष्ठा राक्षस नक्षत्र पर गतिशील होने से **शुक्रास्ते राक्षस गणे हिंदुदेशेषु विग्रहः।।२।।** (वर्ष प्रबोध) हिन्दु देशों में विग्रह होवे। खर्पर योग से राज्य में युद्ध,**यानपात्र विनाशोऽब्धौ फिरंगाणां च विग्रहः।।३।।** समुद्र में जहाज तथा विमानों का नाश हो और फिरंगियों में विग्रह हो। राज परिवर्तन हो,पुराने किले टूट पड़े। **नव्यमुद्रा प्रकाशः।।४।।** नया रुपया चले। (४) ता.१६ दिसम्बर धने ऽर्क मंगलवारी युद्धोपद्रव ,विस्फोट होवे। (५) ता.१६ से १६ दिसम्बर वृश्चिके चं.+बु.+शु.युति राजा को कष्ट। ता.१६ से २१ तक धने सू.+चं.+मं.+शु.युति राज्य का नाश। ता.२० से २७ दिसम्बर धने सू.+मं.+शु.युति व ता.२४ से २६दिसम्बर तक कुंभे चं.+श.+रा.युति राजा(नेता)मरे। ता.२७

दिसम्बर से १४ जन.२०२६ तक धने सू.+मं.+बु.+शु.युति **चत्वारो राज्य नाशाय। राष्ट्रक्षयोऽपिच ।।५।।** राज्य,राष्ट्र का क्षय होवे। (६) ता.२७ दिसम्बर ८ शनि शुक्ला क्षय छत्रभंगप्रद है।

माघ में – खर्प्पर व अंगारक योग : छत्रभंग : मालवा में हड़ताल

(१) इस मास मे पांच रवि से **दुर्भिक्षं छत्रभंगःस्यात्तदास्ते च महद् भयम् ।।१।।** दुर्भिक्ष,छत्रभंग व महाभय होवे। (२) ता.१४ जनवरी २०२६ को **मकरेऽर्क** बुधवार **कर्क मकर दोय बेनड़ी बैठत एक ही वार। कै प्रजा को पति मरे कै पड़े अणचिन्त्यों कार ।।१।।** राजा(नेता) मरे। खर्प्परयोग है। (३) ता.१४ से १७ जन.मकरे सू.+बु.+शु.युति **रवि बुध भृगु इक रासजू ,राजभंग उत्पात्। धरनी पावत कष्ट को,व्यास भणे इहुं भात ।।२।।** फल घटे। ता.१७ जन.से १ फरव.तक मकरे सू.+मं.+बु.+शु.युति **राष्ट्रक्षयो,चत्वारो राज्य नाशाय ।।३।।** राज्य व राष्ट्र में क्षयोपद्रव होवे। (४) ता.१८ जनवरी अमा रवि व ७,१५(सातम,पूनम)रविवारी से देश में उदंगल, शस्त्रोपद्रव होवे। (५) ता.१८ से ३० जन.तक मंगल उ.षा. व गुरु पुनर्वसु पर होने से **अंगारक योग** अग्नि उपद्रव विस्फोट से लोग मरे। (६) ता.१ फरवरी **शुक्रोदय** प.राक्षस गण पर **उत्पाताविषु देशेषु सिंधु देशेति विग्रहः। दिन त्रयम वाणिज्यं विग्रहेमालवादि के ।।४।।** कई देशों में उत्पात, सिंधु देश मे विग्रह होवे। मालया में ३दिन तक विग्रहोपद्रव से हड़ताल रहे। **पौष माघ हुइ भंग छत्र जग बहुमरै ।।५।।** (मेघमाल) फल घटित होवे।

फाल्गुन में – राष्ट्रक्षय : छत्रभंग : राजा धर्मविमुख

(१) ता.४ से १२ फरवरी व ता.२० से २५ फरवरी २०२६ तक कुंभे श.+बु.+शु.+रा.युति **चत्वारो राज्य नाशाय ।।१।।** राज्य व राष्ट्र का क्षय होवे। ता.१२,१३ फरवरी कुंभे सू.+बु.+शु.+श.+रा.युति **पंचघ्नन्ति जगत्रयम् ।।२।।** पृथ्वी,जल,आकाश तीनों लोकों का नाश करे। ता.१३ से १७ फर.तक कुंभे सू.+बु.+शु.+रा.युति **राष्ट्रक्षयोऽपिच ।।३।।** राष्ट्र व राज्य में क्षय करें। (२) ता.१७ फर.अमा मंगली से **फागुन मावस वार जू क्रूर। लरै बहुत जगमाहिसूर ।। देश उपद्रव अरु दुर्भिक्ष। कहत मेघ सौंची सुनिशिवा ।।४।।** फल घटित होवे। (३) ता.१७ से १९ फरवरी कुंभे सू.+चं.+बु.+शु.+रा.युति से **राशि एक में पंचग्रह,क्रूर सौम्य जू आइ। छत्रभंग राजा मरे,अथवा धन बहु धाइ ।।५।।** ता.२५ से २८ फर.तक कुंभे सू.+मं.+बु.+शु.+रा. से फल घटित होवे।(४) ता.३ को १५ मंगलवारी खग्रास चंद्रग्रहण **"भौमे वन्हि भयं भवेत "** अग्नि उपद्रव होवे। **सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वन वासिनाम्। नृपाणां नृपतुल्यानां मनुजानां धनक्षयः ।।६।।** सिंह राशि पर ग्रहण होने से वनवासियों को पीड़ा हो तथा राजाओं को और राजतुल्य अन्य जनों के धन का क्षय होवे। **सर्वग्रस्तौ चंद्रसूर्यौ दुर्भिक्ष मरणप्रदौ ।।७।।** अर्थात् खग्रास चंद्रग्रहण मरणप्रद घटनायें घटित करायेगा। (५) ता.२ मार्च से मीने शनि अस्त होने से राजा धर्म विमुख,पापी पीड़ित होवे। राजाओं में युद्ध होवे।

चैत्र में– प्रजा का नाश : मीनाऽर्क राक्षसी : रुण्डमुण्ड हुई भूमि

(१) इस मास में पांच बुध व ता.४ मार्च २०२६ को १ बुधवारी से **नाश्यंति प्रजाः शुक्रा रवि सौम्या विनाशकाः ।।१।।** प्रजा का नाश करे। **बुधे च मध्यमे वर्षं - मध्यम वर्ष होवे। प्रतिपत्सर्व मासेषु बुधे दुर्भिक्ष कारिणी ।।२।।** प्रत्येक मास बुधवार को बैठे तो शुभ नहीं है दुर्भिक्ष कारक है। (२) ता.१४ मार्च मीनाऽर्क शनिवारी से **मीन संक्रांत शनिवार,कह्यो राक्षसी नाम। रुंड मुंड हुइ भूमहि,महंगा हुवई धान ।।३।।** फल घटित होवे। (३) ता.१४ से १८ मार्च तक मीने सू.+शु.+श. युति व ता.१८ से २० मार्च तक मीने चं.+शु.+श.युति **त्रयोघ्नन्ति नराधिपम् ।।४।।** राजा (नेता) का नाश व ता.१६ से १८ मार्च तक कुंभे चं.+मं.+बु.+रा.युति से **चत्वारो राज्य नाशाय राष्ट्रक्षयोऽपिच। प्लावयंति महि सर्वा रुधिरेण जलेन वा ।।५।।** अर्थात् राष्ट्र,राज्यक्षय,पृथ्वी रुधिर से पूरित होवे,विनाशक घटनाएं घटे। □□□

मौसम व वर्षा की भविष्यवाणियाँ

(शुभ व अशुभ योगों का फल इसमें दिया गया है। राजा से अभिप्राय-सत्ताधीश, नेता, शासक, मंत्री, राष्ट्रपति, प्रख्यात जन प्रतिनिधि से जानें)

पूरे वर्ष में:- (1) <u>शनिफल-</u> शनि (काल सुगालकर्ता, दण्डाधिपति व वरुणेश) गत वर्षों से राशि कुंभ(कलश, घड़ा, द्रोण) पर था लिखा कल सत्य घटित हो रहा है। इस पूरे वर्ष मे शनि पू.भा.(नीरनाड़ी) नक्षत्र पर कुंभ व मीन दो राशियों को प्रभावित करेगा। अत: **पूर्वा भाद्रपद ऋक्षे यदा सौरिश्च संस्थितः। मेघश्च वर्षति तत्र लोकानां च हिताय वै।।१।।** (अर्घप्रकाश) वर्षा अच्छी होवे। **मकर कुंभ शनि आवै जोइ। अन्न घनो सब जगमाहि होइ।। घर घर होत सकल आनंद। कोइ नहीं दीसै दुखियों मंद।।२।। मीन शनीश्वर करता वास। सब देशनका करता नास।। अथवा घन हुइ परलो काल। सागर की जल तोड़े पाल।।३।।** (मेघमाल) अर्थात् कुंभ शनि में अच्छा जमाना आवे। मीन शनि में विनाशक घटे। कहीं काल, अनावृष्टि व कहीं जल विप्लव होवे।

निष्कर्षत:-कुंभ शनि में पाप का घड़ा फूटेगा, बादल फटेंगे, बिजली गिरेगी, जल विप्लव होगा। ऐसी स्थिति में बीच बचाव में मीन का शनि मीना अवतार का काम करेगें। वर्ष में नीरनाड़ी नक्षत्र पूर्वाभाद्रपद शनि अच्छी वर्षा करेगा।

(2) गुरु फलम्:- इस वर्ष में गुरु वृषभ, मिथुन, कर्क तीनों राशियों को स्पर्श करेगा। यथा-**जीवे वृषे सुभिक्षं स्याद् गोरसस्य महर्घता। स्वल्प वृष्टिः प्रजा पीड़ा सस्यानां बहुधा भवेत्।।१।।** अर्थात् वैशाख तक वृषे गुरु दहन(मृग.) नाडी पर तपन(गर्मी) प्रद अल्पवृष्टिप्रद रहेगा। आगे **मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारूणं भयम्। नृपाणाम् विग्रह स्तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति।।२।।** आगे मिथुन गुरु दारूण भय, विग्रह, अल्प वृष्टिप्रद है। ता.१२ जुलाई २०२५ तक **गुरु अस्त** आषाढ़ तक वर्षा अवरोधक, खण्ड वृष्टिप्रद रहेगा। गर्मी प्रकोप ज्यादा। ता.१२ जुलाई को उदये वृष्टि **बृहस्पते गुरु उदय** से वर्षा प्रारंभ होगी व ता.७.८.२५ से वर्षान्तर तक पुनर्वसु (नीर) नाड़ी नक्षत्र पर गुरु से वर्षा होगी। तथापि मिथुन गुरु निर्जल राशि पर होने से खण्डवृष्टि करेगा। पश्चिम में, सिन्धुदेश में, वायव्य में, और उत्तरदिशा में चित्र विचित्र वर्षा होगी, पूर्व, अग्नि, दक्षिण, ईशान इन देशों में सुभिक्ष होगा। आगे कार्तिक से पूर्णजल **राशि कर्क पर गुरु** ता.२१.१.२६ तक पुनर्वसु नीर नाड़ी पर होने से वर्षा करेगा। कहीं कहीं ग्रीष्म कालीन फसलों को नुक्सान होगा व सर्दियों में वर्षा होगी। **बृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पं मेघप्रवर्षति।३।** अर्थात् कर्कगुरु में वर्षा अल्प होती है। निष्कर्षत:-गुरु खण्डवृष्टि का प्रतीक रहेगा।

चैत्र शुक्ल पक्ष में- ता.३०.३.२०२५ को १ रविवारी भारी गर्मी, वायु प्रकोप ज्यादा। चंद्रोदय दक्षिण श्रृंग दुर्भिक्ष। वर्ष प्रवेश से ता.१३ अप्रेल तक मीने सू.+रा.युति भारी गर्मी, प्रदूषण बढे। ता.३० मार्च से ५ अप्रेल तक बुध, शुक्र वक्री **वृष्टि भयप्रदा:** वर्षा से भय होवे। कुंभे बु.+शु.+श. ता.३०मार्च से ८ अप्रेल तक तीनों नीर नाड़ी पर से समुद्रीय तूफान से नुक्सान। ता.१ अप्रेल को बुधोदय वायु प्रकोप, गायों में रोग। ता.१ से १० अप्रेल तक तूफान, बादल, वर्षा। ता.३ अप्रेल मृगे १ गुरु भारी गर्मी। ता.१८ मई तक अंगारक योग से भारी गर्मी। ता.५ अप्रेल मार्गी बुध राज विग्रह। मीने सू.+बु.+रा.युति ता.८ से १३ अप्रेल तक भारी गर्मी से फल फूलों का नाश। कुंभे शु.+श. ता.८ से १६ अप्रेल तक तूफान बादल वर्षा। ता.११ अप्रेल से ८ जून तक कर्के भौम से कुंभे शनि का षडाष्टक प्रकृति प्रकोप। ता.१२ अप्रेल से ११ जून तक कर्के भौम समुद्रीय जीवों, जहाजों व तट वासियों को कष्ट। **चमकी भली न चैत की चैत में गाज, बिजली, बादल, वर्षा** हो तो शुभ नहीं। नहीं वर्षे तो चौमासा के चारों मास वर्षा होवे।

वैशाख कृष्ण पक्ष:- पांच रवि का महिना भारी गर्मी, गर्मीजन्य रोग बढे। पंचार्क योगे वैशाखे वृष्टि गर्भ विनाशिनी।।१।। वर्षा हो तो वर्षा के गर्भों का नाश होवे। ता.१३से १५अप्रेल तक बादल वर्षा। ता.१३अप्रेल अश्वन्यां मेषे अर्क गर्मी प्रकोप। ता.१५ मार्गी उभा बुध पशु पक्षी सुखी, राजाओं में क्लेश। ता.१६ से ३० अप्रेल तक मीने बु.+शु.+रा.युति तूफान प्रकृति प्रकोप। ता.२० से २६ तक तूफान, बादल, वर्षा। ता.२२ पुक्षे भौम चौर, रोग, शस्त्र अग्नि भय, नये नये उपद्रव होवे। ता.२४ से २६अप्रेल तक मीने चं.+बु.+शु.+श.युति **एक राशी यदा यांति चत्वार पंच खेचरा। प्लावयंति महिं सर्वा रुधिरेण जलेनवा।।२।।** प्रकृति प्रकोप से जनहानी। ता.२७ अमा.रविवारी से **जिनवारा रवि संक्रमे तिने अमावस होय। ऊपर हाथ लै जग भ्रमै भीख न घाले कोय।।३।।** फल घटित होवे।

वैशाख शुक्ल पक्ष:-ता.२७ से ३० अप्रेल तक मीने बु.+शु.+रा.युति जन आक्रोश। ता.२९ वृषे चंद्रोदय उत्तर श्रृंग सुभिक्ष। रक्तवर्षा युद्ध मरण, वाहन हाथी गर्मी कृत्तिका में चंद्रोदय आद्रा भद्रा कृत्तिका आर्द्रा रेव मघाहि। चन्द्रा ऊगै दूज को सुख में नरा अघाहि।।४।। जनता सुखी ता.३० अक्षय तृतिया रोहिणी सुभिक्ष। अक्षयाख्य तृतियां सुभिक्षाये व रोहिणी। ता.३० अप्रेल से ३ मई तक मीने बु.+शु.तूफान पवन, बादल वर्षा। ता.३० अप्रेल से ३० जुलाई तक कालसर्प (राहु केतु मध्य सभी ग्रह) से विष प्रदूषण, रोगोपद्रव। ता.३० अप्रेल से ८ जून तक कुंभे श.+रा. युति भय, रोग, मरण ज्यादा। ता.१ से १२ तक तूफान, बादल वर्षा। ता.२ मई को ५ शुक्रवारी कलहोपद्रव। ता.५ बुधास्त पू.बादल वर्षा। ता.३

से १४ मई तक मेषे सु.+बु.युति शनि दृष्टि प्रकृति प्रकोप,भारी गर्मी,वैर विरोध बढ़े। ता.६ मई को ६ मंगली मघा से पृथ्वी पर भारी भयोपद्रव होवे। ता.६ मई **मृग.२मिथुने गुरु** व्याभिचारियों का नाश,जनता में कुशल क्षेम की वृद्धि। ता.१० मई **भरण्यां बुध** हाथियों को पीड़ा, तीव्र रोगों से जनता दुखी,धाण्डालों का नाश,वैर बढ़े। ता.११ कृत्तिका रविवारी से तंत्र मंत्र सिद्ध वाले कुम्हार,नाई,ज्योतिषी,व्याकरणाचार्यों को कष्ट। **कृत्तिका एक मबूकड़ो आंगण सो गलिया।।६।।** अर्थात् कृत्तिका रवि मे बीज, वर्षा हो तो वर्ष के दोष समाप्त हो जावे।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः-ता.१३मई २०२५ को १ मंगली **लोकानां व्याधिपीडनम्।।१।।** रोग ज्यादा व उपद्रव होवे। ता.१४ मई वृषे ऽर्क बुधवार जनता सुखी। ता.१७ से १९ बादल वर्षा। ता.१८ आश्लेषा भौम टिड्डी भय,विषैले जन्तुओं का प्रकोप, बिमारी प्रकोप। कृत्तिका बुध ज्वर ज्यादा,विग्रह। **रेवत्यां शुक्र** आतंकियों का उपद्रव। ता.२० मई से ४ जून तक वृषे सु.+बु.+युति से पृथ्वी पर कलहोपद्रव। ता.१९ से २२ मई तक कुंभे च.+श.+रा.पवन प्रकोप। ता.२२ से २७ तक तूफान बादल वर्षा। ता.२५ **रोहिण्यां रवि** साहुकार,कृषक,योगी,यंत्र चालकों को कष्ट। **रोहिण रेली ठपियारी करे अढेली।।२।।** वर्षा हो तो शुभ। **रोहिणी बुध** पवन प्रकोप। **रोहिण तपे मृगसिर वाजे,आद्रा मेह अणचिन्त्यां गाजे।।३।।** रोहिणी में तपन से शुभ,आगे आद्रा मे वर्षा की आशा। ता.२६ से २८ मई वृषे सु.+च.+बु.युति कष्टप्रद। ता.२५ मई को रोहिणी रवि में रोहिणी होने से **रोहिणी माही रोहिणी एक घड़ी जो दीख। हाथ खप्परा मेदिनी,घर घर मांगे भीख।।४।।** फल घटित होवे। **अमा मंगली से रवि शनि मंगल वारिया,मावस जेठहि जान। चोर अग्नि भय काल दुख,निपजत नही जगवान।।५।।** फल घटे।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः- १ मगल क्षया रजस्वला पक्ष स्त्रियों को कष्ट,दुर्भिक्ष। ता.२८.५.२५ को मिथुने चंद्रोदय त्रिशूल चंद्र व्याधि चोरभय,घोड़ा वाहन,पीतरंग शुभ। ता.२९ मं से ता.८ जून तक तूफान,बादल,वर्षा। ता.३१ अश्वन्या मेषे शुक्र पवन प्रकोप। ता.५ से १५ जून तक मिथुने बु.+वृ.दहन(गर्मी) ज्यादा। **अग्रत पृष्ठतो वापि ग्रहाः सूर्यावलम्बितः। यदा तदा प्रकुर्वन्ति मही मेकार्णवामिव।।१।।** अर्थात् सूर्य गुरु व शुक्र के बीच होने से तूफानोपद्रव होवे। **बुध गुरु इक जे राशिमहि, आवति तऊ विचार। बरषा होवै बहुधनी,अन्न घनो संसार।।२।।** ता.४ से १३ जून तक तूफान,बादल,वर्षा। ता.८ मृगे रवि रविवारी से वायु प्रकोप। पशुओं में रोग। **मृगसिर वायन वाजिया,रोहण तपि न जेठ। गौरी बीजे काकरा,खड़ी खेजड़ा हेठ।।३।।** ता.८ से २२ जून तक वायु चलने से **दो मूषा दो कातरा दो तीड़ी दो तीव। दो की बाली जल हरे,दो विषधर दो वाय।।४।।** पाया जाने। जिस जिन वाजे (गर्मी) हो उस पाया का उपद्रव होवे। **पूषा४मीने शनि** वर्षा। **आद्रायां बुध** वर्षा वर्षा ग्रहपात पवन प्रकोप बुधोदय प वर्षा,पीड़ा। ता.११ **मघायां सिंहे भौम** वर्षा, चलत्यंगारके वृष्टिः। **गुरु अस्त** ता.११ जून से १२ जुलाई तक हिन्दु संतापित व खण्ड वृष्टि। ता.११ जून से ता.३० जुलाई तक **मीने शनि,सिंहे मंगल** का षडाष्टक भूकम्प,ज्वालामुखी से हानी। सिंहे मं.+के.की युति व राहु सम सप्तक प्रकृति प्रकोप। **जेठी पूनम मूल नहीं अथवा नही घन बिंद। तौ सावन सूखो गमै,समो बुरो अतिमंद।।५।।** फल घटित होवे।

आषाढ़ कृष्ण पक्षः- आषाढ़ मे पांच गुरु पश्चिमीय देशो में उपद्रव। ता.१६ जून को १ मूल भूकम्प से विनाश। १,२ की वर्षा हो तो पूरे मास वर्षा नहीं। ता.१३जून २५ को **भरण्यां शुक्र** प्रचण्ड पवन,यवनों को पीड़ा। ता.१५**मिथुने ऽर्क** रविवारी तपन। **पुनर्वसु बुध** बालकों को पीड़ा। ता.५ से २२ जून तक मिथुने सू.+बु.+वृ.युति तपन ज्यादा। ता.१६ से २५ तक पवन प्रकोप के साथ बादल वर्षा तूफान। ता.२२ **आद्रायां रवि** स.स्त्री.पु.चं.चं.वाहन कच्छप बाढ़। **आद्रा रवि** में सर्वत्र वर्षा का मानसून प्रभावी हो जाता है आद्रा रविवारी गर्मी,पशुओं में रोग। भरणी नक्षत्र मे आद्रा अशांतिप्रद है। कर्के बुध बादल वर्षा। ता.१३ **आद्रा २गुरु गुरु अस्त** होने से खण्ड वृष्टिः। ता.२४ जून से १४ रोहिणी जनता संतापित। ता.२२ से २४ जून मिथुने चं.+वृ.+सू.खण्डवृष्टिः। ता.२४ जून से १६ जुलाई तक खण्डवृष्टिः। ता.२५ **पुष्येबुध** जनता मे चिंता, शासन से भय,बादल वर्षा। **कृत्तिका शुक्र** प्रचण्ड पवन प्रकोप,तूफान वर्षा। **अमा बुधवारी** कहीं मुद्रा में बदलाव,नई मुद्रा चले।

आषाढ़ शुक्ल पक्षः- ता.२६ जून २०२५ चंद्रोदय मिथुने त्रिशूल श्रृंग व्याधि भय, पीतरंग, घोड़ा वाहन,पीतरंग सुभिक्ष। ता.२७ द्वितीया शुक्रवारी व ता.४ जुलाई ९ **शुक्रवारी** से वर्षा। मोहर्रम शुक्रवारी से लोगो में राज में वैर विरोध, अग्निकाण्ड, सभी दिशाओं में खूनी जंग,वायु प्रकोप ज्यादा,चौपायों में रोग, भ्रष्टाचार और व्यभिचार बढ़े। नवीन वैज्ञानिक अनुसंधान होवे। ता.३० को ५ सोमवारी अतिवर्षा। ता.२६ जून से ३ जुलाई तक तूफान,वर्षा। ता.२८ जून से १ जुलाई तक सिंहे च.+मं.+के.युति बिजलीपात,ओला वृष्टि। ता.३ **पूफायां भौम** से खण्ड वृष्टि,प्रजापीड़ा। ता.५ जुलाई से ७ अक्टूम्बर तक प्रकृति प्रकोप से हाहाकार। ता.५ जुलाई से ११ नवम्बर तक शनि वक्री ''**राजपुरुष दुर्भिक्ष बहु जन का करत विनाश।।२।।** फलघटित होवे। ता.६ जुलाई **पुनर्वसु रवि** स.स्त्री नपु.च.सू.वाहन अश्व अपवाहन कूकड़ कोरो(सूखा) होवे। ता.५ से ११ तक तूफान,

बादल वर्षा। ता.७ से १९ जुलाई तक रोहिणी शुक्र का शकट भिन्न पवन ज्यादा, जल विप्लव, रोगोपद्रव से विनाशलीला। ता.१५ गुरुवारी सुभिक्ष। पूषा.से **आषाढ्यां पूर्वकोषाढा वर्ष यावच्छु भयंकरा। आवर्षं धान्य निष्पत्तिप्रजा सौख्यम विग्रहात्।।३।।**

श्रावण कृष्ण पक्ष:- ता.११ जुलाई २०२५ई. को १ शुक्रवारी सुभिक्ष। ता.१२ गुरु उदय पू.से वर्षा पृथ्वी इतनी शोभित होवे कि इन्द्रपुरी भी ईर्ष्या करे। ता.१३ **बुधास्त प.** बादल,वर्षा। ता.१६ **कर्केऽर्क** बुधवारी से **कर्क जु भीजे कांकरों,सिंह अभी जो जाय। ऐसा बोलें भड्डरी टीडी फिर फिर खाय।।१।।** वर्षा हो तो जमाना अच्छा। ता.१६ से २६ तक तूफान,बादल वर्षा। ता.१६ जुलाई तक सूर्य से आगे मंगल होगा। **मंगल रथ आगे चले,पीछे चालत भाण। आरंभियाँ उभा रहे,खाली रहे निवाण।।२।। आगे मंगल पीछे भान। वर्षा होवे ओस समान।।३।।** वर्षा नहीं होवे। सूर्य के आगे मं.+के.जलनाड़ी में होने से कहीं बिजलीपात,समुद्रीय जल विप्लव से नुकसान होवे। ता.१९ **मृगे शुक्र** दहन,पवन। ९ शनिवारी शोक संताप। ता.१८ जुलाई से १ अगस्त बुध,शनि वक्री अतिवृष्टि,कहीं अनावृष्टि से भय। ता. २०**पुष्येरवि** सं.स्त्री.पु.चं.चं.वाहन चातक, उपवाहन कच्छप बाढ़। ता.२१ से ११+रोहिणी + क्षयातिथि से **रजस्वलायोग** से मध्यम जमाना,बीजनाश,फलों में रोग कहीं अत्यल्प वर्षा,करवरो जमानों। ता.२३ को **वक्री पुष** १ बुध जनता में चिंता, शासन में भय। ता.२४ मिथुन शुक्र दहन(गर्मी) जनता में विग्रह। अमा. गुरुवारी सुभिक्ष। ता.२४ जुलाई से १९ अगस्त तक मिथुने वृ.+शु. **भृगु गुरु इकट्ठा जो दिसे,तो जगमहि उत्पात।।४।।** जग में उत्पात प्रकृति प्रकोप।

श्रावण शुक्ल पक्ष:- ता.२५ जुलाई २५ को **उफायां भौम** वृष्टि अवरोधक, पशुओ में पीड़ा। ता.२६ चंद्रोदय सिंहे उत्तर श्रृंग,हाथि वाहन सुभिक्ष,रक्तवर्ण युद्ध मरण। ता.२८ **बुधोदय पू.**जनता में सुख,अतिवृष्टि। **सावन में बुध ऊगियो, भरियो सरसो सोइ।।१।।** सुभिक्ष प्रद। ता.३० जुलाई से ता.७ अगस्त तक आर्द्रायां शुक्र+गुरु होने से व मिथुने शु.+वृ.युति १९ अगस्त तक होने से **गुरु शुक्र दोऊ मिले,दस भादी कर देइ। कैराजा जुझे घने,के घन बहु वर्षेइ।।२।। गुरु शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेत् वृष्टि जगत्यां नात्र संशय।।३।।** अर्थात् कहीं जल विप्लव से कहीं युद्धोपद्रव से विनाश होवे। ता.२९ जुलाई से १२ अगस्त तक तूफान,बादल वर्षा। ता.३ अगस्त आश्लेषायां रवि सं. स्त्री.नपु.च.सू.वाहन गज उपवाहन कूकड़ कोरो(सूखा,गर्मी) होवे। ता.६ **वक्री पूषा.२ कुंभे शनि** कहीं अतिवृष्टि से क्षति। दक्षिण में म्लेच्छ युद्ध,धर्म अधर्म पर कानून बने। ता.६ से ९ अगस्त तक कुंभे श.+रा.भय रोग,प्रकृति प्रकोप। ता. १३ पुनर्वसु १ गुरु बादल वर्षा। ता.७ जुलाई से १५ अगस्त तक **अंगारक योग** भारी गर्मी,बिजली पात,प्रकृति प्रकोप। ता.९ को १५ शनिवारी संघर्ष।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष:- ता.१० अगस्त २५ को १ रविवारी व **पुनर्वसु शुक्र** वर्षा अभाव, जनता में भय। पंचक में वर्षे तो ता.१४ तक वर्षा। ता.११ अगस्त तक कुंभे च.+श.+रा.कहीं प्रकृति प्रकोप। ता.११ को २ सोमवारी **भाद्रकृष्ण द्वितीयां द्वितीय वार योगतः। धान्य निष्पत्ति रतुला सम्पदःस्युश्चतुष्पदे।।१।।** धान्य अच्छे पैदा होवे,पशु सुखी। ता.१५ **हस्ते भौम** वर्षा अभाव। ता.१७ **मघायां सिंहेरवि** सं. स्त्री.पु.चं.सू.वाहन मेष,उपवाहन कच्छप बाढ़। ता.३० जुलाई से १४ सितम्बर तक मंगल रथ आगे होने से वर्षा अभावः। **आश्लेषा बुध** वर्षा,तुष धान्य अच्छा। ता.१८ से ३१ तक तूफान,बादल वर्षा। ता.१९ से २६ तक कर्के बुध.+शु.युति **सोमपुत्रो भृगुश्चैव चंद्र क्षेत्रे यदा भवेत्। दुर्भिक्षं तत्र कुर्वीत षठमासांति न संशयः।।२।।** अर्थात् कहीं अतिवृष्टि,कहीं अनावृष्टि से दुर्भिक्ष होवे। ता.१८ से २० तक मिथुने वृ.+शु.+चं.युति यदा शुक्रेन्दु जीव नामेक नाड्यां समागतः। तदा भवेन्महावृष्ट्या सर्वत्रैकार्णवा महीः।।३।। अतिवृष्टि से नुक्सान। ता.२२ पुष्ये शुक्र वर्षा,धार्मिकों को पीड़ा। ता.२३ **पुनर्वसु २ गुरु** बादल,वर्षा। अमा.शनिवारी से वैर विरोध बढ़े।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष:- ता.२४ अगस्त चंद्रोदय कन्या पर त्रिशूल श्रृंग व्याधि चोर भय, लालरंग युद्ध, मरण,पशुओं का नाश,हानि वाहन गर्मी। ता.२६ **मघायां सिंहि बुध,** कृषि उत्पादन अच्छा। ता.३१ **पूफायां रवि** सं.स्त्री.नपुं.सू.सू.वाहन महिष, उपवाहन हाथी,बहुगर्मी। ता.१ सितम्बर बुधास्त पू.बादल वर्षा। ता.२ सितम्बर आश्लेषा बुध सर्पभय,खंडवृष्टि। ता.३ से ६ बादल वर्षा। **चित्रायां भौम** अतिरोग, हैजा,ज्वर,घृत की बीमारियां। **पूफायां बुध** युद्ध उपद्रव। ता.६ अगस्त्योदय **ऊगा अगस्त फूले बनकासा। अब छोड़ो बरखा की आसा।।१।।** गर्मी पड़े, वर्षा का पलायन "**ऊगा अगस्त मेह मस्त**" हो जाता है। रात्रि में अगस्त्योदय शुभ। **अगस्त्य लंगोटी खोले तो धार न खण्डे।।२।।**" वर्षा हो तो संभव है ता.७ को १५ रविवारी खग्रास चंद्र ग्रहण से अग्निभय,शस्त्रभय,चौर भय होवे। भाद्रपदके सौख्यं सुभिक्षं जने।।३।। भाद्रपद में ग्रहण से सुख तथा सुभिक्ष होवे। ग्रहणान्ते वर्षते मेघ,अरिष्ट भंगस्तदा दिशेत्।।४।। ग्रहण के पीछे वर्षा हो तो सब अरिष्ट दूर हो जाते है।

आश्विन कृष्ण पक्ष:- पांच सोम का मास सुभिक्ष। ता.११.९.२०२५ को **उफायां बुध** बादल वर्षा। मघायां **सिंहि शुक्र** तूफान,पवन प्रकोप **सिंह शुक्र जब होय भवानी। पवन चले नहीं वर्षे पानी।।१।।** ता.१३,१४ कन्या मं.+बु.दहन,पवन,

बादल। ता.१२ सितम्बर उफायां रवि स्त्री.पु.सु.सू.वाहन जंबुक उपवाहन डेडरो बहुवर्षा। ता.१४ तुले भौम दहन। ता.१४ से १६ तक बादल वर्षा। ता.१७ कन्यायां ऽर्क से १७ अक्टूम्बर तक सूर्य से मंगल आगे दहन गर्मी,स्त्रियों को कष्ट। ता.१६ **हस्ते बुध** जनता सुखी। ता.१६ से २१ बादल वर्षा। ता.१६ से २१ तक सिंहे सू.+च.+शु.+के.युति महारोग,भय।

आश्विन शुक्ल पक्षः- ता.२३ सितम्बर २५ को चंद्रोदय कन्या पर त्रिशूल श्रृंग व्याधि चोर भय, पीतरंग ता.२७ सितम्बर हस्ते रवि नपुं.सू.सु.वाहन चातक, उपवाहन हाथी बहुगर्मी। **चित्रायां बुध** दहन,विद्वान,नर्तकी,शिल्पियों को कष्ट। ता.१ अक्टूम्बर तुले बुध ज्वरादि रोग,पवन प्रकोप,बादल वर्षा। ता.१ से १७ अक्टूम्बर तुले बु.+मं.दहन पवन। ता.३ बुधोदय प.**जे बुध ऊगे आश्विने, थलमह कमल खिलेई। समोहोत चहुँ ओर मह,जग सहु सुख वसेह।।१।।** वर्षा,जनता सुखी। ता.५ **उफायां शुक्र** कृषि को क्षति। ता.७ पुनर्वसु ४कर्के गुरु ता.२१ दिसम्बर तक रहेगा। कहीं अतिवृष्टि,कहीं अनावृष्टि से दुर्भिक्ष। **कन्यायां शुक्र** वर्षा अभाव,स्त्रियों को कष्ट।

कार्तिक कृष्ण पक्षः- कार्तिक में पांच भौम व प्रतिपदा क्षय रजस्वला मास बलात्कार,गर्मी, भय उपद्रव होवे। ता.११.१०.२५ को **चित्रायां रवि** सं.स्त्री.पु.सू. सू.वाहनगज,उपवाहन डेडरो बहुवर्षा। ता.१२ से १८ तक तूफान,बादल वर्षा। ता.१४ **विषाखा भौम** प्रचण्ड पवन। विषाखा बुध पवन प्रकोप। ता.१५ **हस्ते शुक्र** वर्षा अभाव,जनता को कष्ट,चित्रकारों को पीड़ा। ता.१७ **तुले ऽर्क** शुक्रवारी हाथियों का नाश,स्त्रियों को भय। ता.१७ से २५ अक्टूम्बर तक तुले सू.+बु. +मं. युति गर्मी पवन प्रकोप,झोला वाजे,फसलों को नुक्सान। ता.२० दीपावली सोमवारी सुभिक्ष। ता.२१ अमा.मंगली अग्नि उपद्रव **भौमे भूमी महावन्ही** होवे।

कार्तिक शुक्ल पक्षः- ता.२२.१०.२०२५ को १बुधवारी सुभिक्ष। ता.२३ चंद्रोदय तुले समान श्रृंग विग्रह,पीतवाहन शुभ,घोड़ा वाहन शुभ। ता.२४ **स्वात्यां रवि** सं.स्त्री.नपुं.सु.सृ.वाहन मंडूक, उपवाहन हाथी बहुगर्मी। ता.२८ अक्टूम्बर से १६ नवंबर तक वृश्चिके मं.+बु.युति गुरु,शनि दृष्ट तूफान,बादल वर्षा प्रकृति प्रकोप। ता.२६ **चित्रायां शुक्र** दहन,रोग वृद्धि। चित्रकारों,लेखकों पर घात। ५ रविवारी से दस विश्वा जमानो। ता.२८ **अनुराधा बुध** सुभिक्ष,जनता सुखी। वृश्चिके भौम महामारी,ता.२९ **भौमास्त** प.राजभय,सुभिक्ष। ता.१ नवंबर तुले शुक्र सुभिक्ष। ता.१ से १६ नवम्बर तक तुले सू.+शु.युति भयोपद्रव,पश्चिमी देशों में अनिष्ट। **वक्री बुध** अन्न की उपज अच्छी। ता.२ **अनुराधायां भौम** सुभिक्ष,पशु पीड़ा। ता.४ वक्री विषाखा बुध पवन प्रकोप। ता.५ बुधास्त प.बादल वर्षा।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः- ता.६.११.२०२५ई.**विशाखा रवि** पूर्व,दक्षिण में उपद्रव १ गुरुवारी पश्चिमीय देशों में युद्धोपद्रव। **स्वात्यां शुक्र** दूत,वणिक्,नाविकों को भय, कष्ट। सौराष्ट्र में हिंसा। ता.७,८ शस्त्रभय। ता.८ से १४ तक तूफान,बादल, वर्षा। ता.१२ **वक्री गुरु** राजविग्रह,दुर्भिक्ष, गुरुवके स्थिरो रोग रोग ज्यादा। ता.१२ से २१ नवम्बर तक गुरु,शनि,बुध तीन ग्रह वक्र प्रचण्ड पवन,तूफान से भय। ता.१५ को ११ शनिवारी जलशोषःप्रजा में भय। ता.१७ **विशाखा शुक्र** स्त्री राज्यों का विनाश। ता.१८ को १३ तिथि वृद्धि प्रजा में क्रंदन। ता.१७ से १९ बादल वर्षा। ता.१९ **अनुराधा रवि** भक्तों को कष्ट। १४ स्वाति से **मार्गे कृष्ण चतुर्दश्यां स्वाति ऋक्षं प्रजायते। तदा वैश्रावणे मासे वृष्टिर्नैव भविष्यति।।१।।** आगे श्रावण में वर्षा नहीं होवे। ता.१९ से २२ नवंबर वृश्चिक सू.+चं.+मं.+बु.युति महारोग,दुर्भिक्ष। ता.२० **ज्येष्ठा भौम** वर्षा का अभाव जनता में रोग।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः- ता.२१.११.२०२५ को बुधोदय पू.सुभिक्ष बादल वर्षा। मार्गी शनि तूफान,जल विप्लव। चंद्रोदय ज्येष्ठा में राजा को कष्ट। वृश्चिके उत्तर श्रृंग, सुभिक्ष,पीतरंग,घोड़ा वाहन शुभ। ता.२२ को २ शनिवार दक्षिण पवन चले तो कष्ट होवे। ता.२१,२२ बादल वर्षा। ता.२४ **मार्गी बुध** जनता में शांति। ता.२५ वृश्चिक शुक्र सुभिक्ष। ता.२५ नवंबर से ९ दिसंबर तक वृश्चिके सू.+चं. +बु. युति पवन उपद्रव,रोग भय। ता.२७ **अनुराधा शुक्र** भूकम्प,पशुओं में रोग। ता.२७ से ३० तक बादल,वर्षा। ता.१ दिसम्बर मार्गी **अनुराधा बुध** जनता सुखी। ता.३ **ज्येष्ठायां रवि** गर्मी,बादल। १४ क्षया से दुर्भिक्ष,प्रजापीड़ा।

पौष कृष्ण पक्षः- ता.५ दिसम्बर २५ को १+रोहिणी जनता में क्षोभ। ता.५ से ७ बादल,वर्षा। ता.८ **ज्येष्ठायां शुक्र** राज विग्रह,क्षत्रियों व पहाड़ी लोगों को संताप, पीड़ा। ता.९ ५मंगली,नृप व जनहानि मूले धने **भौम** दहन,दक्षिण में उत्पात, द्विजों व वीर पुरुषों को पीड़ा। ता.९ से १६ दिसंबर तक वृश्चिके सू. +बु.+शु.युति तूफान,बादल,राजभंग,उत्पात होवे। ता.१५ शुक्रास्त पू.बादल,वर्षा परन्तु ता.१ फरवरी २६ तक शुक्रास्त वर्षा में अवरोध हिन्दुओं को कष्ट,राक्षस गण में राक्षसोपद्रव,बहु रोग,मारवाड़ में दुर्भिक्ष। ता.१६ मूले धने ऽर्क मंगलवारी अग्नि उपद्रव। ता.१७ **ज्येष्ठा बुध** पशुओं में रोग। ता.१८ मूले **धने शुक्र** दहन,वैद्यों को पीड़ा। ता.१६ से १९ दिसम्बर तक वृश्चिके च.+बु.+शु.युति बादल,वर्षा। ता.१९से २१ दिसम्बर तक धने सू.+चं.+मं.+शु.युति तूफान, महारोग। ता.१९ को अमा शुक्री से **सोम शुक्र सुरगुरु,पौष अमावस होय। घर घर वाजे वधावणा,दुखी न दीसै कोय।।१।।** अमा जेष्ठा में बलात्कारियों का नाश।

पौष शुक्ल पक्षः- ता.२१ दिसम्बर २०२५ को चंद्रोदय धने उत्तर श्रृंग सुभिक्ष,

astro welfare

सफेद रंग शुभ,घोड़ा वाहन शुभ। १ वृद्धि सुभिक्ष। ता.२० से २७ दिसंबर तक धने सू.+मं.+शु.युति आर्थिक क्रांति,उपद्रव। ता.२४ बुधास्त पू. व्यापारियों, बुद्धिजीवियों को कष्ट। ता.२५ को ५ गुरुवारी सुभिक्ष। ता.२६ **पूषायां भौम** अन्न से पूरित पृथ्वी होवे। ता.२७ मूले धने बुध पशुओं,बालकों में रोग,कष्ट,राजा प्रजा में विरोध। ता.२७ दिसंबर से १४ जनवरी २०२६ तक धने सू.+मं.+बु.+शु. युति तूफान,महारोग। ८ क्षया दुर्भिक्ष। ता.२६ पूषायां रवि सर्दी का प्रभाव बढ़े। **पूषायां शुक्र** जलचरों को पीड़ा। बीमारियां ता.३१ दिसम्बर से ८ फरवरी २०२६ तक सर्दी का चालिसा अच्छी सर्दी पड़े। **धन पन्द्रह ने,मकर पच्चीस। सर्दी पड़े दिन चालीस।।१।।** दिन ४० सर्दी पड़े,फिर नहीं।

माघ कृष्ण पक्ष:- ता.४ जनवरी २०२६ को १ रविवारी रोग ज्यादा। पूषायां बुध रोग भय। ता.४ से ८ तक बादल वर्षा। ता.६ **उषायां शुक्र** रोग वृद्धि,पांचाल, मालवा में उत्पात। ६चित्रा सुभिक्ष। ता.११ उषायां रविवारी बादल। **मकरे शुक्र** बादल। ता.१२ उषायां बुध बालकों का रोग से मरण ज्यादा,कृषि उत्पादन अच्छा। ता.१३ **उषायां भौम** बादल वर्षा। ता.१३ से १५ तक बादल वर्षा,शीत प्रकोप, ओला वृष्टि। ता.१४ **मकरेऽर्क** बुधवारी अणचिन्त्यो काल पड़े। ता.१४ से १७ जनवरी तक मकरे सू.+बु.+शु.युति आगे व ता.१ फरवरी तक मकरे सू.+मं. +बु.+शु.युति से प्रकृति प्रकोप,रोग ज्यादा। ता.१७ मकरे भौम फसलों में रोग,मवेशी को कष्ट। ता.१८ अमा.रविवारी **माघ अमावस,रवि शनि मंगल। धनी वात अरु देश उथंगल।।१।।** फल घटित होवे। ता.१८ से ३० जनवरी तक अंगारक योग से फसलों में दाहा पड़े।

माघ शुक्ल पक्ष:- ता.१६ जनवरी २०२६ को श्रवणे बुध कृषि को ओला,तुषार, वृष्टि से क्षति। **श्रवणे शुक्र** बंग अंग मगध का विनाश। कर्ण पीड़ा। ता.२४ **श्रवणे रवि** बादल। बुधोदय प.बादल। ता.२५ को ७ रविवारी दुर्भिक्ष,विग्रह भय। ता.२७ **धनेष्ठा बुध** पशुओं में रोग। ता.२८ जनवरी से ४ फरवरी तक तूफान,बादल वर्षा। ता.३० **श्रवणे भौम** जनता में रोग। **धनेष्ठा शुक्र** हाथियों को पीड़ा,धनिकों का धन हरण, पांचाल, सूरसेन, मत्स्य देश का विनाश ता.१ फरवरी **कुंभे बुध** बादल, वर्षा। शुक्रोदय प.बादल वर्षा,ओलावृष्टि।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष:- पांच सोम का मास व १ सोमवारी सुभिक्ष,फल फूल अच्छे होवे। ता.४ फरवरी २०२६ **कुंभे शुक्र** सुभिक्ष,बादल वर्षा। ता.४ से १२ फरवरी तक कुंभे बु.+शु.+श.+रा.युति गुरुदृष्ट,तूफान,बादल वर्षा। प्रकृति प्रकोप विनाश। ता.५ **शतभिषा बुध** वर्षा,सेवकों को कष्ट,शूद्रों में रोग। ता.६ **धनिष्ठा रवि** सुभिक्ष। ता.६शतभिषा शुक्र शिलावटों को कष्ट। ता.१२ कुंभेऽर्क गुरुवारी सुभिक्ष। ता.१२,१३फरवरी कुंभे सू.+बु.+शु.+श.+रा.पंचग्रह युति दुर्भिक्ष, जनक्षय,वर्षा के गर्भनाश। आगे १७ फरवरी तक कुंभे सू.+बु.+शु.+रा.युति से महारोग तूफान से विनाश। ता.१३ पूभा.४ **मीने शनि** तूफान,भूकंप,अमेरिका में प्रकृति प्रकोप,पशुओं रोग। ता.६ से १२ तक बादल,वर्षा। ता.१३ **शतभिषा बुध** सेवकों को कष्ट,शूद्रों में रोग। ता.१४ से १६वर्षा,बादल। ता.१६ **धनेष्ठा भौम** जनता सुखी,देश की खूब समृद्धि,आर्थिक विकास,ता.१७ अमा मंगली बिजली पात। ता.१७ से १६ फरवरी तक कुंभे सू.+चं.+बु.+शु.+रा.युति वैर विरोध जनक्षय होवे।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष:- ता.१८ फरवरी २०२६ को चंद्रोदय शतभिषा छत्रभंग। कुंभे समान श्रृंग,विग्रह। श्याम रंग,भैंसा वाहन दुर्भिक्ष। ता.१६ **शतभिषा रवि** गुरुवारी सुभिक्ष। ता.२० पूभायां शुक्र धूर्त,दूतों,भार वाहकों की हिंसा। ता.२० से २५ फरवरी कुंभे सू.+बु.+शु.+रा.युति तूफान,बादल वर्षा,महारोग,राष्ट्रक्षय। ता.२५ कुंभे भौम धार्मिक वातावरण। ता.२५ से २८ फरवरी तक कुंभे सू.+मं. +बु.+शु.+रा. पंचग्रही युति तूफान बादल वर्षा। ता.२७ फरवरी से ६ मार्च तक बादल वर्षा। ता.२७ फरवरी बुधास्त प. हिमपात,वायु प्रकोप,कृषि वृक्षों को क्षति। ता.२८ मीने शुक्र जनता सभी प्रकार से सुखी। ता.२ मार्च होली सोमवारी सुभिक्ष। ता.३ फरवरी **उभायां शुक्र** चलचरों को घातपात,फल मूल में रोग। शनि अस्त प. बादल वर्षा,जनता में पीड़ा,राजविग्रह,पापियों को पीड़ा। **खग्रास चंद्रग्रहण** मंगलवारी अग्नि भय,अमीर,वनवासी,राजाओं(नेताओं) का धनक्षय। १५ मंगली भूकम्प,अग्नि उपद्रव।

चैत्र कृष्ण पक्ष:- ता.४ मार्च २०२६ को १ बुधवारी -**चैत वदी पड़वा जो वार, बुधवारी काल पडंत।।१।।** फल घटे। **पूभायां रवि** प्रकृति प्रकोप। ता.५ **शतभिषा भौम** कीट पतंग,टिड्डी,मूषक से फसलों को नुक्सान। ता.१३ **रेवत्यां शुक्र** आतंक बढ़े,नगरों व नागरिकों को भय। ता.११ से १८ तक तूफान बादल वर्षा। ता.१४ मीनाऽर्क शनिवारी फसलों को नुक्सान। ता.१४ से १८ मार्च तक मीने सू.+शु. +श.युति व ता.१६ से १८ तक कुंभे चं.+मं.+बु.+रा.युति प्रकृति प्रकोप,फसलों को नुक्सान। **मार्गी गुरु** सुभिक्ष। उभा१शनि राजपीड़ा,धान्य कम। ता.१५ बुधोदय पूर्वे वायुवेग अधिक वर्षा। ता.१८ **मार्गी बुध** बादल। **उभायां रवि** बादल। ता.१८ से २० तक मीने चं.+शु.+श.युति समुद्रीय देशों में कष्ट। अमा बुधवारी सुभिक्ष।

□□□

विक्रम संवत् २०८२ शकः १९४७ शुद्धः विवाह लग्न मुहूर्ताः

ध्यानाकर्षणः-

(१) **कात्यायनोक्त चतु नक्षत्र** अश्विनी,चित्रा ,श्रवण,धनेष्ठा। सर्वमान्य ज्योतिष ग्रंथो मे नही होने से इन नक्षत्रों में विवाह स्पष्ट नहीं किये है। ये नक्षत्र वधू प्रवेश,वधू द्विरागमन मुहूर्तों में लिये गये है। वागुदान(टीका चढ़ाना) मुहूर्त में कृत्तिका,चित्रा,श्रवण, धनेष्टा तीनों पूर्वा को लिया गया है। **सीतोढा पूर्व फाल्गुन्यां नो लभे शमतो न सत्-** अर्थात् पूर्वाफाल्गुनि में सीताजी ब्याही गई उनको विवाह के बाद सुख नहीं मिला इस कारण पू.फा.को विवाह में शुभ नही माना है। इसी प्रकार पुक्ष नक्षत्र मे ब्रह्माजी की शादी हुई थी प्रभावतःअति कामाशक्त हो पथ भ्रष्ट हुए थे इस कारण पुक्ष नक्षत्र ब्रह्मा से श्रापित हो गया सभी कार्यों मे शुभ होनें पर भी विवाह में त्याज्य किया गया है यथा- **प्राचेतसः प्राह शुभं भगर्क्ष सीता तयूढा न सुखं सिषेवे। पुष्यस्तु पुष्य त्यतिकाम मेव प्रजापते राय स शाप मस्मात्।।१।।**(विवाह वृन्दावन) अर्थात् मुनि प्राचेतस ने विवाह में पूर्वाफाल्गुनि को शुभ माना है किन्तु सीताजी का विवाह इसमें होनें से वनवासादि के कारण सुखी नहीं होने से विवाह में त्याज्य माना है। इसी प्रकार ब्रह्माजी का पुष्य में विवाह हुआ था और भगवान् शिव के विवाह के समय पार्वती के सौन्दर्य को देखकर ब्रह्मा विचलित हुए अतः पुक्ष ब्रह्मा से श्रापित होनें से विवाह में त्याज्य हो गया। **विवाहांग कार्य तैलादि लेपन** में भी **अश्वनी,चित्रा नक्षत्र** को त्याज्य किया गया है। राजाओं के खड्ग विवाह में भी इन नक्षत्रों को नहीं लिया गया है। **पुनर्भू विवाह** (स्त्रियों के पुनर्विवाह) में भी **श्रवण** नक्षत्र को ग्राह्य नहीं किया है। ऐतदर्थ कात्यायनोक्त नक्षत्र चतुष्टयी विवाह युक्ति संगत नही है। जो अपना वैवाहिक जीवन सुखमय **पत्नीच्छन्दानुवर्तिनी-** पत्नी अपने अनुकूल **भार्यावशानुगा-** पत्नी अपने वशीभूत रहे,इस हेतु आचार्यों ने विवाह के लिये ग्यारह नक्षत्रों को अनुकूल माना है। इसी अनुकूल नक्षत्रों में हमने विवाह शुद्ध किये है।

(२) **चातुर्मास विष्णुशयन में विवाह निषेध हैः- उत्सवे वासुदेवस्य मंगलेनान्य मंगलम्-** अर्थात् विष्णुशयन में अन्य मंगल विवाहादि कार्य नहीं करनें चाहिये। अर्थात् कर्क,सिंह,कन्या,तुला संक्रांति में चातुर्मास के कारण विवाह योग्य नही माने है। धनु,मीन, संक्रांति व अधिकमास आदि मलमास होनें से विवाह में त्याज्य है। द्रौपदी का स्वयंवर अर्जुन से पौष शुक्ला ११ रोहिणी में हुआ परन्तु पाणिग्रहण माघ कृ.१ पुक्ष में युधिष्टर से,आश्लेषा में भीम से, मघा में अर्जुन से,पूफा.में नकुल से,उफा. में सहदेव से हुआ था। फलतः प्रत्येक पाण्डव के साथ द्रौपदी को एक वर्ष रहना तय हुआ था जो दुखमय जीवन का प्रतीक रहा। **आषाढ़े धनधान्य भोग रहिता नष्टा प्रजा श्रावणे वेश्या भाद्रपदेश्विने च मरणं रोगार्तिदा कार्तिके। पौषे प्रेतवती वियोग बलहा चैत्रे मदोन्मानिनी,अन्येष्वेव विवाहिता सुतवती नारी समृद्धा भवेत्।।२।।** (राजमार्तण्ड) अर्थात् आषाढ़ (कर्क संक्रांति)में विवाह करनें पर धन धान्य भोग का अभाव सावन में संतान नाश,भादों मे वेश्या, आश्विन में मरण,कार्तिक(तुला संक्रांति) में रोग पीड़ा,पौष में कन्या प्रेतिनी, वियोगिनी,बल नष्ट करनें वाली,चैत्र में मदोन्मत्त और इनसे बचे हुए मासों में विवाह करनें से कन्या पुत्रों से युक्त धन धान्य सुवर्णादि से युक्त होती है। परन्तु कार्तिकशुक्ला एकादशी से तुलसी विवाहादि दिन होने से शास्त्रसम्मत शुभ है यथा- **दिवसाः पंच पूर्वाहि निर्गमे पंच वासराः। कारयेल्लग्न मेतेषु धन धान्य युतो भवेत्।।३।।** अर्थात् कार्तिक पूर्णिमा से पांच दिन पहिले और पांच दिन बाद तक विवाह करनें से कन्या वर धन धान्य से युक्त होती है। इन दिनों में "**नात्र विष्टि कुलकादि चिंतयेत्-** अर्थात् भद्रा कुलिका का विचार नही करना। **कार्तिकी सकल दोष नाशिनी-** कार्तिकी पूर्णिमा के दिन विवाह करने पर समस्त दोषों का नाश होता है। इस दिन ४,८,१२वां चंद्र छोड़कर विवाह ग्राह्य है। इस दिन लग्न की शुद्धि का चिंतन करना आवश्यक नहीं है। **नैव लग्नविधि** मत्र चिंतयेत्। इन दिनों में गोधलिक समय प्रशस्त है **कुर्याद् गोधूलिकं लग्नं कार्तिक्यां दिन पंच च। इसी प्रकार क्षेत्र विशेष में-भृगौ सुकच्छे च तथा विवाहे बलक्षपक्षे नभसी दशम्याम्-** अर्थात् कच्छ देश मे भृगु पर्वत के तालाब के तट पर श्रावण **मास शुक्ल पक्ष की दशमी** के दिन विवाह शुभ होता है। ऐतदर्थ इनमें गोधूलिक लग्न ही ग्राह्य है। लग्न शुद्धि रेखादि की आवश्यकता नही है। इन दिनों के सिवाय कुलाचार, देशाचार का शास्त्रो में उल्लेख है कि- **सिंहस्थ गुरु** में गंगा का उत्तर तट व गोदावरी के दक्षिण में विवाह शुभ माना जाता है। **मकरस्थ नीच गुरु** में नर्मदा के पूर्व,शोण से उत्तर दक्षिण और गण्डकी के पश्चिम भाग को दोष रहित माना है। गोचरीय स्थिति मे अन्यान्य देशों में अपनी अपनी मान्यतायें भी है। पुनर्विवाह विधवा विवाह,नाता प्रथा वाले लोग किसी बड़े दिन की आड़ में विवाह कर लेते है वे रेखादि लग्नशुद्धि नही देखते। **संकीर्ण जातेस्तु शुभावहानि-** संकीर्ण जातियों के लिये सब शुभ है। ये लोग"**यद्यपि शुद्धं लोक विरुद्धं न करणीयं न करणीयं**"के सिद्धान्त

astro welfare

को मानते हैं। परन्तु-**तद्देश दोषान्परि वर्जयन्ति मनीषिणो देवविदप्रयोगात्।** अर्थात् विद्वान ज्योतिषी उनउन देश के दोषों का प्रयोग में त्याग करते हैं। एवं च- **शास्त्र शिष्टे विरुद्धस्तु धर्मत्याज्यो बुधैः सदा**- अर्थात् बुद्धिमान लोग शास्त्र एवं शिष्टाचार के विपरीत कार्यों का त्याग कर देते हैं। अतः- **महाजनो येन गतः स पंथाः**(महाभारत) अर्थात् पूर्वाचार्यों के मार्ग पर ही चलना युक्ति युक्त है। **सयत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते**(गीता) अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जो जो प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। अन्य भी वही प्रमाण मानते है। ऐतदर्थ- **चातुर्मास में विवाह शुद्धिकरण शास्त्रानुकूल नहीं है।**

(३) गुरुरेकोपि केन्द्रस्थःशुक्रो वा यदि वा बुधः। हरेःस्मृतिर्यथा हन्ति तद्वदोषा न कालजाः।।४।। दोषाणां च शतं हन्ति बलवान्केंद्रगो बुधः। अपक्षयघुनं शुक्रोद्विगुणं लक्षमंगिराः।।५। अर्थात् केन्द्र में बुध सौ दोषों का और सातवें को छोड़ शेष केन्द्रों में बलवान् **शुक्र से दो सौ दोषों** का तथा बलवान् गुरु से लाखदोषों का विनाशक होता है। **ध्वजयोगः**-शुभग्रह लग्न में पापग्रह अष्टम में होने से स्त्री पति को प्रिय होती है। **श्रीवत्सयोगः**-मंगल सूर्य ११वें, शनि६ठें, चंद्र२रें,९वें अन्यग्रह से यह उत्तम विवाह है। **आनन्दयोग**- कन्या लग्न, ३रें चंद्र,गुरु,५वें शुक्र से आनंद करता है। **अर्द्धचंद्रयोग**- ११वें सूर्य,६ठें मंगल, ३रेंशनि से कन्या पतिव्रता,सौभाग्यवति होती है। **गजाभिधयोग**- गुरु९वें,बुधलग्न में,शनि ११वें से कन्या पतिव्रता,धर्म,अर्थ की देने वाली होती है। **शंखयोग- शुभग्रह ४,९,१० वें हो तो सदा शुभ कारक है।**

(४) **अशुभयोग- चक्रयोग**- मेष से कन्या तक पापग्रह,तुला से मीन पर्यन्त अशुभ ग्रह हो तो इस योग में कन्या व्याभिचारिणी होती है। **वापीयोग**- संपूर्ण पापग्रह केंद्र में हो तो यह विवाह में अनिष्टप्रद है। **कोदंडयोग**- शुभग्रह १,१२वें व पापग्रह २रें हो तो अशुभ है।**कुठारयोग**- मंगल १२वें,शुक्र६ठें,शनि ४थे होने से वंश का नाश करता है। **कर्मयोग**- १२वां सूर्य, २रां शुक्र,६ठें शनि,८वां चंद्र हो तो कन्या भिक्षा मांगती है। **मूसलयोग**- सूर्य लग्न में, शनि १२वें,चंद्र ८वें होने से कन्या कुल का नाश करने वाली होती है। **उपग्रहदोष** कुरुक्षेत्र,वाल्हिक देश में, **लत्तादोष**,सौराष्ट्र,मालव देश में,**पातदोष** बंग कलिंग में,**एकार्गल** कश्मीर में और **वेध दोष** संपूर्ण देश में त्याज्य है। वेधदोष- लग्न में शुभ ग्रह,लग्नेश लाभेश पर शुभग्रहों की दृष्टि वा शुभ ग्रहयुत वा शुभग्रहों की कालहोरा हो तो वेध दोष नहीं होता है। **क्रूरैरपि त्यजेत्पादं केचिद्धुर्मतर्षयः** आदि प्रमाणों से विवाह लग्न शोधन किये हैं। अतः देशाचार कुलाचार का उपरोक्त के सिवाय अन्य प्रपंच मिथ्या है।

वैशाखकृष्णपक्षः

(मेषसूर्य,वृषे गुरुः)

(१) १ सूर्य स्वात्यां लग्न रात्री मकर १४ अं.उप.,कुंभ लग्न रेखो ९।।।।।।ऽ।।।**ता.13.4.2025ई.।तुले चंद्रः**।रात्री मकर २.३० से ३.२६ बजे कुंभ ३.२७ से ४.५५ बजे।

(उषः प्रशस्त केन्द्र त्रिकोणयों शुभ ग्रहाःमास शून्य रवेर्दग्ध नाशयेत्)

(२) १ चंद्र स्वात्यां लग्न प्रातः ल.वृषभ अं.१५ उप.सुबह ल.३,६ रेखा ९।।।।।।ऽ।।। रात्री वृश्चि.अं.१५ या. रेखा १०।।।।।।।।।। **ता.14.4.25ई.। तुले चंद्रः**। प्रातः वृषभ ८.५२ से ९.५२ बजे। सुबह मिथुन ९.५३ से १२.६ बजे। दिन को कन्या ४.४१ से ६.५६ बजे। रात्री वृश्चिक ९.१६ से १०.१५ बजे। (केन्द्र त्रिकोणेयों शुभ वा बली ग्रहाः मास शून्य,रवेर्दग्धां च नाशयेत्)

(३) ३ बुध अनुराधायां ल.रात्री वृश्चिक अं.७ उप. रात्री धनु अं.२६ या. रेखा ९।।।।।ऽ।।।। **तारीख 16.4.2025ई.। वृश्चिक चंद्रः**।रात्री वृश्चिक ९.४५ से ११.२३ बजे। रात्री धनु ११.२४ से १.१५ बजे तक।

(४) ४ गुरु मूले लग्न रात्री मीन अं.३ उप. रेखा ८।।।।।ऽ।ऽ।। **ता.17.4.25ई.। धनु चंद्रः**। रात्री मीन ४.५४ से ६.६ बजे तक,उषःप्रशस्तः।

(५) ५ शुक्र मूले सुबह ल.१,मिथुन अं.११ या.रेखा ७।।।।।ऽऽऽ।। रात्री वृश्चिक अं.२ उप.,धनु ,कुंभ,मीन रेखा ७।।।।।ऽ।ऽ।ऽ **ता.18.4.2025ई.। धनु चंद्रः**। प्रातः मेष६.६ से ७.४० बजे। सुबह मिथुन ९.३८ से १०.१२ बजे। रात वृश्चिक ९.५ से ११.१५ बजे। धनु ११.१६ से १.२२ बजे। कुंभ ३.८ से ४.१५ बजे।

(उषः प्रशस्तः)

(६) ७ सूर्य उषायां लग्न प्रातः मेष अं.१३ उप.,मिथुन,धनुचंद्रः,रात्री ल.८,९, ११,१२ रेखा ७ऽ।।ऽ।ऽ।।।। **ता.20.4.25ई.। मकर चंद्रः**। सुबह मेष ६.४५ से ७.३२ बजे। मिथुन ९.३० से ११.४३ बजे। धनु चंद्रः।अग्रे रात्री वृश्चिक,धनु ८.५३ से १.१४ बजे। कुंभ मीन ३.० से ५.५७ बजे तक।मकर चंद्रः।उषः प्रशस्तः।

(७) १४ शनि रेवत्यां लग्न रात्री ८,९ रेखा ७ऽऽ।ऽ।।।।।। **ता.26.4.25 ई.। मीने चंद्रः**।रात्री वृश्चक,धनु ८.२९ से १२.५१ बजे तक।

वैशाखशुक्लपक्षः

(मेषेसूर्य,वृषेगुरुः)

(८) २ मंगल रोहिण्यां लग्न रात्री ८,११, १२,१ अं.१५ या रेखा ९।।।।।ऽ।।।।**ता. 29.4.25ई.। वृषेचंद्रः**। मृगे लग्न रात वृश्चिक ८.१७ से १०.३१ बजे। कुंभ,मीन,मेष २.२४ से ६.७ बजे।

(उषःप्रशस्तः)

(९) ३ बुध रोहिण्यां लग्न सुबह १,२,३ रेखा ९।।।।।ऽ।।।। दिने ल.६ रेखा

९।।।।।S।।। रात्री ल.८,९,११ अं.२५ या.रेखा ७SS।।।।S।।। **ता.30.4.25ई.। वृषे चंद:।** सुबह मेष,वृषभ, मिथुन ६.८से ११.३ बजे। दिने कन्या ३.३८ से ५.५३ बजे। रात वृश्चिक धनु ८.१३ से १२.३४ बजे,कुंभ २.२० से ३.३० बजे।

(अग्रे भद्रा दिवा रात्री छवरी काल अमान्य:)

(१०) ४ गुरु मृगे लग्न दिन को कन्या अं.२४ या.रेखा ८S।।।।S।।।। **ता.1.5.25ई.।मिथुनेचंद:।** दिने कन्या लग्न ३.३५ से ५.१५ बजे तक।

(रवियोग:,दिवा छवरी काल अमान्य:)

(११)८ चंद्र: मघायां लग्न गोधूलि ल.७ व ल.८ रेखा ८S।।।।।।।S। **ता.5.5.2025ई.। सिंहे चंद:।** सायं गोधूलि ५.३४ से ७.५० बजे। रात्री ७.५१ से १०.८ बजे। (रवियोग:,गणितेन क्रान्त्या ऽभाव)

(१२) ९ मंगल मघायां लग्न सुबह १,२,३ गोधूलि तुला अं.१३ या. रेखा ८S।।।।।।।S। **ता.6.5.25ई.।सिंह चंद:।** सुबह मेष,वृषभ,मिथुन ६.० से १०.३६ बजे तक। गोधूलि सायं ५.३० से ६.३० बजे तक।

(रवियोग, गणितेनक्रांत्या ऽभाव:)

(१३) १० बुध उफायां लग्न रात वृश्चिक अं.७उप. ,धनु रेखा ७।।S।।।S।S। **ता.7.5.25ई.। सिंहे चंद:।** रात वृश्चिक धनु ८.११ से १२.४ बजे तक।

(रात्री छवरीकाल अमान्य:,अग्रे भद्रा:)

(१४) ११ गुरु उफायां रात्री ल.८ रेखा ८।।S।।S।।।। हस्ते लग्न रात्री ल.१०,१२ रेखा ७SS।।।S।।।।**ता. 8.5.25ई. ।कन्या चंद:।** रात्री वृश्चिक ७.३९ से ९.५६ बजे। रात मकर १२.१ से १.४८ बजे। मीन ३.२० से ४.४३ बजे। (रे.९ सायं अर्धयाम ऽगोधूलि छवरी काल त्याज्य रात्री अमान्य:)

(मेषेसूर्य:मिथुनेगुरु २४/५ उप.)

वक्राति चारे सुरराज मंत्री यत्रागत स्तत्र फलं ददाति ।।1।।

अर्थात् गुरुजिसराशिपरहै उसीकाफलदेगा।)

(१५) १२ शुक्र हस्ते लग्न सुबह ल.२,३ रेखा ७SS।।।S।।।। वृषे गुरु:। ऽगोधूलि ल.७,९ रेखा ८SS।।।।।।।। मिथुनस्थ गुरु **ता.9.5.25ई। कन्या चंद:।** सुबह वृष,मिथुन ६.१८ से १०.२४ बजे। वृषे गुरु:। ऽगोधूलि तुला सायं ५.१८ से ७.३४ बजे। रात धनु ९.५३ से ११.५६ बजे। मिथुने गुरु।

ज्येष्ठकृष्णपक्ष:

(मेषेसूर्य:,मिथुनेगुरु)

(१६) १ मंगल अनुराधायां लग्न रात्री ११,१२ रेखा ७।।।।।SS।।S **ता.13.5.25ई.। वृश्चिक चंद:।** रात्री कुंभ मीन १.२७ से ४.२४ बजे तक। (उष: प्रशस्त:)

(१७) २ बुध अनुराधायां लग्न प्रात: २ रेखा ८।।।।।S।।।S **ता.14.5.25ई. ।वृश्चिक चंद:।** प्रात: वृषभ ५.५९ से ७.५४ बजे।

(१८) ५ शनि उषायां लग्न दिने ६,७ गोधूलि वृश्चिक अं.१७ या. धनु चंद्र: रेखा ७।।।S।S।S।। अग्रे मकरे चंद्र: गोधूलि ल.८ अं.१७ उप.,रात्री कुंभ अग्रे रात्री ल. १२,१ रेखा ७।।।S।। ।SS। **ता.17.5.25ई. ।धनु चंद:।** दिने कन्या तुला वृश्चिक २.३२ से ८.१७ बजे तक। मकरे चंद्र: वृश्चिक ८.१७ से ९.२१ बजे। रात कुंभ,मीन,मेष १.११ से ५.४६ बजे तक।

(उष: प्रशस्त:,गणितेन क्रांत्या ऽभाव:।)

(१९) ६सूर्य उषायां सुबह ल.२,४ रेखा ७।।।S।।।SS। **ता.18.5.25ई.। मकरे चंद:।** सुबह वृषभ ५.४६ से ७.३८ बजे। दिने कर्क ९.५० से १२.११ बजे तक। (गणितेन क्रांत्या ऽभाव:)

(२०) १० गुरु उभायां लग्न रात्री ९,११,१२,१ रेखा १०।।।।।।।।।। **ता.22.5.25ई.। मीने चंद:।** रात धनु ९.३ से ११.६ बजे। कुंभे १२.५२ से २.२५ बजे। मीन २.२६ से ३.४५ बजे। मेष ३.४६ से ५.२३ बजे। उष: प्रशस्त:। (छवरीकाल दिने रात्री अमान्य:)

(२१)११ शुक्र उभायां लग्न प्रात: २,३ रेखा १०।।।।।।।।।। रात्री लग्न कन्या अं.२३या.रेखा ९।।।।।S।।।। रात्री रेवत्यां धनु अं.७उप. ल. ११,१२,१ रेखा ७।।SS।S।।।। **ता.23.5.25ई.। मीन चंद:।** प्रात: वृषभ,मिथुन ५.२४ से ९.२८ बजे। दिने कन्या २.९ से ४.१ बजे। रात धनु ८.५९ से ११.२ बजे। रात कुंभ मीन मेष १२.४८ से ५.१९ बजे तक। उष: प्रशस्त:।

ज्येष्ठशुक्लपक्ष:

(सूर्यवृषभ,मिथुनेगुरु)

(२२) २ बुध मृगे लग्न प्रात: २,३ वृषभ चंद्र: रेखा ९S।।।।।।।।। अग्रे दिने ल.६,रात्री ल.९,कुंभ अं. १९या.रेखा ८S।।।।S।।।। **मिथुने चंद: ता.25.5.25ई.** ।प्रात: वृषभ मिथुन ५.४ से ९.१० बजे **वृषभ चंद:।** दिने कन्या १.४९ से ४.३ बजे। रात धनु ८.३८ से १०.४२ बजे। रात कुंभ १२.२८ से १.१५ बजे,मिथुन चंद्र:।

(२३) ६ सूर्य मघायां रात्री ल.१ रेखा ७S।।।।SS।।। **ता.1.6.25ई.। सिंहे चंद:।** रात ३.१२ से ४.४६ बजे। उष: प्रशस्त:। (रोग बांण पूर्ण)

(२४) ७ चंद्र मघायां लग्न सुबह ३, रेखा ७S।।। ।SS।।। ल.७,ऽगोधूलि ८ रेखा ८S।।।।S।।।। रात्री ल.९ रेखा ९S।।।।।।।।। **ता.2.6.25ई.। सिंहे चंद:।** सुबह मिथुन ६.४० से ८.५३ बजे। दिने ३.४२ से ६.३ बजे। साय ऽगोधूलि ६.४ से ८.२० बजे। रात धनु ८.२१ से १०.२१ बजे। (अग्रे भद्रा:)

(२५) ९ बुध उफायां लग्न रात्री मकर अं.२उप.,ल. १२,वृष अं.१५ या.रेखा ९।।।।।S।।।।**ता.4.6.25ई.।**

astro welfare

कन्या चंद: । रात मकर १०.३० से १२.२ बजे । मीन १२.३ से १.३३ बजे । वृषभ ४.३५ से ५.४५ बजे ।
(उष: प्रशस्त , रवियोग)

(२६) १० गुरु हस्ते लग्न प्रात: २,३ रेखा १० |||||||||| **ता.5.6.25ई.। कन्या चंद:।** सुबह वृषभ,मिथुन ५.५० से८.४२बजे तक ।
(अग्रे व्यतिपात)

(२७) १२ शनि स्वात्यां लग्न सुबह ५रे.६ |||||S|||| रात्री ल.६,११ रेखा ८ |||||SS||| रात्री ल.१ रेखा ६ ||||||S|| **ता.7.6.2025ई.** । **तुले चंद:** । सुबह सिंह १०.५३ से १.८ बजे । रात धनु ८.२ से १०.२ बजे । कुंभ ११.५१ से १.२१ बजे । मेषे २.४६ से ४.२३ बजे तक ।

(२८) १२ सूर्य स्वात्यां लग्न सुबह ३,५ रेखा ६ ||||||S||| **ता.8.6.25ई.** । **तुलेचंद:** । सुबह मिथुन ६.१७ से ८.३० बजे । सिंह १०.४६ से १.४ बजे ।

(२९) १३ चंद्र अनुराधाया लग्न दिने तुला ४अं.उप. ,रात ११,१२ रेखा ६ |||||S||||, रात्री ल.२ रेखा १० |||||||||| **ता.9.6.25ई.। वृश्चिकके चंद:।** दिने तुला ३.३० से ५.३६ बजे । रात कुंभ मीन ११.४३ से २.४० बजे । वृषभ ४.१६ से ५.४६ बजे उष:प्रशस्त:
(रवियोग)

(३०) १४ मंगल अनुराधायां लग्न प्रात: २,३ रेखा १० |||||||||| **ता.10.6. 25ई.** । **वृश्चिके चंद:** । प्रात: वृषभ मिथुन ५.४६से ८.२२बजे । (अग्रेभद्रा)

नोट- गुरु अस्त:ज्येष्ठ शुक्ला 15 बुध ता.11.6.25 से 12.7.25 तक ।अग्रे चातुर्मास प्रारंभ ।

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष:

वक्रातिचारे सुरराज मंत्री यत्रागत स्तत्र फलं ददाति अर्थात् कर्कस्थ गुरु प्रभावी होगा ।

(सूर्यवृश्चिके,कर्कगुरु)

(३१) २ शनि मूले लग्न ऽगोधूलि वृषभ रे.१० |||||||||| रात्री ल.४,५,६,७ रेखा ६ |||||S|||| **ता.22.11.2025 ई.** । **धनुचंद:** । सायं ऽगोधूलि वृषभ ५.२१ से ५.४१ बजे अग्रे कुलिक: । रात्री कर्क,सिंह,कन्या ६.३२ से ६.४१ बजे तक उष:प्रशस्त: ।

(३२) ३ सूर्य मूले लग्न सुबह वृश्चिक रेखा ६ |||||S|||| दिने लग्न १०,११, १ ऽगोधूलि वृषभ अं.१३या. रेखा ८ |||||SS||| **ता.23.11.25ई.** । **धनु चंद:** । सुबह वृश्चिक ६.३८ से ८.५४ बजे । दिने मकर कुंभ ११.० से २.१४ बजे । मेष ३.४२ से ५.१६ बजे । ऽगोधूलि वृषभ ५.१७ से ६.०बजे ।

(३३) ४ चंद्र उषायां लग्न सायं मिथुन अं.८ उप.,अं.२७या. रेखा ७ |S||||SS|| **ता.24.11.25ई.। धनु चंद:** । सायं मिथुन ७.४२ से ६.०० बजे तक ।
(रवियोग अग्रे रे.६ |S|||SSS||अल्प)

(३४) ५ मंगल उषायां लग्न दिने मकर अं.३ उप. दिने ल.१२ ऽगोधूलि २ रेखा ८ |||||S|S|| **ता.25.11.25ई.** । **मकरे चंद:** । दिने मकर ११.५ से १२.३५ बजे, मीन २.७ से ३.३३ बजे । सायं ऽगोधूलि वृषभ ५.६ से ७.५ बजे । (चं. गुरु समसप्तक)

(३५) ६ शनि उभायां लग्न रात्री ४,६ अं.१३या. रेखा ७ ||||SS||S रात्री कन्या अं.१३ उप.रेखा ८ |||||S|||S **ता.29.11.25ई.** । **मीने चंद:** । रात्री कर्क ६.४ से ११.२१ बजे । कन्या अं.१३ या.१.३८ से २.३८ बजे ।अं.१३ उपरांत कन्या २.३६ से ३.५१ बजे । (रात्री छवरीकाल अमान्य:)

(३६) १० सूर्य उभायां लग्न सुबह १०, १२ मीन रे.८ |||||S|||S गोधूलि ल.२ रेखा ६ |||||S|||| रात्री रेवत्यां लग्न ४ रेखा ८S||||S|||| **ता.30.11.25ई.** । **मीने चंद:** । दिने मकर १०.३२ से १२.१५ बजे । मीन १.४७ से ३.१३ बजे । गोधूलि वृषभ ४.४६ से ६.४६ बजे । रात्री कर्क ६ से ११.१७ बजे ।
(गोधूलिके रवियोग,छवरीकाल ग्राह्य रात्री व्यतिपात:)

(३७) १५ गुरु रोहिण्यां लग्न सूर्यास्त परं रात्री ल.२,४,५,६ रेखा १० |||||||||| **ता.4.12.25ई.** । **वृषभ चंद:** । रात्री वृषभ ५.४२ से ६.३१ बजे । कर्क सिंह कन्या ८.४६ से ३.३४ बजे तक ।
(भद्रा,अर्धयाम त्याज्य:)

पौषकृष्णपक्ष:

(सूर्यवृश्चिक,गुरुकर्क)

(३८) १ शुक्र रोहिण्यां लग्न ८,१० अं.२५या.रेखा १० |||||||||| अग्रे मृगे ल.१२ रेखा ६S|||||||| **ता.5.12. 25ई.** । **वृषे चंद:** । प्रात: वृश्चिक ५.४६ से ८.५ बजे । दिने मकर १०.१० से ११.३० बजे । मीन १.२५ से २.५२ बजे । (अग्रे मृत्युबांण:)

(३९) ६ बुध मघायां लग्न रात्री ल.८ अं.१२उप. रेखा८ |||||SS|| **ता.10.12.25ई.** । **सिंहे चंद:** । रात्री वृश्चिक ६.३० से ७.१८ बजे,उष: प्रशस्त: ।
(पूर्व वैधृत भद्रा,त्याज्य:)

(४०) ८ शुक्र उफायां दिवा ल.११ रेखा ६ |||||||S|| सिंहे चंद्र:। ऽगोधूलि २ रात्री ४,५,६,७ रेखा ८ |||||S|S|| **कन्या चंद:** । **ता.12.12.25ई.** । दिने कुंभ ११.२७ से १२.५६ बजे । ऽगोधूलि वृषभ ४.३ से ६.० बजे । कर्क सिंह ८.१४ से १२.४७ बजे । कन्या १२.४८ से ३.०२ बजे । तुला ३.३से ५.२०बजे । (उष:प्रशस्त:)

(४१) ९ शनि हस्ते लग्न दिने ल.१० रेखा ८ |||||S|S||, अन्य गोधूलि ल.२ अं.२उप.रेखा ६ ||||||||S|| रात्री ल.४,५,७,८ रेखा ८ ||||||S|S **ता.13.12.2025ई.** । **कन्या चंद:** । दिने मकर

९.३८ से ११.२२ बजे। ऽगोधूलि वृषभ ३.५९ से ५.५५ बजे। रात कर्क सिंह ८.१० से १२.४३ बजे। तुला वृश्चिक २.५९ से ७.२० बजे:,उप: प्रशस्त:।

नोट- अग्रे शुक्रास्त पूर्व - पौष कृष्णा 11 चंद ता. 15.12.25 सेता.1.2.26ई. माघ शुक्ला 15 सूर्य

फाल्गुनकृष्णपक्ष:

(सूर्यमकर,मिथुनेगुरु)

(४२) २ मंगल मघायां लग्न दिने १,२,३ गोधूलि ४ रेखा ८।।।ऽ।ऽ।।।। **ता.3.2.26ई.। सिंहे चंद:।** दिन को मेष,वृष, मिथुन १०.५८ से ४.४२ बजे तक। गोधूलि कर्क सायं ४.४३ से ७.४ बजे (अग्रे लग्नाऽभाव:)

(४३) ३ बुध उफायां लग्न रात्री ल.७ अं.१८ उप. ,९अं.२०या. **सिंह चंद:**,अग्रे लग्न ९ अं.२० उप. **,कन्या चंद:** रेखा ९।।।।।।।ऽ।। **ता.4.2.26ई.**। रात्री तुला १२.५८ से १.४८ बजे। धनु ४.७ से ५.३१ बजे सिंहे चंद्र:।अग्रे धनु ५.३१से ६.१० बजे कन्या चंद्र:।

(रात्री छवरीकाल अमान्य:)

(४४) ४ गुरु उफायां लग्न दिने १२,२,३ रात्री लग्न ७,९, १० रेखा ८।।।।।ऽ।ऽ।। **ता.5.2.26 ई.।कन्या चंद्र:।** दिने मीन ९.२२ से १०.४९ बजे। वृषभ मिथुन १२.२८ से ४.३४ बजे। रात्री तुला ११.२७ से १.४४ बजे। धनु मकर ४.३ से ७.२४ बजे तक। **उप:प्रशस्त:**

(गोधूलिके अर्धयाम,छवरी काल त्याज्य:, दिनेरात्रौ छवरीकाल अमान्य:)

(४५) ५ शुक्र हस्ते लग्न दिने १२,२,३ गोधूलि ४ रात्री ५,७अं.२१या. रेखा ९।।।।।।ऽ।।। **ता.6.2.2026ई.। कन्या चंद:।** दिने मीन ९.१८ से १०.४५ बजे। वृषभ मिथुन १२.२४ से ४.३० बजे। गोधूलि सायं कर्क ४.३१ से ६.५२ बजे। रात्री सिंह ६.५३ से ९.७ बजे। तुला ११.२३ से १२.३० बजे तक।

(४६) ७ सूर्य स्वात्यां लग्न ऽगोधूलि ४, रात्री ६,८,९ रेखा ७ऽऽ।ऽ।।।।।। **ता.8.2.2026ई.। तुला चंद:।** ऽगोधूलि कर्क ४.२३ से ६.४४ बजे। रात कन्या ९.० से ११.१४ बजे। वृश्चिक धनु १.३३ से ५.५४ बजे। उप: प्रशस्त:। (रवियोग)

(४७) ८ मंगल अनुराधायां लग्न दिने १२,२ ऽगोधूलि ४,रात्री ल.७,९ रेखा ८ऽ।।।।।ऽ।। **ता.10.2.26ई.। वृश्चिके चंद:।** दिने मीन ९.२ से १०.२९ बजे। वृषभ १२.८ से २.४ बजे। ऽगोधूलि कर्क ४.१५ से ६.३६ बजे। रात तुला ११.७ से १.२४ बजे। धनु ३.४३ से ५.४६ बजे। उप: प्रशस्त: (अग्रे मृत्युबांण)

फाल्गुनशुक्लपक्ष:

(सूर्यकुंभ,गुरुमिथुने)

(४८) २ गुरु उभायां रात्री लग्न ८ रेखा ८।ऽ।।।ऽ।।।। ल.९ अं.१४या. रेखा ८।ऽ।।ऽ।।।। ल.९ अं.१४ उप. रेखा ९।ऽ।।।।।।।। **ता.19.2.26ई.।मीने चंद:।** रात्री वृश्चिक १२.४९ से ३.६ बजे। रात्री धनु अं.१४ या.३.७ से ४.७ बजे। रात धनुअं.१४ उप.४.८ से ५.१० बजे तक। उप: प्रशस्त:।

(४९) ३ शुक्र उभायां लग्न दिने २,रे.९।ऽ।।।।।।।। ल.३ रात्री ल.६अं.२७ या.रेखा ८।ऽ।।।।।।।ऽ रेवत्यां रात्री ल.७ रेखा ९।ऽ।।।।।।।। **ता.20.2.26ई.। मीन चंद:।** दिने वृष,मिथुन ११.२८ से ३.३४ बजे। रात्री कन्या ८.१२ से १०.१२ बजे। तुला १०.२७ से १२.४४ बजे।

(अग्रे भद्रा,दिवा रात्री छवरीकाल अमान्य: ।)

(५०) ४ शनि रेवत्यां लग्न दिने २ल.९ उप.,ल.३ रेखा ९।।।।।ऽ।।।। **ता.21.2.26ई.। मीन चंद:।** दिने वृषभ मिथुन १२.० से ३.३० बजे तक। (अग्रे लग्नाऽभाव)

अग्रेहोलाष्टक, चंदग्रहणदोष: पूर्वापरत्रिदिनंत्यात्य: ।।

चैत्र कृष्णापक्ष:

(सूर्यकुंभे,गुरुमिथुने)

(५१) २ गुरु हस्ते लग्न दिने १२,२,३ गोधूली अस्त परे ल.५,रात्री ल.७,८ अं.१५या. रेखा ७।ऽ।ऽ।ऽ।।।। रात्री ल.८ अं.१५ उप.,ल.९ रेखा ८।ऽ।ऽ ।।।।।। **ता.5.3.26ई. ।कन्या चंद:।** सुबह मीन ७.३२ से ८.५८ बजे। वृष, मिथुन १०.३८ से २.४५बजे। गोधूलि सिंह ६.३७ से ७.२१बजे। रात तुला, वृश्चिक अं.१५ या. ९.३७ से १.५५ बजे। रात वृश्चिक अं.१५ उप.१.५६ से २.११ बजे। धनु २.१२ से ४.१६ बजे तक। उप: प्रशस्त:। (अग्रे भद्रा:)

(५२) ४ शनि स्वात्यां लग्न रात्री ९,१०, ११ रेखा ७।।।ऽ।।।ऽऽ। **ता.7.3.26ई.। तुला चंद:।** रात धनु, मकर कुंभ २.४ से ६.५८ बजे तक। उप: प्रशस्त:।

(गणितेन कांत्याऽभाव:,पूर्व रेखा ५,६ अल्प:)

(५३) ५ सूर्य स्वात्यां लग्न दिने १,३ अं.९ या. रेखा ७।।।ऽ।।।ऽऽ। **ता.8.3.2026ई. ।तुले चंद:।** सुबह मेष ८.४७ से १०.२५ बजे तक। दिने मिथुन १२.१८ से १२.४५ बजे। (गणितेन कांत्याऽभाव)

(५४) ६ चंद्र अनुराधायां लग्न ऽगोधूलि ५ रात्री ६ रेखा ७ऽऽ।।।ऽ।।।। **ता.9.3.26ई.। वृश्चिक चंद:।** सायं ऽगोधूलि सिंह ४.४७ से ७.५ बजे। रात कन्या ७.६ से ९.२० बजे। (रवियोग,अग्रे भद्रा:)

(५५) ७ मंगल अनुराधायां दिने लग्न वृष अं.१७उप., ऽगोधूलि ल.५अं.१८ या.रेखा ८ऽऽ।।।।।।।। **ता.10.3.2026ई. ।वृश्चिके चंद:।** सुबह वृषभ ११.१६ से १२.१० बजे। सायं ऽगोधूलि ४.४३ से ५.४५ बजे।

(५६) ८ बुध मूले लग्न रात्री ९,११ रेखा ७।ऽ।ऽ।।

astro welfare

अक्षपाद महर्षि गौतम वेद विद्यालय
... (बीकानेर) राज०

।ऽ।।ता.11.3.26ई.।धनु चंद:। रात धनु १.४८ से ३.५२ बजे।कुंभे ५.३८ से ६.५५ बजे। उष: प्रशस्त:। (पूर्व रे.५ऽऽ।ऽ।ऽ।ऽ।।अल्प:)

(५७) ६ गुरु मूले लग्न प्रात: १२ रेखा ७।ऽ।ऽ।।।ऽ।। ता.12.3.26ई.। धनु चंद:। सुबह मीन ७.४ से ८.३० बजे तक। (अग्रे व्यतिपात)

(५८) ११ शनि उषायां लग्न प्रात: १२,२,ऽगोधूलि ६ रेखा ८।।।।।ऽ।ऽ।।ता.14.3.26ई.।मकरे चंद:।सुबह मीन अं.२ परं ७.२ से ८.२२ बजे। वृषभ १०.२ से ११.५४ बजे। ऽगोधूलि कन्या सायं ६.४६ से ६.०० बजे। (सूर्यास्त परे कुलिक) **नोट- अग्रे मीनाऽर्क**

अशुद्ध:विवाह मुहूर्ताश्च:

वैशाख कृष्णपक्ष:

(१) २ मंगल अनुराधायां व्यतिपात,भद्रा:।
(२) ८ चंद्र: उषायां १/३१नक्षत्रांत:
(३) ११ गुरु उभायां,मृत्युबांण:।
(४) १२ शुक्र उभायां वैधृत,भद्रा:।

वैशाखशुक्लपक्ष:

(५) ११ गुरु उफायां ऽगोधूलि रेखा.६।।ऽ।।।।।।।ल. तुला ७/११ से ७/३८ तक अर्धयाम,छवरीकाल
(६)१३ शनि स्वात्यां व्यतिपात:।
(७) १४ सूर्य स्वात्यां व्यतिपात,भद्रा:।

ज्येष्ठकृष्णपक्ष:

(७) ३ गुरु मूले भद्रा:,मृत्युबांण:।
(८) ४ शुक्र मूले मृत्युबांण:।
(९) १२ शनि रेवत्यां प्रात: ल.२ रे.७।।ऽऽ।ऽ।।।। के. चर्णवेध: आवश्यके

(१०) १४ चंद्र रोहि. मृत्युबांण,कृष्णांग

ज्येष्ठशुक्लपक्ष:

(११) ८ मंगल उफायां मृत्युबांण:

नोट-आषाढ़ मासे गुरु अस्तवशात्लग्नाऽभाव:

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष:

(१२) १३ मंगल स्वात्यांमृत्युबांण, भद्रा, अग्रे कृष्णांग

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष:

(१३) ११ चंद्र:रेवत्यां व्यतिपात भद्रा:।

पौषकृष्णपक्ष:

(१४) २ शनि मृगे मृत्युबांण:
(१५) १० सूर्य हस्ते भद्रा,मृत्युबांण।
(१६) ११ चंद्र स्वात्यां मृत्युबांण:।

नोट-अग्रेमाघमासतक शुक्रास्त:

फाल्गुनकृष्णपक्ष:

(१७) १ चंद्र मघायां मृत्युबांण
(१८) ६ शनि स्वात्यां भद्रा:।
(१९) ६ बुध अनुराधायां मृत्युबांण।
(२०) १० गुरु मूले रे.५ऽऽ।ऽ।ऽ।ऽ।।अल्प:।
(२१) ११ शुक्र मूले रे.६ऽऽ।ऽ।।ऽ।।।अल्प:
(२२) १२ शनि उषायां मृत्युबांण,व्यतिपात
(२३) १३ सूर्य उषायां व्यतिपात

फाल्गुनशुक्लपक्ष:

होलाष्टकेलग्नाऽभाव:

चंद्र ग्रहणे पूर्वा पर त्रिदिनं त्याज्य:

चैत्रकृष्णपक्ष:

(२४) ३ शुक्र हस्ते भद्रा:
(२५) ४ शनि स्वात दिवा रे.५।।।ऽ।ऽ।ऽऽऽ व रे. ६।।।ऽऽ।ऽऽ।।अल्प
(२६) १० शुक्र उषायां मृत्युबांण, भद्रा:

अग्रेमीनाऽर्क:मलमास:

यज्ञोपवीत मुहूर्ता:

चैत्र शुक्लपक्ष:(वृषेगुरु)

(मीनाऽर्क अतिप्रशस्त:)

(१) १ सूर्य रेवती, अश्वनी ल. २,३,५ अभि.
(२)५ बुध रोहिणी ल. २,३,५अभि.
(३) ६ रवि पुक्ष ल. २,३,५अभि.
(४) १२ बुध पूफा. ल. २,३,५ अभि. ऋग्वेदीय
(५)१३गुरु पूफा., उफा. ल. २, ३, ५अ. ऋगु,यजु,साम
(६) १४ शुक्र उफा. ल. २, ३, ५अभि. ऋगु. ,यजु ,साम

वैशाख कृष्णपक्ष: (वृषेगुरु)

(७) १ चंद्र स्वात ल. १,३,४,५अभि.
(८) ५ शुक्र मूल ल. १,३,५ऋग्वेदीय
(९) ६ शनि पूषा .ल. १, ३ऋग्वेदीय
(१०) ७ सूर्य उषा .ल. १,३,४अभि.
(११) ८ चंद्र श्रवण ल. १,२,४अभि.
(१२) ६ मंगल धने .ल. २,४अभि.(एकमेव सामवेदीय)

वैशाखशुक्लपक्ष:

(१३) ३ बुध रोहिणी ल. १,२,३,६ .अभि.
(१४) ४ गुरु मृग .ल. ६ भद्रोपरांत:
(१५) ६ शनि पुन .ल. २,३ अभि.
(१६) १० बुध पूफा .ल. २,३,४ अभि. ऋग्वेदीय
(१७) १२ शुक्र हस्त ल. २,३,६ अभि.
(१८) १३ शनि चित्रा ल. २,३,४,६अभि.

ज्येष्ठकृष्णपक्ष:

(१९) ५ शनि पूफा., उषा. ल. ३,५,६,७ अभि. ऋगु , यजुर्वेदीय, सामवेदीय
(२०) ६ सूर्य उषा., श्रवण ल. ४,६,७अभि.
(२१)७ चंद्र श्रवण, धने. ल. ६,७ भद्रोपरांत

(२२) ११ शुक उभा.,रेवती ल.२,३,६

ज्येष्ठशुक्लपक्ष:

(२२) २ बुध मृग.ल.२,३,५,७अभि.
(२३) ४ शुक पुन.ल.२,३,५ अभि. अग्रे भद्रा
(२४) ५ शनि पुष्य ल.२,३,५,७अभि.।
(२५)१०गुरु हस्त ल.२,३ अग्रेव्यतिपात
(२६)१२शनि चि.,स्वा.ल.३,५,७अभि

नोट- अग्रेगुरुअस्त:,शुक्रोदयउपरांत:

दक्षिणायनेत्याज्य:, उत्तरायणेप्रशस्त:

फाल्गुनकृष्णपक्ष:

(२७) ३ बुध पूफा.ल.११अग्रेभद्रा:अगु
(२८) ४ गुरु उफा. ल.१२,१,२,३अभि.
(२९) ५ शुक हस्त ल.१२,१,२,३अभि.
(३०) ६ शनि चित्रा ल.१२,१,२,३अभि
(३१) ७ सूर्य स्वात.ल.३ भद्रोपरांत

फाल्गुनशुक्लपक्ष:

(३२) २ गुरु पूभा.ल.१,२,३अभि.
(३३) ३ शुक्र उभा.ल.१,२,३अभि.
(३४) ४ शनि रेवती ल.२,३ अभि.
(३५) ५ सूर्य अश्व ल.१,२,३ अभि.

अग्रेहोलाष्टक

चैत्रकृष्णपक्ष:

(३६) २ गुरु हस्त ल.२,३,अभि.
(३७) ४ शनि चि.,स्वा.ल.१,२,३अभि.
(३८) ५ सूर्य स्वा.ल.१,२ अभि.
(३९) ६ चंद्र अनु.ल.३,४
(४०) ११ शनि उषा.ल.२,३,४ अभि.
(४१) १२ सूर्य श्रव.२,३,४ अभि.

अग्रेकृष्णांग

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्ता:

विशेष- इस वर्ष में शनि,पूभा.,उभा., नक्षत्र पर चलेगा जिससे शनिवार को रक्षोभूत युत प्रभावहोगा।

उत्तरायणेप्रशस्त:

वैशाखकृष्णपक्ष:

(१) ८ चंद्र श्रवण ल.१,२,४अभि.
(२) १० बुध शत्त ल.३,५

वैशाखशुक्लपक्ष:

(३) ७ सूर्य पुक्ष ल.१,२ अग्रे भद्रा:
(४) १० बुध पूफा.ल.१,२,३ पुत्र सुखद
(५) ११ गुरु उफा.ल.६ पुत्र धनं
(६) १२ शुक्र हस्त ल.२,३,४,६

ज्येष्ठकृष्णपक्ष:

(७) १० गुरु पूभा.ल.२ पुत्र धनं
(८) ११ शुक्र उभा ,रेवती ल.२,३,६
(९) १३ सूर्य अश्व.ल.१,२,३अग्रे भद्रा

ज्येष्ठशुक्लपक्ष:

(१०) १० गुरु हस्त ल.२,३ पुत्रधनं
(११) १२ सूर्य स्वात ल.३,४,५

अग्रेगुरुअस्त:

(दक्षिणायनेजीर्णगृहप्रवेश:)

श्रावणकृ.पक्ष:(शिवउपासकानांग्राह्य)

(१२) ८ शुक्र अश्वनी ल.४,७ अभि.

श्रावणशुक्लपक्ष:

(१३) ६ बुध हस्त ल.४,६,९ वास्तु:
(१४) ७ गुरु चित्रा ल.४,६,७,९ अभि.
(१५) ८शुक्र स्वात ल.९,१० धनधान्यद
(१६) ९ सूर्य अनु.ल.४,७,९
(१७) १० चंद्र अनु.ल.३,४
(१८) १३ गुरु उषा.ल.९,१०
(१९) १४ शुक्र उषा.ल.४,६ धनधान्यद

भादपदकृष्णपक्ष:

(लोकमतेन भरिया भादवा ग्राह्य)

(शिव उपासकानांग्राह्य)

(२०) ९ सू.रो.ल.४,५,६,७,९ अभि
(२१) १२ बुध पुन.ल.४,५,७,१०
(२२)१३गुरु पुक्ष ल.१०(पूर्व व्यतिपात)

भाद्रपदशुक्लपक्ष:

(लोकमतेन भरिया भादवा ग्राह्य)

(२३)५ गुरु स्वा.ल.७.९
(मृ.पंचक खाली)
(२४) ६ शुक्र स्वात ल.५
(२५) १२ गुरु उषा .ल.४,७,८,९
(२६) १३ शुक्र श्रव.ल.४,७,८,९

अग्रेखण्डग्रासदोष:,श्राद्धपक्ष:

आश्विनशुक्लपक्ष:

(कुलदेवीउपासकानांग्राह्य)

(२७)७चंद्र मूल ल.६,८वास्तुअग्रे भद्रा
(२८) ९ बुध उषा.ल.६,८,१०पुत्रसुखं
(२९) १० गुरु श्रव.ल.६,८,१०
(३०) ११ शुक्र धने.ल.११,१२
(३१)१३सू.पूभा.ल.७,९,१०चक्रे लक्ष्मी

कार्तिककृष्णपक्ष:

(नूतनगेहे देवदीवाली उत्सव:शुभ:)

(३२) ९ बुध पुक्ष ल.६,७,८,१०
(३३) १२ शनि पूफा., उफा. ल.८, १० चक्रेलक्ष्मी धनतेरस
(३४) १३ सूर्य उफा.ल.८,१०अभि.

कार्तिकशुक्लपक्ष:

(नूतनगेहे देवदीवाली उत्सवशुभ:)

(३५) ६ चंद्र पूषा.ल.८,९,१०,१२ चक्रे धनं
(३६) ८बुध श्रव.ल.१२,१ भद्रोपरांत
(३७)९गुरु श्र.धने.ल.७,८,१०, १२
(३८) १२ सूर्य पूभा.,उभा.ल.८,९, १०,१२
(३९) १३ चंद्र उभा.रेव.ल.८,९,१० ,१२

मार्गशीर्षकृष्णपक्ष:

(४०) १२ सूर्य हस्त ल.८,९,१०,१२
(४१) १३ चंद्र चित्रा ल.८,९,१०

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष:

(नूतनगेहे मांगलिक उत्सवशुभ:)

(४२) ६ बुध श्रव.ल.८,१०,१२
(४३) ८ शुक्र शत.ल.८,१०,१२
(४४) १० सूर्य उभा.ल.८,१०,१२

पौषकृष्णपक्ष:

(४५) ८ शुक्र उफा.ल.९,११ अभि.

अग्रेशुक्रास्तमाघ.शु.15तक व मलमास

उत्तरायणेप्रशस्त:

फाल्गुनकृष्णपक्ष:

(४६) ११ शुक्र मूल ल.११,१,३

अग्रेहोलाष्टक

चैत्रकृष्णपक्ष:

(४७) ९ गुरु मूल ल.११ वास्तु

अग्रेव्यतिपात,अग्रेमीनाऽर्कमलमास:

नूतन गृह निमार्ण मुहूर्ता:

वैशाख कृष्णपक्ष:

(मेषेसूर्यशुभंभवेत्)

(१) १ चंद्र स्वात्यां ल.१,२,४अभि.

वैशाखशुक्लपक्ष:

(मेषेसूर्यशुभदंभवेत्)

(२) १० बुध पूफा.ल.१,२,३,७ पुत्र सुखं
(३) ११ गुरु उफा. ल.६,७ पुत्र धनं
(४) १२ शुक्र हस्त ल.२,३,६,७

ज्येष्ठशुक्लपक्ष:

(वृषसूर्य,धनवृद्धि:)

(५)१०गु.हस्त ल.२,३पुत्रधनं,अग्रेव्यति.
(६) ११ शुक्र चित्रा ल.६,७ धन धान्यद:
(७) १२ सूर्य स्वात ल.३,५,६ अभि.

अग्रे गुरु अस्त,आद्रा सूर्य भूमि रजस्वला,मिथुनसूर्यमरणंध्रुवं

श्रावणशुक्लपक्ष:

(कर्कसूर्यशुभदंप्रोक्तं)

(८) ८ शुक्र स्वात ल.९ धन धान्यद:
(९) ९ सूर्य अनु.ल.७ अभि.
(१०) १३ गुरु उषा.ल.७,९
(११) १४ शुक्र उषा. ल.४,७ अभि. धनधान्यद:

भाद्रपदकृष्णपक्ष:

(कर्कसूर्यशुभदंप्रोक्तं)

(१२) १ सूर्य धने,शत्त.ल.७,९अभि.
(१३) २ चंद्र शत्त.,पूभा.ल.७,९ चक्रे लाभ शुभ

भाद्रपदशुक्लपक्ष:

(सिंहसूर्यभृत्यविवर्धनम्)

(१४) १२ गुरु उषा.ल.७,८,९अभि.

नोट- अग्रे खण्डग्रास चंद ग्रहण, श्राद्धपक्ष:, कन्यासूर्यरोगं।

कार्तिकशुक्लपक्ष:

(तुलासूर्यसौख्यद:)

(१५) ८ बुध श्रवण ल.१२
(१६) ९ गुरु श्रव.,धने.ल.७,८,१०,१२ धन धान्यद:
(१७) १२ सूर्य पूभा.,उभा. ल.८,९,१०,१२चक्रे लक्ष्मी प्राप्ति:।
(१८) १३ चंद्र उभा. रेव. ल.८,९,१०,१२
(१९) १५ बुध अश्व.,भर.ल.७,१० चक्रे लाभ शुभ

मार्गशीर्षकृष्णपक्ष:

(तुलासूर्यसौख्यद:)

(२०) २ शुक्र रोहिणी ल.११,१२ द्वितीयां १५/१२ घट्यो भूमि रजस्वलोपरांत

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष:

(वृश्चिकसूर्यधनविवर्धनं)

(२१) ८ शुक्र शत्त.ल.१०,११,१२अभि.
(२२) १० सूर्य उभा.ल.१०,११,१२अभि

पौषकृष्णपक्ष:

(वृश्चिकर्कसूर्यधनविवर्धनं)

(२३) १ शुक्र रो.,मृग.ल.१०,११,१२

अग्रेमलमास:,अग्रेशुक्रास्त:

फाल्गुनकृष्णपक्ष:

(मकरसूर्यधनागमं)

(२४) ४ गुरु उफा.ल.२,३
(२५) ५ शुक्र हस्त ल.३ धन धान्यद:

अग्रेहोलाष्टक,चंदग्रहण

चैत्रकृष्णपक्ष:

(कुंभेसूर्यरत्नलाभ:)

(२६) २ गुरु हस्त ल.२,३
(२७) ३ शुक्र चित्रा ल.४ भद्रोपरांत
(२८) ५ सूर्य स्वात ल.१,२ अभि.

अग्रेमीनाऽर्कमलमास:

दैवप्रतिष्ठामुहूर्ता:

उत्तरायणेसर्वदेवानां

चैत्रशुक्लपक्ष:

(वासंतनवरात्रै देवीप्रतिष्ठा:)

(१) ५ बुध रोहि.ल.२,५देवी,नाग
(२) ९ रविपुक्ष ल.२,३अभि.श्रीराम
(३) १० चंद्र पुक्ष ल.१ अग्रे ज्वालामुखी
(४) १३ गुरु उफा.ल.३,५अभि.पुत्रधनं
(५) १४ शुक्र उफा.ल.२,३अभि.

वैशाखकृष्णपक्ष:

(६) १ चंद्र स्वात ल.१,२,३,४अभि.
(७) ५ शुक्र मूल ल.१,३ देवी

वैशाखशुक्लपक्ष:

(८) ३ बुध रोहि.ल.१,२,५ पुत्र सुखद
(९)४ गुरु मृग.ल.६,७पुत्रधनं (भद्रोपरांत)
(१०) ७ रविपुक्ष:ल.१,२अग्रे भद्रा:
(११) ११ गुरु उफा.ल.६,७ पुत्रधनं (भद्रोपरांत)

ज्येष्ठशुक्लपक्ष:

(१२) २ बुध मृग.ल.२,३,६पुत्रसुख
(१३) ३ गुरु आद्रा ल.२,३,५ अभि. पुत्रधनं शिव
(१४) १० गुरु हस्त ल.२,३ पुत्रधनं
(१५) ११ शुक्र चित्रा ल.५,६ धनधान्यद: (व्यतिपात उपं.अग्रे भद्रा)
(१६) १२ सूर्य स्वात ल.३,५ अभि.

नोट-अग्रे गुरुअस्त:श्राव.कृ.३ शनि तक

दक्षिणायने उग्रदेवानां

नोट-शिवशिवांशदेवों की प्रतिष्ठा के लिये श्राव.व भाद्रपदमास श्रेष्ठ:।

श्रावणशुक्लपक्ष:

(१७) ६ बुध हस्त ल.४,६,९
(१८) ७ गुरु चित्रा ल.४,६,७ अभि.
(१९) ८ शुक्र स्वात ल.९,१० धन धान्यदं
(२०) १३ गुरु उषा.ल.९

भाद्रपदकृष्णपक्ष:

(२१) १ सूर्य धने.,शत्त.ल.७,९
(२२) २ चंद्र शत्त.ल.३,७ अभि.

भाद्रपदशुक्लपक्ष:

(२३) २ चंद्र उफा. ल.५,७,८ अभि. रामदेव
(२४) ६ शुक्र स्वात ल.५

अग्रेचंदग्रहण,श्राद्धपक्ष:

आश्विनशुक्लपक्ष:

(शारदीयनवरात्रि:,देव्यादिविशेष:)

(२५)१ चंद्र उफा.,हस्तल.६,९अभि
(२६)३बु.चि.,स्वा.ल.६,८ पुत्रसुखं
(२७) ७ चंद्र मूल ल.६,८ अभि. देवी

(२८) ९बुध उषा.,ल.६,८ पुत्र सुखद
(२९) १० गुरु श्रव.ल.६,८,९अभि.

कार्तिकशुक्लपक्ष:

(३०) ८ बुध श्रव. ल.१२,८
(३१) ९ गुरु श्रवण, धने.ल.८, १०, १२ अभि.
(३२) १० शुक्र धनेष्ठा.ल.८, १० धनधान्यं
(३३)१३चंद्र उभा.,रे.ल.९,१० अभि

मार्गशीर्षकृष्णपक्ष:

(३४) ६चंद्र पुन.ल.७,९,१०अभि.

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष:

(३५) ६ बुध श्रव.ल.१०,१२
(३६)८ शुक्र शत्त. ल.१०,११ अभि
(३७) १० सूर्य उभा.ल.१०,११,१२ अभि.

पौषकृष्णपक्ष:

(३८) १ शुक्र रो.,मृ.ल.१०, ११, १२ अभि
(३९) ४ चंद्र पुक्ष ल.१०,१२

मलमास,शुक्रास्तमाघशु.15रवितक

फाल्गुनकृष्णपक्ष:

(४०) ४ गुरु उफा.ल.१,२
(४१) ५शुक्र हस्त ल.१,२धन धान्यद:

फाल्गुनशुक्लपक्ष:

(४२) ३ शुक्र उभा.ल.२,३अभि.
(४३) ५ सूर्य अश्व.ल.१,२,३अभि.

अग्रेहोलाष्टक,चंद्रग्रहण:

चैत्रकृष्णपक्ष:

(४४) २ गुरु हस्त.ल.२,३
(४५) ३ शुक्र चित्रा.ल.४ भद्रोपरांत
(४६) ५ सूर्य स्वा.ल.१,२ अभि.

अग्रेमीनाऽर्कमलमास:

त्रिपिण्डी(पितृकर्म)मुहूर्ता:

वैशाखकृ.पक्ष उत्तरायणे प्रशस्त:

(१) १परं २चंद्र स्वात
(२) ८ चंद्र श्रवण

वैशाखशुक्लपक्ष:

(३) ३ बुध रोहिणी पुत्र सुखद
(४) ४ गुरु मृग पुत्र धनं
(५) ८ चंद्र श्लेषा सर्पशांति
(६) १० बुध पूफा. पुत्र सुखद
(७) ११ गुरु उफा.ल.६,७पुत्रधनं (भद्रोपरांत)

ज्येष्ठशुक्लपक्ष:

(८) २ बुध मृग
(९) ३ गुरु आद्रा पुत्रधनं
(१०) ७ चंद्र मघा पितृ स्थापना
(११) १० गुरु हस्त ल.२,३ पुत्रधनं (अग्रे व्यतिपात:)
(१२) १२ सूर्य स्वात

अग्रेगुरुअस्त श्रावणकृ.2शनियावत्

श्रावणकृ.पक्ष:(दक्षिणायनेग्राह्य)

(१३) ३० गुरु काल सर्पशांति , पितृशांति

श्रावणशुक्लपक्ष:

(१४) ६ बुध हस्त
(१५) ७ गुरु चित्रा
(१६) १४ शुक्र उषा.धन धान्यद

भाद्रपदकृष्णपक्ष:

(१७) १० चंद्र मृग
(१८) १३ गुरु पुक्ष व्यतिपात शांति
(१९) ३० शनि राक्षस भूत शांति

भाद्रपदशुक्लपक्ष:

(२०) २ चंद्र उफा.
(२१) १२ गुरु उषा.

पूर्णिमा खग्रास चंदग्रहण दान पुण्यं शुभद

आश्विनकृष्णपक्ष:

नोट- महालय श्राद्ध पक्ष में पितृतिथि कोपितृशांति,श्राद्धकरें।

आश्विनशुक्लपक्ष:

(२२) १ चंद्र उफा.हस्त
(२३) ३ बुध चि.,स्वा.पुत्रसुखदं
(२४) ७ चंद्र मूल ल.६,८अग्रे भद्रा:
(२५) ९ बुध उषा.पुत्र सुखद
(२६) १० गुरु श्रवण

नोट- पूर्णिमा से पितृशांति हेतु आकाश दीपदानएकमासतक।

कार्तिककृष्णपक्ष:

(२७) २ बुध अश्वनी
(२८) ९ बुध पुक्ष
(२९) १२ शनि धनतेरस यमाय दीपदानं
(३०) १४ चंद्र दीपावली,दीपदानं

नोट- तुला, वृश्चिक संक्रांति में पितृशांति ,पितृ प्रसन्नार्थ दीपदान घर में मंदिर जलाशय पर करें। अमावस्या की रात्रि ब्रह्ममुहुर्त में पितृ शांति हेतु दीपक श्राद्धकरें।

कार्तिकशुक्लपक्ष:

(३१) १ बुध स्वात
(३२) ५ सूर्य मूल लाभपंचमी दीपदान
(३३)१५ बुध अश्व. देवदीवाली दीपदान(भीष्म)

मार्गशीर्षकृष्णपक्ष:

(३४) ६ चंद्र पुन.
(३५) ८ बुध श्लेषा सर्पशांति
(३६) ९ गुरु मघा पितृ स्थापना

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष:

(३७) ६ बुध श्रवण

पौषकृष्णपक्ष:

(३८) ४ चंद्र पुक्ष

नोट- अग्रे मलमास:,शुक्रास्त माघ शु. 15सूर्ययावत्

फाल्गुनकृष्णपक्ष:

(३९) १ चंद्र आश्लेषा सर्पशांति
(४०) ४ गुरु उफा.
(४१) १० गुरु मूले ल.३,४
(४२) ११ शुक्र मूल धन धान्यद:
(४३) १४ चंद्र श्रवण

अग्रे होलाष्टक

चैत्रकृष्णपक्ष:

(४४) २ गुरु हस्त
(४५) ९ गुरु मूल

अग्रेमीनाऽर्कमलमास:

चूड़ी मुहूर्तः (चूड़ियां, चूड़ा, पड़ला, बंगड़ी, कड़ा, बाजुबंद पहनने का मुहूर्त)

(१) **चूड़ी चक्र**- सूर्यभाद् दिनभं ३ सूर्यनेष्ट,८ मंगल नेष्ट,११शुक्र श्रेष्ठ,१३ राहु नेष्ट,२०बुध श्रेष्ठ,२२ शनि नेष्ट,२३ गुरु श्रेष्ठ, २६चंद्र श्रेष्ठ,२७ केतु नेष्ट **नक्षत्र**- अश्व,हस्त,चित्रा,स्वात,विशाषा,अनुराधा,धनेष्ठा,रेवती व विवाह नक्षत्र मधा,मृग,मूल ग्राह्यः। **त्याज्य नक्षत्रः**- रोहिणी,उत्तरा३,पुन.,पुक्ष। चंद्रबल आवश्यक। विशेष- ग्राह्य नक्षत्र,रवियोग,सिद्धि आदि शुभ योगे ऽपि। विशेषतः-स्त्री का चंद्रबल देखें। चूड़ी चक्र देखें।

स्वयंसिद्ध मुहूर्तः- चेत सुदी की एक देख,आखातीज वैशाखी लेख। विजया दशमी आसोज की होय,आधी एकम सुदि कार्तिक जोय।।१।।
साढ़ा तीन रे इण मुहूर्त में,स्वयं सिद्ध को लेख। सर्व कार्य को सिद्ध करे,इण में मीन न मेख।।२।।
उषःप्रशस्ते गर्गः,शकुनं च बृहस्पति। मनोत्साहं च अंगिरा,विप्र वाक्य जनार्दनः।।३।।

वैशाख कृष्णा पक्षः

(मेषेऽर्कप्रशस्तः)

(१) १ चंद्र स्वात ल.१,२,४,७ अभि.
(२) ५ शुक्र मूल ल.१,३,८
(३) ८चंद्र श्र.ल.१,२,८ पट्ट धनधान्यद
(४) १० बुध शत्त.ल.१,२,३,८पुत्रधनं
(५) ११ गुरु पूभा.ल.१

वैशाखशुक्लपक्षः

(६) ४ गुरु मृग.ल.६,७पट्ट लक्ष्मीप्राप्ति ,पुत्रधनं
(७) ५ शुक्र आद्रा.ल.१,२,४,६अभि. पट्ट लक्ष्मी प्राप्ति
(८) १० बुध पूफा.ल.१,२,६ पुत्र सुखं

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

(९) २ बुध अनु.ल.२
(१०) ७ चंद्र श्रव.ल.६
(११) १३ सूर्य अश्व ल.१,२

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(१२) १० गुरु हस्त ल.२,३ पुत्रधनं
(१३) ११ शुक्र चित्रा ल.७ धन धान्यद
(१४) १२ सूर्य स्वात ल.५ अभि.

अग्रेगुरुअस्त श्राव.कृ.2 शनियावत्

श्रावणकृष्णपक्षः

(१५) ३ सूर्य धने.ल.४,६
(१६) ४ चंद्र शत्त.ल.३,९
(१७) १४ बुध आद्रा ल.९

श्रावणशुक्लपक्षः

(१८) ४ चंद्र पूफा.ल.३,४
(१९) ६ बुध हस्त ल.३,४,९पट्ट लक्ष्मीप्रा.
(२०) ९ सूर्य अनु.ल.४,७,९

भाद्रपदकृष्णपक्षः

(२१) १ सूर्य धने.,शत्त.ल.३,७,९
(२२) २ चंद्र शत्त ल.३,७अभि.
(२३) ६ गुरु रेव.,अश्व.ल.४,७,९

भाद्रपदशुक्लपक्षः

(२४) ४ बुध चित्रा ल.१० पट्ट
(२५) ६ शुक्र स्वात.ल.४,५ पट्ट
(२६) ९ चंद्र मूल ल.११,१२

अग्रेखग्रास चंद्र ग्रहण, श्राद्धपक्षः

आश्विनशुक्लपक्षः

(२७) १० गुरु श्रव.ल.६,८,९
(२८) ११ शुक्र धने.ल.११,१२

कार्तिक कृष्णपक्षः

(२९) २ बुध अश्व.ल.८,१०
(३०) ६ सूर्य मृग.ल.६,९ अभि.
(३१) ७ चंद्र आद्रा ल.६,९अभि.
(३२) ११ शुक्र मघा ल.८,११

कार्तिकशुक्लपक्षः

(३३) ३ शुक्र अनु.ल.८,१० अभि.पट्ट
(३४) ५ सूर्य मूल ल.८,१०,१२अभि.पट्ट
(३५)१० शुक्र धने.,शत्त.ल.८,१०,१२ अभि.
(३६) १२ सूर्य पूभा.ल.८,१० अभि.
(३७) १३ चंद्र रे.,अश्व.ल.८,१०अभि. पट्ट
(३८) १५ बुध अश्व.ल.७ पट्ट

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(३९) ९ गुरु मघा.ल.७,८,१ पट्ट,
(४०) १० शुक्र पूफा.ल.७,८
(४१) १२ सूर्य हस्त ल.१०,१२
(४२) १३ चंद्र चित्रा.ल.८,१०,१२

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

(४३) ६बुध श्रव.ल.८,९,१२ पट्ट

पौषकृष्णपक्षः

(४४) १ शुक्र रो.,मृग.ल.८,१०,१२
(४५) ३ सूर्य आद्रा ल.७

नोट- अग्रेमलमास,शुक्रास्त माघशु.15 सूर्ययावत्

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(४६)३ बुध पूफा.ल.९,११
(४७) ५शुक्र हस्त ल.९,१०,२धनधान्यद
(४८) ११ शुक्र मूल ल.१,३ धनधान्यद
(४९) १४ चंद्र श्रव.ल.१०,१,२अभि.

फाल्गुनशुक्लपक्षः

(५०) ५ सूर्य अश्व.ल.१०,११,१,२,३ अभि.पट्ट।

अग्रेहोलाष्टक

चैत्रकृष्णपक्षः

(५१)२ गुरु हस्त ल.२,३ अभि.
(५२) ३ शुक्र चित्रा ल.४,५,६
(५३) ५ सूर्य स्वा.ल.११,३
(५४) ६ चंद्र अनु.ल.४,५

अग्रेमीनाऽर्क मलमासः

द्वार शाखा (बारोख(चौखटा)किवाड़,दरवाजा,कपाट,खिड़की) मुहूर्त

सम्मुख त्रैमासिक राहु - (१) फाल्गुन,चैत्र,वैशाख-दक्षिण (२) ज्येष्ठ,आषाढ़,श्रावण -पश्चिम
(३) भाद्रपद आश्विन कार्तिक -उत्तर (४) मार्ग,पौष,माघ- पूर्वदिशा

द्वारशाखा नक्षत्र- अश्व,पुक्ष,हस्त,चित्रा,स्वा,अनु ,रेवती,(नक्षत्र) चकागत उत्तम योग नक्षत्र ग्राह्य है। कुयोग त्याज्य:।

वैशाखकृष्णपक्ष:
(त्रैमासिक राहु दक्षिणे)
(१)१ चंद्र स्वात ल.१,२,३,५
(२) ४ गुरु ज्येष ल.२,५ पुत्र धनद
(३) ५ शुक्र मूल ल.१,३,५
(४) १० बुध शत.ल.३,५
(५) ११ गुरु ल.१ पुत्र धनद
वैशाखशुक्लपक्ष:
(६) १ चंद्र भरणी ल.१,२,३,५ धनद
(७) ३ बुध रो.ल.१,२,३,५लक्ष्मीप्राप्ति
(८) ११ गुरु उफा.ल.२,३ पुत्र धनद:
(९) १५ चंद्र विशा.ल.१,३,७
ज्येष्ठकृष्णपक्ष:
(त्रैमासिकराहुपश्चिमे)
(१०) २ बुध अनु.ल.२
(११) ३ गुरु ज्येष्ठा ल.२,३ पुत्रधनं
(१२) ६ सूर्य उषा.ल.२,७
(१३) ७ चंद्र श्रव.ल.७
(१४) ११ शुक्र उभा.,रे.ल.२,३
ज्येष्ठशुक्लपक्ष:
(१५) २ बुध मृग.ल.२,३ लक्ष्मीप्राप्ति
(१६)३ गुरु आद्रा.ल.२,३ पुत्र धनद
(१७) ४ शुक्र पुन.ल.२,३लक्ष्मीप्राप्ति

(१८)१२ सूर्य विशा.ल.७
(१९) १३ चंद्र विषा.अनु.ल.६,७
अग्रेगुरुअस्त श्रा.कृ.2शनियावत्
श्रावणकृष्णपक्ष:
(२०) ४ चंद्र शत.ल.९
(२१) ६ बुध उभा.ल.४,९
श्रावणशुक्लपक्ष:
(२२) १ शुक्र पुक्ष.ल.४,७लक्ष्मीप्राप्ति
(२३) ३ सूर्य म.,पूफा.ल.४,७लक्ष्मीप्रा.
(२४) १३ गुरु उषा.ल.९
(२५) १४ शुक्र उषा.ल.४,७
भाद्रपदकृष्णपक्ष:
(त्रैमासिकराहुउत्तरे)
(२६) १ सूर्य धने.,श.ल.७,९
(२७) २ चंद्र श.,पूभा.ल.७,९
(२८) ६ गुरु रे.,अश्व.ल.४,७,९
(२९) १२ बुध पुन.ल.५,७,९
भाद्रपदशुक्लपक्ष:
(३०) १ सूर्य पूभा.ल.५,९ लक्ष्मीप्राप्ति
(३१) २ चंद्र उभा.ल.५,९ लक्ष्मी प्राप्ति
अग्रेग्रहण,श्राद्धपक्ष:
आश्विनशुक्लपक्ष:
(३२) १ चंद्र उफा.ह.ल.६,९लक्ष्मीप्राप्ति

(३३) ३ बुध चि.स्वा.ल.६,१०पुत्र धनद
(३४) १३ सूर्य पूभा.ल.६,९
(३५) १४ चंद्र उभा.ल.६
कार्तिककृष्णपक्ष:
(३६) ३ गुरु भर.ल.९
(३७) ४ शुक्र कृ.ल.६,१०
(३८) ६ सूर्य मृ.ल.६,९
(३९) ७ चंद्र आद्रा ल.६,९
(४०) ११ शुक्र मघा ल.९,१
कार्तिकशुक्लपक्ष:
(४१) १ बुध स्वा.ल.७,९ लक्ष्मी प्राप्ति
(४२) २ गुरु विशा.ल.७,१०लक्ष्मीप्राप्ति
(४३) ३ शुक्र अनु.ल.७,१० लक्ष्मी प्राप्ति
(४४) १३ चंद्र रेव.ल.१०,१२
(४५) १५ बुध अश्व.,भ.ल.७,९
मार्गशीर्षकृष्णपक्ष:
(त्रैमासिकराहुपूर्वे)
(४६) २ शुक्र रो.ल.१०
(४७) ६ चंद्र पुन.ल.७,११
(४८) १३ चंद्र चित्रा.ल.१०,१२
मार्गशीर्षशुक्लपक्ष:
(४९)१शुक्र अनु.ज्ये.ल.८,१०,१२धनद
(५०) ३ सूर्य मूल ल.८,१२लक्ष्मी प्राप्ति

पौषकृष्णपक्ष:
(५१) १ शुक्र रोहि.मृ.ल.८,१२
(५२) ४ चंद्र पुन.,पुक्ष.ल.८,१२.
अग्रेमलमास,
शुक्रास्तमाघशु.15सूर्ययावत्
फाल्गुनकृष्णपक्ष:
(त्रैमासिकराहुदक्षिणे)
(५३) ४ गुरु उफा.ल.१०,२
(५४) ५शुक्र हस्त.ल.१०,२धनधान्यद
(५५) ७ सूर्य स्वात.ल.३
(५६) ११ शुक्र मूल ल.१,३
फाल्गुनशुक्लपक्ष:
(५७) १ बुध शत.ल.११,१,३लक्ष्मीप्राप्ति
(५८)२गुरु पूभा.ल.११,१,२,३लक्ष्मीप्रा.
(५९) ३ शुक्र उभा.ल.११,२,३ लक्ष्मीप्रा.
अग्रेहोलाष्टक चंद्रग्रहण
चैत्रकृष्णपक्ष:
(त्रैमासिकराहुदक्षिणे)
(६०) २ गुरु हस्त ल.२,३
(६१) ५ सूर्य स्वा.वि.ल.१,३
(६२) ६ चंद्र वि.अनु.ल.११,२
(६३) ८ बुध ज्ये.ल.११,१२
अग्रेमीनाऽर्कमलमास:

चूला(भट्टी,बॉयलर)स्थापना मुहूर्तः-

(१) **चुल्ली चक्र**- सूर्यभाद् दिनभं ६ पीठ सुख,१० मस्तक मृत्यु,१८बाहु बहुत सुख भोग,२३ उदर गर्भनाश,२५भुज योगद,२७ चरण नाशक।

नक्षत्र- रोहिणी,पुक्ष,उत्तरा ३,अश्व,आद्रा,पूर्वा३ नक्षत्र। इनके अलावा चूली चक्रे चंद्रबली नक्षत्र ग्राह्य। अग्निबाँण,मृत्युबांण आदि अशुभ योग त्याज्यः रवियोग,सिद्धियोगादि शुभ योग ग्राह्यः।

वैशाखकृष्णपक्षः
(मेषस्थसूर्य)
(१) १चंद्र स्वात ल.१,३,५
(२) १० बुध शत्त.ल.३,५
वैशाखशुक्लपक्षः
(३) ३ बुध रो.ल.१,२,३पुत्र सुखद
(४) ४ गुरु मृग.,आद्रा.ल.६,७पुत्रधनं
(५) ५ शुक्र आद्रा ल.१,२,३
(६) ७ सूर्य रविपुक्ष ल.१,२,३
(७) ११ गुरु उफा.ल.६,७ पुत्रधनं
(८) १२ शुक्र हस्त ल.३,६
ज्येष्ठकृष्णपक्षः
(९) २ बुध अनु.ल.२
(१०) ११ शुक्र उभा.,रे.ल.२,३,६
ज्येष्ठशुक्लपक्षः
(११) २ बुध मृग.ल.२,३
(१२) ३ गुरु आद्रा.ल.२,३
(१३) ४ शुक्र पुन.ल.२,३
(१४) ११ शुक्र चित्रा ल.६
(१५) १२ सूर्य स्वा. ल.३,६
नोट- अग्रेगुरुअस्त श्रावणकृष्णा२शनि यावत्

श्रावणकृष्णपक्षः
(१६) ४ चंद्र शत्त.ल.४,६
श्रावणशुक्लपक्षः
(१७) १ शुक्र पुक्ष ल.४,७,६
(१८) ४ चंद्र पूफा.ल.४
(१९) ६ बुध हस्त ल.४,६
(२०) १४ शुक्र उषा. ल.४,७,६
भाद्रपदकृष्णपक्षः
(२१) २ चंद्र शत्त.ल.७,६
(२२) १२ बुध पुन.ल.५,७,६
भाद्रपदशुक्लपक्षः
(२३) २ चंद्र उफा.ल.५,८,६
(२४) ४ बुध चित्रा.ल.१०
(२५) ६ शुक्र स्वात.ल.५,७
(२६) १२ गुरु उषा.ल.७,८,६
(२७) १३ शुक्र श्रवण ल.७,८,६
अग्रेग्रहण,श्राद्धपक्षः
आश्विनशुक्लपक्षः
(२८) १ चंद्र उषा,हस्त ल.६,६
(२९) ३ बुध चित्रा.,स्वा.ल.६,७,१,
(३०) ४ गुरु स्वा.ल.६,६
(३१) ११ शुक्र धने.ल.१२,१

(३२) १३ सूर्य पूषा.ल.६,१
(३३) १४ चंद्र उभा.ल.६
कार्तिककृष्णपक्षः
(३४) ३ गुरु भर.ल.६ अभि.
(३५) ४ शुक्र कृत्ति.ल.६,८,१०
कार्तिकशुक्लपक्षः
(३६) १ बुध स्वात ल.१०,१
(३७) ३ शुक्र अनु. ल.१०,२
(३८) ६ चंद्र मूल,पूषा.ल.१०,१२
(३९) १२ सूर्य पूषा.,उभा.ल.१०,१२
(४०) १३ चंद्र उभा.,रेव.ल.१०,१२
(४१) १५ बुध अश्व.,भ.ल.७,१२
मार्गशीर्षकृष्णपक्षः
(४२) २ शुक्र रोहि.ल.१०,२
(४३) १२ सूर्य हस्त ल.१०,१२,२
मार्गशीर्षशुक्लपक्षः
(४४) १ शुक्र अनु.ल.८,१०
(४५) ३ सूर्य मूल.ल.८,१२
(४६) ६ बुध श्रव.ल.८,१०,२
(४७) १५ गुरु रोहिणी ल.२
पौषकृष्णपक्षः
(४८) १ शुक्र रोहिणी,मृग.ल.८,१०,१२

(४९) ४ चंद्र पुन.,पुक्ष.ल.८,१०,१२
अग्रे मलमास,शुक्रास्तमाघशुक्ला१५ रविवारतक
फाल्गुनकृष्णपक्षः
(५०) ३ बुध पूफा.ल.६,११
(५१) ४ गुरु उफा.ल.६,१२,२
(५२) ५ शुक्र हस्त.ल.३,४
(५३) ११ शुक्र मूल ल.१,३,६
फाल्गुनशुक्लपक्षः
(५४) १ बुध शत्त. ल.११,१,३
(५५) २ गुरु पूभा.ल.११,२,३
(५६) ३ शुक्र उभा.ल.११,२,३
(५७) ५ सूर्य अश्व.ल.१,२,३
अग्रेहोलाष्टक
चैत्रकृष्णपक्षः
(५८) ३ शुक्र चित्रा.ल.४,५,६
(५९) ५ सूर्य स्वात.ल.११,३
अग्रेमीनाऽर्कमलमास ☐ ☐

नोट-विस्तृतमुहूर्तज्ञानकेलिए त्रिकालज्ञानपुस्तकपढ़ें।

व्यापार मुहूर्त:-

(१) **हाटक चक्र-** सूर्यभाद् दिनभं २ आसन सुख,५तक पूर्व विक्रय नाश,९ अग्नि अर्थनाश,१३नैऋत सुख,१६मुख महाश्रेष्ठ,२० वायव्य चोर भय,२४ ईशान सर्वहानि,२८ मध्य शुभप्रद। **नक्षत्र-** अश्व,रोहिणी,मृग.,उत्तरा३,हस्त,चित्रा,अनु.,रेवती। चंद्रबली आवश्यक है।

हाटक चक्र के अलावा विशेष:- रवियोग,सिद्धि आदि शुभयोग,पंचके पंचकार्याणि ग्राह्य:,स्वयं सिद्ध मुहूर्त:। गुरु सूर्ये सर्वकार्य,शुक्रे पूर्ण मनोरथे। स्थिरता रवि पुत्रेण,ऐतेवारा शुभप्रदा।१। पूनम थी पड़वा भली,अम्मास थी बीज। अण पुच्या मोहरत भला के तेरस ने तीज।२।चौथ नम ने चवदशो जो शनिवार मिलंत। एक एक काम करंतड़ा कारज सौ सरंत।।३।।

चैत्रशुक्ल पक्ष:(वासंतनवरात्री)

(१) १सूर्य रेव.ल.१२,२,३अभि.हाटक
(२) ५ बुध रोहि.ल.२
(३) ६ गुरु रो.,मृ.ल.१२,२ पुत्रधनं
(४) ७ शुक्र मृग.ल.१२,१
(५) ९ रवि पुन.,पुक्ष ल.१,२,३अभि.
(६) १०चंद्र पुक्ष.ल.१२,१विजयादशमी
(७) १२ बुध म.,पूफा.ल.१,२,४हाटक
(८) १३ गुरु पूफा.,उफा.ल.१,२,३,४ हाटक पुत्र धनं
(९) १४ शुक्र उफा.,ह.ल.१२,२,३ अभि.हाटक

वैशाखकृष्णपक्ष:

(१०) १सूर्य चि.ल.१,३,४अभि.हाटक
(११) १ चंद्र स्वा.ल.१,३,४अभि.हाटक
(१२) १० बुध शत्त.ल.१,२,३हाटक
(१३) ११ गुरु पूभा.ल.१,२,३हाटक

वैशाखशुक्लपक्ष

(१४) १ चंद्र भरणी ल.१,२,३हाटक
(१५) ३ बुध रोहि.ल.१,२,३ पुत्रसुखद
(१६) ४ गुरु मृग.ल.६,७ पुत्रधनं
(१७) ७ रवि पुक्ष ल.१,२,३
(१८) १०बुध पूफा.ल.१,२,३ पुत्र सुखद हाटक
(१९)११गुरु उफा.ल.६,७ पुत्रधनं हाटक
(२०) १२ शुक्र हस्त ल.२,३,६ हाटक

ज्येष्ठकृष्णपक्ष:

(२१) २ बुध अनु.ल.२,३ हाटक
(२२) ११ शुक्र उभा.रे.ल.२,३,६हाटक

ज्येष्ठशुक्लपक्ष:

(२३) २ बुध मृग.ल.२,३,६ हाटक
(२४)३बु.आद्रा.ल.२,३,५अभि.पुत्रधनं
(२५) १० गुरु हस्त ल.२,३,५ हाटक
(२६) ११ शुक्र चि.ल.५,७ अभि.हाटक
(२७) १२ सूर्य स्वा.ल.३,५अभि.हाटक

अग्रे गुरु अस्त श्रावण कृ.२शनि यावत्

श्रावणकृष्णपक्ष:

(२८)६बुध उभा.ल.४,६ पंचके पंचकार्य
(२९) ७ गुरु रेव.ल.४,६,९ पंचक शुभ
(३०) १४ बुध आद्रा ल.९ हाटक

श्रावणशुक्लपक्ष:

(३१) १ शुक्र पुक्ष.ल.४,७,९अभि.हाटक
(३२) १३ गुरु पूषा.,उषा.ल.७,९अभि. हाटक
(३३) १४ शुक्र उषा.ल.४ हाटक

भादपदकृष्णपक्ष:

(३४) १सूर्य धने.ल.३,५,७अभि.हाटक
(३५) १२ बुध पुन.ल.७,१० हाटक

भाद्रपदशुक्लपक्ष:

(३६) १ सूर्य पूफा.ल.५,७,९हाटक
(३७) ११ बुध पूषा.ल.५,७,९ हाटक
(३८) १२ गुरु उषा.ल.७,९ हाटक
(३९) १३ शुक्र श्रव.ल.७,९ हाटक

अग्रे खग्रास चंद्रग्रहण एवं श्राद्धपक्ष:

आश्विनशुक्लपक्ष:

(४०)१चंद्र उफा.ह.ल.६,९अभि.हाटक
(४१) ३ बुध चित्रा.ल.६,७ पुत्र सुखदं
(४२) ९ बुध उषा.ल.६,८ पुत्र सुखदं
(४३) १० गुरु श्र.ल.६,९ अभि. हाटक
(४४) ११ शुक्र धने. ल.११ हाटक
(४५) १३सूर्य पूभा.ल.९,११अभि.हाटक
(४६) १४ चंद्र उभा.ल.५,६हाटक

कार्तिककृष्णपक्ष:

(४७) ९ बुध पुक्ष ल.६,७,१०
(४८)१३ सूर्य उफा.ल.१० अभि.हाटक

कार्तिकशुक्लपक्ष:

(४९) १ बुध स्वात ल.७,१०अभि.हाटक
(५०) ९ गुरु श्र.,धने.ल.७,१०अभि.
(५१)१०शु.शत्त.ल.७,१०पुत्रधनंहाटक
(५२) १२ सूर्य पूभा.,उभा.ल.१०हाटक
(५३) १३ चंद्र उभा.,रे.ल.१० हाटक
(५४) १५ बुध अश्व.ल.७ हाटक

मार्गशीर्षकृष्णपक्ष:

(५५) १२ सूर्य हस्त ल.१०हाटक
(५६) १३ चंद्र चित्रा.ल.१० हाटक

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष:

(५७) १ शुक्र अनु.ल.८,११ हाटक
(५८) १० सूर्य उभा.ल.८,११ हाटक

पौषकृष्णपक्ष:

(५९) १ शु.रो.,मृ.ल.८,११हाटक

अग्रे मलमासशुक्रास्तमाघशु.15सूर्य यावत्

फाल्गुनकृष्णपक्ष:

(६०) ५ शुक्र ह.ल.१,२अभि.धनधान्यद
(६१) ११ शुक्र मूल ल.१,२,३धनधान्यद:

फाल्गुनशुक्लपक्ष:

(६२) १ बुध शत्त.ल.११,१,३हाटक

अग्रे होलाष्टक,चंद्रग्रहण

चैत्र कृष्णपक्ष:

(६३) २ गुरु हस्त ल.२,३ हाटक

अग्रेमीनाऽर्कमलमास:

astro welfare

वाहन क्रय (खरीदनें) मुहूर्ता:(चौपगा पशु ,रथ,गाडा,मोटर कार,स्कूटर,यान आदि)

(१) **शकट चक्र**- सूर्यभाद् दिनभं ६नैष्ट,६श्रेष्ठ,१८ नैष्ट,२१श्रेष्ठ,२४नैष्ट,२७श्रेष्ठः। नक्षत्र- अश्व,रो.,मृ.,पुन.,पुक्ष.,ह.,चि.,स्वा.,ज्ये.,अनु.,श्र.,ध.,श.,रेवती। त्याज्य नक्षत्रादि- मघा,पूर्वा३,उत्तरा३ तथा घोड़ा पश्चिममुख बांधने से हानि। रविवार को घोड़ा मंगल को गाय,भैंस,ऊँट,घोड़ा। बुधवार को बैल भैंस,शुक्रवार को बकरी,भेड़,गधा व शनिवार को ऊँट नहीं लावे। मृत्युवाणादि अशुभ योग त्याज्यः।

चैत्रशुक्लपक्ष:

(१) ६रवि पुक्षः ल.४ घोड़ा नही

(२) १० चंद्र पुक्ष ल.१२,१

वैशाखकृष्णपक्ष:

(३) १ चंद्र स्वात ल.१,३,४ अभि.

(४) ८ चंद श्रवण.ल.१,२,४अभि.

(५) १० बुध शत.ल.१,२ भैंस, घोड़ा, बैल नहीं खरीदें

वैशाखशुक्लपक्ष:

(६) ३ बुध रो.ल.१,२ पुत्रसुखद भैंस घोड़ा बैल नहीं खरीदें

(७) ४ गुरु मृग ल.६ पुत्र धनदः

(८) १२ शुक्र हस्त ल.२,३,६ बकरी भेड़,गधा नहीं खरीदें

ज्येष्ठकृष्णपक्ष:

(९)७ चंद्र श्रवण ल.७

(१०)११शु.रे.ल.६बकरी,भेड़गधा नही

(११)१३सू. अश्व.,भ.ल.१,३घोड़ानही

ज्येष्ठशुक्लपक्ष:

(१२) २ बुध मृग.ल.२,३भैंस घोड़ा बैल नही

(१३) ३ गुरु आद्रा ल.२,३,७ पुत्रधनदः

(१४) ४ शुक्र पुन.ल.२,३,७ बकरी, भेड़ गधा नहीं खरीदें

(१५) १० गुरु हस्त ल.२,३,७

(१६) १२ सूर्य स्वा.ल.१,३,७घोड़ा नहीं

अग्रे गुरु अस्त श्रावण कृष्ण 2 शनियावत्

श्रावणकृष्णपक्ष:

(१७) ३सूर्य धने.ल.४,७अभि.घोड़ा नहीं

(१८) ४ चंद्र शत.ल.३,७ अभि.,९

(१९) ७ गुरु रेवती ल.४,६,९

श्रावणशुक्लपक्ष:

(२०) १ शुक्र पुक्ष.ल.३,४,७अभि.बकरी भेड़ गधा नहीं

(२१) ६बुध हस्त ल.३,४,९ भैंस घोड़ा बैल नहीं।

(२२) ७ गुरु चित्रा ल.३,४,९

(२३) ८ शुक्र स्वा.ल.९,१०बकरी भेड़ गधा नहीं।

भाद्रपदकृष्णपक्ष:

(२४)१सूर्य धने.श.ल.३,७,९घोड़ानही

(२५) २ चंद्र शत्त ल.३,७ अभि.

(२६) ६ गुरु रेवती,अश्व.ल.३,४,९

(२७) ९ सूर्य रोहि.ल.४,८,९घोड़ा नहीं

(२८)१२बुध पुन.ल.५,७,९भैंस घोड़ा बैल नहीं।

भाद्रपदशुक्लपक्ष:

(२९) ४ बुध चित्रा ल.१०,१२भैंस घोड़ा बैल नहीं।

(३०)६शु.स्वा.ल.५बकरी,भेड़,गधानही

(३१) १३शुक्र श्रव.ल.७,८,९बकरा,भेड़ गधा नहीं

अग्रे ग्रहण,श्राद्धपक्ष:

आश्विनशुक्लपक्ष:

(३२) १ चंद्र हस्त ल.९अभि.

(३३) ३बुध चि.,स्वा.ल.६,७,१भैंस घोड़ा बैल नहीं।

(३४) १० गुरु श्रव.ल.६,८,९

(३५) ११ शुक्र धने.ल.१बकरी,भेड़,गधा नहीं

कार्तिककृष्णपक्ष:

(३६) २ बुध अश्व. ल.१०,१ भैंस, घोड़ा बैल नही

(३७) ६ सूर्य मृग.ल.९,१ घोड़ा नही

(३८) ७ चंद्र आद्रा ल.९,१

(३९) ९ बुध पुक्ष.ल.६,८भै.,घो.बैलनहीं

कार्तिकशुक्लपक्ष:

(४०) १बुध.स्वा.ल.७,९भै.घो.,बैलनहीं

(४१) ९ गुरु श्रव.,धने.ल.७,१०,१

(४२) १० शुक्र धने.,श.ल.१०,१,२ बकरी भेड़ गधा नहीं।

(४३)१५बु.अश्व.ल.७भैस,बैल,घोड़ान.

मार्गशीर्षकृष्णपक्ष:

(४४) २ शुक्र रो.ल.१०,११,२ बकरी, भेड़ गधा नहीं।

(४५) ६ चंद्र पुन.ल.७,९,११,२

(४६) १२ सूर्य हस्त ल.१०,१२घोड़ा नही

(४७) १३ चंद्र चित्रा ल.१०,१२

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष:

(४८) ६ बुध श्रव.ल.८,१०,१२,२भैस, घोड़ा,बैल नहीं

(४९) ८ शुक्र शत.ल.८, १०, १२, २ बकरी, भेड़,गधा नहीं।

पौषकृष्णपक्ष:

(५०)१ शुक्र रो.मृ.ल.८,१०,१२ बकरी, भेड़ गधा नहीं।

(५१) ४ चंद्र पुन.,पुक्ष ल.८,१०,१२,३

अग्रे मलमास, शुक्रास्त माघ शु.१५सूर्य यावत्

फाल्गुनकृष्णपक्ष:

(५२) ५ शुक्र हस्त ल.९,१०,२बकरी, भेड,गधा नहीं।

(५३) ७ सूर्य स्वात ल.४,६ घोड़ा नही

(५४) १४चंद्र श्रव.ल.१०,१,२,६

फाल्गुनशुक्लपक्ष:

(५५)१बुध श.ल.११,१,३भै.घो.बै.नहीं

(५६) ५ सू.अश्व.ल.१,२,३घोड़ा नही

अग्रेहोलाष्टक,चंद्रग्रहण

चैत्रकृष्णपक्ष:

(५७) २गुरु हस्ते.ल.२,३,६

(५८)३शु.चि.ल४,७बक.,भेड,गधा नही

(५९)५ सूर्य स्वात.ल.१,३ घोड़ा नहीं

अग्रेमीनाऽर्कमलमास:

जलाशय निर्माण मुहूर्त:(कुआ,नाड़ी,तालाब,टांका,बोरिंग आदि)

वैशाख कृष्णपक्ष:

(मेषेसूर्य बहुजल लक्ष्मीप्राप्ति)

(१)५ शुक्र मूल ल.१,२,३मध्ये पूर्ण जल,प.अमृत
(२) ७ सूर्य उषा.ल.१,२,३म.पूर्ण जल,प.अमृत
(३) ८ चंद्र श्र.ल.१,२ वा.अमृत जल।
(४) १० बुध श. ल.२,३वा.अमृतजल
(५) ११ गुरु पूषा.ल. १वा.अमृतजल उ.जल

वैशाखशुक्लपक्ष:

(६) ३ बुध रो.ल.१,२,३अ.बहुजल,शीघ्र जल
(७) ४ गुरु मृ.ल.६अ.बहुजल,रो.म.शीघ्रजल
(८) ७ रविपुष्य ल.१,२ नैऋत्य शुद्ध जल
(९) ८ चंद्र श्ले.ल.१,२,३नै.शुद्ध जल
(१०) १० बुध पूफा.ल.१,२,३प.स्वादुजल
(११) ११ गुरु उफा.ल.६,७रो.अ.मध्यमजल
(१२) १५ चंद्र विशा.ल.३,७रोहिभा.नै.बहुजल

ज्येष्ठकृष्णपक्ष:

(वृषभसंक्रांति बहुजल,लक्ष्मीप्राप्ति)

(१३) २ बुध अनु.,ज्ये.ल.२,६रोहि.नै.बहुजल
(१४) ३ शुक्र ज्ये.मूल ल.२,६म.पूर्णजल
(१५) ६ सूर्य उषा.श्र.ल.२,६,७,८म.पूर्णजल
(१६) ७ चंद्र श्र.धने.ल.६,७,८म.पूर्ण जल
(१७) १० गुरु पूभा.ल.१,२ वा.अमृत जल
(१८) ११ शुक्र उभा.रे.ल.२,३,६वा.अमृतजल
(१९) १३ सूर्य अश्व.,भ.ल.१,३ वा.अमृत जल

ज्येष्ठशुक्लपक्ष:

(वृषभसंक्रांति बहुजल,लक्ष्मीप्राप्ति)

(२०) २ बुध मृग.ल.२,३,६,७रो.मध्यम शीघ्रजल
(२१) ३ गुरु आर्द्रा ल.२,३,६,७अ.बहुजल
(२२) ४ शुक्र पुन.ल.२,३ अ.बहुजल
(२३) ७ चंद्र म.ल.२,३,७नैऋ.शुद्ध जल
(२४) १० गुरु ह.ल.२,३प.स्वादुजल
(२५) १२ सूर्य विशा.ल.७ उ.स्थिरजल
(२६) १३ चंद्र विषा.अनु.ल.१,३,६,७रोहिभा. नै. बहुजल,अनु.उ.स्थिरजल

अग्रेगुरुअस्त श्रा.कृ.शनियावत्

श्रावणकृष्णपक्ष:

(मिथुनसूर्य बहुजल,लक्ष्मीप्राप्ति)

(२७) ४ चंद्र शत्त.ल.३,७,९म.पूर्णजल
(२८) ६ बुध उभा.ल.३,४,६,९म.पूर्णजल
(२९) ७ गुरु रेव.ल.३,४,६,९म.पूर्ण जल
(३०) १० सूर्य कृ.ल.३,४,८,९वा.अमृत जलं

श्रावणशुक्लपक्ष:

(३१) ३ सूर्य म.ल.३,४,७ अ.बहुजल
(३२) ७ गुरु चि.ल.३,४,७,९नै.शुद्धजलं
(३३) ८ शुक्र स्वा.ल.९,१०नैऋ.शुद्ध जलं
(३४) ९ सूर्य अनु.ल.४,७,९प.स्वादु जलं
(३५) १३ गुरु पूषा.,उषा.ल.३,७ रो.प.अमृतजल
(३६) १४ शुक्र उषा.ल.४,७ उ.स्थिरजल

भाद्रपदकृष्णपक्ष:

(३७)२चंद्र पूभा.ल.९ म.पूर्णजलं रो.प.अमृतजल
(३८) ६गुरु रेव.,अश्व.ल.४,७,९ म.पूर्णजलं
(३९) ९ सूर्य रो.ल.४,७,९वा.अमृत जलं
(४०) १० चंद्र मृग.ल.११वा.अमृतजलं
(४१) १२ बुध पुन.ल.५,९,११वा.अमृतजलं

भाद्रपदशुक्लपक्ष:

(४२) २ चंद्र उफा.ल.५,७,८,९अ.बहुजल
(४३) ६ शुक्र विषा.ल.९ नै. शुद्ध जलं
(४४) ११ बुध पूषा.ल.५,९रो.प.अमृतजलं
(४५) १२ गुरु उषा.ल.८,९ रोहिभा.प.अमृतजल
(४६) १३ शुक्र श्र.ल.८,९उ.स्थिर जल

अग्रेग्रहणव श्राद्धपक्ष:

आश्विनशुक्लपक्ष:

(४७) ३ बुध चि.,स्वा.ल.६,८,१०अ.बहुजल
(४८) ७ चंद्र मूल ल.६,९ नै.शुद्ध जल
(४९) ९ बुध उषा.ल.६,९ उ.स्वादु जलं
(५०)१३ सूर्य पूभा.ल.९ उ.स्थिर जलं
(५१) १४ चंद्र उभा.ल.६ रोहिभा उ.स्थिर जल

कार्तिककृष्णपक्ष:

(५२) ३ गुरु भर.ल.९म.पूर्ण जलं
(५३) ४ शुक्र कृ.ल.६,८,१०म.पूर्ण जलं
(५४) ६ सूर्य मृग.ल.६,९म. पूर्ण जलं
(५५) ७ चंद्र आर्द्रा ल.६,९म. पूर्ण जलं
(५६) ९ बुध पुष्य ल.६,८,१० वा. अमृत जलं
(५७) ११ शुक्र मघा.ल.९वा. अमृत जलं

कार्तिकशुक्लपक्ष:

(५८) ३ शुक्र अनु.ल.१० अ.बहु जलं
(५९) ५ सूर्य मूल. ल.९,१०रोहिभ.प.अमृत जल
(६०) ९ गुरु श्र.,ध.ल.१०,१२नै. शुद्ध जलं
(६१) १० शुक्र ध.श.ल.१०,१२प.स्वादु जलं
(६२) १३ चंद्र उभा.,रे.ल.६,१०,१२उ.स्थिरजलं
(६३) १४ बुध भर.ल.७,९ई.मध्यम जलं

मार्गशीर्षकृष्ण पक्ष:

(६४) २ शुक्र रो.ल.१० म.शीघ्र जल
(६५) ६ चंद्र पुन.ल.७,९,१० म.पूर्ण जलं
(६६) ८ बुध श्ले.ल.७,१० म. पूर्ण जलं
(६७) ९ गुरु म.ल.७,९ वा. अमृत जलं
(६८) १० शुक्र पूफा. ल.९ वा. अमृत जलं
(६९) १२ सूर्य ह.ल.१० वा. अमृत जलं
(७०) १३ चंद्र चि.ल.१०वा. अमृत जलं

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष:

(७१) ३ सूर्य मूल ल.११ अ. बहुजलं प.अमृतजल
(७२) ८ शुक्र शत्त.ल.८,११ नै. शुद्ध जलं
(७३) १० सूर्य उभा.ल.८,११ प.स्वादुजलं

पौषकृष्णपक्ष:

(७४) १ शुक्र रो. ल.८ उ.स्थिर जलं
(७५) ४ चंद्र पुष्य ल.१०,१२ म. पूर्ण जलं
(७६) ७ गुरु पूफा.ल.८,१२ म. पूर्ण जलं
(७७) ८ शुक्र उफा.ल.८,१२ वा. अमृतजलं

अग्रे मलमास:शुक्रास्त मा.शु.१५यावत्

फाल्गुनकृष्णपक्ष:

(७८) ४ गुरु उफा.ल.१०,२म.पूर्णजलं
(७९) ५ शुक्र हस्त ल.१०,२ म.पूर्ण जलं

फाल्गुनशुक्लपक्ष:

(८०) २ गुरु पूफा.ल.२,३ अ.बहुजलं
(८१) ३ शुक्र उभा.ल.२,३ अ.बहुजलं

अग्रेहोलाष्टक, चंद्रग्रहण

चैत्र कृष्णपक्ष:

(८२) ५ सूर्य स्वा.ल.३ म.पूर्ण जलं

अग्रेमीनाऽर्कमलमास:

कृषि कार्ये बीज वपनं(बीज बोनें)का मुहूर्तः-

(१) **राहु चक्र**- राहु भाद्दिनभं ३ कीड़े,३कज्जलता, १२ अधिक अन्न वृद्धिः,४ धान्य ऽभावः, ५ ईति भय। (नागकर्ण श्रेष्ठः)
(२) **नक्षत्रः**- रो.,मृ.,पुन.,पुक्ष.,श्लेषा,पूफा.उत्तरा३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मूल.,पूषा.,पूफा. श्रेष्ठः। अश्व.,कृ.,मृ.,पुन,ध.,रे.,मध्यम।
(३) **तिथि**- ३,५,७,८,११,१२,१३,१५ श्रेष्ठः। २,४,६,१० मध्यम। **वार**- चंद,बुध,गुरु,शुक्र **कालेबीज**- शनि+श.+मध्यान्ह। **लालबीज**- मृग+लग्नस्थ गुरु। **मूंग आदि चित्रान्न** चित्रा+ गुरु+लग्न चंद्र व ल.९,१२। (४) **श्रेष्ठलग्नः**- वृषभ,मिथुन, कन्या, वृश्चिक, धनु, मीन (ग्रहबली लग्न विशेषतः)

सातम पांचम तृतीया दशमी, एकादशी में जीव।इण तिथियों में जोतियें, तां प्रसन्न हो शिव।।1।।
तेरह कातिक तीन आषाढ़। जो चूका तो साख में राड़।।२।। अर्थात् कार्तिक के १३ दिन आषाढ़ के ३ दिन तक बुवाई कर देवे।
रवि बोवे धनवन्तरि होय, सोम बोवे सेवा फल होय।बुध गुरु शुक्र भरै भंडार,मंगल शनि आय द्वार।।2।।

{**बीजवपन मंत्रः**- ऊँ वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च।नमस्ते सुभगे देवि द्रुमोऽयं त्वयिरोपते।।१।।}

चैत्रशुक्लपक्षः
(१)५ बुध रोहिणी ल.२,६
(२) ६ गुरु रोहि.,मृ.ल.१२,२,६
(३) ७ शुक्र मृ.,आद्रा ल.१२,२,३,६
(४) ९ रवि पुक्ष ल.२,३,६
(५) १२ बुध पूफा.ल.२,३,६
(६) १३ गुरु पूफा.,उफा.ल.२,३,६
(७) १४ शुक्र उफा.ह.ल.२,३,६

वैशाख कृष्णपक्षः
(८) १ सूर्य चि.ल.१,४

वैशाखशुक्लपक्षः
(९) ३ बुध रो.ल.१,२,३,६
(१०) ४ गुरु मृग.ल.६,७
(११) ५ शुक्र आद्रा ल.१,२,३,६
(१२) ७ सूर्य पुक्ष ल.१,२,३,६
(१३) ८ चंद्र श्ले.ल.१,२,३,६
(१४) १० बुध पूफा.ल.१,२,३,६
(१५) ११ गुरु उफा.ल.६
(१६) १२ शुक्र चित्रा ल.२,३,६

ज्येष्ठशुक्लपक्षः
(१७) २ बुध मृग.ल.२,३,६
(१८) ३ गुरु आद्रा ल.२,३,५,६
(१९) ४ शुक्र पुन.ल.२,३,५
(२०) ५ शनि पुक्ष ल.२,३,६
(२१) ६ सूर्य श्लेषा ल.२,३,६
(२२) १० गुरु हस्त ल.२,३
(२३) ११ शुक्र चित्रा ल.५,६,७

अग्रेगुरुअस्तश्रावणकृ.२शनितक

आषाढ़ कृष्णपक्षः
(२४) १३ चंद्र रोहिणी ल.६,७,८

आषाढ़शुक्लपक्षः
(२५) २ शुक्र पुन.,पुक्षल.३,४,६,७,८
(२६) ७ बुध उफा. ल.३,४,६
(२७) ८ गुरु ह.चि.ल.३,४,६
(२८) ९ शुक्र चित्रा ल.३,४,६

श्रावणकृष्णपक्षः
(२९) १४ बुध आद्रा पुन.ल.९

श्रावणशुक्लपक्षः
(३०) १ शुक्र पुक्ष.ल.४,७,९
(३१) ४ चंद्र पूफा.ल.४,५
(३२) ६ बुध हस्त ल.४,५,९
(३३) ७ गुरु चित्रा ल.४,५,७,९
(३४) ८ शुक्र स्वा.ल.९,१०

भाद्रपदकृष्णपक्षः
(३५) ९ सूर्य रो.ल.३,५,७,१०
(३६) १२ बुध पुन.ल.४,५,७,१०
(३७) १३ गुरु पुक्ष ल.४,५,७

भाद्रपदशुक्लपक्षः
(३८) १ सूर्य पूफा.ल.५,७,९
(३९) २ चंद्र उफा.ल.५,७,९
(४०) ४ बुध चित्रा ल.५,७,९

अग्रेखग्रासचंद्रग्रहण,श्राद्धपक्षः

आश्विनशुक्लपक्षः
(४१) १ चंद्र उफा.ह.ल.६,९,१०
(४२) ३ बुध चित्रा ल.६,७,८

कार्तिककृष्णपक्षः
(४३) ५ शनि रोहि.ल.८,१०
(४४) ६ सूर्य मृग.ल.६,९
(४५) ९ बुध पुक्ष ल.६,८,१०
(४६) ११ शुक्र मघा ल.८,९

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः
(४७) २ शुक्र रोहि.ल.८,९,१०
(४८) ६ चंद्र पुन.ल.७,९,११
(४९) ८ बुध श्ले.ल.७,८,९
(५०) ९ गुरु मघा ल.७,८,९
(५१) १० शुक्र पूफा.ल.७,८
(५२) १२ सूर्य हस्त ल.८,९,१०
(५३) १३ सूर्य चित्रा ल.८,९,१०

पौषकृष्णपक्षः
(५४) १ शुक्र रोहि.मृ.ल.८,१०,११
(५५) ४ चंद्र पुक्ष ल.८,१०,१२
(५६) ७ गुरु पूफा.ल.८,११
(५७) ८ शुक्र उफा.ल.८,११
(५८) ९ शनि हस्त ल.९,१०,१२

अग्रेधनेऽर्कमलमासशुक्रास्त

माघशुक्लपक्षः
(५९) १० बुध रोहिणी.ल.१०,११,२
(६०) ११ गुरु मृग.ल.१०,११,२
(६१)१४ शनि पुन.ल.९,१२,१,२

(६२) १५ रवि पुक्ष ल.३,४

शुक्रोदय:

फाल्गुनकृष्णपक्ष:

(६३) १ चंद श्ले.ल.१०,१,२

(६४) ३ बुध पूफा.ल.६,२,३

(६५) ४ गुरु उफा.ल.१०,१२,२,३

(६६)५ शुक्र हस्त ल.१०,१२,२,३

अग्रेहोलाष्टक

चैत्रकृष्णपक्ष:

(६७) २ गुरु हस्त ल.१२,२,३

(६८) ३ शुक्र चित्रा ल.५,६

(६९) ४ शनि चित्रा ल.१०,११

अग्रेमीनाऽर्कमलमास:

इच्छा प्राप्ति यंत्र

वं	वं	वं	वं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

इस यंत्र को लाल चंदन से बीलपत्र पर १०८ बार लिखकर श्रावण मास में ३० दिन तक शिवलिंग पर चढ़ावे तो शिवजी प्रसन्न होकर धन सम्पत्ति सहित इच्छित सर्वभोगों का अधिकारी बना देते हैं। मन इच्छित काम पूर्ण होता है।

९ श्री महालक्ष्मी पूजन मुहूर्त:

॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥ ॥ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ॥ ॥ ह्रीं सरस्वत्यैनमः ॥

卐 सनातन विधि से बहि लेखन:- प्रथम् स्वस्तिक बनावें, फिर कालीस्वरुप कलम दवात , लक्ष्मी स्वरूप सिक्के, आभूषण व सरस्वती स्वरूप बहियों की पूजन करें।

बही में लिखें:- श्री कुबेरजी रो भण्डार भरपूर छै:। बहु लक्ष लाभ , बहु शुभ सुख , बहु ऋद्धि सिद्धि , श्री महालक्ष्मी रो भण्डार भरपूर छै:।

जैन विधि से बही लेखन:- श्रीगौतम स्वामी री ऋद्धि:, शाल भद्रजी री बुद्धि:, केवल्यनाथ जी रो सौभाग्य, बाहुबल जी रो बल, भरत चक्रवर्ती जी री पदवी, कुबेर जी रो भण्डार भरपूर छै:। श्री महावीर जी रो भण्डार भरपूर छै: ।।

बही खाते निर्माण व लानें का मुहूर्त:- (१) आश्विन शुक्ला ९ बुध, दुर्गानवमी, रवियोग ता.१.१०.२५ई. लाभ ६.३५ से ८.३ बजे, अमृत ८.४ से ९.३१ बजे, शुभ ११.१ से १२.००बजे लाभ ४.५५ से ६.२३। (२) आश्विन शुक्ला १० गुरुवार विजयादशमी, रवियोग ता.२.१०.२०२५ई. शुभ ६.३५ से ८.३ बजे, लाभ १२.२९ से १.५५ बजे, अमृत १.५६ से ३.२४ बजे शुभ ४.५३ से ६.२१ बजे तक।(३) आश्विन शुक्ला १३ रविवार रवियोग ता.५.१०.२५ई.। लाभ ९.३२ से १०.५९ बजे अमृत ११.० से १२.२६ बजे शुभ १.५५ से ३.२२ बजे तक। (४) कार्तिक कृ.७ चंद्र, रवियोग ता.१३.१०.२५ई.। अमृत ६.४१ से ८.६ बजे। शुभ ९.३४ से ११.६ बजे। लाभ ३.२३ से ४.४४ बजे अमृत ४.४५ से ६.९ बजे।

धन त्रयोदशी कुबेर पूजन:- कार्तिक कृष्ण पक्ष: १२ शनि ता.१८.१०.२५ई. धनतेरस शुभ ८.१० से ९.३३ बजे, लाभ १.५० से ३.१३ बजे, अमृत ३.१४ से ४.३८बजे, सायं लाभ ६.४से ७.३८बजे, शुभ ९.१४ से १०.४८ अमृत१०.४९ से १२.२३ बजे तक।

दीपावली:- कार्तिक कृष्णा १४ चंद ता.२०.१०.२५ई. सुबह अमृत ६.४५ से ८.९ बजे, शुभ ९.३५से १०.५९ बजे, लाभ ३.१४ से ४.३८ बजे अमृत ४.३९ से ६.३ बजे।

रात्रौ श्रीमहालक्ष्मी पूजन:- गोधूलि मेष ५.५४से ७.३१, वृषभ ७.३२ वसे ९.२८बजे, ग्रहबली कर्क ११.४३ से २.१ बज, सिंह २.२ से ४.१६बजे, लाभ १०.५०से १२.२४ बजे, शुभ २.० से ३.३५बजे, अमृत३.३६से५.१०बजे।

श्री रोकड़ मिलान नये कार्यारंभ:- (१)कार्तिक शु.१बुध ता.२२.१०.२५ई. लाभ६.४६से८.९बजे, अमृत ८.१० से ९.३३, शुभ १०.५९ से १२.०बजे, लाभ ४.३५से ५.५८बजे।(२) कार्तिक शु.५सूर्य लाभ५, रवियोग, ता.२६.१०.२५ई. लाभ ९.३५ से१०.५८ बजे, अमृत १०.५९ से १२.२१, शुभ १.४६ से ३.८ बजे (३)कार्तिक शु.९ गुरु अक्षय९ ता.३०.१०.२५ई., शुभ६.५०से८.१२बजे, लाभ१२.२३से१.४४अमृत१.४५से३.७शुभ४.३२से५.५४बजे

हस्त रेखा ज्ञान

(१) **कनिष्ठा:-** अंक १,अग्नि तत्व,लालरंग,पश्चिम दिशा,बाल्यावस्था,विषम,ब्राह्मणवर्ण, लक्ष्मण रूपा, प्रथम पर्व से धातु मूल जीव चिंता, (२)**अनामिका:-** अंक२, वायुतत्व, हरारंग,दक्षिण दिशा, कुमार अवस्था,सम,क्षत्रियवर्ण,विभिषणरूपा, प्रथम पर्व से जीव,मूल,धातु चिंता (३)**मध्यमा:-** अंक३, जल तत्व,श्वेत रंग, उत्तर दिशा,युवावस्था,विषम, वैश्यवर्ण,हनुमान रूप प्रथम पर्वसे धातु, मूल जीव चिंता। (४)**तर्जनी:-** अंक ४,पृथ्वीतत्व,पीला रंग,पूर्व दिशा, प्रौढावस्था, सम, शुद्रवर्ण, सीतारूप, प्रथम पर्व से जीव ,मूल,धातु चिंता। (५) **अंगुष्ठ:-** अंक नहीं, आकशतत्व, श्याम रंग,वृद्धावस्था,विषम,श्रीराम रूप, प्रथम पर्व से धातु,मूल जीव चिंता, **स्पर्शाधिकार:-** अपने आराध्य देव का स्मरण कर पूछने वाले से अंगुलियों का स्पर्श करावें। शुक्ल पक्ष से जिमणा हाथ सम्मुख करके व कृष्ण पक्ष मे डावा हाथ सम्मुख करें व रात्रि मे पृष्ठ भाग से सम्मुख कर स्पर्श करावें- चौपाई **रामचंद्र घर लीला विलास,सीता कष्ट सेयाई बनवास। हनुमत काज सफल बनाई,लक्ष्मण काज करी घर आवई।। संकारज विभिषण पावई, कर्मरूप फल सर्व बतावई।।१।।** अर्थात् **अंगुष्ठ**(रामचंद्र) का स्पर्श करें तो भगवान् श्री राम के जीवनवत् घटनाक्रम कहें। घर में लीला,विलास व खुसियां होवे। अनीति,अत्याचार के खिलाफ लड़ना पड़ेगा। माता-पिता का बिछोह रहेगा। युवावस्था में पतिव्रता सुन्दर स्त्री का सुख रहेगा परन्तु स्त्री चिंता रहेगी। भातृ सुख अच्छा। अंततो जीवन मे राजयोग,संतान सुख,निष्कलंक जीवन होगा। **तर्जनी**(सीता) के स्पर्श से कष्ट युक्त जीवन,बनवास आदि का व्रतांवत् फल कहे। **मध्यमा**(हनुमान) के स्पर्श से सभी कार्य सफल होवे। स्वामी भक्त व सत्यनिष्ठ धोटे लंगोटे का सावधान होवे। भगवत् स्मरण से पूज्य होवे। **कनिष्ठिका**(लक्षमण) के स्पर्श से सभी कार्य करके घर आयेगा। जय विजय,भ्रातृ स्नेह,क्रोधी स्वाभिमानी होवे। **अनामिका**(विभिक्षण) के स्पर्श से राजयोग बनें। सत्यनिष्ठा,सत्य का पक्ष, भगवान पर दृढ़ आस्था सर्वोच्च सत्ता तक पहुँचायेगी। सभी शत्रुओं का पराभव होगा। अपनी सम्पत्ति, अधिकार मिलेगा। इस प्रकार विभिक्षण के अनुसार फलकहें। चारों ही अंगुलियों का स्पर्श करनें पर कर्म के अनुसार सुख दुख प्राप्त होगा। जीवन की रामायण लम्बी एव विचित्र है। इसी प्रकार सम अगुलि से बालिका,**विषम** से पुत्र व **तल**(हथेली) स्पर्श से नपुंसक जन्म होवे। **विषम अंगुली** स्पर्श से लाभ,सुख, जीवित,आगमन,जय और कार्य होगा व सम अंगुली स्पर्श करनें से अलाभ,दुख,मरण, अनागम,पराजय और कार्य नहीं बनेगा कहें। **कनिष्ठा से तर्जनी** तक क्रमश:१,२,३,४ अंक मानें व प्रश्चक को इन अंगुलियों का स्पर्श तीन बार करावें उन सभी अंकों का योग एकी है तो उत्तम,कार्य बनेगा। व दोकी(सम) हो तो कार्य मे विलम्ब है। अंक लाभ भी इसी प्रकार देखें। **मुष्टि प्रश्न** मे अंगुलियों के पर्व(पोर) स्पर्श से धातु मूल जीवचिंता को बतावें। **नष्ट वस्तु** में पृथ्वी वा जल तत्व हो तो नष्ट वस्तु भूमि वा जल मे है और प्रयास करनें पर भी न मिले। अग्नि,वायु और आकाश तत्व हो तो वस्तु मिलेगी। इसी प्रकार दिशा,वर्ण अवस्था ज्ञान कर नष्ट वस्तु चौर का ज्ञान करे।

रेखाधिकार- मूलं निरूपाऽत्र कुतः सुखीस्यात्- अर्थात् मूल(भाग्य रेखा) आदि शुभ रेखाओं के न होने से मनुष्य सुखी नहीं रहते है। **कुशाग्र रेखा कुतो दरिद्रता** अर्थात् कुश के समान अग्र भाग वाली सुन्दर रेखाओं के होनें से मनुष्य दरिद्र नहीं होते है।

विनाशयुक्तास्य कुत फलानी- अर्थात् छिन्न-भिन्न रेखाएं अपने शुभ फल को नहीं देती है। **अंगुष्ठ में यव** हो तो शुक्ल पक्ष का जन्म जानें। अंगुष्ठ मूल में शुक्रपर्वत पर बड़ी रेखाओं से पुत्र,छोटीसे कन्याएं कहे,टूटी रेखाओं से संतानों का गुजरना व ज्यादा जगह हो तो गर्भपातादि से संतान में विलम्ब कहें। कनिष्ठिका के नीचें **स्त्रियों का कहें**। दो या तीन स्त्री रेखायें हो तो मंगली जानें। इससे नीचे हृदय रेखा व इससे नीचे भाई-बहिन रेखाएं होती है। बड़ी रेखाओं से भाई व छोटी से बहिनें कहें। हृदय रेखा स्वच्छ साफ हो तो हृदय का पवित्र व लम्बी आयुष्य वाला है। इसके कटीफटी होनें से हृदय रोगी जानें। मस्तिष्क रेखा से माता सुख,बुद्धि की कुशाग्रता,विद्या योग को बतावें। पितृ रेखा से पितासुख,दीर्घायु आदि का ज्ञान करें। बीचों-बीच भाग्य रेखा से भाग्यशाली,सुखी सम्पन्न होवे। एवं च-

राज्ञते करमो यस्य तिलोऽतुल धनप्रदः। तथा पादतले पुंसां वाहनार्थ सुखप्रदः।।१।।

अर्थात् जिसके दाहिने हाथ मे तिल हो तो अतुल धन देता है एवं पैर के तलुवे मे तिल हो तो वाहन और धन का सुख देते है।

स्वास्तिके धन सौभाग्यं मीने सर्वत्र पुज्यता। श्रीवत्स वांछित लक्ष्मी,न्यार्थ दामकेन च।।२।।

अर्थात् स्वास्तिक के चिन्ह होनें से धनी और सौभाग्यशाली होता है। मत्स्य के चिन्ह से सर्वभाग्य और पूज्य होता है। लक्ष्मी के चिन्ह से धनी और रस्सी के चिन्ह से गौ इत्यादि वाला होता है □□□

संशोधित वर वधु गुण मेलापक सारिणी (गुण १६ तक निम्न, १७ से २० तक मध्यम, २१ से ३० तक श्रेष्ठ)

वर रा.न. / वधू न.पू	मे अ ४	मे भ ४	मे कृ १	वृ कृ ३	वृ रो ४	वृ मृ २	मि मृ २	मि आ ४	मि पु ३	क पु १	क पु ४	क आ ४	सिं म ४	सिं पू ४	सिं उ १	क उ ३	क ह ४	क चि २
मेष अ.४	२८	३३	२७॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६॥	१६॥	१८	२२॥	३०॥	२७	२७	३१	२२॥	१५	१७॥	१५॥
भ.४	३१	२८	२८	१८	२२	१४॥	१७॥	२१॥	२५॥	३०॥	२२॥	२४॥	२६	२४	३२	२०॥	२१	३॥
कृ.१	२६॥	२८	२८	१८	१०	१५॥	१८॥	१८॥	१८॥	२४॥	२६॥	२२॥	२२॥	२६	२७	१८॥	१८	१८
वृष कृ.३	१८॥	१८	१८	२८	१८	२६॥	२३	२४॥	२४	२१	२३	१८	१८	२१	२१	२८	२८	३०॥
रो.४	२२॥	२३॥	११	२०	२८	२६	३४	२६॥	२८	२६	२७	१२	१०॥	२७॥	२६	३२	३२	२७
मृ.२	२२॥	१४॥	१८॥	२५॥	३१	२६	२४	३०	२८॥	२६	१८	२१	१८॥	१५॥	२३॥	२८	३२	२०
मिथुन मृ.२	२६॥	१७॥	२१॥	२५॥	३४	२५	२८	३२	३१॥	२०	११॥	१४॥	२३॥	१६॥	२७	३०॥	३३	२१
आ.४	१८॥	२६॥	२१॥	२४॥	२८॥	३१॥	३२	२८	२५	१३॥	२०॥	१४	२२॥	२८॥	२१॥	२४॥	२४॥	२७
कर्क पु.३	१८॥	२५॥	२१॥	२५॥	२८	२८	३०॥	२३	२८	१५॥	२२	२१॥	२२॥	२६॥	२०॥	२३॥	२४॥	२६॥
पु.१	२१॥	२८॥	२४॥	२१	२३	२५	१७॥	१०॥	१४॥	२८	३४	२६॥	२३॥	२७॥	२१॥	१७	१८	२०
पु.४	२६॥	२०॥	२६॥	२३	२३	१८	१०	१८॥	२०॥	३४	२८	२८	२५॥	२१॥	३०॥	२५॥	२६॥	१५
आ.४	२५	२३॥	२१॥	१८	११	१६	११॥	११॥	१६	२८॥	२८	२८	२२	२२॥	२४॥	१८॥	२०	२४
सिंह म.४	२६	२६	२२॥	१६॥	६॥	१८	२०॥	२०॥	१६॥	२२॥	२५॥	२२	२८	३०	२६॥	२२॥	२२॥	२८
पू.४	३२	२४	२६	२०	२३॥	१५॥	१८॥	२६॥	२५॥	२८॥	२३॥	२२॥	३०	२८	३४	३०	२७॥	१४॥
उ.१	२२॥	३२	२७	२१	२४	२२॥	२६॥	१८॥	२०॥	२२॥	३२॥	२५॥	२६॥	३४	२८	२२	२२	२०॥
कन्या उ.३	१४	२१॥	१७॥	२८	३१	२६	२८॥	२३॥	२३	१८	२७॥	२०॥	२३॥	३१	२३॥	२६	२७	२४॥
ह.४	११	२१	१८॥	२८	३०	३१॥	३१	२२॥	२३॥	१८	२८॥	२१॥	२४॥	२८॥	२३॥	२६	२८	२८॥
चि.२	१५॥	४॥	१६	२६॥	२७	१८	१८	२५	२३॥	२१॥	११॥	२५॥	२६॥	१५	२०॥	२३॥	२६	२८
तुला चि.२	२२॥	१४	२८	२८॥	२७	१६	२०	२६	२४॥	१८	११	२५	२५॥	११॥	१६॥	२३॥	२६	२८
स्वा.४	२७॥	२८	१७॥	१८॥	२०॥	३१	३२	३३	३४	२७॥	२७	१३	१२॥	२८	२५॥	३२॥	३४॥	२७
वि.३	२२॥	२२॥	२०॥	२२॥	१७॥	२५॥	२६॥	२६	२६	२०॥	२०॥	१७	१७॥	१८॥	१८॥	२३॥	२४॥	३४॥
वृश्चिक वि.१	२३॥	२३॥	२०॥	१८॥	१५॥	२२॥	१२	१२॥	१२॥	१८	१८	१४॥	२३॥	२३॥	२०॥	१६	१७	२७
अ.४	३१॥	२१॥	२५॥	२३॥	२७	२०॥	१०	१५	१६॥	२५	१७	२०	२४॥	२०॥	२८॥	२४	२५	१०
ज्ये.४	१८	२३॥	३०॥	२८॥	२२॥	२२॥	१२	२	४	६॥	१८	२५	२१	२३॥	१७॥	११	११	२४
धनु मू.४	१८	२७	३१॥	१८॥	१२॥	१२॥	२१	१५	१५	१४	२४	२६	३०	२४	१८॥	१३	१३	२६
पू.४	३४	२६	२६	१४॥	२१	१४	१८	२६	२७	३०॥	१८॥	२४॥	२६	२४	३२	२८	२७	१५
उ.१	३२॥	३१	२०	८॥	१५॥	१८	२५	२६	२७	३०॥	३०॥	१६॥	१४॥	३०	३२	२७॥	२७॥	२०
मकर उ.३	२८	२८॥	१५॥	२०	२४	३०॥	२७	२६॥	२६॥	२८	२७	१४	४॥	२०	२१	२४॥	२१	१७॥
श्र.४	२८	२७	१४॥	१८	२५	३४	३१	२८॥	२८॥	२८	२५	१४	५॥	१८॥	२०	२४	२४	१८
ध.२	२०	११	२६	३०॥	२७	१८	१६॥	२३॥	२२	२१	१२	२७	१८॥	४॥	१५॥	१८	१७॥	१५॥
कुंभ ध.२	२०	१०॥	२५॥	३०	२६॥	१८	१३	२०	१८॥	१४॥	५॥	१८॥	२५॥	११॥	१८॥	२३॥	२३	२३
श.४	१४॥	२०॥	२६॥	३१॥	२५	२६॥	२०	१३	१२	८	१४॥	२०॥	२५॥	१८॥	१२॥	१७॥	२४॥	३१
पू.३	१८	२४॥	१८॥	२४॥	३१॥	३१	२६॥	१८	१८	१५॥	२१	१२॥	१८॥	२५॥	१५॥	२१॥	२४॥	२३॥
मीन पू.१	२१॥	२८॥	२३॥	१८	२६	२५	२५॥	१८	१८	१८	२६	१८॥	२४॥	३०॥	२०॥	१८॥	१५॥	१८
उ.४	३१॥	२२॥	२५॥	२१	२५	१८	१७	२५॥	२६॥	२७	२३	२१	२४॥	२२॥	३२॥	२७॥	२६॥	६
रे.४	३२	३१॥	१७॥	१३	१६	२५	२४॥	२४॥	२५॥	२५॥	२७	१४	१८	२८॥	२८॥	२४॥	२६॥	१८

वर रा.न. / वधू न.पू	तु चि २	तु स्वा ४	तु वि ३	वृ वि १	वृ अ ४	वृ ज्ये ४	ध मू ४	ध पू ४	ध उ १	म उ ३	म श्र ४	म ध २	कुं ध २	कुं श ४	कुं पू ३	मी पू १	मी उ ४	मी रे ४
मेष अ.४	२२॥	२५॥	२२	२४॥	२२॥	२१	२०	३२॥	३१॥	२६	२६	२०	१८॥	१७॥	१६॥	२०॥	३१॥	३३
भ.४	१३॥	२८	२०॥	२३॥	२३॥	२५॥	२७	२५॥	३४	२८॥	२६	१०	६॥	१८॥	२२	२३॥	२६	३३॥
कृ.१	२७॥	१५	१८॥	२२॥	२५॥	३१॥	३१॥	२६	२०	१४॥	१२॥	२४	२४॥	२५॥	१८॥	२३॥	२६	१७॥
वृष कृ.३	२८	१७॥	२१	२०॥	२३॥	२८॥	२०	१५	८॥	२०	१८	२८	२८	३०	२३	२०	२२	१३
रो.४	२६	१७॥	२१॥	१८॥	२६॥	२३	१३॥	२१	१५॥	२४	२६	२७	२६	२३	३०	२७	२५	१७
मृ.२	१८	२१	१६॥	२४॥	२१॥	२४॥	१४॥	११॥	१८	२६॥	३४	२०	१८	२६॥	२८	२५	१६	२५
मिथुन मृ.२	२१	३३	२७॥	१५॥	१२	१५	२१	१८	२३	२६॥	३२	१८॥	१४॥	२१	२३॥	२५	१५॥	२४॥
आ.४	२७	३४	२७	१४॥	१८	४	१६	२८	२७	२८॥	३०॥	२३	१८	१२	१७	१८॥	२६॥	२६॥
कर्क पु.३	२६॥	३४	२८	१७॥	२१॥	७	१४	२७	२६	२८॥	३०॥	२४	१८॥	१३	१६	१७॥	२६॥	२६॥
पु.१	१६॥	२७	२०॥	२०	२६	११॥	१५	२७॥	२८॥	२५	२७	२०	१२॥	७	६॥	१६	२५	२४॥
पु.४	११॥	२६	२०॥	२०	१८	२१	२४	१८	२८॥	२५	२४	१२	४॥	१३	१८	२४	१८	२६
आ.४	२४॥	११	१६॥	१८॥	२०	२६	२६॥	२३॥	१५॥	१८	१३	२६	१७॥	१८॥	११	१७॥	२०	२५
सिंह म.४	२४॥	१०॥	१६॥	२२॥	२४॥	३२	३१	२६	१६	३॥	५॥	१८॥	२४॥	२४॥	१८॥	२५॥	२५॥	१८
पू.४	१०॥	२४॥	१८॥	२४॥	२२॥	२४॥	२५	२४	२१	१८	१८॥	५॥	१०॥	१८॥	२४॥	२१॥	२२॥	३१॥
उ.१	१६॥	२६॥	१६॥	२२॥	३०॥	१६॥	१६॥	३२	३२	२०	२१	१२॥	१७॥	११॥	१५॥	२२॥	२३॥	३१॥
कन्या उ.३	२३॥	३२॥	२३॥	१८	२६	१२	१४	२८॥	२८॥	२६	२५	१६॥	२३॥	१७॥	२१॥	१७॥	२८॥	२६॥
ह.४	२७	३३॥	२४॥	२०	२६	१३॥	१५	२७	२६	२५	२६	१६॥	२६	१५॥	२०॥	१६॥	२६॥	२७॥
चि.२	२५	२६	३३	२८	११	२५	२७	१३	२१	१८॥	१८	१६॥	२२	२१	२२	१८॥	१०॥	१८॥
तुला चि.२	२८	२७	३४॥	२४॥	६॥	२०॥	२७	१३	२१	२५	२५	२३॥	२५	२२	२५॥	१३॥	४॥	१३॥
स्वा.४	२७	२८	२०	१०	२२॥	१७॥	२३	२७	१८	२२॥	२३॥	२६॥	२८	२७	३२	२०	२३॥	१६॥
वि.३	३४॥	१८	२८	२७	१७॥	२२॥	२७	२०	१३	१७॥	१६	२८॥	२७॥	३३	२७	१४॥	१३॥	५॥
वृश्चिक वि.१	२३॥	७	१६	२८	२७	३३॥	२८॥	२३॥	१६॥	१२	११	२४	२५॥	१६॥	१६॥	२६	२५	१६॥
अ.४	६॥	२०॥	१६	२७	२८	३१	२२॥	२१॥	२८॥	२५	२६	२१	११	२१	२४॥	३१	२४	३३
ज्ये.४	१८॥	१७॥	२०	३०॥	३०	२८	२१	२४॥	२४॥	२०	२०	२५	२४	१८	१०	१६॥	२७	२७
धनु मू.४	२५	२१	२५	२८॥	२१॥	२१	२५	२७	२४॥	१८॥	२५	२१	२८॥	२१॥	१४॥	१६॥	२५	२६॥
पू.४	१५	२७	१८	२३॥	२३॥	२५॥	२७	२८	३४॥	२५	२७	६॥	१४॥	२३॥	२८॥	३०॥	२३॥	३१॥
उ.१	२०	१८	१५	१७॥	३१॥	२५॥	२५॥	३४	२८	१८	१७	१६॥	२२॥	२२॥	२८॥	३१॥	३१॥	२३॥
मकर उ.३	२४॥	२२॥	१८॥	१२	२७	२१	१८॥	२४	१८	२८	२५	२५॥	२४॥	२४॥	३०॥	२८॥	२८॥	२१॥
श्र.४	२४	२२॥	१५॥	१२	२७	२२	१७॥	२५॥	१८	२५	२७	२७	२५॥	२८॥	२८॥	२७॥	२८॥	२१॥
ध.२	२२	२४	२८॥	२५	१५	२५	२०॥	६॥	१६॥	२५॥	२६	२८	२३॥	३०॥	२६	२६॥	१५॥	२२॥
कुंभ ध.२	२४	२६	३०॥	२४	११	२४	२८॥	१४॥	२३॥	२५॥	२५	२४॥	२८	३३	२८॥	२२	८	११
श.४	३२	२५	३२	२५॥	२१	१८	२२॥	२४॥	२४॥	२५॥	२५॥	३०॥	३२	२८	६॥	१७॥	२१	१७
पू.३	२४॥	२७	२६	१८॥	२५	२८	१४॥	२७	२८॥	३३॥	२८	२७	२८॥	२८	१७॥	१७॥	२३॥	२१
मीन पू.१	११॥	१८	१२॥	२६	२१	१५॥	१४	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	२७॥	२५॥	८॥	१८॥	२८	३३॥	३०॥
उ.४	२॥	२०॥	११॥	२८	२५	२७॥	२३॥	२२॥	२८॥	२८॥	२६॥	१३॥	१३	२१॥	३२	३२	२८	३४
रे.४	१५॥	१५॥	४॥	१८॥	३३	२८॥	२६	२८॥	२१॥	१८॥	२१॥	२१॥	१४	१८	१८	२८॥	३३	२८

कुनबी मोलिये मंगल विचार:— जन्मकुण्डली या राशि से १,४,७,८,१२वें मंगल व पापग्रह हो तो मांगलिक। पारीजात ग्रंथ में २ रे मंगल हो तो भी मांगलिक माना है। शुक्र से ४, ८ वें क्रूर ग्रह हो व शुक्र ग्रहों के मध्य हो, शुभ ग्रह नहीं देखे तो जलकर, गिरकर फांसी खाकर मरे या तल्लाक होती है। यह भी मांगलिक है। **विषकन्या योग:**—(१) तिथि २ + शनिवार+आश्लेषा में जन्म (२) तिथि १२+सूर्यवार+सूर्यवार+शतभिषा में जन्म (३) तिथि ७+ मंगलवार + विशाखा में जन्म हो तो, (४) ५ वें सूर्य, ७ वें मंगल या शनि हो तो (५) लग्न में पाप ग्रह, ६ठे शुभ व पाप ग्रह दोनो हो तो —— इन योगों से विषकन्या योग होता है। **कन्यायां जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्ये न नामभम्। व्यत्ययेन सदा योज्यं दम्पत्योर्नियतं बुधैः॥१॥ भामिनी जन्मनक्षत्र द्वितीयं [illegible]नामभम्। न शुभं पूर्तं नामर्क्ष कथितं ब्रह्मणो॥२॥ इस सारिणी में गुण वृद्धि का कारण शास्त्रों में जो दोष नहीं है शुभ है वे गुण यथावत् रखे गये है।**

विवाहे शुद्धिचक तथा गोचर ग्रहफल शुभाशुभ ज्ञानचक्रम्

शोभन से ठीक, पूज्य से सामान्य, निन्द से अशुभ समझे।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	श रा के	ग्रहा
३ ।६ १० ११	१ ।२ ।३ ५ ।६ ।७ ९ ।१० ।११	३ ।६ १० ११	२ ।६ १० ११	२ ।५ ७ ९ ।११	१ ।२ ३ ९ ।११	३ ।६ १० ११	शोभन
१ ।२ ५ ७ ।९	०	१ ।२ ५ ७ ।९	१ ।३ ५ ७ ।९	१ ।३ ६ ।१०	५ ।६ ७ ।१०	१ ।२ ५ ७ ।९	पूज्य
४ ।८ १२	४ ।८ १२	४ ।८ १२	४ ।८ १२	४ ।८ १२	४ ।८ १२	४ ।८ १२	निन्द

राशि निर्णय

जन्मराशि विचार:- विवाहे सर्व मांगल्ये यात्रादौ ग्रह गोचरे। जन्मराशे: प्रधानत्वं नामराशि न चिंतयेत्।।१।। **नामराशि विचार:-** देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके नामराशे: प्रधानत्वं जन्मराशि न चिंतयेत्।२। **राशि परिहार** - विवाह घटन चैव लग्नजं ग्रहणं बलम्। नाम भा चिन्तयेत् सर्व जन्म न ज्ञायते यदा।३। यत्रैकादशचन्द्र द्वितीयोवातृतीयग, सौधूलिक सविज्ञेय शेषा, धूलिमुखास्मृता।।४।। लग्नाधिनाथोथनवांशनाथ षष्टाष्टमेवा यदि लग्नकाले। स्वप्नेपिनो पश्यति आत्मनोमुखं विवर्जित कज्जल कंकुमेन।।५।। स्वक्षेत्रगा स्वोच्चगोवा मित्रक्षेत्रगतो विधु:, मूर्तिदोषायनभवेद् दंपत्यो: श्रेयसे तदा।।

घातचक्रम्

राशि	मास	तिथि	वार	नक्षत्र	योग	करण	प्र	ल	व	म	बु	गु	शु	श	रा	र	स्त्री
मेष	कार्तिक	नंदा	रवि	मघा	विष्कुंभ	बव	१	१	१	५	२	६	७	३	८	४	१
वृषभ	मार्ग	पूर्णा	शनि	हस्त	शुक्ल	शकुनि	४	२	५	९	६	१०	१०	७	१२	८	८
मिथुन	आषाढ	भद्रा	चन्द्र	स्वाति	परिघ	चतुष्पद	३	४	९	१	१०	२	३	११	४	१२	७
कर्क	पौष	भद्रा	बुध	अनु	व्याघा	नाग	१	७	२	६	३	७	८	०	९	५	९
सिंह	ज्येष्ठ	जया	शनि	मूल	धृति	बव	१	१०	६	१०	७	११	१२	८	१	९	६
कन्या	भाद्र	पूर्णा	शनि	श्रव	शूल	कौल	१	१२	१०	२	११	३	४	१२	५	१	३
तुला	माघ	रिक्ता	गुरु	शत	शूल	तैति	४	६	३	७	४	८	९	५	१०	६	४
वृश्चिक	आश्विन	नंदा	शुक्र	रेवती	व्यती	गर	१	८	७	११	८	१२	१	९	२	१०	२
धनु	श्रावण	जया	शुक्र	भरणी	वरीया	तैति	१	९	४	८	५	९	१०	६	११	७	१०
मकर	वैशाख	रिक्ता	मंगल	रोहि	वैधृति	शकुनि	४	११	८	१२	९	१	२	१०	३	११	११
कुम्भ	चैत्र	जया	गुरु	आर्द्रा	गंड	किंस्तु	३	३	११	३	१२	४	५	१	६	२	५
मीन	फाल्गु	पूर्णा	शुक्र	आश्ले	ध्रुति	चतुष्पद	[illegible]	५	१२	४	१	५	६	२	७	३	१२

मूल अश्लेषा जन्मफल:– मूल १ च व आश्ले ४ च में जन्म पितृनाश,मूल २ च व आश्ले ३ च में मातृनाश, मूल ३ च. आश्ले २ में धननाश, मूल ४ च. आश्ले १ च में शांति से शुभ, दिन में जन्म हो तो पिता को भय, सध्या में स्वकष्ट, रात्रि में माता को कष्ट होवे। मघा– मघा १ च. मे माता कष्ट, २ मे पिता कष्ट, ३ में सुख, ४ में स्वय कष्ट होवे धन विद्या। ज्येष्ठ– चरण में १ मे ज्येष्ठ भ्राता को कष्ट,२ में छोटे भ्राता को कष्ट,३ में मातृ कष्ट, ४ में स्वय को कष्ट होवे।

दिन के चौघड़िये (१।। घंटा का एक)

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	बजे से
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	६।।
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	८
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	९।।
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	११
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	१२।।
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	३।।
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	५

रात के चौघड़िये (१।। घंटा का एक)

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	बजे से
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	६।।
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	८
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	९।।
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	११
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	१२।।
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	२
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	३।।
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	५

यात्रा में कार्य सिद्धि व कुशल क्षेम के लिए इन्हें अवश्य देखकर प्रस्थान करें।

चन्द्र दिशा ज्ञान

मेषे च सिंहे धन पूर्व भागे, वृषे च कन्या मकरेषु याम्ये।। मिथुने तुले कुंभ पश्चिमायाम् ,कर्कालमीनो अलिउत्तरायाम्।।१।। **फल-** सन्मुखोअर्थलाभाय,दक्षिणे सुखसंपदा। पृष्ठतो मरणंचैव, वामचंद्र धनक्षय।।२।।**अर्थ:-** मेष, सिंह, धनु, पूर्व। वृष, कन्या, मकर, दक्षिण। मिथुन, तुला, कुंभ पश्चिमे। कर्क,मीन, वृश्चिक उत्तरे।

योगिनी दिशा ज्ञान

ईशान ३०/८ तिथी — पूर्व १/९ तिथी — आग्ने ३/११ तिथी

योगिनी सुखदा वामे, पृष्ठे वांछित दायनी। दक्षिणे धन हन्ती च, सन्मुखे मरण प्रदा।।

काला दिशा ज्ञान

ईशान (काला नहीं) — पूर्व शनि — आग्ने शुक्र

डावे काले लक्ष्मण रंग, पूठे कालज होय अभंग। सामे पगलो कोइ न भरे, जिमणो ले चाले तो मरे।।

दिशाशूल ज्ञान

पूर्व सोम, शनिवार

दिशाशूल डावो भलो, जोगण भलीज पूठ। सन्मुख लेवे चन्दमा, लावे लक्ष्मी लूट।।

★ तिथिवार नक्षत्रादिषु त्रयोदशयोग कोष्ठक ★

योग	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
चर	पू.भा	भर	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्ये	अभि	१
ककच	१२ तिथि	११	१०	९	८	७	६	२
दग्ध	१२ तिथि	११	५	३	६	८	९	३
मृत्युदा	१ ६ ११	२ ७ १२	१ ६ ११	३ ८ १३	२ ७ १२	४ ९ १४	५ १० १५	४
सिद्धि	०	०	३ ८ १३	२ ७ १२	५ १० १५	१ ६ ११	४ ९ १४	५
उत्पात	विशा	पू.षा	धनि	रेव	रोहि	पुष्य	उ.फा	६
मृत्यु	अनु	उ.षा	शत	अश्वि	मृग	अश्ले	हस्त	७
काण	ज्येष्ठा	अभि	पू.भा	भर	आर्द्रा	मघा	चित्रा	८
सिद्धि	मूल	श्रव	उ.भा	कृति	पुन	पू.फा	स्वाति	९
यमदंष्ट्र	मघा धनि	मूल विशा	कृति रोहि	पू.षा पुन	उत्तरा अश्वि	रोहि अनु	श्रव शत	१०
यमघंट	मघा	विशा	आर्द्रा	मूल	कृति	रोहि	हस्त	११
मूसल	अभि	पू.षा	भर	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्ये	१२
अ सि	हस्त	मृग	अश्वि	अनु	पुष्य	रेव	रोहि	१३

रवियोग– सूर्य के नक्षत्र से इष्ट दिन नक्षत्र ४, ९, ६, १०, १३, २० वा हो तो ये रवियोग त्रयोदश कुयोग नाशक है। **ज्वालामुखी–** प्रतिपन्मूल नक्षत्र पंचम्यांतु भरण्यय:। अष्टम्या कृत्तिका चैव नवम्यां रोहिणी तथा।। सार्प दशम्यां विज्ञेय: सर्वकार्य विनाशकृत, ज्वालामुख्यभिधोयोगो वर्जितव्य सदाबुधे।।२।।

।। अथ निरयन लग्न पत्रम्।। अयनांश २४ अक्षांश २६/१८ अक्षप्रभा ५/५६ चरखण्डानि ५९/४७/१६ परमदिन ३४/१२, जोधपुर, अजमेर, ग्वालियर पटना, हरि, गोकुल, कानपुर, टोंक, अलीगढ़, हथुवा, अमेठी, आजमगढ़, गोहाटी, रायबरेली, सुल्तानपुर, बक्सर, सवाई माधोपुर इत्यादि एक रेखीय अक्षांशवत् नगरों के लिए ग्राह्य।। अयनबिंदु ६०वर्ष बाद एक अंश आगे खिसकता है वि.सं २०८०)

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष ०	३/२	३/६	३/१७	३/२४	३/३१	३/३८	३/४७	३/५५	४/४	४/१२	४/२१	४/२९	४/३७	४/४६	४/५४
वृष १	७/६	७/१७	७/२५	७/३४	७/४२	७/५१	८/१	८/११	८/२१	८/३१	८/४१	८/५१	९/१	९/११	९/२१
मिथुन २	१२/३	१२/१३	१२/२३	१२/३३	१२/४३	१२/५४	१३/५	१३/१५	१३/२५	१३/३६	१३/४७	१४/२	१४/१४	१४/२५	१४/३६
कर्क ३	१७/३९	१७/५१	१८/२	१८/१४	१८/२५	१८/३७	१८/४८	१९/०	१९/११	१९/२३	१९/३५	१९/४६	१९/५७	२०/८	२०/२०
सिंह ४	२३/२५	२३/३६	२३/४८	२३/५९	२४/११	२४/२३	२४/३४	२४/४५	२४/५६	२५/७	२५/१९	२५/३०	२५/४१	२५/५२	२६/४
कन्या ५	२९/३	२९/१५	२९/२६	२९/३७	२९/४८	३०/०	३०/११	३०/२२	३०/३३	३०/४४	३०/५५	३१/७	३१/१८	३१/२९	३१/४१
तुला ६	३४/४०	३४/५२	३५/३	३५/१४	३५/२५	३५/३७	३५/४८	३६/०	३६/११	३६/२३	३६/३४	३६/४६	३६/५७	३७/९	३७/२०
वृश्चिक ७	४०/२५	४०/३६	४०/४८	४०/५९	४१/११	४१/२३	४१/३४	४१/४५	४१/५७	४२/८	४२/२०	४२/३१	४२/४३	४२/५४	४३/६
धनु ८	४६/८	४६/२०	४६/३१	४६/४३	४६/५४	४७/६	४७/१६	४७/२६	४७/३६	४७/४६	४७/५६	४८/६	४८/१६	४८/२६	४८/३६
मकर ९	५१/१८	५१/२८	५१/३८	५१/४८	५१/५८	५२/८	५२/१७	५२/२५	५२/३४	५२/४२	५२/५१	५२/५९	५३/७	५३/१५	५३/२४
कुंभ १०	५५/३६	५५/४७	५५/५५	५६/४	५६/१२	५६/२१	५६/२८	५६/३५	५६/४२	५६/५०	५६/५७	५७/४	५७/१२	५७/१९	५७/२६
मीन ११	५९/२३	५९/३०	५९/३८	५९/४५	५९/५२	०/०	०/७	०/१४	०/२१	०/२८	०/३६	०/४३	०/५१	०/५८	१/५

	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंतर
मेष ०	५/३	५/११	५/१९	५/२८	५/३६	५/४५	५/५३	६/१	६/१०	६/१८	६/२७	६/३५	६/४३	६/५२	७/०	०/७
वृष १	९/३२	९/४२	९/५२	१०/२	१०/१२	१०/२२	१०/३२	१०/४२	१०/५२	११/२	११/१३	११/२३	११/३३	११/४३	११/५३	०/१०
मिथुन २	१४/४८	१४/५९	१५/११	१५/२२	१५/३४	१५/४५	१५/५६	१६/८	१६/१९	१६/३१	१६/४२	१६/५४	१७/५	१७/१७	१७/२८	०/१०
कर्क ३	२०/३२	२०/४३	२०/५५	२१/६	२१/१८	२१/३०	२१/४१	२१/५३	२२/४	२२/१६	२२/२७	२२/३९	२२/५०	२३/२	२३/१३	०/११
सिंह ४	२६/१५	२६/२६	२६/३७	२६/४९	२७/०	२७/११	२७/२२	२७/३३	२७/४५	२७/५६	२८/७	२८/१८	२८/३०	२८/४१	२८/५२	०/११
कन्या ५	३१/५२	३२/३	३२/१४	३२/२६	३२/३७	३२/४८	३२/५९	३३/१०	३३/२२	३३/३३	३३/४४	३३/५५	३४/७	३४/१८	३४/२९	०/११
तुला ६	३७/३२	३७/४३	३७/५५	३८/६	३८/१८	३८/३०	३८/४१	३८/५३	३९/४	३९/१६	३९/२७	३९/३९	३९/५०	४०/२	४०/१३	०/११
वृश्चिक ७	४३/१७	४३/२९	४३/४०	४३/५२	४४/३	४४/१४	४४/२५	४४/३७	४४/४८	४५/०	४५/११	४५/२३	४५/३४	४५/४६	४५/५७	०/११
धनु ८	४८/४७	४८/५७	४९/७	४९/१७	४९/२७	४९/३७	४९/४७	४९/५७	५०/७	५०/१७	५०/२८	५०/३८	५०/४८	५०/५८	५१/८	०/११
मकर ९	५३/३३	५३/४१	५३/४९	५३/५८	५४/६	५४/१५	५४/२३	५४/३१	५४/४०	५४/४८	५४/५७	५५/५	५५/१३	५५/२२	५५/३०	०/१०
कुंभ १०	५७/३४	५७/४१	५७/४८	५७/५५	५८/३	५८/१०	५८/१७	५८/२५	५८/३२	५८/३९	५८/४७	५८/५४	५९/१	५९/८	५९/१६	०/८
मीन ११	१/१३	१/२०	१/२७	१/३४	१/४२	१/४९	१/५६	२/४	२/११	२/१८	२/२६	२/३३	२/४०	२/४७	२/५५	०/७

लग्न सारिणी पत्र- जिस समय का लग्न निकालना हो उस दिन का स्पष्ट सूर्य इस पंचांग कीसहायता से बना लेना। सूर्य राशि, अंशवत् सारिणी में कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना तब स्पष्ट इष्ट युक्त कोष्ठक होगा। इस स्पष्ट इष्ट युक्त घटी पल के बराबर इस लग्नपत्र में कोष्ठक देखना, जिस राशि व अंश के सामने कोष्ठक मिले उसी वर्तमान लग्न की राशि व अंश होगा।। सायन लग्न पत्र से राशि, अंश, कला, विकला का लग्न स्पष्ट सूक्ष्म लग्न होगा।)

अथः मास दशा सारिणी (अष्टोत्तरी मतेन) तारीख।।

राशि ↓ मास दशा →	सूर्य दिन२०	चंद्र दिन५०	मंगल दिन२८	बुध दिन५६	शनि दिन३६	गुरु दिन५८	राहु दिन४२	शुक्र दिन७०
१ मेष (अ.ल.चु)	१४ अप्रेल से	६ मई से	२७ जून से	२७ जुला.से	२२ सित. से	२६ अक्टू. से	२५ दिस. से	५ फर.से
२ वृषभ (ई.उ.व.व.)	१५ मई से	६ जून से	२६ जुला.से	२७ अग.से	२३ अक्टू.से	२८ नवं.से	२४ जन.से	६ मार्च से
३ मिथुन (क.छ.घ.ह.)	१५ जून से	८ जुला.से	२६ अग. से	२६ सित से	२२ नवं. से	२७ दिस.से	२२ फर. से	५ अप्रे.से
४ कर्क (ड.हि.)	१७ जुला.से	८ अग.से	२६ सित. से	२७ अक्टू.से	२१ दिस.से	२५ जन.से	२४ मार्च से	६ मई से
५ सिंह (म ट)	१७ अग.से	६ सित. से	२६ अक्टू.से	२६ नव. से	२० जन.से	२४ फर.से	२४ अप्रे.से	६ जून से
६ कन्या (टो.प.ठ.ण.)	१७ सित. से	६ अक्टू. से	२८ नव. से	२५ दिस. से	१८ फर.से	२६ मार्च से	२५ मई से	८ जुला.से
७ तुला (र.त.)	१८ अक्टू.से	८ नवं. से	२७ दिस. से	२४ जन.से	२० मार्च से	२५ अप्रे.से	२५ जून से	८ अग.से
८ वृश्चिक (तो.न.य.)	१७ नवं.से	८ दिसं.से	२५ जन.से	२२ फर.से	१६ अप्रे.से	२७ मई से	२७ जुला.से	८ सित.से
९ धनु (य.ध.फ.ढ)	१६ दिसं. से	६ जन.से	२४ फर .से	२४ मार्च से	२० मई से	२७ जून से	२७ अग.से	६ अक्टू.से
१० मकर (भो.ख.ज.गी)	१४ जन. से	५ फर.से	२६ मार्च से	२३ अप्रे.से	२१ जून से	२८ जुला.से	२७ सित.से	८ नवं.से
११ कुंभ (गु.श.स.द)	१३ फर.से	६ मार्च से	२४ अप्रे.से	२४ मई से	२२ जुला.से	२८ अग.से	२७ अक्टू.से	७ दिस.से
१२ मीन (दी.थ.झ.ची.)	१५ मार्च	५ अप्रे.से	२६ मई से	२५ जून से	२२ अग.से	२८ सित.से	२५ नवं.से	५ जन.से

दशा- सूर्य मास दशा में खर्च, प्रवास। चन्द्रदशा में मानसिक शांति, भोग विलास। मंगल में विवाद,उग्रता, पश्चाताप। बुध में व्यापारिक प्रगति,सुखसुविधा। गुरु में धार्मिक प्रतिष्ठा,धन प्राप्ति, मान सम्मान, शुक्र में स्त्री सुख विलासिता। शनि में संघर्ष कष्ट अशांति व राहु में स्थान परिवर्तन स्थानान्तरण शोक संवेदना बनेगी।

- - रात्री व गोधूलिक विवाह लग्न विश्वा साधन सारिणी- -

—: दिवा व रात्री विश्वा:— (लग्नेश ६,८ वें भंगद)—: गोधूलिक विश्वा

[illegible]	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	[illegible]	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
भाव:	३,६,११	२,३,११	३,६,११	१,२,३,४,५,६,१०,११	१,२,३,४,५,६,१०,११	१,२,३,४,५,६,१०,११	३,६,११	३,६,११	३,६,११	भाव:	सर्व भावान्गत	२,३,११	२,३,४,५,६,७,९,१०,११,१२	२,३,४,५,६,७,९,१०,११,१२	२,३,४,५,६,७,९,१०,११,१२	२,३,४,५,६,७,९,१०,११,१२	सर्व भावान्गत	सर्व भावान्गत	सर्व भावान्गत
[illegible] विश्वा	३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥	[illegible] विश्वा	५	५	॥	॥	२	४	१	१	१
भाव	२,४,५,८,९,१०,१२	४,५,७,९,१०,१२	२,४,५,९,१०,१२	६,१२	६,७,१२	१२	२,४,५,८,९,१०,१२	२,५,८,९,१०,१२	२,५,८,९,१०,१२	भाव		४,५,७,९,१०,१२							
[illegible] विश्वा	१॥	२॥	।।।	१	१॥	१	।।।	।।।	।।।	[illegible] विश्वा	०	२॥	०	०	०	०	०	०	०
भाव	१,७	१,६,८	१,७,८	७,८	८	६,७,८	१,७	१,४,७	१,४,७	भाव		१,६,८	१,७,८	१,८	१,८	१,८			
[illegible] विश्वा	०	०	०	०	०	०	०	०	०	[illegible] विश्वा	०	०	०	०	०	०	०	०	०

(तारासंख्या वाराही संहितोक्त) (विषघटी प्रारंभ से ४ घटी तक रहती है) -: अवकहड़ा चक्र :- (ऋ=र, लृ=ल, श=स, व=ब, समानाक्षर) (नष्ट वस्तु या चोरी ज्ञान युक्त)

नक्षत्र	तारा	चरणाक्षर १, २, ३, ४	राशि	वर्ण	वश्य	योनि	राशीश	गण	नाड़ी	युंजा	हंसक	देवता	संज्ञक	मुख	लोचन	नष्ट वस्तु दिशा/दिन	चोर	नष्ट वस्तु स्थान	नष्ट वस्तु मिले या नहीं	पाया	विषघटी ४ घटी तक	आकृति
अश्विनी	३	चू. चे. चो. ला.	मेष	क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व	मंगल	देव	आदि	पूर्व	अग्नितत्व	अश्विनीकु.	लघु	तिर्यक	मंदलो	द. अधिक	पुरुष	स्वगृहे	मिले	सोना	६०	अश्वमुख
भरणी	३	ली. लू. ले. लो.	मेष	क्षत्रिय	चतुष्पद	गज	मंगल	मानव	मध्य	पूर्व	अग्नि	यम	उग्र	अधो	मध्यलो	प. ६४	पुरुष	स्वगृहे	नहीं मिले	सोना	२४	योनि
कृत्तिका	६	अ. इ. उ. ए.	मे.१ वृ.३	क्ष.१ वै.३	चतुष्पद	छाग	मं.१ शु.३	राक्षस	अन्त्य	पूर्व	अ.१ पृ.३	अग्नि	मिश्र	अधो	सुलोच	उ. नहीं.	पुरुष	स्वगृहे	नहीं मिले	सोना	३०	क्षुरा
रोहिणी	५	ओ. वा. वी. वु.	वृषभ	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	शुक्र	मानव	अन्त्य	पूर्व	पृथ्वी	ब्रह्मा	ध्रुव	ऊर्ध्व	अंधलो	पू. शीघ्र	पुरुष	दूर	नहीं मिले	सोना	४०	शकट
मृगशिरा	३	वे. वो. का. की.	वृ.२ मि.२	वै.२ शू.२	च.२ न.२	सर्प	शु.२ बु.२	देव	मध्य	पूर्व	पृ.२ वा.२	चन्द्र	मृदु	तिर्यक	मंदलो	द. ३	पुरुष	दूर	मिले	सोना	१४	मृगमस्तक
आर्द्रा	१	कु. घ. ङ. छ.	मिथुन	शूद्र	नर	श्वान	बुध	मानव	आदि	मध्य	वायु	शिव	तीक्ष्ण	ऊर्ध्व	मध्यलो	प. ६४	स्त्री	दूर	नहीं मिले	चांदी	२१	मणि
पुनर्वसु	५	के. को. ह. ही.	मि.३ क.१	शू.३ ब्रा.१	न.३ ज.१	मार्जार	बु.३ चं.१	देव	आदि	मध्य	वा.३ ज.१	अदिति	चर	तिर्यक	सुलोच	उ. नहीं.	स्त्री	दूर	मिले	चांदी	३०	भवन
पुष्य	३	हु. हे. हो. डा.	कर्क	ब्राह्मण	जलचर	छाग	चंद्र	देव	मध्य	मध्य	जल	गुरु	लघु	ऊर्ध्व	अंधलो	पू. शीघ्र	स्त्री	दूर	मिले	चांदी	२०	बाण
आश्लेषा	६	डी. डू. डे. डो.	कर्क	ब्राह्मण	जलचर	मार्जार	चंद्र	राक्षस	अन्त्य	मध्य	जल	सर्प	तीक्ष्ण	अधो	मंदलो	द. ३	स्त्री	दूर	नहीं मिले	चांदी	३२	चक्र
मघा	५	मा. मी. मू. मे.	सिंह	क्षत्रिय	वन्य	मूषक	सूर्य	राक्षस	अन्त्य	मध्य	अग्नि	पितर	उग्र	अधो	मध्यलो	प. ६४	स्त्री	समीप	नहीं मिले	चांदी	३०	घर
पूर्व फा.	८	मो. टा. टी. टू.	सिंह	क्षत्रिय	वन्य	मूषक	सूर्य	मानव	मध्य	मध्य	अग्नि	भग	उग्र	अधो	सुलोच	उ. नहीं	स्त्री	समीप	नहीं मिले	चांदी	२०	खाट
उत्तर फा.	२	टे. टो. पा. पी.	सिं.१ क.३	क्ष.१ वै.३	व.१ न.३	गौ	सू.१ बु.३	मानव	आदि	मध्य	अ.१ पृ.३	अर्यमा	ध्रुव	ऊर्ध्व	अंधलो	पू. शीघ्र	स्त्री	समीप	नहीं मिले	चांदी	१८	बिस्तर
हस्त	५	पू. ष. ण. ठ.	कन्या	वैश्य	नर	महिष	बुध	देव	आदि	मध्य	पृथ्वी	रवि	लघु	तिर्यक	मंदलो	द. ३	स्त्री	परहस्त	मिले	चांदी	२१	हाथ
चित्रा	१	पे. पो. रा. री.	क.२ तु.२	वै.२ शू.२	नर	व्याघ्र	बु.२ शु.२	राक्षस	मध्य	मध्य	पृ.२ वा.२	विश्वकर्मा	मृदु	तिर्यक	मध्यलो	प. ६४	स्त्री	परहस्त	मिले	चांदी	२०	मोती
स्वाति	१	रू. रे. रो. ता.	तुला	शूद्र	नर	महिष	शुक्र	देव	अन्त्य	मध्य	वायु	वायु	चर	तिर्यक	सुलोच	उ. नहीं.	स्त्री	परहस्त	नहीं मिले	चांदी	१४	मूंगा
विशाखा	१४	ती. तू. ते. तो.	तु.३ वृ.१	शू.३ ब्रा.१	न.३ की.१	व्याघ्र	शु.३ मं.१	राक्षस	अन्त्य	मध्य	वा.३ ज.१	इन्द्राग्नि	मिश्र	अधो	अंधलो	पू. शीघ्र	नपुंसक	परहस्त	नहीं मिले	लोहा	१४	तोरण
अनुराधा	४	ना. नी. नू. ने.	वृश्चिक	ब्राह्मण	कीट	मृग	मंगल	देव	मध्य	अन्त्य	जल	मित्र	मृदु	तिर्यक	मंदलो	द. ३	नपुंसक	परहस्त	मिले	लोहा	१०	[illegible]
ज्येष्ठा	३	नो. या. यी. यू.	वृश्चिक	ब्राह्मण	कीट	मृग	मंगल	राक्षस	आदि	अन्त्य	जल	इन्द्र	तीक्ष्ण	तिर्यक	मध्यलो	प. ६४	नपुंसक	परहस्त	नहीं मिले	लोहा	१४	कुंडल
मूल	११	ये. यो. भा. भी.	धनु	क्षत्रिय	नर	श्वान	गुरु	राक्षस	आदि	अन्त्य	अग्नि	राक्षस	तीक्ष्ण	अधो	सुलोच	उ. नहीं.	पुरुष	परहस्त	नहीं मिले	लोहा	५६	सिंहपुच्छ
पूर्वाषाढ़ा	१	भू. धा. फा. ढा.	धनु	क्षत्रिय	न.॥ च.॥	मर्कट	गुरु	मानव	मध्य	अन्त्य	अग्नि	जल	उग्र	अधो	अंधलो	पू. शीघ्र	पुरुष	परहस्त	नहीं मिले	तांबा	२४	हस्तीदंत
उत्तराषाढ़ा	८	भे. भो. जा. जी.	ध.१ म.३	क्ष.१ वै.३	चतुष्पद	नकुल	गु.१ श.३	मानव	अन्त्य	अन्त्य	अ.१ पृ.३	विश्वदेव	ध्रुव	ऊर्ध्व	मंदलो	द. ३	पुरुष	परहस्त	नहीं मिले	तांबा	२०	मंच
श्रवण	३	खी. खू. खे. खो.	मकर	वैश्य	च.१॥ ज.२॥	मर्कट	शनि	देव	अन्त्य	अन्त्य	पृथ्वी	विष्णु	चर	ऊर्ध्व	सुलोच	उ. नहीं	पुरुष	परहस्त	मिले	तांबा	१०	तीन पैर
धनिष्ठा	१४	ग. गी. गु. गे.	म.२ कुं.२	वै.२ शू.२	ज.२ न.२	सिंह	शनि	राक्षस	मध्य	अन्त्य	पृ.२ वा.२	वसु	चर	ऊर्ध्व	अंधलो	पू. शीघ्र	पुरुष	परहस्त	मिले	तांबा	१०	मृदंग
शतभिषा	१००	गो. सा. सी. सू.	कुंभ	शूद्र	नर	अश्व	शनि	राक्षस	आदि	अन्त्य	वायु	वरुण	चर	ऊर्ध्व	मंदलो	द. ३	पुरुष	स्वगृहे	मिले	तांबा	१८	गोल
पूर्व भा.	२	से. सो. द. दी.	कुं.३ मी.१	शू.३ ब्रा.१	न.३ ज.१	सिंह	श.३ बृ.१	मानव	आदि	अन्त्य	वा.३ ज.१	अजैकपाद	उग्र	अधो	मध्यलो	प.६४	पुरुष	स्वगृहे	नहीं मिले	तांबा	१६	खाट
उत्तरा भा.	८	दू. थ. झ. ञ.	मीन	ब्राह्मण	जल	गौ	गुरु	मानव	मध्य	अन्त्य	जल	अहिर्बुध्न्य	ध्रुव	ऊर्ध्व	सुलोच	उ. नहीं.	पुरुष	स्वगृहे	नहीं मिले	तांबा	२४	युग्मकलश
रेवती	३२	दे. दो. च. ची.	मीन	ब्राह्मण	जल	गज	गुरु	देव	अन्त्य	पूर्व	जल	सूर्य	मृदु	तिर्यक	अंधलो	पू. शीघ्र	पुरुष	स्वगृहे	मिले	सोना	२०	मृदंग

हंसक— अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल इन चार तत्वों में से जिस राशि का जो तत्व होता है उसे ही हंसक कहा जाता है प्रत्येक तत्व एक दूसरे के शत्रु-मित्र और उत्कृष्ट मित्र होते हैं। इसी के आधार पर वर-कन्या के हंसक (तत्व) मिलते हैं या नहीं, इस पर विचार किया जाता है (1) रोहिणीभाद् इष्ट नक्षत्र में ४ भाग से शेष ३/० हो तो नष्ट वस्तु नहीं मिलेगी। (२) सूर्य नक्षत्र दिनांक ६ तक वन में, १५ तक मार्ग में, २२ तक घर में, २४ तक नहीं आवे, २७ तक मृत्यु होवे। (३) ध्रुव संज्ञक-ध्रुव नक्षत्र में अभिषेकादि शान्ति कर्म, वृक्ष, नगर, धर्म, बीज, आदि स्थिर, ध्रुव कार्य करें। उग्र में अभिचार, क्रूर व भेद कार्य करें। उग्र में उजाड़ना, दहन, शस्त्रघात आदि उग्र कार्य करें। लघु में रति, भूषण, शिल्प औषधी, यान कार्य करें। मृदु में मांगलिक शुभ कार्य, मिश्रित (मृदु+तीक्ष्ण) नक्षत्र में मिश्रित कार्य करें। चर में चर कार्य करें। (४) नक्षत्र तारा संख्या के अनुसार दिनों में व्याधि का फल व विवाह नक्षत्र का शुभाशुभ फल तारासंख्यावत् वर्षों में होगा। (५) तिथि, नक्षत्र, योग, करण के स्वामि (देवता) का कर्म उसी देवता के लिये करें तो शीघ्र फलप्रद होगा। (६) अधोमुख में पृथ्वी सम्बन्धी खेती, कूप तालाब निर्माण, ऊर्ध्वमुख में मकान, मठ, पेड़ आदि, तिर्यक मुख में सवारी, पुल, बाग कार्य आदि करना।

(७) विषघटी- इसमें विषघटी का प्रारंभ दिया है जो आगे ४ घटी तक रहेगा। इसका अशुभ प्रभाव ३ वर्ष में घटित होगा।

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०
पौराणिक	अग्नि	ब्रह्मा	गौरी	गणेश	सर्प	कार्तिकेय	सूर्य	शिव	दुर्गा	यम	विश्वेदेव	विष्णु	कामदेव	शिव	चन्द्र	पितृ
संहितोक्त	ब्रह्मा	विधाता	विष्णु	यम	चन्द्र	कार्तिकेय	इन्द्र	वसु	नाग	धर्म	शिव	सूर्य	काम	कलि	विश्वेदेव	पितृ

तिथि, करण, योग के स्वामि निम्न है-

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्पद	नाग	किंस्तुघ्न
स्वामि	इन्द्र	ब्रह्मा	मित्र	अर्यमा	भूमि	लक्ष्मी	यम	कली	राक्षस	सर्प	पवन

योग	विष्कुंभ	प्रीति	आयुष्मान	सौभाग्य	शोभन	अतिगंड	सुकर्मा	धृति	शूल	गंड	वृद्धि:	ध्रुव	व्याघात	हर्षण	वज्र	सिद्धि:	व्यतिपात	वरीयान	परिघ	शिव	सिद्धि:	साध्य	शुभ	शुक्लो	ब्रह्मा	ऐन्द्रो	वैधृत
स्वामि	यम	विष्णु	चन्द्र	धाता	गुरु	चन्द्र	इन्द्र	जल	सर्प	अग्नि	सूर्य	भूमि	मरुत्	भग	वरुण	गणेश	रुद्र	धनद	त्वष्टा	मित्र	कार्तिकेय	सावित्री	कमल	गौरी	अश्विनी कुमार	पितर	दिति

-: वर वधु गुण मेलापक सारिणी :-

	वर	राशि	मे.	मे.	मे.	वृ.	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि.	क.	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.	क.	क.	क.	तु.	तु.	तु.	वृ.	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	म.	कुं.	कुं.	कुं.	मी.	मी.	मी.	राशि
	वधू.	चरण	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	चरण
राशि	चरण	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पु.	पु.	पु.	आ.	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि.	चि.	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	नक्षत्र
मेष	१	अश्विनी.	२८ ३	२७ ०	२८॥	१८॥ ४	२२॥ -४	२२॥ -४	२७	१९ ३	१९ ३	२३॥ ३	३१॥	२८	२१ +५	२५ +५	१५॥ ३५	११ ३६	११ २३६	१३ ६	२२॥	२८॥ -२	२२॥	१८॥ -६	२५॥ -६	१४ ३६	१३ ३५	२६ +५	२५॥ +५	२८	२७	२०	२०	१५ ३	१८ ३	१४ ३४	२४॥ +४	२६ +४	अश्विनी.
मेष	१	भरणी	२७ ३	२८ ३	२८ ०१	१९ ०१९	२२॥ -४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३५॥	२३॥ ३	२५॥ १	२० -१५	१८ ३५	२६ +५	२७॥ ६	२० ६	४ १३६	१४॥ १३	२६॥	२१॥ -१	२०॥ -१९	२०॥ ३६	१८॥ -१६	२० -१५	१८ ३५	२६ +५	२७॥	२६	१० १३२	१० १३२	२० -१	२७ -२	२३॥ +२४	१४॥ ३४	२६॥ +४	भरणी
मेष	।	कृत्तिका	२७॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० १३८०	१८॥ ४	२०	२० १	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ३	१८॥ ३५	२० १५	२० १५	१५॥ ४	१५॥ ६	१८ ६	२७॥	१५॥ ३	१८॥ ३	१६॥ ३६	१८॥ -६	२५॥ -६	२४ +५	१८ १३५	१४ ३१५	१३ १३	११ २३	२७	२७	२७	१८ १	१७॥ १४	१८॥ १४	१९॥ ३४	कृत्तिका
वृषभ	।।।	कृत्तिका	१८॥ ४	२८ १४	१९ ३४	२८ ३	२० १३	२६॥	२०॥ +४	१८॥ १४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३	१८ ३	२२ १	२२ १	२१ १५	२१ +५	२३॥ +५	२२॥ -६	१०॥ ३६	१४॥ ३६	२०॥ ३	२४॥	३०॥	२० ६	१३॥ १३६	११॥ १३६	१२ १३५	१० ३५२	२४॥ +५	२६॥	३२॥	२४॥ १	२० १	२२ १	१४ ३	कृत्तिका
वृषभ	१	रोहिणी	२३॥ -४	२३॥ ४	१९ ३१९	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२५॥ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० -१५	१८ -१६	१५॥ ३६	६॥ ३१६	१२॥ ३१	२८॥	२३॥ १	१४ १	१८ ६	११॥ २३६	१८ ३५२	१८ ३५	२० -१५	२४॥ -१	२४॥ -१	३०॥	२७	२७	१८ ३	रोहिणी
वृषभ	।।	मृगशिरा	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५ ३	२८ ३	१८ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ ३	२१	१८॥	१५॥ ३	२४॥	२३॥	२६॥	१२ ३५	१२ ३६	२६ -६	१८॥ -६	२४॥	२१॥ ३	२४॥	१५ ६	१० ३६	१८ ३६	२१ +२५	२१ +५	१३ ३५	१८ ३	२७	२६॥	२६	१८ ३	२७	मृगशिरा
मिथुन	।।	मृगशिरा	२७	१८ ३	२२	१८॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८ -४	१२ ३४	१४ ४	२३॥	१८॥ ३	२८॥	२१	२७	२१ ३	१४ ३५	२७ +५	२० +५	१४ ६	१९ ३६	१४ ६	२३	१८ ३	२५ +२	२० -२६	२३॥ -६	११॥ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३॥ +५	२८॥	१०॥ ३	२६॥	मृगशिरा
मिथुन	१	आर्द्रा	१८ ३	२७	२१ १	१८॥ +४	२२॥ +४	२६ +४	३६	२८ ३	२५ ३०	१०॥ ०३४	२० -४	१३ १४	२३॥ १	२६॥	२७॥ ३	२७॥ ३	२७॥ ३	२८ १	२८ -१५	२७ +५	२१ +१५	१४॥ १६	१० २६	३ १३२६	१६ १३	२८	२८	२२ -६	२२ -६	१०॥ -१६	१८ +१५	१२ १३५	१० ३५	१८ ३	२६॥	२६॥	आर्द्रा
मिथुन	।।।	पुनर्वसु	२० ३	२७	२२	२२॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२७ ३	२८ ३	१५॥ -३४	२२॥ ५०	१३ -४	२२॥ +२	२६॥ +२	२७॥ ३	२२॥ ३	२६॥ ३	२७॥	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	३ ३६	१४ ३	२७	२७	२२ -६	२२ -६	१७ -६	१८॥ +५	१४ ३५	१८ ३५	१८ ३	२८	२७॥	पुनर्वसु
कर्क	।	पुनर्वसु	२२॥ ३	२६॥	२५॥	२२	२४	१९	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२८॥	१८॥ +२४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८ ३	१८ ३	२१	२०॥	२८	२२	२० +५	२६ +५	१५॥ ३५	८ ३५	२१ -६	२१ -६	२६	२७	२१	१४॥ ६	८ ३५	१० ३५	१८ ३५	२६ +५	२५॥ +५	पुनर्वसु
कर्क	१	पुष्य	३०॥	२३॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२७॥ ४	३५	२८ ३	३० ०	१६॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१४ ३	१५॥ ३	२६॥	२१	१८ +५	१८ ३५	२१ -२	१८	११ १३६	२१ ६	२६	२५ -२	१३ ३	३॥ ३६	१०॥ ६	१८ ३५	२४ +५	१८ ३६	२७ +५	पुष्य
कर्क	१	आश्लेषा	२८॥	२४॥ १	२२॥ ३	१८ ३	१३ ३१	१८	१२ ४	१३ १४	१५ ४	२८॥	२८	२८ ३	१५ ०३४२	१५॥ १४२	१८॥ १४	२१ १	२१	२६	२५॥	१४॥ ३	१३॥ ३	१५॥ ३६	२० +५	२६ -२	२२॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१८॥ ६	१८॥ ६	११॥ १६	१८॥ १५	२१ १६	१३ ३६	आश्लेषा
सिंह	१	मघा	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	६॥ ३१	१६॥	२१॥	२३॥ १	२०॥ -२	१८॥ +२४	१६॥ +४	१६ ३२६	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४	२४॥	१७॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२६॥	३३	२१ +५	१६ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१८ ६	२४॥	२५	१८॥ १	१८॥ -१६	१६॥ १६	१३ ३६	मघा
सिंह	१	पूर्वा फा.	२६ +५	१८ ३५	२० -१५	२१ १	२३॥ ३	१५॥ ३	१६॥ ३	२८॥	२६॥ -२	२२॥ +२४	१७॥ ३४	१६॥ १२४	३० -१	२८ ३	३५ ०	२२ ०४	२२॥ +४	७॥ १३४	१०॥ १३	२६॥	१८॥ १	२४॥ -१	२३॥ ३	२५॥ -१	१६ +१५	१७ ३५	२४ +५	२०॥ ६	१८॥ ६	३॥ १३६	१०॥ १३	१६॥ १	२४॥	२४॥ -६	१७॥ ३६	२५॥ -६	पूर्वा फा.
सिंह	।	उत्तरा फा.	१८ ३५	२६ +५	२० -१५	२१ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२३॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१६॥ -१४	२७॥ -१	३२ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १२४	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३१॥	१७॥ १३	६॥ १३५	२५ +५	२५ +५	२० ६	२० ६	११॥ १६	१८॥ १	११॥ १३	१७॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२५॥ -६	उत्तरा फा.
कन्या	।।।	उत्तरा फा.	१३ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ +१५	२६ +५	२७ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १	१७॥ १४	२५ +४	१८ २६	२८ ३	२७ ३०	२४॥ +१२	१६॥ १२४	२५॥ +४	१६॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३	१४ १३	२६	२८॥	२४॥ +५	२४॥ +५	१६ +१५	१६ -१६	१० ३१६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२७॥	उत्तरा फा.
कन्या	१	हस्त	१० २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२८ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२०॥ ३	२८	२३	१८॥ +४	२२॥ +४	१८ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२०	२६	१३ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	२१ -६	८॥ ३६२	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥	हस्त
कन्या	।।	चित्रा	१३ ६	५ १३६	१८ ६	२३॥ +२	२० १५	१२ ३५	२१ ३	२७ १	२५॥	२१	१२ ३	२७	२२ ६	८॥ १२४	१७॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	२० ३४	२१ ०४	२६॥ +४	२८	११ ३	२५	२८	१४ १५	२२ १	१७ १५	१८ +५	१५॥ ३५	१८ ३६	२४ -६	१८॥ १६	१८॥ १	१०॥ १३२	२०॥	चित्रा
राशि	चरण	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पु.	पु.	पु.	आ.	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	नक्षत्र

सारिणी के चिन्हों के निशानः- १ = मनुष्य राक्षस गण दोष, २ = वैरयोनि दोष, ३ = ऐक नाड़ी दोष:, ४ = द्विर्द्वादश दोष:,५= नवपचमः दोष, ६= षडास्टक भकूट दोष,-= थोड़ा दोष,+= ज्यादा दोष। ०= कन्या से द्वितीय पति का नक्षत्र दोष, यथा-**भामिनी जन्मनक्षत्राद् द्वितीयं पतिजन्मभम्। न शुभं मृतंनाशक कथितं ब्रह्मयामले ।।१।। मेलापक विचार- अज्ञात जन्मांनृणां नाम्भिभ परिकल्पयेत। तेनैव चिन्तयेत्सर्व राशिकूटादि जन्मवत्।।२।। जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्। व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योनिर्धनं भवेद् ।।३।।** गुण १६ तक निन्द्य, १७ से २० तक मध्यम, २१ से ३० तक श्रेष्ठ।

वर / वधू.		राशि	मे.	मे.	मे.	वृ.	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि.	क.	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.	क.	क.	क.	तु.	तु.	तु.	वृ.	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	म.	कुं.	कुं.	कुं.	मी.	मी.	मी.	राशि
		चरण	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	चरण
राशि	चरण	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ	पु.	पु.	पु.	आ.	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि.	चि.	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	नक्षत्र
तुला	।।	चित्रा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चित्रा
तुला	१	स्वाति	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	स्वाति
तुला	।।।	विशा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	विशाखा
वृश्चि	।	विशा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	विशाखा
वृश्चि	१	अनु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अनुराधा
धनु	१	ज्येष्ठा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ज्येष्ठा
धनु	१	मूल	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मूल
धनु	१	पू.षा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पूर्वा.षा.
धनु	।	उ.षा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उत्तरा षा.
मकर	।।।	उ.षा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उत्तरा षा.
मकर	१	श्रवण	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	श्रवण
मकर	।।	धनिष्ठा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	धनिष्ठा
कुंभ	।।	धनिष्ठा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	धनिष्ठा
कुंभ	१	शतभि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शतभिषा
कुंभ	।।।	पू.भा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पूर्वा.भा.
मीन	।	पू.भा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पूर्वा.भा.
मीन	१	उ.भा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उत्तरा भा.
मीन	१	रेवती	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रेवती
राशि	चरण	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ	पु.	पु.	पु.	आ.	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	वि.	चि.	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	नक्षत्र

विष कन्या योग:- शनिवार+द्वितीया+ अश्लेषा में जन्म हो तो **विष कन्या योग** होता है। इस प्रकार सूर्यवार+ द्वादशी + शतभिषा में जन्मी **विष कन्या योग है** मंगलवार+सप्तमी+ विषाषा में **जन्मीविष कन्या**। ५ वें सूर्य, ७ वें मंगल या ५ वें सूर्य, ७ वे शनि हो विषकन्या। लग्न में पाप ग्रह, छटे शुभ व पाग्रह दोनों हो तो **विषकन्या योग** होता है। **छूनड़ी मोलिये मंगल विचार:**-जन्मकुण्डली से या राशि में १,४,७,८,१२, वें मंगल हो तो मांगलिक जाने। **पारीजात ग्रन्थ** में द्वितीय भाव में मंगल हो तो भी मांगलिक लिखा है शुक्र, ४, ८ वें क्रूर ग्रह हो, शुक्र क्रूर ग्रहों के मध्य हो, शुभ ग्रह नहीं देखते हो तो जलकर, गिरकर, फाँसी खाकर या आधुनिकता के अनुसार तल्लाक की घटना होती है, यह भी मांगलिक है। मंगल का परिहार परस्पर क्रूर ग्रह शनि, राहू के होने पर भी हो जाता है। **सप्तमेश** का ६, ८, १२ वें होना भी अशुभ है।

♣ आवश्यक मुहूर्ताः– ♣

मुहूर्त	मास–पक्ष–नक्षत्रादि	तिथि	वार	लग्न	विशेष प्रमाण
विवाह	अश्व .रो ६.पू ३.उ ३.ह ३.मू.अनु.रे	३.५.६.१०. ११.१२	सू.बु.गु शु	शुभ	रवियोग:–सूर्यभाद् ४.६.९.१०.१३.२० (अभिजित रहित)
२.वापीकूप तड़ागारंभ	रो.,म .,पुष.म.,ह .पूषा .उ ३.अनु .,ध .,शत., रेव .मेष वृष मिथुन के सूर्य मे कुंआ खोदे तो जल बहुत लक्ष्मी प्राप्ति। सिहस्थ सूर्य व कार्तिक मास मे आरभ करे तो थोड़ा जल निकले बाकी के मासो मे थोड़ा जल आवे तो विपत्ति आवे।	शुभ चंद्रमा मकर के उत्तरार्द्ध में मीन या कर्क में शुभ	शुभ	२.४.१० ११.१२. लग्न में बुध या गुरु १० वें शुक्र	तड़ाग चक्र:–सुर्यभाद् दिनभ २ पू.जलशोष,४ अ. बहुजल .,६द.जलनाश,८नै.जलशुद्ध, १० प.स्वादुज १२वा.जलशोष १४ उ.स्थिर जल, १६ ई.कुत्सिजल,२१ म.पूर्णजल,२७ वा. अमृतजल। वापी कूप चक्रे:– रोहिणीभाद् दिनभं ३म. शीघ्रजल,६पू. नास्ति जल,९ अ.मध्यमजल,१२ द.जलनाश, १५ नै बहुजल, १८ प.अमृतजल, २१ वा. क्षारजल,२४ उ. जल, २७ ई. मध्यम जल (नक्षत्र २७ अभिजित रहित) जलाशये खात:– सूर्य संक्रांति १०.११.१२.अग्नि.,७.८.९.नैऋ.,४.५.६.वाय.,१.२.३.ईशानेखातदधात्।
३.दुकान [illegible]	अश्व.रो .मृ .पुष्य .,उ.३ .,ह.,चि.,अनु.,रे (मित्र ध्रुव क्षिप्र सज्ञा नक्षत्र मे)	शुभ रिक्तामंगल त्याज्य	सू.चं.बु. वृ.शु. श.	शुभ चं.शु.ल में कुभ त्याज्य	हाटक चक्रे:– सूर्यभाद् दिनभं २आसन सुख, ५ विक्रय नाश, ९ अ.अर्थनाश, १३ नै सुख, १६ मुख महाश्रेष्ठ,२० वाय,चोरभय,२४ई.सर्व–हानि,२८ म.शुभप्रद (नक्षत्र २८ अभिजित सहित) वारफल:– गुरु सूर्ये सर्वकार्य,शुक्रे पूर्णे मनोरथे:। स्थिरता रविपुत्रेण,ऐतेवारा शुभप्रदा:।१।।
४.गृहारम्भ	रो.,मृ.,पुष.,हस्त.,चि.,स्वा.,उ. ३. ,अनु.,ध., श.,रे., (सूर्य मिथुन कन्या धन मीन वर्जित) **आद्रासूर्ये भूमिरजस्वला शुक्ला सर्वा प्रशस्ता** कृष्णा१२ यावत् बली चद १.४.९.१०.,सुप्ता नींव देने मे शुभ। **वास्तुस्वरुपेणखननं–** भाद,अश्वि कार्तिक मास मे उत्तर मे कुक्षि। मार्ग,पौष,माघ मे पूर्वे कुक्षि फाल्गुन चैत्र वैशाख में दक्षिणे कुक्षि। ज्येष्ठ आषाढ़ श्रावण मे पश्चिममे कुक्षि है। कुक्षि के स्थान पर प्रथम खोदने से स्त्री पुत्र रत्न और धन धान्य की वृद्धि होती है।	१. २. ३. ५. ६. ७. ८. १०. ११.१२. १३.१५.	चं. बु. वृ. शु. श.	शुभ २. ३. ५. ६. ८. ९. ११. १२.	**अष्टमी शनिंवारेण भौम वारेण पंचमी। द्वितीया भृगुवारेण वरा भवति रजस्वला।१।।** **मृत्युबाण**:–सूर्य अंश २८.१९.१०.१.शनिवारयुत। अग्निबाण -सूर्य अंश २०.२.११.२९(मगलवार)त्याज्य:। **गेहारंभेत्स चक्र:**– सूर्यभाद् ३ अग्निदाह,७ शून्यमसत्, ११ स्थिरता, १४ लक्ष्मीप्राप्ति, १८ लाभ शुभ, २१ स्वामिनाश,२५ निर्धनता,२८ पीड़असत् (नक्षत्र २८ अभिजित सहित) **गेहारेभेखात**:–सूर्यसंक्राति ५.६.७.अग्ने,२.३.४.नैऋ.,११.१२.१.वाय.,८.९.१०.,ईशानेखातंदधात। **जमीन सूती**:–सूर्य दिन ५.७.९.१०.१५.२१.२४. सूर्य गतांश,के चिद् सूर्य भाद् दिनभं,के चिद् हिन्दी तारीखें **पुत्रधन प्राप्ति**:–पुक्ष ३.३रो.मृ.श्र श्ले.पू.षा नक्षत्र पर गुरु हो ओर गुरुवार हो तो गृहारंभ करने से पुत्रधनं प्राप्ति **धनधान्यदायक**:–विषा अश्व चि.धन शत.आद्रा में से किसी पर शुक्र हो ओर शुक्रवार हो तो गृहारंभ से धनधान्यदायक **अग्निभय,पुत्र पीड़ा**:–ह.पुक्ष रे.म.पू.षा मूलनक्षत्र में मंगल हो और मंगलवार हो तो गृहारंभे अग्निभय,पुत्रपीड़ा **पुत्र सुख**:–रो.अश्व.उ.फा.चि.ह. पर बुध और बुधवार हो तो पुत्र सुख। **राक्षस भूतयुक्त**:– पू. भ.उ.भा.ज्यै. अनु. रे. स्वा. भरणी पर शनि और शनिवार मे घर राक्षस भूत युक्त हो
५.द्वारशाखा	रे.,अनु.,पुक्ष.,ज्ये.,ह.,अश्वि.,चि.,स्वा., **तिथि एकादशीश्रेष्ठा: त्रयोदशी व सिद्धिदा:।** **पंचमी धनदा प्रोक्तारिप्सीनाग शुभप्रदा:।१।।** **प्रतिपश्चन कर्तव्या कृत्वा दु:खमवाप्नुयात्।** **द्वितीया रोगवाग्नेया: चतुर्थी भंगकारिणी।।२।।** **कुलक्षय तथा षष्ठी: दशमी धन नाशनी।** **विरोध च अमापूर्णा: द्वारशाषाविरोपणं।।३।।**	नन्दा जया पूर्णा	मंगल शनि वार त्याज्य		**द्वारशाखाचक्र**:–सूर्यभाद्दिनभं ४ शि.श्री प्राप्ति:,१२ उद्वसनं २० शा.सौख्यम्,२३गृहनाशख,२७सौख्यम् **वत्सनिवास**:–सूर्यसक्राति ६.७.८.पूर्वेच्य,९.१०.११.दक्षिण,१२.१.२.पश्चिम,३.४.५.उत्तरेवच्य सन्मुखवच्चत्याज्य: **त्रिमासिक राहु निवास**:–मार्गशीर्ष पौष माघ में पूर्व,फाल्गुन चैत्र वैशाख में दक्षिण,ज्येष्ठ आषाढ़ श्रावण में पश्चिमे,भाद्रपद आश्विन कार्तिक में उत्तरेराहु,सन्मुखराहु में द्वारशाखात्याज्य: **तिथिभेद से द्वारनिषेध**:–पूर्णिमा से कृष्णा८तिथि तक पूर्वमुख अशुभ,कृष्ण ९से १४ तिथि तक उत्तरमुख अशुभ, आमवस से शुक्ला८तिथि तक पश्चिममुख अशुभ,शुक्ला ९से १४तिथि तक दक्षिणमुख अशुभ **संक्राति से गृहमुख**:– सूर्य संक्राति ४.५.१०.११. पश्चिम घरमुख श्रेष्ठ:, १.२.७.८. उत्तरदक्षिण घरमुख श्रेष्ठ:शेष सूर्यत्याज्य:

astro welfare

♣ आवश्यक मुहूर्ताः– ♣

मुहूर्त	मास–पक्ष–नक्षत्रादि	तिथि	वार	लग्न	विशेष प्रमाण
६.गृह प्रवेश	रो.मृ.पुष्य उ.३चि.स्वा.अनु.ध.श.पू.फा.रे. रवित्तरायणश्रेष्ठ । धन मीन रवित्याज्य(पू.भा.उ.भा.ज्ये.अनु.स्वा.भर.शनिवार युक्त: रक्षोभूतयुतगृहम्) नन्दायां दक्षिण द्वारं भद्रायां पश्चिमामखम्। जयाया मुत्तरं द्वारं पूर्णायां पूर्वतो विशेत्।।	नंदा जया पूर्णा	च.बु. बृ.शु. श. (रवि, मंगल त्याज्य.)	शुभ चर लग्न त्याज्य	**सूर्य संक्राति अंश:**–२८,१९,१०,१. (शनिवार) मृत्युबाण त्याज्य:।। **गृह प्रवेशचक्र:**–सूर्यभार्दादिनभं १अग्निदाह,५उद्वसन,९धन,१३ लक्ष्मी,१७ वैर,२१ नाश.,२४स्थिरता,२७अस्थिरता। **तिथि:**–१.६.११.मे दक्षिणमुद्वार घर में प्रवेश श्रेष्ठ:,२.७.१२. मे पश्चिममुख घर में प्रवेश श्रेष्ठ । ३.८.१३ में उत्तराभिमुख घर मे प्रवेश शुभ,५.१०.१५. में पूर्वाभिमुख घर में प्रवेश शुभ।। **वामरवि:**– सूर्य ८.९.१०.११.१२ वे स्थान में हो तो पूर्वाभिमुख द्वार के घर में शुभ,५.६.७.८.९.मे हो तो दक्षिणाभिमुख मे,२.३.४.५.६ मे पश्चिमाभिमुख ११.१२.१.२.३.मे उत्तराभिमुख सूर्य में प्रवेश शुभ
७.वास्तु शांति	रो., अश्व., मृ., पुन., पुष्य., उ ३., ह., चि., स्वा., अनु., मू., अभि., श्र., ध., श., रे.,	नंदा भद्रा जया पूर्णा	च. बु. बृ. शु. श.	शुभ	**अग्नि वास:**– शुक्ल प्रतिपदात् तिथि+सूर्या दिवार +१÷४= शेष ०, ३ अग्निवास पृथ्वी पर सुख, १ आकाश प्राणहानि २ पाताल धन हानि कारक। **ग्रहमुखे होमाहुति:**– सूर्यभाद्दिनभ ३ सूर्यमुखे नेष्ट, ६ बुधे श्रेष्ठ, ९ शुक्रे श्रेष्ठ, १२ शनि नेष्ट, १५ चंद्रे श्रेष्ठ, १८ मंगल नेष्ट, २१ गुरु श्रेष्ठ, २४ राहु नेष्ट, २७ केतु नेष्ट ।।
८. जलाशय रामतड़ागप्रतिष्ठा	अश्व.,रो.,मृग.,पुन.,पुष्य.,ह.,चि.,स्वा., अनु.,श्र.,ध.,श.,उ.३.,रे. उत्तरायणे शुक्ल पक्ष: (विष्टव्यतिपात त्याज्य:) अग्रदेवता दक्षिणायने वैशाख, ज्येष्ठ, फाल्गुन चैत्र, माघ में विष्णु के सिवाय अन्य देवताओं की प्रतिष्ठा होती है।	२,३,५,६, ७,८, १०, ११, १२, १३, १५	कुजशनि त्याज्य	शुभ	(१) **सूर्य की प्रतिष्ठा** सिंह लग्न में,**ब्रह्मा** की ११ **विष्णु** ६ **महादेव** ३,**देवी** की द्विस्भाव लग्न में **क्षुद्र देवताओं** की चरलग्न में और स्थिर लग्न में सब देवताओं की प्रतिष्ठा प्रशस्त है। चद्रादि आठ ग्रहों की पुष्य में गणेश यक्ष सर्प भूत आदि की रेवती में और जिन (बुधदेव) की श्रवण नक्षत्र में स्थापना शुभ है। (२) **विष्णु की प्रतिष्ठा** चैत्र, आश्विन, श्रावण, माघ, फाल्गुन, वैशाख,ज्येष्ठ,आषाढ,पौष में होती है। श्रावण और भाद्रपदमें **लिंग की स्थापना** उत्तम है। माघ आश्विन में **देवी प्रतिष्ठा** सब कामनाओं को देने वाली व श्रेष्ठ है। (३) श्रवण कृतिकादिविशाखा तक तिथि १२ में **विष्णु प्रतिष्ठा** शुभ,**चतुर्थी में गणेश। नवमी,मूल में देवी,शिव** आर्द्रा में,**सूर्य हस्त में शुभ** सभी देवताओं की अपने अपने नक्षत्र में प्रतिष्ठा शुभ व मंगलदायक है।
९. सन्धि	मूल,आर्द्रा,अभि.,शत यह कुलाकुल संज्ञा है।	२, ६, १०	बुध	शुभ	इसमें युद्ध की इच्छा करने वाले राजाओं में(व्यक्तियों में)परस्पर संधि होवे। पंच पचायति मे नारदा वास देखें
१०. स्थायी जय	चि.,वि.,ज्ये.,पू.,षा.,श्र.,पू.,भा.,अश्वि.,कृति., मृग.,पुष्य.,मघा.,पू.फा.,नक्षत्र कुल संज्ञा है।	४, १८, १२, १४.	मं. शु.	शुभ	इसमें स्थायी की जय होवे। अर्थात् जिस पर दूसरे ने चढ़ाई की है और अपने स्थान पर जो बैठा है उसीकी विजय होवे
११. यायी जय	भर.,रो.,पुन.,आश्ले.,हस्त.,स्वा.,अनु.,धनि., रेव.,उत्तरा ३., यह अकुल संज्ञा है।	१,३,५,७, ९,११,१३, १५,३०	सू. च. बृ. शं.	शुभ	इनकी अकुल संज्ञा है। इसमे यायी की विजय होवे। अर्थात् आक्रमणकर्ता की विजय होती है। **नारद वास:– शुक्लादि तिथ्यां गतवासराद्या, नवैर्युक्ता रामहृताव शेष: ।।१।। एकै भवेद्देवपुरी निवासं स नारदो भूमि वशेद्वितीये। पाताल लोकेवशो त्रतीये यत्रस्थितो तत्र भवतियुद्धं ।।२।। (पंच पंचायती में नारदवास देखें**
१२.यज्ञोपवीत	अश्व.,ह.३.,मृग.,श्रव.,धनि.,पुन.,पुष्य., रेव., गर्भ सहित ८ वें वर्ष,११ वें वर्ष, १२ वे वर्ष शुभ। माघादि पांच मास, गुरु व चंद्र शुद्धि आवश्यक है।	१६,११,५ १०,१५,३, ८, १३	मं. बृ. शु. बु.	२, ७, ९, १२ शुभ	**ऋग्वेदीय:**– ह.३,आश्ले,आर्द्रा.,श्र.,पू.३,मूल ऋग्वेदीय,धन मीन,लग्न गुरुवार शुभ है। **यजुर्वेदीय:**– रे,पुन.,रो.,पुष्य.,मृ.,अनु.,उ.३,ह.,वृष.,तुला लग्न शुक्रवार शुभ है। मरणन्च भौमे मंगलवार त्याज्य। **सामवेदीय:**– पुष्य.,उ.३,रे.,ध.,ज्ये.,ह.,अश्व.,मेष.,वृश्चिक लग्न मंगलवार शुभ है। **अथर्वेदीय:**– चि.,पुन.,स्वा.,अनु.,मृ.,ध.,ह.,श्र.,अश्व.,मिथुन,कन्या बुधवार शुभ है।
१३.गर्भाधान	मृग.,रो.,उ.३,ह.,स्वा.,श्रव.,धनि.,शत.,अनु., व्यतिपात, वैधृति त्याज्य, माता पिता का श्राद्ध दिन (मृ., रे., स्वा., अश्व., रो., में शीघ्र गर्भधारण होता है)	शुभ	शुभ (रवि मं. शनि त्याज्य)	शुभ	**मघा स्वाती च रेवत्यै उत्तराषाढ़ा मृगशिरे। स्त्री संगम न कर्तव्यं कर्तव्यं च कुलक्षय। रेवती च मघामूलं ज्येष्ठाऽश्लेषा तथैव च अश्वनी ऋतुकालंच नारीणां वर्जयेत्सदा ।।२।।** रजोदर्शन के बाद चौथी रात के निषेके में अल्पायु पुत्र,पांचवी रात में कन्या, ६ में वंशकर्ता पुत्र, ७ वें मे वन्ध्या स्त्री, ८ में पुत्र, ९ वीं में सुन्दर कन्या, १० वीं मे प्रभावशाली पुत्र, ११ वीं में कुरुप कन्या, १२ वीं में श्रीमान् पुत्र, १३ वीं में पापिनी कन्या, १४ वीं धर्मात्मा पुत्र, १५ वीं मे लक्ष्मीवती कन्या, १६ वीं में धर्मात्मा व सर्वज्ञ पुत्र उत्पन्न होते है। स्वरशास्त्र के अनुसार– डावें पळवाड़े(करवट) शयन कर जिमणा स्वर लेवें।

विशेषांक प्रकाशन दि.1 जनवरी 2025 ई.

♣ आवश्यक मुहूर्तः– ♣

मुहूर्त	मास–पक्ष–नक्षत्रादि	तिथि	वार	लग्न	विशेष प्रमाण
[illegible]	श्रवण १ पुन.पुष्य मृग,हस्त,मूल,अनुराधा दिन २१मे शुभ (गुरु शुक्र अस्त चैत्र अधिक मास मे पूजा नही करनी)	शुभ	शुभ	शुभ	नंदायां पुत्र जननी भद्रायां पुत्र नाशनी। जयापूर्णा च संपत्ति रिक्ता संताप कारणी।१।। शनि आदीते मंगले जो जुहारे जलमाया। ऋषि दुर्वासा इस भेणेपुत्र विहूणी थाय।।२।। नामकरण मुहूर्त:–जन्माशौच के अन्त मे ब्राह्मण ११ वें दिन,क्षत्रिय १३वें दिन,वैश्य १६वें दिन,शूद्र १मास मे शुद्ध होवे
कर्णवेध [illegible]	अश्व,म,पुन,पुष्य,ह,चि,स्वा,ज्ये,श्र,ध,श,रे,वर्ष २,३,५ रवि उत्तरायण	शुभ	शुभ	शुभ	कर्णविध मुहूर्त:–अश्व,म,,पु २,अनु,अभि,श्र,ध,रे,सूर्य चद्र चंद्रबल। शुद्ध लग्न विषम वर्ष ६,७,८ मे हरिशयन वजर्यम् रिक्ता,अमा,तिथि वर्ज्य। शुक्रवार मे श्रेष्ठ।
[illegible]	अश्व,हस्त,चित्रा,स्वाती,विशा,अनु,धनि,रे,रोह,उ ३,पुन,पुष्य नेष्ट,चंद्रबल आवश्यक	शुभ	सू,बु,वृ,शु.	शुभ	चुडीचक्र:–सूर्यभादृदिनभ ३ सूर्य नेष्ट, ८ मंगल नेष्ट, ११ शुक्र श्रेष्ठ, १३ राहु नेष्ट, २० बुध श्रेष्ठ, २२ शनि नेष्ट, २३गुरु श्रेष्ठ, २६ चद्र श्रेष्ठ, २७ केतु नेष्ट।
[illegible]	रो,पुष्य,उ ३,अश्वि,आर्द्रा,पूर्वा ३	शुभ	च,बु,वृ	शुभ	चुल्ली चक्र:–सूर्यभादृदिनभ ६पीठ सुख,१० मस्त,मृत्यु १८ बहुसुख भोग,२३ गर्भनाश,२५ भुजभोगद २७ चरणनाशक।
दीक्षा [illegible]	म,पुन,पुष्य,अश्व,अनु,ह,श्र,रे,रो,श,उ ३,अभि,स्वा, कार्तिक,मार्ग,माघ,फाल्गुन,वैशाख,ज्येष्ठ,आषाढमासशुभ	१,२,५,७ ११, १३	सू,च,बु वृ,श	शुभ	सूर्य सक्रांति मेष , वृषभ , मिथुन, मकर, कुंभ, शुभ। ज्येष्ठ ज्येष्ठ मास त्याज्य:, बाल वृद्ध, गुरु शुक्र और अस्त गुरु मे दीक्षा नेष्ट। यमघंट,वज्र,मुशलादि योग त्याज्य।
[illegible]	अश्व,श,ध,पुन,पुष्य,ह,चि,स्वा,श,रे,मृ, रिक्तातिथिस्त्याज्य । मघा मरे पूर्वाचीरे,उत्तर खोडो जाण इम भणे रे जोषिया नौपगो घर मत आण।।	शुभ	शुभ	शुभ	मृत्युबाण संक्रांतिः– अंश २८,१९,१०,१शनि, अंश ८,१७,२६रवि रोगबाण। अंश २०,२,११,२९ मंगलवार मे अग्निबाण त्याज्य।। गाय मंगल,भैंस। बुध,मगल,ऊंट। शनि,मगल,घोड़ा रवि,मगल,शनि बैल बुध,मगल, बकरी। भेंड शुक्र। गधा शुक्रवार नेष्ट। उत्तरात् विशाखायां रोहिण्यां च पुनर्वसुः। नवम्यां च चतुर्दश्यामष्टम्यां नानयेत् पशुन्।१।।

।। यात्रा प्रवास हेतु श्री गोरखनाथ जी कृत गोरखपतड़ा ।।

पौ	मा	फा	चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मा
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

फलश्रुति

सुख,विवाद का अभाव,यात्रा योग सुखद,सुविधा गति
महाभय, विवाद,मानसिक दुःख,वृथागमन कुयोग कार्य
सिद्धि,अर्थलाभ, विजय,मेल मिलाप सम्पर्क रमसाधना,
परन्तु प्रतिफल नेष्ट नही,मद्यमकार्य योग वस्तु लाभ,
संकट की निवृत्ति, मेल–मिलाप, कार्य सिद्धि चिन्ता,
विवाद,मानसिक पतन,वियोग,सफलता न्यून कार्य लाभ,
मेल मिलाप सम्पर्क, कार्य साध्य सिद्ध योग कुयोग,
कार्य हानि, विवाद, व्यवहार मिलाप की न्यूनता
अर्थ–लाभ,कार्य योग सफलता,यात्रा प्रवास सुखद
यात्रा प्रवास योग,किन्तु श्रम साधना विशेष,कार्यें
विलम्ब मानसिक कष्ट,विवाद,भय,परन्तु परिणाम नेष्ट
नहीं सुख–सुविधा,मेल–मिलाप,सार्थक गति,कार्य सुयोग

प्रहर१	प्रहर२	प्रहर३	प्रहर४	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
अर्थसिद्धि	मृत्यु	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भय	द्रव्य
महाभय	क्लेश	सुख	कुशल	शून्य	नाश	दरिद्र	चिन्ता
अर्थलाभ	राजभय	सुख	विनाश	द्रव्य	दुःख	इष्टप्राप्ति	धनप्राप्ति
क्लेश	कल्याण	क्लेश	अहित	क्लेश	अहित	धन	सुख
संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	धन	धन	सुख
संकट	क्लेश	मित्र	अर्थप्राप्ति	भय	लाभ	मृत्यु	धनलाभ
विलम्ब	अर्थप्राप्ति	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
०	०	०	०	०	सुख	०	सुख
अर्थ	बहुभय	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	कार्यसिद्धि	कष्ट
शीघ्रलाभ	सम्पूर्ण	मरण	मरण	क्लेश	कष्ट	धन	धन
मरण	अर्थ	कुशल	मृत्यु	लाभ	धननाश	०	मित्र
मरण	अर्थ	सुख	कुशल	०	सुख	मृत्यु	कष्ट

तीज और तेरस,चौथ और चौदस,पांचम और पुनम,इनका फल एक है। कृष्णा चौदस तथा अमावस का निषेध है।

(१) यात्रा मे वर्ज्य नक्षत्र दिशा:– हस्त नक्षत्र मे उत्तर दिशा मे,चित्रा नक्षत्र मे दक्षिण दिशा मे रोहिणी नक्षत्र मे पूर्व दिशा मे,श्रवण नक्षत्र मे पश्चिम दिशा मे यात्रा करने से मृत्युवत घातक है।
(२) यात्रा मे वर्ज्य मासानुगत तिथि– जेठ की १,आषाढ की २,श्रावण ३,भाद्रपद ४,आश्विन ५,कार्तिक ६,मार्ग ७,पौष ८,माघ ९,फाल्गुन १०,चैत्र ११,वैशाख की १२तिथि गोरखपतड़े मे यात्रा मे वर्जित है।
(३) यात्रा समय के शुभ शकुन– रवि तांबूल मयंक दर्पण,भोमा धाणा धरणी नंदन। बुध गुड़ दही गुरुवारे,राई धाणी शुक्रवारे। जो शनिवार वडंगा थावे,सकल काम सिद्ध कर घर आवे।।१।।

।। अथ खात(पाया या शिलान्यास)चक्रम्।।

सूर्य	विवाहे	देवालये	गेहारंभे	जलाशये	दिशा
सूर्य	२ ३ ४	१२ १ २	५ ६ ७	१० ११ १२	अग्नि खात
सूर्य	११ १२ १	९ १० ११	२ ३ ४	७ ८ ९	नैऋत्ये खात
सूर्य	८ ९ १०	६ ७ ८	११ १२ १	४ ५ ६	वायव्ये खात
सूर्य	५ ६ ७	३ ४ ५	८ ९ १०	१ २ ३	ईशाने खात

अक्षपाद महर्षि गौतम वेद विद्यालय
नोखा (बीकानेर) राज०

चैत्र शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः १९४६ (लघुगण ३४९से३६२तक)

दिनाँक ३०मार्च से १२ अप्रेल २०२५ई.तक। वसन्त ऋतु। रविर्देवता उत्तरायनेः,उत्तरगोलेः। (चैत्र शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रे:)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योग	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टैण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
३४९	३०	प्रवर्धमान	१	सू.	१५	६	रे	२४	२८	ऐ	२८	२३	ब	१५	६	३० ४३	६ ३३	६ ५१	१६	२६	मेष ३४/२८	[illegible]	[illegible]
३५०	३१	राक्षसः	२	चं.	६	१३	अ	२०	२२	वै	२०	४०	कौ	६	१३	४७	३२	५०	१७	१	मेष	[illegible]	[illegible]
३५१	१	मूसल	३	मं.	३	२३	भ	१६	२५	वि	१३	३	ग	३	२३	५१	३१	५१	१८	२	वृषभ	[illegible]	[illegible]
०	०	०	४	मं.	५७	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
३५२	२	सिद्धिः	५	बु.	५२	४२	कृ	१२	४८	प्री	४६	४६	ब	२५	१५	५५	२६	५१	१९	३	वृषभ	[illegible]	[illegible]
३५३	३	उत्पात	६	बृ.	४८	१४	रो	६	४३	सौ	५२	२३	कौ	२०	२८	५६	२८	५२	२०	४	मिथुन	[illegible]	[illegible]
३५४	४	मानस	७	शु.	४४	३६	मृ	७	२१	शो	४६	३६	ग	१६	२५	३ १	२७	५३	२१	५	मिथुन	[illegible]	[illegible]
३५५	५	मुद्गर	८	श.	४१	३४	आ	५	५३	अ	४१	४४	वि	१३	५	७	२७	५३	२२	६	कर्क	[illegible]	[illegible]
३५६	६	ध्वज	९	सू.	३६	५८	पु	५	२८	सु	३७	४३	बा	१०	४६	११	२५	५३	२३	७	कर्क	[illegible]	[illegible]
३५७	७	प्रजापतिः	१०	चं.	३६	३६	पु	६	१४	धृ	३४	४७	तै	६	४८	१५	२४	५४	२४	८	कर्क	[illegible]	[illegible]
३५८	८	आनंद	११	मं.	४०	३५	श्लो	८	१६	शू	३२	५१	व	१०	७	१९	२३	५५	२५	९	सिंह	[illegible]	[illegible]
३५९	९	चर	१२	बु.	४२	५०	म	११	३२	गं	३१	५४	ब	११	४२	२३	२२	५६	२६	१०	सिंह	[illegible]	[illegible]
३६०	१०	गदः	१३	बृ.	४६	१२	पू	१५	५८	वृ	३१	५१	कौ	१४	३१	२७	२२	५६	२७	११	कन्या	[illegible]	[illegible]
३६१	११	शुभः	१४	शु.	५०	३०	उ	२१	२४	ध्रु	३२	३२	ग	१८	२१	३०	२०	५६	२८	१२	कन्या	[illegible]	[illegible]
३६२	१२	मृत्युः	१५	श.	५५	२६	ह	२७	३१	व्या	३३	४६	वि	२२	५८	३४	१९	५७	२९	१३	कन्या	[illegible]	[illegible]

वक्रीकुंभेबुध, पंचक या चंद्रोदयमु.३०स्थिरता,वासंतनवरात्रारंभ A
रेवत्यांरवि सब्वालमु.१०मीठीईद.,अरुंधतीव्रत,सौभाग्यशयनव्रत, B
म. उप. या.,बुधोदयपूर्वे, बैंकवार्षिकलेखाबंदी,मनोरथव्रत., C
A घटस्थापनसंवत्सरारंभ,चेटीचंड झूलेलाल जयं.,कल्पादि.
कल्पादि,श्रीपंचमी,नाग५,हयव्रत,डोलोत्सव B शिवशक्तिपू.,मत्स्यजयन्ती
मृग१गुरु ग पद्मकयोग,स्कन्दषष्ठीव्र.
म. उप.,अशोककलिकाप्राशन, C गणगौरी३,मन्वादि,
म. या.,मार्गीबुध शु ग श्रीदुर्गाष्टमी,भवान्युत्पत्ति, D
श्रीरामनवमीसर्वे. D नवपदओलीजैन,स्वामीनारायणजयं.,अशोकाष्टमी
नवरात्रपारणा,विजया१०,ज्वालामुखी,उप या.
म. उप. या.,मीनेबुध कामदा११व्रतंसर्वे,लक्ष्मीकान्तदोलोत्सव
मार्गीशुक्र शु ग हरिदमनोत्सव, शक्रआदित्य१२व्रत
प्रदोष महावीरजयन्तिजैन.नवपदओलीपूर्णजैन,अनंग१३
म. उप.,शिवपूजन,
म. या.,कर्केभौम पूर्णिमाव्रतं,मन्वादि,हनुमानजयं.,संतपीपाजयं, E
E चित्रान्नदानं, पूर्णिमापुण्यवैशाखस्नानप्रारंभ

गोचर ग्रहाः

बुध+शुक्रवक्री,शनिउदय
शुक्रोदयपूर्वे,बुधोदयपूर्वे

चैत्र शुक्ला ८ शनि
गण ३५५ इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ २७ ३० १२	१० २८ ६ २४	१ २३ ३२ ५६	१० २८ १६ ४६	१० २४ ३६ १५	११ १ २१ ३२	५ १ २१ ३२
२० १४	२१ १० +	१० १५	१२ ४७ +	६ २८	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पांच शनि भूकम्प हो,ईशान देश में भंग। अग्निकाण्ड हो जगत में,बहु तेजी बहु जंग।।१।। चैत शनि वैशाख रवि,जेठे मंगल पांच। फिरत चक्र ज्यों देश सब,जनधन होवे नाश।२।। चैत सुदी एकम शनि,राजकाज को अंत। चित्रा पूनम वर्षे यदि,आसोज मेघ वर्षंत।।३।। चैत मास शुक्ल पख में,दश दिन बीज न दीखंत। जो अम्बर गरजे नहीं,तो चारों मास वर्षन्त।।४।। चैत्र चिरपड़ो माघ जी,फूले नहीं वनराय। माँ बिसारेदीकरा,बच्छ बिसोड़े गाय।।५।। पतझड़ फले पलास,पात वसंता झाड़ियां। निपजे सातों अनाज,कढे हीर सुण माधजी।।६।। फल पाके नीचे झड़े,रस सुखे नहीं मास। अन्न नीपजे घणो,हीर कढे सुण माधजी।।७।। पात झड़े भू पर पड़े,नगन वृक्ष हो जाय। हीर कढे सुण माधजी,खूब जमानो थाय।।८।।

चैत्र शुक्ला १५ शनि
गण ३६२ इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ २६ ५१ ५१	११ १ ३८ ४६	१ २४ ४४ ४३	१० २८ ५ १६	१० २५ २१ ३७	११ ० ५६ १६	५ ० ५६ १६
२० १४	३२ २ मा	१० १५	१५ ४७ मा	६ २८	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गोचर ग्रहाः

शुक्र,बुध मार्गी
बुधोदयपू.,शनि+शुक्रोदय

वैशाख कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत्२०८२ शालिवाहन शकः१९४६/४७(लघुगण३६३से१ तक)

दि.१३ अप्रेल से २७ अप्रेल २०२५ ई. तक। वसन्त/ग्रीष्मऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः, उत्तरगोलेः। (चैत्र कृष्ण पक्षःगुजरात महाराष्ट्रे)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योग	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हि.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	गति	
३६३	१३	ध्वज	१	सू.	६०	०	चि	३४	५	ह	३५	१६	बा	२८	०	३२/३८	६/१८	५/५८	३०	१४	तुला ०/४८	११	२६	१०	४२	५८ ४६	अश्वन्यांमेषे ऽर्क ३९/१०,वैशाख स्नान प्रारंभ।
३६४	१४	छत्र:	१	चं.	०	३४	स्वा	४०	३२	व	३६	४५	कौ	०	३४	४२	१८	५८	१	१५	तुला	०	०	९	२६	५८ ४२	डॉ.अम्बेडकरजयंति A चतुर्थीव्रत चंद्रोदय ९/३ बजे
३६५	१५	श्रीवत्स	२	मं.	५	३५	वि	४६	३३	सि	३७	५६	ग	५	३५	४६	१७	५६	२	१६	वृश्चि. ३०/३	०	१	८	६	५८ ४०	म.३७/४६ उप.,मार्गीउभाबुध २९/६ ग ३,बिच्छुड़ा ३०/३ उप.
३६६	१६	सौम्य	३	बु.	१०	४	अ	५१	५५	व्य	३८	२१	वि	१०	४	४६	१७	५६	३	१७	वृश्चिक	०	२	६	४४	५८ ४०	म.१०/४ या.,शकः१९४७प्रवेशः,गणप्रवेशःगु ४६/५८ ऽब्द ४/३। २/५८,संकट A
१	१७	काल	४	गु.	१३	४७	ज्ये	५६	८	व	३८	१५	बा	१३	४७	५०	१५	५६	४	१८	धनु ५६/८	०	३	५	२१	५८ ३९	बिच्छुड़ा ५६/८ या.अनसूयाजं.
२	१८	सुस्थिर	५	शु.	१६	१४	मू	५९	११	प	३७	१३	तै	१६	१४	५४	१४	५९	५	१९	धनु	०	४	३	५५	५८ ३७	वृषेभानु:३/४,ग्रीष्मऋतुप्रारंभ
३	१९	मातंग	६	श.	१७	२७	पू	६०	०	शि	३५	१२	व	१७	२७	५८	१३	१	६	२०	धनु	०	५	२	२७	५८ ३५	म.१७/२७ उप.४७/३४या.,मार्गीमीनेशुक्र ४/२
४	२०	धूम्र:	७	सू.	१७	२१	पू	०	५८	सि	३२	१०	ब	१७	२१	३२	१३	१	७	२१	मकर ३६/६	०	६	०	५६	५८ ३३	शीतलापू.,बुढ़ाबासोड़ा,
५	२१	मृत्यु	८	चं.	१५	५८	उ	१	३१	सा	२८	१०	कौ	१५	५८	४	११	१	८	२२	मकर	०	६	५९	२७	५८ ३०	रेवत्यांबुध ४/९ ग ६/४
६	२२	धुंक्ष:	९	मं.	१३	२६	श्र	[illegible]	[illegible]	शु	२३	१६	ग	१३	२६	७	११	१	९	२३	कुंभ ३०/१	०	७	५७	३१	५८ २७	म.४१/५४ उप.,पुष्येभौम ४७/५ ग ३१/१६,पंचक ३०/१ उप.
७	२३	मानस	१०	बु.	९	५४	ध	५६	४५	शु	१७	३३	वि	९	५४	११	१०	२	१०	२४	कुंभ	०	८	५६	१४	५८ २४	म.९/५४ या.,मृगेरगुरु २४/६ ग ३३
८	२४	मुद्गर	११	गु.	५	२६	पू	५३	३४	ब्र	११	१०	बा	५	२६	१४	९	३	११	२५	मीन ३६/१	०	९	५४	३५	५८ २२	पूभा३शनि २९/६ ग २/२ वरुथिनी११व्रतंसर्वे, श्रीवल्लभाचार्य जय.
९	२५	ध्वज:	१२	शु.	०	२२	उ	४६	५२	ऐ	४/१४	५/५७	तै	०	२२	१७	९	३	१२	२६	मीन	०	१०	५२	५३	५८ २०	म.४६/५२ उप., प्रदोष, सेनजयंति
०	०	०	१३	शु.	५४	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	B अमा रवि अश्वनीयुत व्यतिपातयोग अनन्त पुण्यद।
१०	२६	प्रजापति	१४	श.	४८	५०	रे	४५	५२	वि	४६	२४	वि	२१	४८	२०	७	२	१३	२७	मेष ४४/५३	०	११	५१	१०	५८ १८	म.३१/४८ या.,पंचक ४४/५३ या.
११	२७	आनंद:	३०	सू.	४२	४६	अ	४१	४६	प्री	४१	४१	च	१५	४८	२३	६	४	१४	२८	मेष	०	१२	४९	२५	५८ १७	भरण्यांरवि ३१/३० पितृकार्ये ऽमा:, हालीअमावस,देवकार्ये ऽमा:, B

गोचर ग्रहा:

बुधोदयपूर्वे,शुक्रोदयपू. शुक्रमार्गी,शनिउदयपूर्वे

वैशाख कृष्णा ८ सोम
गण ५, इष्ट: ०/०

म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	११	१	११	१०	११	५
२	१५	२६	०	२६	०	०
४३	७	१७	२७	१६	३०	३०
४६	३०	१	२८	५७	३६	३६
२०	२	१०	१५	६	३	३
१४	१	१५	४७ मा.	२८	११	११
पुन.४	उषा४	मृग.१	पूषा४	पूषा२	पूषा४	उफा२
नीर	सौम्य	दहन	नीर	नीर	नीर	नीर

वैशाख कृष्णा ८सूर्य मेषेऽर्क प्रवेशः। वारात् ३ मंदी,नक्षत्रात्३सुभिक्ष। वार नाम घोरा,शूद्र सुखी। नक्षत्र नाम मन्दाकिनी,नृप सुखी। संक्रांति काल अपर रात्री,नरसुखी। संक्रांति पूर्वे मुख,नैऋत दृष्टि, दक्षिणे गमनं। कौलव कर्ण खड़ी तेजी। वाराह वाहन,बैल उपवाहन पीड़ा। हरित वस्त्र,खड्ग आयुध,ताम्र पात्र,शर्करा भोजन,चंदन लेपन ,सर्पजाति,बकुल पुष्प,मोती भूषण,हरित कंचुकी, तरुणी अवस्था, पश्चिम मुख,मृदंग वाद्य,तेजी। ईति अवस्था। संक्रांति हस्ते पीतफल ,लक्ष्मी प्राप्तिः। संक्रांति निवास सौध,वैश्य। संक्रांति मु.१५ तेजी। संक्रांति पुण्यम् पर दिने,प्रथम प्रहरे पुण्य काल। वत्स निवास पश्चिमे। त्रैमासिक राहु दक्षिणे। शुक्रोदय पूर्वे।

वैशाख कृष्णा ३० सूर्य
गण ११, इष्ट: ०/०

म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	११	१	११	१०	११	५
५	२२	२७	२	२६	०	०
४४	२४	२६	२	५२	११	११
३१	५५	३०	१६	४३	३४	३४
३०	६४	१२	१५	४	३	३
३६	५१	२२	४७ मा.	२२	११	११
पुष्य१	रेव.२	मृग.२	पूषा४	पूषा३	पूषा४	उफा२
जल	दहन	दहन	नीर	नीर	नीर	नीर

गोचर ग्रहा:

बुधोदय पूर्वे,शुक्रोदयपू. शुक्रमार्गी,शनिउदयप.

वैशाख शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण१२से२६तक)

दि.२८ अप्रेल से १२ मई २०२५ ई.तक।
ग्रीष्म ऋतुः। रविर्देवता उत्तरायने:, उत्तरगोले:।
卐 (वैशाख शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रे:)

	तारीख	योग	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
१२	२८	घर	१	च.	३६	५२	ध	३७	४६	आ	३४	७	कि	६	४६	३२/२६	६	७/४	१५	२६	वृषभ ६/०	० [illegible]	[illegible]	
१३	२९	गद	२	मं.	३१	१०	कृ	३४	३	सौ	२६	४६	बा	४	१	२६	५	५	१६	३०	वृषभ	० [illegible]	[illegible]	चंद्रोदयमु.३०स्थिरता,शिवाजीजयंति परशुरामजयंसायं तृतीयायां
१४	३०	शुभः	३	बु.	२५	५५	रो	३०	५१	शो	१९	४७	ग	२५	५५	३२	५	५	१७	१	मिथुन [illegible]	० [illegible]	[illegible]	म.५३/३६ उप.,कुंभेपूभा३राहुसिंहेउभा१केतु४/८ जिल्कादमु.११, A
१५	१	मृत्युः	४	बृ.	२१	१८	मृ	२८	१९	अ	१३	१८	वि	२१	१८	३६	४	६	१८	२	मिथुन	० [illegible]	[illegible]	म.२१/१८ या.,मार्गीउभायांशुक्र४६/४० ग.५५ A कल्पादि,अक्षयतृतीया
१६	२	पद्मः	५	शु.	१७	३१	आ	२६	३८	सु	७	३०	बा	१७	३१	३९	३	७	१९	३	कर्क ११/८	० [illegible]	[illegible]	आद्यशंकराचार्य जयं.
१७	३	छत्रः	६	श.	१४	४४	पु	२५	५९	धृ	[illegible]	[illegible]	ती	१४	४४	४२	२	८	२०	४	कर्क	० [illegible]	[illegible]	अश्वन्यांमेषेबुध४४/५५ग.११५/२८ श्रीरामानुजजयं.,
१८	४	श्रीवत्सः	७	सू.	१३	५	पु	२६	३०	गं	५५	८	व	१३	५	४५	१	८	२१	५	कर्क	० [illegible]	[illegible]	म.१३/५ उप.४२/३ या., गंगोत्पत्तिसप्तमी मध्यान्व्यापिनी
१९	५	सौम्यः	८	चं.	१२	४०	श्ले	२८	१५	वृ	५२	५८	ब	१२	४०	४८	०	८	२२	६	सिंह २८/१५	० [illegible]	[illegible]	बुधास्तपू.४६/५ बगलामुखीजयं.,बुधाष्टमी सीतानवमी
२०	६	कालः	९	मं.	१३	३३	म	३१	१६	ध्रु	५१	४७	कौ	१३	३३	५१	०	८	२३	७	सिंह	० [illegible]	[illegible]	
२१	७	सुस्थिरः	१०	बु.	१५	४३	पू	३५	२७	व्या	५१	३३	ग	१५	४३	५४	५/५६	९	२४	८	कन्या ५१/४५	० [illegible]	[illegible]	म.४७/२२ उप.,
२२	८	मातंग	११	बृ.	१९	१	उ	४०	४१	ह	५२	५	वि	१९	१	५८	५८	१०	२५	९	कन्या	० [illegible]	[illegible]	म.१९/१ या.,मोहिनी११व्रतंसर्वे
२३	९	अमृतः	१२	शु.	२३	१५	ह	४६	४१	व	५३	१२	बा	२३	१५	[illegible]	५८	१०	२६	१०	कन्या	० [illegible]	[illegible]	मृग३मिथुनेगुरु३/४ग१२/४६ प्रदोष
२४	१०	काणः	१३	श.	२८	८	चि	५३	७	सि	५४	४१	ती	२८	८	४	५७	११	२७	११	तुला [illegible]	० [illegible]	[illegible]	भरण्यांबुध४/६ग१०७/२
२५	११	लुंबक	१४	सू.	३३	१३	स्वा	५९	३५	व्य	५६	१८	ग	०	४०	७	५७	११	२८	१२	तुला	० [illegible]	[illegible]	म.३३/१३ उप.,कृत्तिकायांरवि२६/० नृसिंह१४जयंति प्रदोष व्यापिनी
२६	१२	मैत्रः	१५	चं.	३८	११	वि	६०	०	व	५७	३६	वि	५	४२	१०	५६	१२	२९	१३	वृश्चिक [illegible]	० [illegible]	[illegible]	म.४/२ या.,बिच्छुडा११/११ उप.,कूर्मोत्पत्ति,पूर्णिमाव्रतंपुण्यं,वैशाखस्नानपूर्णं बुद्धजयं.,यमायजलान्न,कुंभदानम्

गोचर ग्रहाः
रात्री बुधास्त पूर्वे
शुक्रोदयपूर्वे

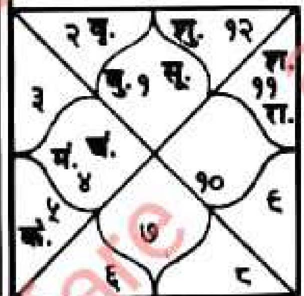

वैशाख शुक्ला ८ चंद्र
गण १९, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ ९ ४९ ४१	० २ ५ ५३	१ २९ ५ ३०	११ ५ ५१ ३१	१० २७ २७ ४५	१० २९ ४६ ८	४ २९ ४६ ८
३० ३९	११५ २८	१२ २२	४६ ११	४ २२	३ ११	३ ११
पुष्य.२	अश्वि.	मृग.२	उभा.	पूभा.२	पूभा.२	उफा.१
जल	पवन	दहन	सौम्य	नीर	नीर	नीर

पांच रवि गर्मी घणी,महाभय बहु रोग। फोडा फुंसी दुर्भिक्ष हो, छत्रभंग को भोग।।१।। रवि शनि मंगल वार दिन,संक्रांत पलटे जोय। दुख दुर्भिक्ष तेजी घणी,उसी मास मे होय।।२।। मेषार्क रविवार,अमा भी रवि मे आन। खर्प्परयोग जग भये,निश्चय जग मे ठान।३। आखातीज को रोहिणी,सुभिक्ष करति देख। सुद नौमी मघा पड़ो,रुण्ड मुण्ड को लेख।।४।। हैजा रोग छत्रभंग अमा रवि शनि मंगल देख। शुक्रवारी पंचमी,कलह विग्रह को लेख।५।। कैर बैर पीलू पके,नीब आंब पकजाय। दूध दही रसकस घणां कार्तिक साख सवाय।।६।। बिना रितु फल फूल लगे,बिन रितु वर्षे मेह। समय चूक ब्यावे पशु,धरा उड़ावेखेह।।७।। ऊँट कंटाली रीगणी, शंखा वल्ली को फूल। मां बिछोड़े टीकरा,गाय बाछड़ा भूल।।८।।

वैशाख शुक्ला१५ चांद्र
गण २६ ,इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ १३ २४ १८	० १५ २३ २३	२ ० ३३ १२	११ ११ ३५ ५१	१० २७ ५८ २४	१० २९ २३ ५२	४ २९ २३ ५२
३० ३९	१०७ २	१२ ४६	४६ ११	४ २२	३ ११	३ ११
पुष्य.३	भर.१	मृग.३	उभा.३	पूभा.२	पूभा.२	उफा.१
जल	प्रचंड	दहन	सौम्य	नीर	नीर	नीर

गोचर ग्रहाः
बुधास्त पूर्वे,मिथुने गुरु
शुक्रोदय पूर्वे

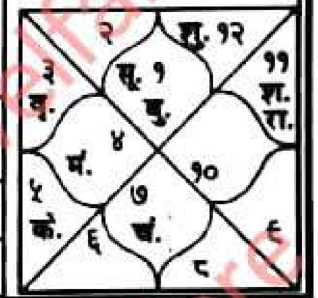

विशेषांक प्रकाशन दि.1 जनवरी 2025 ई.

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष: श्रीविक्रम संवत्२०८२ शालिवाहन शक:१९४७ (लघुगण २७से४१तक)

दि.१३ मई से २७ मई २०२५ई.तक।
ग्रीष्म ऋतु:। रविर्देवता उत्तरायने:, उत्तरगोले:।
(वैशाख कृष्ण पक्ष: गुजरात महाराष्ट्रे:)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योग	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टैण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
२७	१३	श्रीवत्स:	१	मं.	४२	३८	वि	५	४४	प	५८	३०	बा	१०	२४	३३	५ ५५	७ १३	३०	१४	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]
२८	१४	सौम्य:	२	बु.	४६	११	अ	११	१०	शि	५८	३६	तै	१४	२४	१६	५५	१३	३१	१५	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]
२९	१५	काल	३	गु.	४८	३५	ज्ये	१५	३८	सि	५७	५१	व	१७	३०	१६	५५	१३	१	१६	धनु १५/३८	[illegible]	[illegible]
३०	१६	सुस्थिर	४	शु.	४९	४५	मू	१८	५७	सा	५६	८	ब	१९	१३	१९	५४	१४	२	१७	धनु	[illegible]	[illegible]
३१	१७	मातंग	५	श.	४८	३७	पू	२१	१	शु	५३	२३	कौ	१८	३७	२३	५३	१५	३	१८	मकर ३६/१३	[illegible]	[illegible]
३२	१८	अमृत:	६	सू.	४८	१३	उ	२१	४६	शु	४६	३६	ग	१८	५५	२६	५३	१५	४	१९	मकर	[illegible]	[illegible]
३३	१९	सिद्धि:	७	चं.	४५	४०	श्र	२१	२७	ब्र	४५	०	वि	१६	५७	२९	५२	१६	५	२०	कुंभ	[illegible]	[illegible]
३४	२०	उत्पात	८	मं.	४२	३	ध	२०	१	ऐ	३६	३८	बा	१३	५१	३२	५२	१६	६	२१	कुंभ	[illegible]	[illegible]
३५	२१	मानस	९	बु.	३७	३३	श	१७	४१	वै	३३	१६	तै	९	४८	३३	५१	१७	७	२२	कुंभ	[illegible]	[illegible]
३६	२२	मुद्गर	१०	गु.	३२	२७	पू	१४	३०	वि	२६	३१	व	५	०	३५	५१	१७	८	२३	मीन	[illegible]	[illegible]
३७	२३	ध्वज:	११	शु.	२६	४७	उ	११	०	प्री	१९	२०	बा	२६	४७	३६	५१	१७	९	२४	मीन	[illegible]	[illegible]
३८	२४	प्रजापति	१२	श.	२०	४७	रे	७	२	आ	११	५२	तै	२०	४७	३७	५१	१७	१०	२५	मेष	[illegible]	[illegible]
३९	२५	आनंद:	१३	सू.	१४	३८	अ	[illegible]	[illegible]	सौ	[illegible]	[illegible]	व	१४	३८	३९	५१	१८	११	२६	मेष	[illegible]	[illegible]
४०	२६	सुस्थिर:	१४	चं.	८	३४	कृ	५५	४	अ	४६	२२	श	८	३४	४०	५१	१९	१२	२७	वृषभ	[illegible]	[illegible]
४१	२७	मातंग	३०	मं.	२	४६	रो	५१	४२	सु	४२	२०	ना	२	४६	४१	५१	१९	१३	२८	वृषभ	[illegible]	[illegible]

जिनवरव्रतारंभ
वृषेऽर्क: श्रीनारदजयं.वीणावादनं
भ.उप.या.,बिच्छुड़ाया
चतुर्थीव्रतंचंद्रोदय बजे, A कृत्तिकायांबुध ग, रेवत्यांशुक्र ग
भुवनेश्वरी पाटोत्सव(गोंडल)
भ. उप., अगस्तास्त:, आश्लेषायांभौम ग, A
भ. या., मिथुनेभानु, पंचक उप.
वृषेबुध कालाष्टमी,
श्रीदादूदयालपुण्य
भ. उप. या.,
अपरा११व्रतं सर्वे, B वटसावित्रीव्रतप्रा.मठ
पंचक या. शनि प्रदोष महापुण्यदायी, त्रिविक्रमपूजा गोमेषफल,
भ. उप. या., रोहिण्यांरवि, रोहिण्यांबुध, ग, मृग४गुरु ग B
वटसावित्रीव्रतपूर्ण उत्तरभारतीय,
दैवपितृकार्येऽमा, भावुकाअमा., शनिजयं, वटसावित्रीव्रत C
C पारणाउत्तरभारतीय, करिदिन, गंगादशहराव्रत प्रां.

गोचर ग्रहा:

बुधास्तपूर्वे, शुक्रोदयपूर्वे अगस्तास्त रात्री

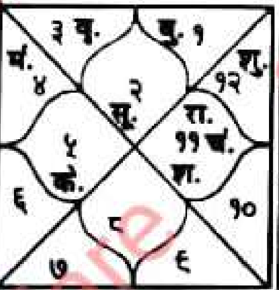

ज्येष्ठ कृष्णा ८ मंगल
गण ३४, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	२	११	१०	१०	४
१७	२८	२	१८	२८	२८	२८
३२	५८	१५	२६	३३	५८	५८
४३	१०	२७	५७	२५	२६	२६
३४	११७	१२	५८	४	३	३
३८	२१	४६	५१	२२	११	११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	नीर	नीर	नीर

ज्येष्ठ कृष्णा २ बुध,वृषेऽर्क प्रवेश:। वारात् ४ तेजी दुर्भिक्ष। नक्षत्रात् ४दुर्भिक्ष। नक्षत्रात् ४ दुर्भिक्ष तेजी। वार नाम मन्दाकिनी,नृपसुखी। नक्षत्र नाम राक्षसी,चांडाल सुखी। संक्रांति काल अर्धरात्री,राक्षस सुखी। संक्रांति दक्षिणे मुख,ईशान दृष्टि,पश्चिमे गमनं। गर करणे बैठी, सम। हस्ती वाहन,गर्दभ उपवाहन,श्री प्राप्ति। रक्त वस्त्र,धनुष आयुध ,लोहपात्र,पयभोजन,गौरोचन लेपन,मृगजाति,बिल्व पुष्प,मुकुट भूषण, श्वेतकंचुकी,प्रोढ़ा अवस्था,वायव्यमुख,पापवाम,दुर्मुखी अवस्था। संक्रांति हस्ते रक्तफल,प्रजादुखी। संक्रांति निवास समुद्रे,मालाकार गृहे,सुभिक्ष मंदी। मु.१५तेजी,दुर्भिक्ष। संक्रांति पुण्यम् पर दिने प्रथम प्रहरे पुण्य काल। वत्स निवास पश्चिमे। त्रैमासिक राहु पश्चिमे। शुक्रोदय पूर्वे।

ज्येष्ठ कृष्णा३० मंगलवार
गण ४१, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	२	११	१०	१०	४
२१	१३	३	२५	२९	२८	२८
२१	३२	४६	१८	४	३६	३६
१४	३५	१२	५६	४	१०	१०
३२	११३	१३	५८	४	३	३
३८	३४	२६	५१	२२	११	११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	नीर	नीर	नीर

गोचर ग्रहा:

बुधास्तपूर्वे, शुक्रोदयपूर्वे अगस्तास्त

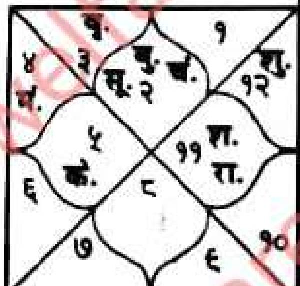

ज्येष्ठ शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत्२०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण४२से ५६तक)

दि.२८ मई से ११ जून २०२५ई.तक।
ग्रीष्मऋतु। रविर्देवता उत्तरायने:,उत्तरगोले:।
卐 (ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रे:) 卐

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योग	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	ता.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
०	०	०	१	मं.	५७	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	A आर्द्रायांबुध ३६/१९ग १०८/३७,बुधोदयप. ४३/४५ प्रदोष,व०००आदित्य१व्रत
४२	२८	अमृत	२	बु.	५२	४२	मृ	४८	५७	धृ	३५	४४	बा	२५	३	३३/४३	५/१०	७/२०	१४	२६	मिथुन २९/१६	१ [illegible]	[illegible]	चंद्रोदयमु.३०स्थिरता,
४३	२९	काण:	३	गु.	४८	५०	आ	४७	५	शू	२६	४६	तै	२०	४६	४४	५०	२०	१५	१	मिथुन	१ [illegible]	[illegible]	जिल्हेजमु.१२महाराणाप्रतापजयंति४८५वीं,रंभाव्रत,अशून्यशयनव्रतम्.
४४	३०	लुंबक	४	शु.	४५	५५	पु	४६	६	गं	२४	३६	व	१७	२२	४५	५०	२०	१६	२	कर्क ३१/३३	१ [illegible]	[illegible]	म. ५७/२२उप. ४६/५६या.,
४५	३१	मित्र:	५	श.	४४	७	पु	४६	२२	वृ	२०	२१	ब	१५	१	४७	५०	२०	१७	३	कर्क	१ [illegible]	[illegible]	अश्वन्यांमेषेशुक्र ४६/३० ग. ५/३२
४६	१	वज्र:	६	सू.	४३	३३	श्ले	४७	४८	ध्रु	१७	१	कौ	१३	५०	४८	४६	२१	१८	४	सिंह ४७/४८	१ [illegible]	[illegible]	मृगेबुध ३०/१९ग. १०९/६ अरण्यषष्ठी,
४७	२	ध्वांक्ष:	७	चं.	४४	१८	म	५०	३०	व्या	१४	४०	ग	१३	५५	४८	४६	२१	१९	५	सिंह	१ [illegible]	[illegible]	म. ४४/१८ उप.,
४८	३	धूम्र:	८	मं.	४६	१६	पू	५४	२५	ह	१३	११	वि	१५	१६	४६	४६	२१	२०	६	सिंह	१ [illegible]	[illegible]	म. ३१/४६ या., दुर्गाष्टमी धूमावतीजयंति,
४९	४	प्रवर्धमान	९	बु.	४९	२८	उ	५९	२४	व	१२	५७	बा	१७	५३	५१	५०	२२	२१	७	कन्या १०/३६	१ [illegible]	[illegible]	मिथुनेबुध ४०/१८
५०	५	राक्षस:	१०	गु.	५३	३०	ह	६०	०	सि	१३	२७	तै	२१	२६	५२	५०	२२	२२	८	कन्या	१ [illegible]	[illegible]	गंगादशहराव्रतंपूर्ण,पर्यावरणदिवस सुवृधाः
५१	६	अमृत:	११	शु.	५८	१६	ह	५	१५	व्य	१४	१३	व	२५	५३	५३	४६	२३	२३	९	तुला ३६/१६	१ [illegible]	[illegible]	म. २४/५३उप. ४६/५६या.,निर्जला१व्रतंसर्वे,भीम११,हज्ज त्यौहार
५२	७	काण:	१२	श.	६०	०	चि	११	२३	व	१५	३६	ब	३०	४८	५५	४६	२३	२४	१०	तुला	१ [illegible]	[illegible]	बकराईद हजे अकबर,निर्जला१व्रतनिम्बार्क
५३	८	लुंबक:	१२	सू.	३	२१	स्वा	१८	४	प	१७	१७	बा	३	२१	५६	४६	२३	२५	११	तुला	१ [illegible]	[illegible]	मृगेरवि: २१/५१,पूभा४मीनेशनि ४६/१ग १/१३,आर्द्रा१गुरु३५/६ग ३३/४३.A
५४	९	मित्र:	१३	चं.	८	१५	वि	२४	१६	शि	१८	४४	तै	८	१५	५७	४६	२४	२६	१२	वृश्चिक ७/४५	१ [illegible]	[illegible]	बिच्छुडा ७/४५उप. वटसावित्रीव्रतारंभःदाक्षिणगुजरे,
५५	१०	वज्र:	१४	मं.	१२	३४	अ	२९	५५	सि	१९	४१	व	१२	३४	५८	४६	२५	२७	१३	वृश्चिक	१ [illegible]	[illegible]	म. १२/३४उप. ३४/२१या., Bकबीरजयं.,मन्वादि,पूर्णिमाव्रतं,दानव्रतपुण्यं
५६	११	ध्वांक्ष:	१५	बु.	१६	७	ज्ये	३४	३७	सा	१९	५८	व	१६	७	३४/४०	४६	२५	२८	१४	धनु ३६/३७	१ [illegible] ० ०	[illegible]	मघायांसिंहेभौम ३६/२६ग ३६/४०,गुरुअस्तप. ५/६,बिच्छुडा ३६/३७या,ज्वालामुखी ३६/३७उप.B

गोचर ग्रहा:

बुधास्त पूर्वे,शुक्रोदयपूर्वे
अगस्तास्त:

ज्येष्ठ शुक्ला८ मंगलवार
गण ४८, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ २५ ६ ४५	१ २८ २६ २६	२ ५ २० २०	० २ १९ ७	१० २९ ३४ ४३	१० २८ १३ ५४	४ २८ १३ ५४
३२ ३८	१०८ ६	१३ २६	६२ ३१	४ २२	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	अश्विनी	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अमृत	दहन	दहन	पवन	नीर	नीर	नीर

पांचभौम धरती फटे,अग्निकाण्ड उत्पात। छत्रभंग दंगल बढ़े,वैर विरोध आघात।।१।। जेठ वदी पड़वा अमा,मंगलवारी थाय। चोर अग्नि भय बहु ,घर घर हाण कराय।।२।। जेठी पूनम मूल नहीं,अथवा नहीं घन बिंद। तो सावन सूखो पड़े,समो बुरो अतिमंद।३।रोहिण माहे रोहिणी, अमा मंगली देख। धन हरण धनिकन को, रोग शोक को लेख।।४।। सावण में सुरयो भली,भादरवे पुरवाई। आसोजे पश्चिम पवन,कार्तिक साख सवाई।।५।। भादवे चारों दिशा,बाजे आठों कून। आया मेघ उड़ाय दे,हीर कहे सुण माघ जी।।६।। कृतिका तो कोरी गई,आद्रा मेहन बूंद। तो यों जानों भड्डरी काल मचावे द्वंद।।७। मृगसिर वाय न वाजिया,रोहिण तपे न जेठ। गोरी बीणे कांकरा खड़ी खेजड़ा हेठ।८।।

ज्येष्ठ शुक्ला १५ बुध
गण ५६, इष्ट: ०/०

म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ २९ ३० ५६	२ ११ ११ ६	२ ७ ८ २९	० १० ३६ २१	११ ० ६ २४	१० २७ ४८ २८	४ २७ ४८ २८
३२ ३८	१०८ ३७	१३ ४३	६२ ३१	४ १३	३ ११	३ ११
[illegible]	आर्द्रा	आर्द्रा	अश्विनी	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अमृत	सौम्य	सौम्य	पवन	नीर	नीर	नीर

गोचर ग्रहा:

अगस्तास्त:,गुरुअस्तप.
बुधोदय प.,शुक्रोदयपूर्वे

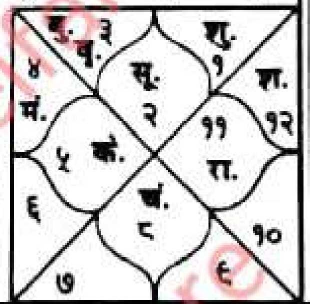

विशेषांक प्रकाशन दि.1 जनवरी 2025 ई.

आषाढ़ कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण५७ से७०)

दिनांक १२ जून से २५ जून २०२५ई. तक।
ग्रीष्म/वर्षाऋतुः। रविर्देवता उत्तरा/दक्षिणायने,उत्तरगोलेः।
(ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

गण	तारीख	योग	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टैण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	विशेष
५७	१२	धूम्रः	१	बृ.	१८	३६	मू	३८	१२	शु	१६	२५	कौ	१८	३६	३४	५ ४६	७ २५	२९	१५	धनु	[illegible]	[illegible]	ज्वालामुखी ३६ या.,वटसावित्रीव्रतपारणा,
५८	१३	प्रवर्धमान	२	शु.	१६	४६	पू	४०	३३	शु	१७	५५	ग	१६	४६	३	४६	२६	३०	१६	मकर ५५/४६	[illegible]	[illegible]	भ. ४५ उप.,मरण्यांशुक्र ३४ ग ६६
५९	१४	राक्षसः	३	श.	१६	४५	उ	४१	३८	ब्र	१५	२४	वि	१६	४५	४	४६	२७	३१	१७	मकर	[illegible]	[illegible]	भ. १६ या.,चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय ६/२८ बजे
६०	१५	गदः	४	सू.	१८	१५	श्र	४१	३१	ऐ	११	५०	बा	१८	१५	५	४६	२७	३२	१८	मकर	[illegible]	[illegible]	मिथुने ऽर्कः १२/२८,पुनर्वसुबुध ६२ ग ६६
६१	१६	शुभः	५	चं.	१५	४२	ध	४०	१८	वै	७	२१	तै	१५	४२	७	४६	२७	१	१९	कुंभ १०/५४	[illegible]	[illegible]	पंचक १०/५४ उप
६२	१७	मृत्युः	६	मं.	१२	७	श	३८	१०	वि	३	५६	व	१२	७	८	४८	२८	२	२०	कुंभ	[illegible]	[illegible]	भ. १२/७ उप. ३६/५३ या.,
६३	१८	काणः	७	बु.	७	३८	पू	३५	१२	आ	४६	१७	ब	७	३८	६	४८	२८	३	२१	मीन २०/५६	[illegible]	[illegible]	
६४	१९	छत्रः	८	बृ.	२	२६	उ	३१	४१	सौ	४२	६	कौ	२	२६	६	४८	२८	४	२२	मीन	[illegible]	[illegible]	कालाष्टमी,श्रीरामदासपुण्य,मेलाखेडापारामधाम,
०	०	०	९	बृ.	५६	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	
६५	२०	श्रीवत्सः	१०	शु.	५०	४७	रे	२७	४६	शो	३४	४५	व	२३	४८	१०	४८	२८	५	२३	मेष २७/४६	[illegible]	[illegible]	भ. ३३/४८ उप. ५०/४७ या.,कर्केभानुः २६,बड़ादिन,रविदक्षिणायनेवर्षाऋतुप्रा.,A
६६	२१	सौम्यः	११	श.	४४	३६	अ	२३	४०	अ	२७	११	ब	१७	४१	१२	४६	२६	६	२४	मेष	[illegible]	[illegible]	योगिनी१ व्रतंस्मार्ता,गोपपद्मव्रतोत्सव, A पंचक ३०/४६ या.
६७	२२	काल	१२	सू.	३८	२८	भ	१६	३३	सु	१६	३६	कौ	११	३२	१०	४६	२६	७	२५	वृषभ ३३/३६	[illegible]	[illegible]	आद्रायांरवि ५३/४६,स्त्री.पु.चं.चं.वाहनमूषक,उपवाहनकच्छप बाढ़, B
६८	२३	सुस्थिरः	१३	चं.	३२	३६	कृ	१५	३६	धृ	१२	११	ग	५	३२	९	४६	२६	८	२६	वृषभ	[illegible]	[illegible]	भ. ३२/३६ उप. ६५/५३ या.,आद्रा२गुरु ३६/१६ ग १३/४४ प्रदोष,
६९	२४	मातंगः	१४	मं.	२७	६	रो	१२	६	शू	४	५३	श	२७	६	८	४६	२६	९	२७	मिथुन ४५/४३	[illegible]	[illegible]	B कर्केबुध ५०/६८,योगिनी१ व्रतंनिम्बार्का
७०	२५	अमृतः	३०	बु.	२२	२४	मृ	६	१५	वृ	५२	१६	ना	२२	२४	७	५१	२६	१०	२८	मिथुन	[illegible]	[illegible]	पुष्येबुध ३६/५७ ग ४५/४६,कृत्तिकायांशुक्र ४०/५८ ग ६७/४६ सावित्रीव्रत पश्चिमदेशीय C
																								C दैवपितृकार्ये ऽमास्नानदाने,वट

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्तः,गुरुअस्तप.
बुधोदयप.,शुक्रोदयपूर्वे

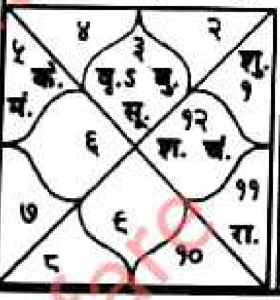

आषाढ़ कृष्णा८+९ गुरु
गण ६४, इष्टः ०/०

म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ ४ १९ २९	२ २४ २८ ३५	२ ८ ५८ २१	० १९ १८ ३६	११ ० ४३ ८	१० २७ २३ १	४ २७ २३ १
३६ ३०	८६ ५	१३ ४३	६६ २	४ १३	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अमृत	नीर	सौम्य	प्रचंड	नीर	नीर	नीर

आषाढ़ कृष्ण पक्ष ४सूर्य मिथुनेऽर्क प्रवेशः। वारात् ५ तेजी,दुर्भिक्ष। नक्षत्रात् ५ तेजी दुर्भिक्ष। वार नाम घोरा,शूद्र सुखी। नक्षत्र नाम महोदरी,चौर सुखी। संक्रांति काल पूर्वान्हे,विप्र राजा सुखी। संक्रांति मुख पूर्वे,नैऋत दृष्टि,दक्षिणे गमनं। बालव करणे बैठी,सम। व्याघ्र वाहन,अश्व उपवाहन,भय। पीत वस्त्र गदा आयुध,चांदी पात्र,खीर भोजन,कुंकुम लेपन,वणिक् जाति,जूही पुष्प,कंकण भूषण,पर्णकंचुकी, कुमारी अवस्था,दक्षिण मुख,भेरी वाद्य,भोगाऽवस्था। संक्रांति हस्ते कृष्ण फल संक्रांतिनिवास तटे,रजक(धोबी) गृहे सुभिक्ष मंदी। मु.३० स्थिरता। संक्रांति पुण्यम् स्वदिने प्रथम प्रहरे पुण्यकालः। वत्स निवास उत्तरे। त्रैमासिक राहु पश्चिमे,शुक्रोदय पूर्वे।

आषाढ़ कृष्णा ३० बुध
गण ७०, इष्टः ०/०

म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ ७ ५८ २९	३ ३ ६ १३	२ १० २० ४६	० २५ ५४ ५५	११ १ ८ २६	१० २७ ३ ५६	४ २७ ३ ५६
३६ ३०	८६ ५	१३ ४३	६६ २	४ १३	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अमृत	नीर	सौम्य	प्रचंड	नीर	नीर	नीर

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्तः,गुरुअस्तप.
बुधोदयप.,शुक्रोदयपूर्वे

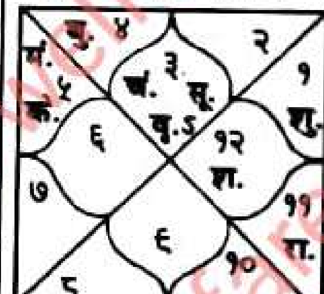

आषाढ़ शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७(लघुगण ७१से ८५)

दिनांक २६ जून से १० जुलाई २०२५ई.तक।
वर्षाऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायने:,उत्तरगोले:।
(आषाढ़ शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रे:)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योग	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	चलित	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
७१	२६	काण:	१	गु.	१८	२२	आ	७	८	ध्रु	४७	०	ब	१८	२२	३४ ५	५१	२६	११	२६	कर्क ५१ ५४	[illegible]	[illegible]	चंद्रोदयमु. ४५मंदी,गुप्तनवरात्रारंभ:
७२	२७	तुंबक:	२	शु.	१५	१६	पु	५	५६	व्या	४२	३१	कौ	१५	१६	४	५१	२६	१२	१	कर्क	[illegible]	[illegible]	श्रीजगदीशरथयात्रा ,मोर्हरमुमाहसन्१४४७
७३	२८	मित्र:	३	श.	१३	२५	पु	५	५२	ह	३८	५६	ग	१३	२५	३	५१	२६	१३	२	कर्क	[illegible]	[illegible]	म. ४३/३ उप.,वृषेशुक्र ३७/५
७४	२९	वज्र:	४	सू.	१२	४२	श्ले	६	५६	व	३६	२६	वि	१२	४२	१	५२	२८	१४	३	सिंह ५ ६	[illegible]	[illegible]	म. १३/४२ या., स्कंद पंचमी,द्वारकाधीश पाटोत्सव
७५	३०	ध्वांक्ष:	५	चं.	१३	१८	म	६	२३	सि	३४	५३	बा	१३	१८	०	५२	२८	१५	४	सिंह	[illegible]	[illegible]	स्कन्दषष्ठीव्रत,मध्यान्हव्यापिनी,कुमारषष्ठी
७६	१	धूम्र:	६	मं.	१५	७	पू	१३	०	व्य	३४	२३	तै	१५	७	३३ ५६	५३	२६	१६	५	कन्या २६ ११	[illegible]	[illegible]	कुंभेपूभा२राहुसिंहेपूफा४केतु ३३/३ विवस्वत्सप्तमी,
७७	२	प्रवर्धमान	७	बु.	१८	६	उ	१७	४५	व	३४	४१	व	१८	६	५७	५४	२६	१७	६	कन्या	[illegible]	[illegible]	म. १८/६ उप. ५०/६ या.,
७८	३	राक्षस:	८	गु.	२२	६	ह	२३	२३	प	३५	३६	ब	२२	६	५६	५५	२६	१८	७	तुला ३५	[illegible]	[illegible]	पूफायांभौम ४५/२६ग ३५/२
७९	४	मुसल:	९	शु.	२६	४९	चि	२९	२८	शि	३७	४	कौ	२६	४९	५५	५५	२६	१९	८	तुला	[illegible]	[illegible]	भड्डलीनवमी(सूनम),गिरिजापूजा C परीक्षण,शिवशयनोत्सव,
८०	५	सिद्धि:	१०	श.	३१	४६	स्वा	३६	६	सि	३८	४०	ग	३१	४६	५३	५५	२६	२०	९	तुला	[illegible]	[illegible]	वक्रीशनि ८७ श ११ ।४७/१ग २/४ आशा१०व्रतं,मन्वादि,गुप्तनवरात्रपूर्ण पारणा
८१	६	उत्पात	११	सू.	३६	२५	वि	४२	२५	सा	४०	१३	व	४	७	५२	५६	२८	२१	१०	वृश्चिक २५ १०	[illegible]	[illegible]	म. ४/७ उप. ३६/१ या.,पुनर्वसुरवि ११/७,सं.स्त्री.नपुं.चं.सू.वाहनअश्व A
८२	७	मानस	१२	चं.	४१	३	अ	४८	६	शु	४१	१८	ब	८	४६	५१	५६	२८	२२	११	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]	रोहिण्यांशुक्र ३६/४ ग ५/६ भगआदित्य१२व्रतं,गोपद्मव्रतं,हरिवासराऽभाव
८३	८	मुद्गर	१३	मं.	४४	३७	ज्ये	५३	१	शु	४१	४४	कौ	१२	५०	४९	५६	२८	२३	१२	धनु ५३	[illegible]	[illegible]	पुक्ष४बुध १५ ग ६५,आर्द्रा३गुरु २/४ ग ३३/०,बिच्छुडा ५३ या.प्रदोष
८४	९	ध्वज:	१४	बु.	४७	६	मू	५६	५१	ब्र	४१	२०	ग	१५	५१	४८	५६	२८	२४	१३	धनु	[illegible]	[illegible]	म. ४७/६ उप.,कोकिलाव्रतं,जैनचातुर्मासप्रा. B प्रारंभ,ताजीया
८५	१०	प्रजापति	१५	गु.	४८	२२	पू	५९	२८	ऐं	४०	०	वि	१७	४४	४७	५७	२८	२५	१४	धनु	[illegible]	[illegible]	म. ४७/४४ या.,वक्रीबुध ३६/५ बु. ११/१५ ।४०/२ग १६ गुरुपूर्णिमा,व्यासपूजा,सायंपवन C

A उपवाहन कूकड़ कोरो,बिच्छुडा ३/५०उप.,देवशयनी१४व्रतंसर्वे,चातुर्मास B

गोचर ग्रहा:

अगस्त्यास्त:,गुरुअस्त प. बुधोदय प.,शुक्रोदयपूर्वे

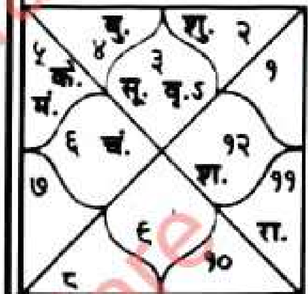

आषाढ़ शुक्ला ८ गुरु
गण ७८, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ १२ ५० ३१	३ ६ १६ १८	२ १२ १० ४३	१ ४ ५६ १२	११ १ ४२ १०	१० २६ ३८ ३०	४ २६ ३८ ३०
३६ ३०	४५ ४६	१३ ४४	६७ ४९	४ १२	३ ११	३ ११
मघा४	पुष्य२	आर्द्रा	कृत्तिका३	पूभा३	पूभा४	पूफा४
अमृत	जल	सौम्य	प्रचंड	नीर	नीर	जल

पश्चिम में विग्रह हो,पांचगुरु में देख। शस्त्र विद्या बल बढ़े,चाणक्य नीति को पेख।।१।। पड़वा मूल आषाढ़ वद,भूकम्पन को योग। रोहिणी चौदस शोक चहुं,छत्रभंग को भोग।।२।। सुदी आषाढ़ी पंचमी,अथवा पूनम देख। धन धान्य सुख संपदा,शुभवारी को लेख।।३।। आषाढ़ वदी एकम बीज जो मेघा वर्षन्त। एक मास वर्षे नहीं,फिर वर्षा होवन्त।।४।। चौदश रोहिणी आषाढ़ वद,राज युद्ध अरु शोक। आषाढ़ी पूषा पूर्णिमा,खण्ड वृष्टि चहुं लोक।।५।। मिथुनेऽर्क रविवार में,आर्द्रा भी रविवार। फसल जले गर्मी पड़े,खण्ड वृष्टि जलधार।।६।। उत्तरादि कांठल दिखे,पूरब उत्तर वाय। घड़ी पलक में माछजी,बरस्या बिना न जाय।।७।। उत्तरादि काली घटा,दक्षिण आंधी वाय। पण ऊफणता नीर ज्यूं,आई घटा उड़ाय।।८।।

आषाढ शुक्ला १५ गुरु
गण ८५ , इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ १७ ५ १२	३ १५ ३२ ५५	२ १३ ४६ २८	१ १२ ५३ ५३	११ १ ३३ ४३	१० २६ १६ १४	४ २६ १६ १४
३६ २२	७६ ०	१३ ३०	६८ ५८	३ २४ +	३ ११	३ ११
पूफा२	पुष्य३	आर्द्रा	रोहिणी१	पूभा४	पूभा३	पूफा४
जल	जल	सौम्य	प्रचंड	नीर	नीर	जल

गोचर ग्रहा:

शनिवक्र,गुरुअस्तप., शुक्रोदयपूर्वे,बुधउदयप.

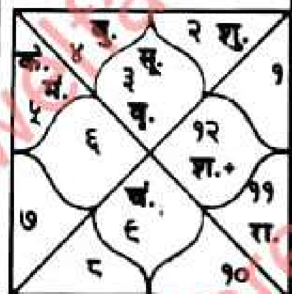

विशेषांक प्रकाशन दि. 1 जनवरी 2025 ई.

श्रावण कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः १९४७ (लघुगण ८६ से ९९)

दिनांक ११ जुलाई से २४ जुलाई २०२५ई.तक। वर्षाऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः, उत्तरगोलेः।
(आषाढ़ कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योग	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.		मध्याह्न	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
८६	११	आनंदः	१	शु.	४८	१६	उ	६०	०	वै	३७	४०	बा	१८	२०	३३	५/५८	७/२८	२६	१५	मकर ४१/४८	[illegible]	[illegible]	हिंडोलाप्रा., अशून्यशयनव्रतप्रा. चंद्रोदयव्यापिनी
८७	१२	राक्षसः	२	श.	४७	३	उ	०	५०	वि	३४	२०	तै	१७	४१	४४	५८	२८	२७	१६	मकर	[illegible]	[illegible]	गुरुउदयपू. २४/५६
८८	१३	गदः	३	सू.	५०	३४	श्र	०/५८	५६/५६	प्री	३०	१	व	१८	४८	४३	५८	२८	२८	१७	कुंभ ३०/३८	[illegible]	[illegible]	भ. १९/४८ उप. ५०/३४ या., बुधास्तप. ३६/५६, पंचक ३०/३८ उप.
८९	१४	अमृतः	४	चं.	४०	५७	श	५८	१	आ	२४	५०	ब	१५	४५	४३	५८	२८	२६	१८	कुंभ	[illegible]	[illegible]	चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय ३/५ बजे।
९०	१५	काणः	५	मं.	३६	३२	पू	५५	१४	सौ	१८	५४	कौ	८	४४	४१	५६	२७	३०	१९	मीन ४०/५५	[illegible]	[illegible]	नागपंचमी(मठ.),
९१	१६	लुंबकः	६	बु.	३१	२४	उ	५१	४६	शो	१२	२१	ग	३	५८	४०	५६	२७	३१	२०	मीन	[illegible]	[illegible]	भ. ३१/२४ उप. ३/५ या., कर्केऽर्कः ३६/२१, वक्रीपुनश्चबुध १२/० ग ६६/१३
९२	१७	मैत्रः	७	बृ.	२५	४४	रे	४७	५८	अ	[illegible]	[illegible]	ब	२५	४४	३६	५६	२७	१	२१	मेष ४७/५८	[illegible]	[illegible]	पंचक ४७/५८ या.
९३	१८	वज्रः	८	शु	१६	४३	अ	४३	५२	धृ	५०	१९	कौ	२६	४३	३७	१	२७	२	२२	मेष	[illegible]	[illegible]	
९४	१९	ध्वांक्षः	९	श.	१३	४७	भ	३६	४३	शू	४२	४४	ग	१३	४७	३६	१	२७	३	२३	वृषभ	[illegible]	[illegible]	भ. ४०/३७ उप., वक्रीपुनश्चबुध ६/२१ ग. ४६/६, मृगेशुक्र ५/३२ ग ६६/६०
९५	२०	धूम्राः	१०	सू.	७	२८	कृ	३५	४४	गं	३५	१७	वि	७	२८	३५	१	२७	४	२४	वृषभ	[illegible]	[illegible]	भ. ७/२८ या., पुष्येरवि २०/६, सं. स्त्री. पु. चं. चं. वाहनघातक, उपवाहन A
९६	२१	प्रवर्धमान	११	चं.	१	३४	रो	३२	५	वृ	२८	६	बा	१	३४	३३	१	२७	५	२५	वृषभ	[illegible]	[illegible]	कामिका१व्रतंसर्वे, A कच्छप वाढ़। दशामाता व्रतं,
०	०	०	१२	चं.	५६	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	
९७	२२	राक्षसः	१३	मं.	५१	१३	मृ	२८	४	ध्रु	२१	२१	ग	२३	३६	३२	२	२६	६	२६	मिथुन ०/३४	[illegible]	[illegible]	भ. ५१/१३ उप., सिंहेभानुः ३/३, आद्रा४गुरु ५०/३५ ग १२/५८ प्रदोष,
९८	२३	मुसलः	१४	बु.	४७	५	आ	२६	४१	व्या	१५	१०	वि	१९	६	२६	२	२६	७	२७	मिथुन	[illegible]	[illegible]	भ. १९/६ या., वक्रीपुनश्चबुध ७/१३ ग १२/३८, तिलकजयंति, आजाद जयंति
९९	२४	सिद्धिः	३०	बृ.	४४	२	पु	२५	१५	ह	६	४१	च	१५	३३	२६	३	२५	८	२८	कर्क १०/३६	[illegible]	[illegible]	मिथुनेशुक्र ५५/२१ दैवकार्ये अमा., हरियालीअमावस,

गोचर ग्रहाः
बुधास्तप., गुरुउदयपूर्वे शुक्रोदयपू., बुधवक्री

श्रावण कृष्णा ८ शुक्र
गण ९३, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ २१ ५६ १०	३ ११ १६ १३	२ १५ ३४ ३५	१ २२ ५ ४७	११ १ ६ ३०	१० २५ ५० ४८	४ २५ ५० ४८
३६ २२	९९ १३ +	१३ ३०	९८ ५९	३ २४ +	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्रावण कृष्णा ६ बुध कर्केऽर्क प्रवेशः। वारात् ४तेजी,दुर्भिक्ष। नक्षत्रात् ५ दुर्भिक्ष,तेजी। वार नाम मंदाकिनी,नृपसुखी। नक्षत्र नाम मंदा क्षिप्र सुखी। संक्रांति काल अपर रात्री,नर सुखी। संक्रांति मुख दक्षिणे मुख ,ईशान दृष्टि,पश्चिमे गमनं। विष्टि कर्णे बैठी,तेजी। अश्व वाहन,सिंह उपवाहन,स्थैर्य। धूम्र वस्त्र,कुन्ता आयुध,ताम्र पात्र,मिष्ठान्न भोजन, हलिद्रा लेपन,क्षत्रिय जाति,कमल पुष्प,गुंजा भूषण,नील कंचुकी,वृद्धा अवस्था,ईशान मुख,रसना वाद्य,भक्तियुता अवस्था। संक्रांति हस्ते पीत फल,लक्ष्मी प्राप्ति। संक्रांति निवास संधि,वैश्य गृहे तेजी,खंड वृष्टि। मु.४५ मंदी। संक्रांति पुण्यम् पर दिने प्रथम प्रहरे पुण्यकाल। वत्स निवास उत्तरे। त्रैमासिक राहु पश्चिमे। शुक्रोदय पूर्वे।

श्रावण कृष्णा ३० गुरु
गण ९९, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ २५ ३४ २३	३ ६ २६ ४५	२ १६ ५५ २	१ २९ ३ ५५	११ ० ४६ ५	१० २५ ३१ ४३	४ २५ ३१ ४३
३६ २२	११ ३६ +	१२ ५८	६६ ५०	३ २४ +	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गोचर ग्रहाः
अगस्तास्तः,बुधास्तप. गुरु,शुक्र उदयपूर्वे

श्रावण शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण १०० से ११५)

दिनांक २५ जुलाई से ९ अगस्त २०२५ ई.तक। वर्षा ऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः,उत्तरगोलेः। (श्रावण शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रे:)

लघुगण	तारीख	योग	तिथि १६	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	क्रां.	मासिकम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
१००	२५	उत्पात	१.	शु.	४२	१	पु	२४	५४	व्र	५	२	किं	१३	१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६	२९	कर्क	[illegible]	[illegible]
१०१	२६	मानस	२.	श.	४१	१३	श्ले	२५	४३	सि	[illegible]	[illegible]	बा	११	३७	१९	४	२४	१०	३०	सिंह [illegible]	[illegible]	[illegible]
१०२	२७	मुद्गर	३.	सू.	४१	४२	म	२७	४८	व	५६	३३	तै	११	२७	१६	५	२३	११	१	सिंह	[illegible]	[illegible]
१०३	२८	ध्वजः	४.	चं.	४३	३६	पू	३१	८	प	५५	४७	व	१२	४०	१३	५	२३	१२	२	कन्या [illegible]	[illegible]	[illegible]
१०४	२९	प्रजापति	५.	मं.	४६	२७	उ	३५	३६	शि	५५	५३	बा	१५	२७	१०	६	२२	१३	३	कन्या	[illegible]	[illegible]
१०५	३०	आनंदः	६.	बु.	५०	२३	ह	४१	२	सि	५६	४७	कौ	१८	२५	७	७	२१	१४	४	कन्या	[illegible]	[illegible]
१०६	३१	चर	७.	बृ.	५५	१	चि	४७	१०	सा	५८	६	ग	२२	४२	४	७	२१	१५	५	तुला [illegible]	[illegible]	[illegible]
१०७	१	गदः	८.	शु.	५६	५७	स्वा	५३	३५	शु	५६	३६	वि	२७	२६	४	७	२१	१६	६	तुला	[illegible]	[illegible]
१०८	२	शुभः	९.	श.	६०	०	वि	५६	५८	शु	६०	०	बा	३२	२४	१	८	२०	१७	७	वृश्चिक [illegible]	[illegible]	[illegible]
१०९	३	मृत्युः	९.	सू.	४	५२	अ	६०	०	शु	१	६	कौ	४	५२	[illegible]	८	२०	१८	८	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]
११०	४	मानसः	१०	चं.	६	१८	अ	५	५४	ब्र	२	१७	ग	६	१८	५४	६	१६	१६	६	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]
१११	५	मृद्गर	११	मं.	१२	५१	ज्ये	११	३	ऐं	२	५०	वि	१२	५१	५१	१०	१८	२०	१०	धनु [illegible]	[illegible]	[illegible]
११२	६	ध्वजः	१२	बु.	१५	२७	मू	१५	६	वै	२	३५	बा	१५	२७	४८	१०	१८	२१	११	धनु	[illegible]	[illegible]
११३	७	प्रजापति	१३	बृ.	१६	४६	पू	१८	१	वि	[illegible]	[illegible]	तै	१६	४६	४५	११	१७	२२	१२	मकर [illegible]	[illegible]	[illegible]
११४	८	आनंदः	१४	शु.	१६	५३	उ	१९	४३	आ	५७	५	व	१६	५३	४२	१२	१६	२३	१३	मकर	[illegible]	[illegible]
११५	९	सुस्थिरः	१५	श.	१५	४२	श्र	२०	७	सौ	५१	५५	व	१५	४२	३९	१२	१६	२४	१४	कुंभ [illegible]	[illegible]	[illegible]

उफायांभौम [illegible] ग [illegible] .नक्तव्रतारंभः A तृतीयाक्षुर्द,स्वर्णगौरीव्रत,
धनोदयपु.३०सम, B हस्तउपाकर्म,
,करपात्रीजीजयं.सफरमा.-२मुस.,सुकृतव्रत,श्रावणीतीज,मधुश्रवा A
म.[illegible]उप.[illegible]या.,बुधोदयपूर्वे [illegible] वरदचतुर्थी,दुर्वागणपतिव्रत,मंगलवासव्रतआ.,
नाग५,नागपंचमीव्रत,रोटकव्रत.मंगलागौरीव्रत
आद्रायांशुक्र [illegible] ग [illegible] कन्यायांभौम [illegible] श्रीकल्किजयंति,वर्ण६,ऋग्वेदीय B
म.[illegible] उप.,शीतलासप्तमी पूजनं,गोस्वामी तुलसीदासजयं.,
म.[illegible]या.,मार्गीबुध [illegible] बु.[illegible] ग [illegible] दुर्गाष्टमी,
बिच्छुडा[illegible]उप. C कोरो। कल्कि जयं.१०सायंकाले,वीरपुली
आश्लेषायांरवि[illegible],सं.स्त्री.नपुं.चं.सू.वाहनगज,उपवाहनकुक्कुड C
म.[illegible]उप., D पवित्रतंप्रा.(पविमवणत्याग.[illegible] शु.१स्तक)
म.[illegible]या.,बिच्छुडा[illegible]या.पवित्रा१व्रतं स्मार्ता पवित्रा१व्रतं वैष्णवा,
वक्रीपूषा३कुंभेशनि[illegible]ग[illegible] त्वष्टाआदित्य१व्रतं,प्रदोष, पवित्रारोपण, D
पुनर्वसु भगुरु[illegible]ग[illegible] E वेदारंभश्रावणीउपाकर्म यजु,ऋगु,अथर्व.,रक्षाबंधन
म.[illegible]उप.[illegible]या.,वीरदुर्गादासराठौड़३८९वीचतुर्दशीजन्मः।
पंचक[illegible]उप.पूर्णिमाव्रत, हयग्रीवजयं.तैत्तरीय,अमरनाथयात्रा,नारियल१५, E

गोचर ग्रहाः

गुरु,शुक्र,बुध उदय पूर्वे बुध+शनि वक्री

श्रावण शुक्ला ८ शुक्र गण १०७, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ ० ४३ ३१	३ ४ ५६ २४	२ १८ ३८ ४८	२ ८ २३ ९	११ ० १८ ५१	१० २५ ६ १७	४ २५ ६ १७
३६ १८	११ ३६ +	१२ ५८	७० १०	३ २४ +	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पांच भृगु इण मास में,बहु प्रजा सुभिक्ष। भोग विलास बलात्कार बढ़े,क्षोभ रोग दुर्भिक्ष।।१। श्रावणवदी एकादशी,रोहिणी करे सुगाल। क्षया द्वादशी रजस्वला,मिले रोग दुकाल।।२।। कर्क मकर दोय बेनड़ी,बैठत एकही वार। कै प्रजा भूखे घणी मरे,के पड़े अणचिंत्यो काल।।३।। रोहिणी श्रावण वर्षे नहीं,नहीं पंचक जलधार। पाराशर ऋषि तो इम कहे,होसी हाहाकार।।४।। अश्वनी कृत्तिका चित्रिका,स्वात विशाखा मेघ। औगुण सारा गालसी,घण वर्षा फाटत मेघ।५। बादल पीत शीत जलधुरो,सुरंग जलद जल वर्षे। बादल हरियो चूवे छपरियों,श्याम घटा मन हरषे।।६।। आम्हां साम्हां बादला,पूरब पश्चिम वाय। वर्षण गाज बिजली पड़े,दस दिन झड़ी लगाय।।७।। दक्षिण से उत्तर बादला,उत्तर दक्षिण वाय। खंड वृष्टि तो करवरी,मंडे तो झड़ी लगाय।।८।।

श्रावण शु.१५ शनिवार गण ११५, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ ५ ५७ ५६	३ ६ १३ ४५	२ २० २० ५६	२ १७ ३३ ३७	१० २९ ५० ४१	१० २४ ४० ५०	४ २४ ४० ५०
३६ १८	१० १७ मा	१२ २	७० १०	३ ४७ +	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गोचर ग्रहाः

बुधोदयपूर्वे मार्गी, गुरु,शुक्रउदयपू.

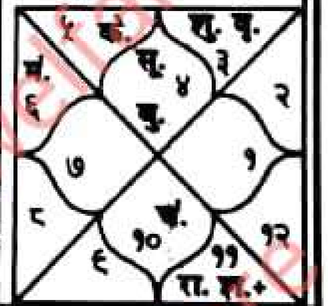

विशेषांक प्रकाशन दि.1 जनवरी 2025 ई.

भाद्रपद कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः १९४७(लघुगण ११६से१२९)

दिनांक १० अगस्त से २३ अगस्त २०२५ई.तक। वर्षा/शरदऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः, उत्तरगोलेः। (श्रावण कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

लघुगण	तारीख	योग	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.			चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
११६	१०	मातंग:	१	सू.	१३	१७	ध	१६	२४	शो	४६	५२	कौ	१३	१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२५	१५	कुंभ	[illegible]	[illegible]
११७	११	अमृत:	२	चं.	६	५२	श	१९	३८	अ	४१	२	ग	६	५२	३२	१३	१३	२६	१६	कुंभ	[illegible]	[illegible]
११८	१२	काण:	३	मं.	५	३१	पू	१५	२	सु	३४	३४	वि	५	३१	२८	१३	१३	२७	१५	मीन	[illegible]	[illegible]
११९	१३	लुंबक:	४	बु.	०	२४	उ	११	४५	धृ	२८	३४	बा	०	२४	२८	१४	१२	२८	१८	मीन	[illegible]	[illegible]
०	०	०	५	बु.	५४	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
१२०	१४	मित्र:	६	गु.	४८	५८	रे	७	५८	शू	२१	१०	ग	२१	५३	२३	१४	१२	२८	१६	मेष	[illegible]	[illegible]
१२१	१५	वज्र:	७	शु.	४२	५१	अ	[illegible]	[illegible]	गं	१३	३६	वि	१५	५५	२०	१४	१०	३०	२०	मेष	[illegible]	[illegible]
१२२	१६	ध्वज:	८	श.	३६	४६	कृ	५५	४३	वृ	[illegible]	[illegible]	बा	६	४८	१७	१५	६	३	२१	वृषभ	[illegible]	[illegible]
१२३	१७	प्रजापति	९	सू.	३१	०	रो	[illegible]	[illegible]	व्या	५०	१०	तै	३	५३	१४	१५	६	३२	२२	वृषभ	[illegible]	[illegible]
१२४	१८	आनंद:	१०	चं.	२५	१६	मृ	[illegible]	४६	ह	४३	१७	वि	२५	१६	११	१६	८	१	२३	मिथुन	[illegible]	[illegible]
१२५	१९	चर:	११	मं.	२०	३६	आ	४६	१५	व	३६	५७	बा	२०	३६	७	१७	७	२	२४	मिथुन	[illegible]	[illegible]
१२६	२०	गद:	१२	बु.	१६	३२	पु	४४	३५	सि	३१	१७	तै	१६	३२	४	१७	७	३	२५	कर्क	[illegible]	[illegible]
१२७	२१	शुभ:	१३	गु.	१३	२५	पु	४३	५७	व्य	२६	२८	व	१३	२५	०	१७	५	४	२६	कर्क	[illegible]	[illegible]
१२८	२२	मृत्यु:	१४	शु.	११	२३	श्ले	४४	३०	व	२२	२०	श	११	२३	[illegible]	१७	५	५	२७	सिंह	[illegible]	[illegible]
१२९	२३	[illegible]	३०	श.	१०	३६	म	४६	१६	प	१६	२१	ना	१०	३६	५४	१८	४	६	२८	सिंह	[illegible]	[illegible]

पुनर्वसुशुक्र [illegible] ग [illegible]
म. [illegible] उप.,मार्गीपुष्य२बुध [illegible] ग [illegible] A चतुर्थीयुक्ता
म. [illegible] या.,बहुलाचौथचंद्रोदय [illegible] बजे,संकष्टचतुर्थीव्रत ,कज्जलीतीज A
नागपंचमी, B ,हलषष्ठ,शिलाषष्ठीदिवस
E आश्लेषायांबुध [illegible] ग [illegible], ज्वालामुखी [illegible] या सिंहस्थसूर्य,गोगा९
म. [illegible] उप.,पंचक [illegible] या. हलषष्ठी(ऊबछठ)चंद्रोदय [illegible] बजे B
म. [illegible] या.,हस्तेभौम [illegible] ग [illegible],ज्वालामुखी [illegible] उप.,स्वतंत्रतादिवस७९वां C
ज्वालामुखी [illegible] या. [illegible] उप.,श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतवैष्णवा(सप्तमीविद्धानकार्या) D
म. [illegible] उप.मघायांसिंहे ऽर्क [illegible],सं.सौ.पु.चं.सु.वाहनंमेष,उदयकालव्यापक वाद E
म. [illegible] या., C श्रीकृष्णजयंतीस्मार्ता(अर्द्धरात्रिव्यापिनीअष्टमी)चंद्रोदय [illegible] बजे,
कर्केशुक्र [illegible] अजा११ व्रतस्मार्ता वैष्णवा, D चंद्रोदय [illegible] बजे,मन्वादि
वत्सबारस,वत्सपूजन,निम्बार्क१व्रतं,प्रदोष,पर्युषणपर्व प्रा.जैनचतुर्थीपक्षे
म. [illegible] उप. [illegible] या.,जैनपर्युषणपर्वप्रा.पंचमीपक्षे H अमा [illegible] या.,
कन्यायांभानु [illegible],शरदऋतुआरंभ,पुष्येशुक्र [illegible] ग [illegible] G
पुनर्वसु२गुरु [illegible] ग. [illegible] देवकार्येअमा,श्रीशक्तिपूजा,मासृ३०,कुशाग्रहणी H
G कुशाग्रहणीअमा [illegible] उप पिठोरी३०सायं, अन्वाधान,पितृकार्येअमा.,

गोचर ग्रहा:

अगस्तास्त,बुधोदयपूर्वे गुरु व शुक्र उदय पू.

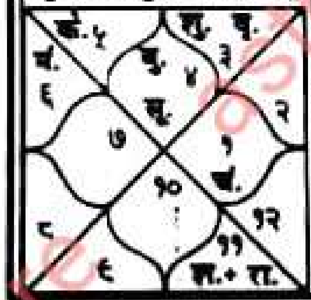

भाद्रपद कृ.८ शनिवार
लग्न १२२, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	३	२	२	१०	१०	४
१०	१४	२१	२६	२९	२४	२४
३३	४४	[illegible]	१	२४	[illegible]	[illegible]
०	७	१३	५१	११	३४	३४
३६	१०८	१२	७१	३	३	३
१४	५९	२	२०	४७	११	११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भाद्रपद कृष्ण पक्ष ९ सूर्य सिंहेऽर्क प्रवेशः। वारात् दुर्भिक्ष, तेजी। नक्षत्रात् [illegible]सर्पयोग,उपद्रवः। वार नाम घोरा,शूद्रसुखी। नक्षत्र नाम मंदा,द्विज सुखी। पूर्वे मुख,नैऋत्य दृष्टि,दक्षिणे गमनं। गर करणे बैठी,सम। हस्तीवाहन,गर्दभ उपवाहन,श्री प्राप्ति। रक्त वस्त्र,धनुषआयुध,लोह पात्र,पय भोजन,गौरोचन लेपन,मृग जाति, बिल्व पुष्प,मुकुट भूषण,श्वेत कंचुकी,प्रौढा अवस्था,वायव्य मुख, पद्म वाद्य,दुर्मुखी अवस्था। संक्रांति हस्ते श्वेत फल,सुखी। संक्रांति निवास समुद्रे,माली गृहे सुभिक्ष,मंदी। मु.४५मंदी। संक्रांति पुण्यम् स्वदिने प्रथम प्रहरे पुण्यकाल। वत्स निवास उत्तरे। त्रैमासिक राहु उत्तरे। शुक्रोदय पूर्वे।

भाद्रपद कृष्णा३० शनि
लग्न १२९, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	३	२	३	१०	१०	४
१५	२५	२३	४	२८	२३	२३
७	७	६	२१	४७	५६	५६
४३	५६	३२	४४	४०	१६	१६
३६	८१	१२	७१	३	३	३
१४	३३	२	२८	४७	११	११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गोचर ग्रहा:

अगस्तास्त

बुध,गुरु,शुक्र उदयपूर्वे

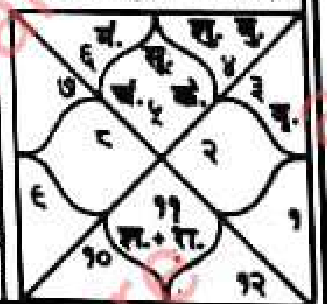

भाद्रपद शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७(लघुगण १३०से१४४)

लघुगण	तारीख	नाम	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	अंग्रेजी	मिति	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
१३०	२४	छत्रः	१.	सु.	११	४	पू	४६	१६	शि	१७	२२	ब	११	४	३३/५४	६/५८	७/४	७	२६	कन्या [illegible]	[illegible]	[illegible]
१३१	२५	श्रीवत्सः	२.	चं.	१२	५०	उ	५३	३२	सि	१६	२२	कौ	१२	५०	५०	१८	२	८	१	कन्या	[illegible]	[illegible]
१३२	२६	सौम्यः	३.	मं.	१५	४६	ह	५६	४६	सा	१६	१६	ग	१५	४६	४६	१६	१	६	२	कन्या	[illegible]	[illegible]
१३३	२७	ध्वज	४.	बु.	१६	४३	चि	६०	०	शु	१६	५६	वि	१६	४३	४२	२०	०	१०	३	तुला [illegible]	[illegible]	[illegible]
१३४	२८	चर	५.	बृ.	२४	२३	चि	४	४६	शु	१८	८	बा	२४	२३	३८	२०	०	११	४	तुला	[illegible]	[illegible]
१३५	२९	गदः	६.	शु.	२६	२३	स्वा	११	१०	ब्र	१६	३८	तै	२६	२३	३४	२१	५/५६	१२	५	तुला	[illegible]	[illegible]
१३६	३०	शुभः	७.	श.	३४	२२	वि	१७	४१	ऐ	२१	८	ग	१	५२	३०	२१	५८	१३	६	वृश्चिक [illegible]	[illegible]	[illegible]
१३७	३१	[illegible]	८.	सू.	३८	५५	अ	२३	४२	वै	२२	२०	वि	६	३६	२७	२२	५६	१४	७	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]
१३८	१	पद्मः	९.	चं.	४२	४०	ज्ये	२६	३	वि	२२	५६	बा	१०	४७	२३	२१	५५	१५	८	धनु [illegible]	[illegible]	[illegible]
१३९	२	छत्रः	१०	मं.	४५	२४	मू	३३	२४	प्री	२२	५४	तै	१४	२	१६	२२	५४	१६	९	धनु	[illegible]	[illegible]
१४०	३	श्रीवत्सः	११	बु.	४६	५३	पू	३६	३४	आ	२१	५६	व	१६	८	१५	२३	५३	१७	१०	मकर [illegible]	[illegible]	[illegible]
१४१	४	सौम्य	१२	बृ.	४७	५	उ	३८	३०	सौ	१९	५६	ब	१६	५६	११	२४	५२	१८	११	मकर	[illegible]	[illegible]
१४२	५	धूम्राः	१३	शु.	४६	२	श्र	३६	११	शो	१६	५५	कौ	१६	३	७	२४	५२	१६	१२	मकर	[illegible]	[illegible]
१४३	६	प्रवर्धमान	१४	श.	४३	४५	ध	३८	४२	अ	१२	५६	ग	१४	५३	३	२४	५०	२०	१३	कुंभ [illegible]	[illegible]	[illegible]
१४४	७	राक्षसः	१५	सू.	४०	२४	श	३७	८	सु	८	२	वि	१२	५	५९/५६	२६	४६	२१	१४	कुंभ	[illegible]	[illegible]

दिनांक २४ अगस्त से ७ सितम्बर २०२५ई.तक।

शरदृतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः,उत्तर गोलेः।

(भाद्रपद शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

चंद्रोदयमु.३०स्वरता Aमन्वादि,हरितालिकाव्र.हस्तिगौरीव्र., E गोत्रिरात्रव्र.,देवझूलनी
श्रीरामदेवबाबारी२,रविलावलमा.३मुस.,वराहजयं.,नक्तव्रतोद्यापन
म.[illegible] उप.,मघायांसिंहेबुध[illegible]ग[illegible] हस्तरक्षाबंधन सामवेदीउपाकर्म, A
म.[illegible]या., सिद्धिविनायकव्रतचंद्रदर्शननिषेध,जैनसंवत्सरी पर्व,
ऋषिपंचमी,अंगीराजयं.,गर्गजयं.,दिगंबरपर्युषणपर्व प्रारंभ
सूर्यषष्ठी,ललिता६व्रतं,स्कन्ददर्शनं, बलदेवव्रतं,संवत्सरीपूर्ण(जैन),पंचमीपक्षे
म.[illegible] उप.,बिच्छुड़ा[illegible]उप.भागवतसप्ताहप्रा.
म.[illegible]या.,पूफायांरवि[illegible],सं.स्त्री.नपुं.सू.सू.वाहनमहिष,उपवाहन हाथीC
बुधास्तपूर्वे[illegible],बिच्छुड़ा[illegible]या. नवमीव्रतं, Dमहालक्ष्मीव्रत मूलभेपूर्ण।
आश्लेषायांशुक्र[illegible]ग[illegible] दशावताव्रतं,तेजादशम,खेजड़लीब.वि.२९५वां, D
म.[illegible]उप.[illegible]या.,कुंभेपूभा१राहुसिंहेपूफा३केतु[illegible]पद्मा१व्रतंसर्वे,भागवताE
चित्रायांभौम[illegible]ग[illegible],पूफायांबुध[illegible]ग[illegible] निम्बार्क१व्रतं,वामनजयं मौनव्रता F
प्रदोष,शिक्षक दिवस, बारहव्रफात G कुमारीणांसंध्यापू.,महालयश्राद्धारंभः
म.[illegible]उप.,अगस्त्योदय[illegible],पंचक[illegible]उप. अनन्त१४व्रतं Fरंभः,श्रवण१२व्र.
म.[illegible]या.,खग्रासचंद्रग्रहण[illegible]बजेप्रा.,पूर्णिमाश्राद्धः,प्रोष्ठपदी१५,फूलडोलयात्राG
C बहुगर्मी,महालक्ष्मीव्रत.अनुभेप्रा, राधा८, दूर्वाष्टमी,गौरीगणपतिपू.,

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्तः
बुध,गुरु,शुक्र उदयपूर्वे

भाद्रपद शुक्ला ८ सूर्य गण १३७ , इष्ट ०/०

म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ २० २१ ४२	४ ६ ४५ ८	२ २४ ३३ २४	३ १३ ५७ ३४	१० २८ २७ २२	१० २३ ३० ५२	४ २३ ३० ५२
३९ १४	८८ १६	१० १७	७१ ५८	३ ४७ +	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दुर्भिक्ष छत्रभंग भय,रविवार हो पांच। भ्रष्टाचार आतंक बढ़े,बाहुबली घर आंच।।१।। भादो क्वी शनि अमा,रौरव योग लेख। पिता पुत्र में द्वेष हो,घाटा तोटा देख।।२।। भादों में जल नाड़ी ग्रह,अति वृष्टि कहीं काल। कहीं दुर्भिक्ष कहीं जलदाह जनता हाल बेहाल।।३।। ग्रहण समय हो बादला,अथवा झबूके बीज। अवगुण सारा गल गया, सखिया खेलो तीज।।४।। अर्धबिम्ब आकाश में,इन्द्र धनुष हो जाय। हीर बढ़े सुन माथजी,अन्न न मोले थाय।।५।। इन्द्रधनुष पूरब उत्तर प्रात समय में देख। अचानक वर्षा होय,हीर बढ़े सुण माथजी।।६।। सांझ समय पश्चिम धनुष,दिन तीसरे मेह। पाछिन जल ग्रहण,वर्षे तो झड़ी लागे माथजी।।७।। तीतर पंखी बादली,विधवा काजल रेख। वा वर्षे वा घर करे,इन में मीन न मेख।।८।।

भाद्रपद शुक्ला १५ सूर्य गण १४४, इष्टः ०/०

म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ २४ ५८ २१	४ १७ ५२ ५३	२ २५ ४५ २७	३ २२ २४ १६	१० २८ ० ५२	१० २३ ८ ३७	४ २३ ८ ३७
४० १	१०७ ५२	१० १७	७२ ३५	३ ४७ +	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गोचर ग्रहाः

बुधास्तपू.,अगस्त्योदय
गुरु,शुक्रउदयपू.,चंद्रग्रहण

विशेषांक प्रकाशन दि.1 जनवरी 2025 ई.

आश्विन कृष्णपक्षः श्रीविकम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७(लघुगण १४५ से १५८)

दिनांक ८ सितम्बर से २१ सितम्बर २०२५ ई.तक।

शरद्ऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः,उत्तरगोलेः।

(भाद्रपद कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

	तारीख		तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	[illegible]	स्पष्टार्द्ध जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
१४५	८	मूसल:	१	चं.	३६	११	पू	३४	४१	पू	३/२०	५५/५८	बा	८	१७	३०/५५	३५/२५	५७	२२	१५	मीन २६/१७	[illegible]	[illegible]
१४६	९	सिद्धि:	२	मं.	३१	१२	उ	३१	३२	गं	४६	३	तै	३	४१	५१	२६	४६	२३	१६	मीन	[illegible]	[illegible]
१४७	१०	उत्पात	३	बु.	२५	३६	रे	२७	५२	शू	४१	४४	वि	२५	३६	४७	२७	४५	२४	१७	मेष २७/५२	[illegible]	[illegible]
१४८	११	मानस:	४	बृ.	१९	२५	अ	२३	५०	गं	३४	१०	बा	१९	२५	४३	२६	४४	२५	१८	मेष	[illegible]	[illegible]
१४९	१२	[illegible]	५	शु.	१३	२३	भ	१९	४१	व्या	३६	३१	तै	१३	२३	३९	२७	४३	२६	१९	वृषभ ३५/१३	[illegible]	[illegible]
१५०	१३	[illegible]	६	श.	७	२३	कृ	१५	३६	ह	१८	५५	व	७	२३	३५	२८	४२	२७	२०	वृषभ	[illegible]	[illegible]
१५१	१४	[illegible]	७	सू.	०	३६	रो	११	४८	व	११	२८	व	०	३६	३१	२८	४०	२८	२१	मिथुन ३६/३७	[illegible]	[illegible]
०	०	०	८	सू.	५६	८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
१५२	१५	आनंद:	९	चं.	५१	२५	मृ	७	२७	सि	५/२७	५९/३१	तै	२३	४६	२८	२८	४०	२९	२२	मिथुन	[illegible]	[illegible]
१५३	१६	चर	१०	मं.	४७	२४	आ	५	४५	व	५१	३६	व	१९	२४	२४	२९	३६	३०	२३	कर्क ३६/२१	[illegible]	[illegible]
१५४	१७	[illegible]	११	बु.	४४	२१	पु	३	५३	व	४६	२८	ब	१५	५२	२०	२९	३७	३१	२४	कर्क	[illegible]	[illegible]
१५५	१८	शुभ:	१२	बृ.	४२	२२	पु	३	२	शि	४२	१२	कौ	१३	२१	१६	३०	३६	१	२५	कर्क	[illegible]	[illegible]
१५६	१९	[illegible]	१३	शु.	४१	४७	आश्ले	३	१६	सि	३८	५४	व	१२	४	१२	३१	३५	२	२६	सिंह १६	[illegible]	[illegible]
१५७	२०	[illegible]	१४	श.	४२	६	म	४	४६	सा	३६	३६	वि	११	५८	८	३१	३४	३	२७	सिंह	[illegible]	[illegible]
१५८	२१	[illegible]	३०	सू.	४३	५८	पू	७	३५	शु	३५	१७	च	१३	३	४	३१	३३	४	२८	कन्या ३१	[illegible]	[illegible]

प्रतिपदाश्राद्ध B डेडरोंबहुवर्षा,मघायांसिंहेशुक्र ३६/३८ग ११/१३,कन्यायांबुध १७/१८ C

C चन्दनषष्ठीललिताव्रत,सप्तमीश्राद्ध ७/२३उप.

म.५५/५६ उप., द्वितीयाश्राद्ध

म.३४/३६या.,पंचक २७/५२या. तृतीयाश्राद्ध ,चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय ६/९ बजे,

उफायांबुध ६३/१६ग ७०/७५,ज्वालामुखी २३/५० उप.चतुर्थीश्राद्ध A चंद्रषष्ठी

पुनर्वसु३गुरु ३३/४१ग ७/५०,ज्वालामुखी ३३/३३या,पंचमीश्राद्ध २३/२३या.,षष्ठीश्राद्ध, A

म.७/२३उप.३४/५०या.,उफायांरवि ३४/३७,सं.स्त्री.पु.सु.सू.वाहनजंबुक,उपवाहन B

तुलेभौम १२/१९ महालक्ष्मीव्रतं चंद्रोदय ७/११ बजेपूर्ण, अष्टमीश्राद्ध:३६/३६उप. D

D अशोकाष्टमी, सूर्यसप्तमी,राष्ट्रभाषा दिवस

मातृनवमीश्राद्ध,सौभाग्यमातृनवमी

म.२५/२४उप.३६/२४या.दशमीश्राद्ध

कन्यायां ऽर्कः ३६/५६ एकादशीश्राद्ध,इन्दिरा११व्रतंसर्वे.,

सन्यासिनांमहालय,द्वादशीश्राद्ध,निम्बार्क१व्रतं

म.४१/४७ उप.,हस्तेबुध ३६/६ग २०/२४ प्रदोष, कलियुगादि१३ गोदानफलत्रयोदशीश्राद्ध,

म.११/५८या., शस्त्रादिक अपमृत्यु,१४श्राद्ध

देवपितृकार्येअमा,सर्वपितृश्राद्ध अज्ञाततिथिश्राद्धः, संध्यापूजनपूर्ण,

गोचर ग्रहाः

बुधास्त पूर्वे,अगस्त्योदय गुरु,शुक्र उदय पूर्वे

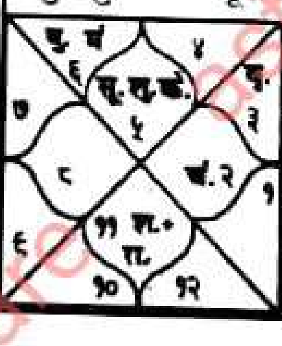

आश्विन कृ.७+८ सूर्य गत १५१, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ २६ ३८ ३५	५ ० २२ १४	२ २६ ५३ २१	४ ० ५२ ५४	१० २७ ३४ २१	१० २२ ४६ २१	४ २२ ४६ २१
४० १	१०५ ७	७ १०	७३ १२	३ ४७ +	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आश्विन कृष्णा ११ बुध कन्याऽर्क प्रवेशः। वारात् ४ तेजी,दुर्भिक्ष। नक्षत्रात् ५ दुर्भिक्ष तेजी। वार नाम मन्दाकिनी,नृपसुखी। नक्षत्र नाम ध्वांक्षी,वैश्य सुखी। संक्रांति काल मध्यान्हे,वैश्य सुखी। दक्षिणे मुख, ईशान दृष्टि,पश्चिमे गमनं। बालव करणे बैठी,सम। व्याघ्र वाहन अश्व उपवाहन ,भय। पीत वस्त्र गदा आयुध,चांदी पात्र,खीरभोजन ,कुंकुम लेपन,वणिक् जाति,जूही पुष्प,कंकण भूषण,पर्ण कंचुकी, कुमारी अवस्था,दक्षिण मुख,भेरी वाद्य,भोगा अवस्था। हस्ते श्वेत फल,प्रजा सुखी। संक्रांति निवास संधि,वैश्य गृहे खण्ड वृष्टि,तेजी। मु.३०स्थिरता। संक्रांति पुण्यम् स्वदिने द्वितीय यामे पुण्यकालः। वत्स निवास पूर्वे। त्रैमासिक राहु उत्तरे। शुक्रोदय पूर्वे।

आश्विन कृष्णा३० सूर्य गत १५८, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ ४ १८ ४८	५ १२ ३४ १	२ २७ ४८ १४	४ ६ २५ २१	१० २७ ७ २१	१० २२ २४ ५	४ २२ २४ ५
४० १	१०२ २४	७ १०	७३ १२	३ ४७ +	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गोचर ग्रहाः

बुधास्त पूर्वे गुरु व शुक्र उदय पूर्वे

आश्विन शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७(लघुगण१५९ से १७४)

दिनांक २२ सितम्बर से ७ अक्टूम्बर २०२५ ई.तक।
शरद् ऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायने:,उत्तर/दक्षिणगोले:।
卐 (आश्विन शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रे:)

	तारीख	आनन्दादि योग	तिथि १६	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टैण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	ता.	मासिक	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
१५९	२२	श्रीवत्सः	१.	चं.	४६	५९	उ	११	३४	शु	३४	५५	किं	१५	२८	३० ०	६ ३२	६ ३१	५	२९	कन्या	[illegible]	[illegible]
१६०	२३	सौम्य	२.	मं.	५१	०	ह	१६	३६	ब्र	३५	२३	बा	१९	०	२९ ५६	३२	३०	६	३०	तुला ४६/३१	[illegible]	[illegible]
१६१	२४	कल	३.	बु.	५५	४५	चि	२२	२७	ऐ	३६	२६	तै	२२	५२	५२	३३	२९	७	१	तुला	[illegible]	[illegible]
१६२	२५	सुस्थिर	४.	गु.	६०	०	स्वा	२८	४८	वै	३७	४९	व	२७	५९	४८	३३	२८	८	२	तुला	[illegible]	[illegible]
१६३	२६	मातंगः	४.	शु.	०	४९	वि	३५	१५	वि	३९	१६	वि	०	४९	४४	३३	२७	९	३	वृश्चिक ३८/३८	[illegible]	[illegible]
१६४	२७	अमृतः	५.	श.	५	५१	अ	४१	३१	प्री	४०	३०	बा	५	५१	४०	३४	२६	१०	४	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]
१६५	२८	काणः	६.	सू.	१०	३२	ज्ये	४७	२	आ	४१	१५	तै	१०	३२	४२	३४	२६	११	५	धनु ४७/२	[illegible]	[illegible]
१६६	२९	लुंबकः	७.	चं.	१४	२३	मू	५१	३८	सौ	४१	१६	व	१४	२३	३६	३५	२५	१२	६	धनु	[illegible]	[illegible]
१६७	३०	[illegible]	८.	मं.	१७	१२	पू	५५	६	शो	४०	२६	ब	१७	१२	३२	३५	२३	१३	७	धनु	[illegible]	[illegible]
१६८	१	[illegible]	९.	बु.	१८	४८	उ	५७	१६	अ	३८	३७	कौ	१८	४८	२९	३५	२३	१४	८	मकर १०/३८	[illegible]	[illegible]
१६९	२	ध्वजः	१०.	गु.	१९	७	श्र	५८	१८	सु	३५	४८	ग	१९	७	२५	३५	२१	१५	९	मकर	[illegible]	[illegible]
१७०	३	प्रजापति	११.	शु.	१८	०	ध	५८	३	धृ	३१	५८	वि	१८	०	२१	३६	२०	१६	१०	कुंभ २८/१०	[illegible]	[illegible]
१७१	४	आनंदः	१२.	श.	१५	५९	श	५५	४५	शू	२७	१४	बा	१५	५९	१७	३७	१९	१७	११	कुंभ	[illegible]	[illegible]
१७२	५	चरः	१३.	सू.	१२	४४	पू	५४	२९	गं	२१	३९	तै	१२	४४	१३	३६	१८	१८	१२	मीन ३९/४८	[illegible]	[illegible]
१७३	६	गदः	१४.	चं.	८	३३	उ	५१	२९	वृ	१५	२२	व	८	३३	९	३७	१७	१९	१३	मीन	[illegible]	[illegible]
१७४	७	शुभः	१५.	मं.	३	३०	रे	४७	५५	ध्रु	८	३०	ब	३	३०	५	३८	१६	२०	१४	मेष ४७/५५	[illegible]	[illegible]

तुलेभानु ३५/५, रविदक्षिणगोले, दिनरातसमान शारदीयनवरात्रप्रारंभ, घटस्थापन A
चंद्रोदयमु. ३०स्थिरता, B अश्वनिराजनप्रा. C चित्रायांबुध ३८/५८ग १०५/१५
पूफायांशुक १२/१८ग १३/१७, स्वात्यांभौम ३१/१६ग ५१/४६ रविलाभरमा.४मुस.
भ. २७/४६उप. A श्रीअग्रसेनजयं.५१४६वी,मातामह(नाना) पार्वणश्राद्ध, B
भ. ०/४६या., बिच्छुड़ा ३८/३८उप. उपांगललिताव्रतंमध्याह्ने।
हस्तेरवि ३३/५, सं.स्त्री.नपुं.सू.सू.वाहनचातक, उपवाहनहाथीबहुगर्मी। C
वक्रीपूभा२शनि १/६ग ५/४४, बिच्छुड़ा ४७/२या., पद्मकयोगतीर्थस्नानेपुण्यदः।
भ. १४/२३उप. ४५/४९या., सरस्वतीआवाहनमूलमे E शस्त्रास्त्रपू.,गांधीजयं,शास्त्रीजयं.,
सरस्वतीपूजनपूर्वाषे,होमाष्टमी,भद्रकालीअवतार,बैंकअर्धवार्षिकबंदी
तुलेबुध ४/० दुर्गा९,उत्तराषेबलीदा,अश्वनिराजनपूर्ण,मन्वादि F आकाशदीपप्रारंभ
भ. ४/३४उप. विजया१०,शमीपूजा,सीमोलंघनं,मन्वादि,सरस्वतीश्रवण.व विसर्जन D
भ. १/०या.,बुधोदयप. २३/४५, पंचक २८/१०उप. पापांकुशा११व्रतंसर्वे
स्वात्यांबुध ६/२३ग ५/२८ निम्बार्क१व्रतं शनिप्रदोषमहापुण्यदः। G [illegible]
उफायांशुक ७/३१ग १४/१ D बौद्धावतार१०सायं,नवरात्रपारणा,राजपट्टाभिषेक, E
भ. ३/३उप. ३/९या., कोजागिरी१५.चंद्रोदयव्यापिनी,शरद१५व्रतं,तिलतेल F
पुनर्वसु४कर्कगुरु ४/११ग ४/३, पंचक ४७/५५या [illegible] ४५/३६, [illegible] G

गोचर ग्रहाः

बुधास्त पूर्वे
गुरु,शुक्र उदय पूर्वे

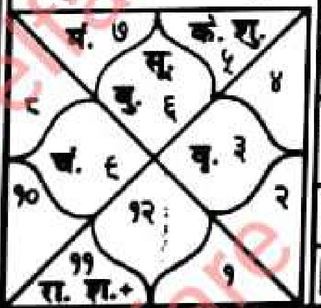

आश्विन शुक्ला८मंगल
गण १६७ , इष्टः ०/०

म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ १० २३ २८	५ २८ ० ४१	२ २८ ५८ ४८	४ २० २५ ३१	१० २६ ३७ ८	१० २१ ५५ २८	४ २१ ५५ २८
४० ४६	१०४ १५	७ ५०	७३ १५	१ ४४ +	३ ११	३ ११
स्वा.२	विशाखा	पू.फा.३	पू.फा.३	पू.भा.२	पू.भा.१	पू.फा.३
पवन	दहन	नीर	जल	नीर	नीर	जल

पांच सोम इण मास मे,जनता में संतोष। धन धान्य हो मोकलां,बढ़े राज को कोष।।१। आसोज वदी एकादशी,बुध सोम में आय। गाय भैस अरु चौपगा,महंगा मोल बिकाय।।२।। बुध उदय आसोज में,थल महँ कमल उगंत। समो होत चहुं दिशी,अब क्यूं चिंता करंत।।३।। पवन थम्यो ध्वज थिर,अंग पसीनों आय। माखी चटकै माधजी,सांज्यों मेह वरसाय।।४।। अमल पिघल्यो,गुड़ की हो गई गार। टर्र टर्र कूकें डेडरों,आसी मेह अबार।।५। गौ बाछड़ा फुदके घणा,तीतरगूंगा थाय। मछली उछलें नीर में,इन्द्र महोत्सव आय।।६।। सांडा बिल मुख ढांकियां,टीटोड़ी टहकाय। नयना निद्रा आलसै,इन्द्र महोत्सव थाय।।७।। झींगरिया बोले घणी,नाड़ी तत्यैया नीर। मेघ घुमड़ै माधजी,पूरब बहै समीर।।८।।

आश्विन शु.१५+१मंगल
गण १७४ , इष्टः ०/०

म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ १५ ९ १७	६ ६ ३१ १३	२ २९ ५३ ४३	४ २८ ५८ ४५	१० २६ २४ ५५	१० २१ ३३ १३	४ २१ ३३ १३
४० ४६	८४ ४८	७ ५०	७४ १	१ ४४ +	३ ११	३ ११
स्वा.३	स्वा.१	पू.फा.३	उ.फा.१	पू.भा.१	पू.भा.१	उ.फा.३
पवन	पवन	नीर	नीर	नीर	नीर	जल

गोचर ग्रहाः

बुधोदय पश्चिमे
गुरु,शुक्र उदय पूर्वे

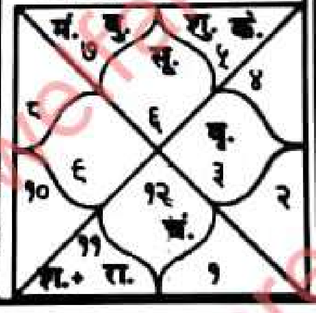

कार्तिक कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण १७५से१८८)

दिनांक ८ अक्टू. से २१ अक्टूम्बर २०२५ ई.तक।
शरदृतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः,दक्षिणगोलेः।
(आश्विन कृष्णपक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योग	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अ.क.वि.	गति	
	०	०	१.	मं.	५८	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	
१७५	८	मृत्यु:	२.	बु.	५२	२१	अ	४३	५७	व्य	[illegible]	[illegible]	तै	२५	१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१	१५	मेष	[illegible]	[illegible]	वायुसेनादिवस
१७६	९	पद्म:	३.	गु.	४६	१६	भ	३६	४६	व	४५	५५	व	१९	२०	[illegible]	३६	१३	२२	१६	वृषभ [illegible]	[illegible]	[illegible]	म.[illegible]उप.[illegible]या.,दशरथललिताव्रतं,
१७७	१०	छत्र:	४.	शु.	४०	६	कृ	३५	४२	सि	३८	१३	व	१३	१२	५३	३६	१३	२३	१७	वृषभ	[illegible]	[illegible]	करवाचौथ चंद्रोदय[illegible]बजे,
१७८	११	श्रीवत्स:	५.	श.	३४	२४	रो	३१	४६	व्य	३०	३३	कौ	७	१५	४६	४०	१२	२४	१८	वृषभ	[illegible]	[illegible]	चित्रायांरवि[illegible],सं.स्त्री.पु.सु.सु.वाहनगज,उपवाहनडेडरों बहुवर्षा।
१७९	१२	सौम्य:	६.	र.	२६	६	मृ	२८	२०	व	२३	१७	ग	१	४५	४५	४०	१०	२५	१९	मिथुन [illegible]	[illegible]	[illegible]	म.[illegible]उप.[illegible]या.,स्कन्दषष्ठी,सायंपयकयोग,तीर्थस्नानेपुण्यद
१८०	१३	ध्वज:	७.	चं.	२४	२३	आ	२५	२६	प	१६	३०	ब	२४	२३	४१	४१	६	२६	२०	मिथुन	[illegible]	[illegible]	अहाई८,रात्रीकालाष्टमी,
१८१	१४	सुस्थिर:	८.	मं.	२०	२७	पु	२३	२४	शि	१०	१८	कौ	२०	२७	३७	४१	६	२७	२१	कर्क [illegible]	[illegible]	[illegible]	विषायांभौम[illegible]ग[illegible],विषायांबुध[illegible]ग[illegible]
१८२	१५	मातंग:	९.	बु.	१७	२६	पु	२२	१८	सि	४	५३	ग	१७	२६	३३	४१	७	२८	२२	कर्क	[illegible]	[illegible]	म.[illegible]उप.,हस्तेशुक[illegible]ग[illegible],ज्वालामुखी[illegible]उप.
१८३	१६	अमृत:	१०.	गु.	१५	३५	श्ले	२२	१८	सा	[illegible]	[illegible]	वि	१५	३५	३०	४२	६	२९	२३	सिंह [illegible]	[illegible]	[illegible]	म.[illegible]या.,ज्वालामुखी[illegible]या.
१८४	१७	काण:	११.	शु.	१४	५५	म	२३	३०	शु	५४	३	बा	१४	५५	२६	४३	५	३०	२४	सिंह	[illegible]	[illegible]	तुले ऽर्क:[illegible] रमा१व्रतसर्वे,गोवत्स१२प्रदोषे व्यापिनी,
१८५	१८	धूम्रक:	१२.	श.	१५	३२	पू	२६	०	ब्र	५२	२४	तै	१५	३२	२२	४४	४	१	२५	कन्या [illegible]	[illegible]	[illegible]	रमा१व्रतं,शनिप्रदोषमहापुण्य,धनतेरस,यमायदीपदानं,धनवन्तरीजयं., A
१८६	१९	मैत्र:	१३.	र.	१७	२६	उ	२९	४२	ऐ	५१	४४	व	१७	२६	१८	४४	४	२	२६	कन्या	[illegible]	[illegible]	म.[illegible]उप.[illegible]या.,रूप१४,नरक१४ A गोत्रिरात्रव्रत दीपावलीतक।
१८७	२०	वज्र:	१४.	चं.	२०	३२	ह	३४	३१	वै	५१	५३	श	२०	३२	१४	४५	३	३	२७	कन्या	[illegible]	[illegible]	दीपावली,कुबेरपूजा, कमलाज,महालक्ष्मीपूजनं कालरात्रि
१८८	२१	ध्वांक्ष:	३०.	मं.	२४	३८	चि	४०	१५	वि	५२	४२	ना	२४	३८	१०	४६	२	४	२८	तुला [illegible]	[illegible]	[illegible]	देवपितृकार्ये अमा, महावीरस्य निर्वाण,कालीपूजासायंव्यापिनी,दामोदरपूजा,

गोचर ग्रहा:
बुधोदयपश्चिमे,शनिवक्र गुरु,शुक्र उदय पूर्वे

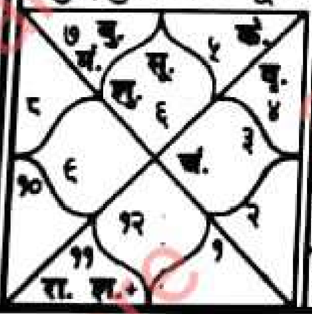

कार्तिक कृष्णा८ मंगल
गण १८१, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ १९ ५५ ७	६ १९ २४ ५४	३ ० १७ ५३	५ ७ ३६ ५३	१० २६ १२ ४२	१० २१ १० ५७	४ २१ १० ५७
४० ४८	८४ ४८	२ ५३	७४ १	१ ४४ +	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कार्तिककृष्णा १४शुक तुलेऽर्क प्रवेशः। वारात् ३मंदी,सुभिक्ष। नक्षत्रात् ४ तेजी दुर्भिक्षः। वार नाम मिश्र,पशुसुखी। नक्षत्र नाम घोरा,शूद्रसुखी। संक्रांति काल अर्धरात्री, राक्षस सुखी। पूर्वे मुख,नैऋत दृष्टि,दक्षिणे गमनं। तैतिल करणे सुती,मंदी। गर्दभ वाहन,मीढा उपवाहन,सुभिक्ष। पाण्डुर वस्त्र,खड्ग आयुध,कांस्य पात्र,पक्वान्न भोजन,माटी लेपन,पक्षी जाति,केतकी पुष्प,मूंगा भूषण,भूर्जपत्र कंचुकी,युवा अवस्था,उत्तर मुख, डमरु वाद्य,हस्या अवस्था। हस्ते कृष्णफल,मृत्युवारे। संक्रांति निवास समुद्रे,मालाकार गृहे,सुभिक्ष,मंदी। मु.३० स्थिरता। संक्रांति पुण्यम् पर दिने प्रथम प्रहरे पुण्यकाल। वत्स निवास पूर्वे। त्रैमासिक राहु उत्तरे। शुक्रोदय पूर्वे।

कार्तिक कृष्णा३० मंगल
गण १८८, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ २४ ४५ ४३	६ २६ ८ २५	३ ० ३८ ६	५ १६ १७ ३	१० २६ ० २८	१० २० ४८ ४१	४ २० ४८ ४१
४१ ३१	५५ ५६	२ ५३	७४ २५	१ ४४ +	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गोचर ग्रहा:
बुधोदय पश्चिमे,शनिवक्र गुरु,शुक्र उदय पूर्वे

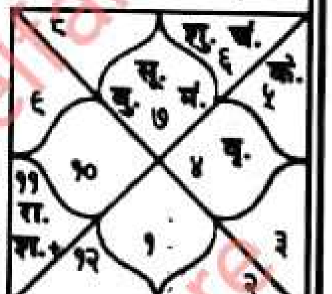

कार्तिक शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः १९४७ (लघुगण १८९से२०३)

	तारीख	वार+नक्षत्र योग	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टैण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
१८९	२२	धूम्रः	१.	बु.	२६	३३	स्वा	४६	२७	प्री	५३	५७	ब	२६	३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	२९	तुला	[illegible]	[illegible]
१९०	२३	प्रवर्धमान	२.	बु.	३४	४३	वि	५२	५४	आ	५५	२१	बा	२	८	२	४७	५६	६	३०	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]
१९१	२४	राक्षसः	३.	शु.	३६	५२	अ	५६	१४	सौ	५६	३६	तै	७	१७	२७/५९	४७	५६	७	१	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]
१९२	२५	मुसलः	४.	श.	४४	३५	ज्ये	६०	०	शो	५७	२३	व	१२	१३	५६	४७	५७	८	२	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]
१९३	२६	काणः	५.	सू.	४८	३०	ज्ये	४	५५	आ	५७	३७	ब	१९	३२	५३	४७	५७	६	३	धनु ४/५५	[illegible]	[illegible]
१९४	२७	लुंबक	६.	चं.	५१	१४	मू	६	४४	सु	५६	५९	कौ	१९	५२	४९	४८	५६	१०	४	धनु	[illegible]	[illegible]
१९५	२८	मित्रः	७.	मं.	५३	३	पू	१३	२८	धृ	५५	२३	ग	२२	६	४६	४९	५५	११	५	मकर	[illegible]	[illegible]
१९६	२९	[illegible]	८.	बु.	५३	२६	उ	१५	५८	शू	५२	४५	वि	२३	१५	४३	४९	५५	१२	६	मकर	[illegible]	[illegible]
१९७	३०	ध्वजः	९.	बृ.	५२	३१	श्र	१७	१३	गं	४९	११	बा	२२	५८	४०	५०	५४	१३	७	कुंभ	[illegible]	[illegible]
१९८	३१	प्रजापति	१०	शु.	५०	२३	ध	१७	१४	वृ	३४	३८	तै	२१	२७	३७	५१	५३	१४	८	कुंभ	[illegible]	[illegible]
१९९	१	आनंदः	११	श.	४७	११	श	१६	८	ध्रु	३६	११	व	१८	४७	३४	५१	५३	१५	९	मीन	[illegible]	[illegible]
२००	२	चरः	१२	सू.	४३	४	पू	१४	४	व्या	३३	१	ब	१५	७	३१	५२	५२	१६	१०	मीन	[illegible]	[illegible]
२०१	३	गदः	१३	चं.	३८	१४	उ	११	१३	ह	२६	१५	कौ	१०	३६	२८	५२	५२	१७	११	मीन	[illegible]	[illegible]
२०२	४	शुभः	१४	मं.	३२	४६	रे	७	४४	व	१८	५६	ग	५	३१	२४	५३	५१	१८	१२	मेष	[illegible]	[illegible]
२०३	५	मृत्युः	१५	बु.	२७	४	अ	३/५०	४५/४३	सि	११	२६	ब	२७	४	२१	५४	५०	१९	१३	मेष	[illegible]	[illegible]

दिनांक २२ अक्टूम्बर से ५ नवम्बर २०२५ ई.तक।
शरद/हेमन्तऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायने:,दक्षिणगोले:।
(कार्तिक शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रे:)

वृश्चिकेभानु, हेमंतऋतुप्रा. कार्तिकनववर्ष व्यापारी सं.२०८२ A
बिच्छुड़ा उप. चंद्रोदयमु.४५मंदी, यम२, भाई२, यमुनास्नान, चित्रगुप्तपू.
स्वात्यांरवि, सं.स्त्री.नपुं.सू.सू.वाहनमंडूक, उपवाहनहाथी, बहुगर्मी। B
भ. उप. या., वृश्चिकेबुध चतुर्थीव्रत दुर्वागणपतिव्रत, मन्वाद्यासव्रतपूर्ण
चित्रायांशुक ग बिच्छुड़ा या. लाभपंचमी, सौभाग्यपंचमी, पाण्डव C
सूर्यषष्ठी डालाछठ A प्रा., गोवर्धनपूजा, अन्नकूट C पंचमी, ज्ञानपंचमीजैन,
भ. उप., अनुराधायांबुध ग, वृश्चिकेभौम, कल्पादि, सहस्त्रार्जुनजयंति
भ. या., भौमास्तप. गोपाष्टमीसायंव्यापिनी, चौमासीअष्टाप्रा. जैन
पंचक उप. अक्षय९, कुष्मांड९त्रेतायुगादि, रंगनाथजयं., आंवलानव
B जमादिलावलमा. ६मुस., संयुक्तराष्ट्रदि. E वैकुण्ठ१४मध्यरात्रीव्यापिनी, जैनचौमासी
भ. उप. या., तुलेशुक्र, वक्रीबुध बु. ग देवप्रबोधिनी११ D
अनुराधायांभौम ग, मन्वादि, निम्बार्क१९व्रतं
प्रदोष, D व्रतसर्वे., तुलसीविवाह, चातुर्मासपूर्ण, भीष्मपंचकव्रतारंभ, कालिदासजयं
भ. उप. या., वक्रीविशाखायांबुध ग पंचक या. हरिहरव्रतरेवतीव.पर्व, E
बुधास्तप., शतभिषा४कुंभेराहुपूभा२सिंहेकेतु देवदीवाली, तुलसीविवाहपूर्ण F
F दीपदानं भीष्मपंचकव्रतपू., कार्तिकस्नानपू., नानकजं. पुष्करस्नानमेला, मन्वादि, पूर्णिमाव्रत

गोचर ग्रहाः

बुधोदयपश्चिमे, शुक्रोदयपू. रात्रौ भौमास्त पश्चिमे

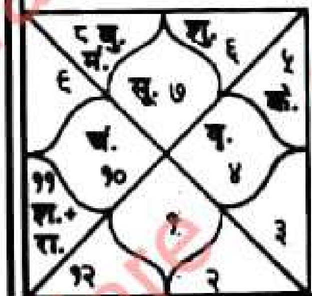

कार्तिक शुक्ला ८ बुध
गण १९६, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ ० १७ ५६	७ ३ २७ ४१	३ १ १ १२	५ २६ १२ ५४	१० २५ ४६ ३१	१० २० २३ १५	४ २० २३ १५
४१ ३१	६२ १	२ ५३	७४ ३७	१ ४४ +	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पांच मंगल उदंगल घणो उग्र प्रदर्शन देख। भय उपजे जन व्यापार में, लिखे विधाता लेख।।१।। कार्तिक वदी प्रतिपदा, टूटी बेसत मास। व्यापारी टूटे घणा, रजस्वला दोश विनाश।।२।। देव दीवाली भरणी में, दुर्भिक्ष दुःख बहु रोग। चतुग्रह मिगसिर मिले, राष्ट्रक्षय संयोग।।३।। सातम भौम कार्ति सुदी, पूनम भरणी देख। महंगाई दुःख द्वंद जन, दुर्भिक्ष रोग को लेख।।४।। ओस जमे शिर घास, मोतीसा झलमल करें। शीतल पवन सुवास, वृद्ध हुआ मेह मावजी।।५।। कुरज उड़ी कुरलाय, मकड़ी जाल जू रोपिया। बूंद द्रवै नहिं आय, वृद्ध हुआ मेघ मावजी।।६।। बादल रंग सुनहरा, अरुण झलक जो होय। श्याम घटा घन घोर तो, मेघा बरसे तोय।।७।। सूर शशि के कुण्डल हो, श्वेत शुभ्र पचरंग। मेघ बरसे मावजी, घर घर चाले गंग।।८।।

कार्तिक शुक्ला १५ बुध
गण २०३, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ ५ १२ ५१	७ ३ ११ २१	३ १ २१ २५	६ ४ ५५ १६	१० २५ ३४ १७	१० २० ० ५९	४ २० ० ५९
४३ ८	६ २६ +	२ ५३	७४ ३७	१ ४४ +	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गोचर ग्रहाः

शनि+बुधवक्री, शुक्रोदयपूर्वे भौमास्त प., बुधास्त प.

मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७(लघुगण २०४से२१८)

दिनांक ६ नवम्बर से २०नवम्बर २०२५ ई.तक।
हेमन्त ऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः, दक्षिणगोलेः।
(कार्तिक कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

लघुगण	तारीख	योग	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	जोधपुर उ.	जोधपुर अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
२०४	६	[illegible]	१.	गु.	२१	७	कृ	५५	३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	२१	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०	१४	वृषभ	[illegible]	[illegible]	विशाखायांरवि, स्वात्यांशुक्र ग पापयोगे उप. या., पुष्करस्नान A
२०५	७	[illegible]	२.	शु.	१५	१२	रो	५१	३४	[illegible]	४७	५२	ब	१५	१२	१५	५५	४६	२१	१५	वृषभ	[illegible]	[illegible]	म. उप., अशून्यशून्यव्रतपूर्ण, A दान महत्पुण्य
२०६	८	[illegible]	३.	श.	६	३६	मृ	४७	५८	शि	४०	२८	वि	६	३६	१२	५६	४८	२२	१६	मिथुन	[illegible]	[illegible]	म. या., सौभाग्यसुन्दरी३ व्रतं, चतुर्थीव्रतं२२बजे।
२०७	९	ध्वांक्ष:	४.	सू.	३	५४	आ	४४	५६	सि	३३	२५	बा	३	५४	६	५६	४८	२३	१७	मिथुन	[illegible]	[illegible]	
०	०	०	५.	सू.	५६	२४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	
२०८	१०	धूम्र:	६.	चं.	५५	३३	पु	४२	३८	सा	२६	५६	ब	२७	२८	६	५७	४७	२४	१८	कर्क	[illegible]	[illegible]	म. उप.,
२०९	११	प्रवर्धमान	७	मं.	५२	४०	पु	४१	१७	शु	२१	१४	वि	२४	७	२	५८	४६	२५	१९	कर्क	[illegible]	[illegible]	म. या.,
२१०	१२	राक्षस:	८.	बु.	५०	५१	श्ले	४०	५६	शु	१६	२१	बा	२१	४५	[illegible]	५८	४६	२६	२०	सिंह	[illegible]	[illegible]	वक्रीगुरु वृ. ३ । ग, श्रीकालभैरवाष्टमी
२११	१३	मुसल:	९.	गु.	५०	१९	म	४१	५४	ब्र	१२	२१	तै	२०	३५	५६	५८	४६	२७	२१	सिंह	[illegible]	[illegible]	
२१२	१४	सिद्धि:	१०	शु.	५१	३	पू	४४	३	ऐ	६	२०	व	२०	४१	५३	५६	४५	२८	२२	कन्या	[illegible]	[illegible]	म. उप. या., नेहरुजयं., बालदिवस
२१३	१५	उत्पात	११	श.	५३	५	उ	४७	२६	वै	७	१९	ब	२२	४	५०	[illegible]	४४	२९	२३	कन्या	[illegible]	[illegible]	उत्पत्ति१व्रतंस्मार्ता, वैतरणीव्रतं,
२१४	१६	मानस	१२	सू.	५६	१८	ह	५२	२	वि	६	१९	कौ	२४	४१	४७	१	४३	३०	२४	कन्या	[illegible]	[illegible]	वृश्चिकेऽर्कः व्रत१श्रनिम्बार्क
२१५	१७	मुद्गर:	१३	चं.	६०	०	चि	५७	३१	प्री	६	१०	ब	२८	२३	४४	२	४४	१	२५	तुला	[illegible]	[illegible]	विशाखायांशुक्र ग प्रदोष,
२१६	१८	[illegible]	१३	मं	०	२९	स्वा	६०	०	आ	६	४५	व	०	२९	४१	३	४३	२	२६	तुला	[illegible]	[illegible]	म. उप. या., B तपोव्रतं, पुंसवनव्रतंउद्यापन
२१७	१९	धूम्र:	१४	बु.	५	२३	स्वा	३	३९	सौ	७	४९	श	५	२३	३७	४	४२	३	२७	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]	अनुराधायांरवि, विष्कुम्भे उप. पितृकार्येऽमा वस्या, गौरी B
२१८	२०	प्रवर्धमान	३०	गु.	१०	४३	वि	१०	५	शो	६	६	ना	१०	४३	३४	५	४३	४	२८	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]	ज्येष्ठायांभौम ग देवकार्येऽमा

गोचर ग्रहाः

बुध, भौम अस्त प.
बुध, शनि, गुरुवक्र,

मार्गशीर्ष कृष्णा ८ बुध
गत २१०, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ १० १४ ५०	७ २ ४ ५१	३ १ ४१ ४०	६ १३ ३८ ५	१० २५ २२ ४	१० १९ ३८ ४३	४ १९ ३८ ४३
४३ ८	६ २९ +	२ ५३	७४ ४१	१ ४४ +	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मार्गशीर्ष कृष्णा १२सूर्य वृश्चिकेऽर्कः प्रवेशः। वारात् ३ मंदी, सुभिक्ष। नक्षत्रात् ३ सुभिक्ष, मंदी। वार नाम घोरा, शूद्र सुखी। नक्षत्र नाम ध्वांक्षी, वैश्य सुखी। संक्रांति काल रात्री, राक्षस सुखी। पूर्वे मुख, नैऋत्य दृष्टि, दक्षिणे गमनं। तैतिल करणे सुती मंदी। गर्दभ वाहन, मेढा उपवाहन, सुभिक्ष। पाण्डुर वस्त्र, दण्ड आयुध, कांस्य पात्र, पक्वान्न भोजन, माटी लेपन, पक्षी जाति, केतकी पुष्प, मूंगा भूषण भूर्जपत्र कंचुकी, युवा अवस्था, उत्तर मुख, डमरु वाद्य, हास्य अवस्था। हस्ते श्वेत फल, सुखी। संक्रांति निवास संधि, वैश्य गृहे तेली, खण्ड वृष्टिः। मु.३० स्थिरता। संक्रांति पुण्य स्व दिने तृतीय यामे पुण्य काल वत्स निवास पूर्वे। त्रैमासिक राहु पूर्वे। शुक्रोदय पूर्वे।

मार्गशीर्ष कृष्णा३० गुरु
गत २१८, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ १५ ५९ ५८	७ ० ४९ ०	३ १ २६ ५३	६ २३ ३७ ७	१० २५ ८ ६	१० १९ १३ १७	४ १९ १३ १७
४३ ८	६ २९ +	२ ४१ +	७५ १२	१ ४४ +	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गोचर ग्रहाः

गुरु+शनि+बुधवक्री
भौमास्तप., शुक्रोदयपू.

मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण २१९से२३२)

दिनांक २१ नवम्बर से ४ दिसम्बर २०२५ई.तक।

हेमन्त ऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायने,दक्षिणगोलेः

卐 (मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रः)

गण	तारीख	वार+नक्षत्र योग	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टैण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
२१९	२१	राक्षसः	१.	बु.	१५	५४	अ	१६	४३	अ	१०	२४	ब	१५	५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	२९	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]	धनेभानुः[illegible],बुधोदयपूर्वे[illegible],मार्गीशनि[illegible]श[illegible]ग.[illegible] चंद्रोदयमु.१५ A
२२०	२२	मुसलः	२.	श.	२०	४०	ज्ये	२२	३४	सु	११	१५	कौ	२०	४०	२८	८	४२	६	१	धनु [illegible]	[illegible]	[illegible]	विच्छुडा[illegible]या. जमादिलाखरमा.६मु., A तैजी,पुंसवनव्रतप्रा.वर्षपर्यन्त
२२१	२३	सिद्धिः	३.	सू.	२४	४०	मू	२७	३७	धृ	११	३६	ग	२४	४०	२७	७	४१	७	२	धनु	[illegible]	[illegible]	म.[illegible] उप.,
२२२	२४	उत्पात	४.	चं.	२७	३१	पू	३१	३७	शू	११	१०	वि	२७	३१	२५	७	४१	८	३	मकर [illegible]	[illegible]	[illegible]	म.[illegible]या.,मार्गीबुध[illegible]बु.[illegible]ग[illegible]
२२३	२५	मानस	५.	मं.	२९	१०	उ	३४	२४	गं	६	४६	बा	२९	१०	२४	७	४१	९	४	मकर	[illegible]	[illegible]	वृश्चिकेशुक्र[illegible],श्रीपंचमीव्रत श्रीरामविवाहोत्सव,नागपंचमी दक्षिण
२२४	२६	छत्रः	६.	बु.	२९	३०	श्र	३५	५६	वृ	७	२८	तै	२९	३०	२३	८	४२	१०	५	मकर	[illegible]	[illegible]	नरसीमेहताजयं.,स्कंदषष्ठी चंपाषष्ठी,
२२५	२७	श्रीवत्सः	७.	गु.	२९	२४	ध	३६	१३	ध्रु	[illegible]	[illegible]	व	२९	२४	२१	९	४१	११	६	कुंभ [illegible]	[illegible]	[illegible]	म.[illegible]उप.[illegible]या.,अनुराधायांशुक्र[illegible]ग[illegible],पंचक[illegible] उप.
२२६	२८	[illegible]	८.	शु.	२९	२९	श	३५	२३	ह	५४	३३	ब	२९	२९	२०	१०	४२	१२	७	कुंभ	[illegible]	[illegible]	
२२७	२९	[illegible]	९.	श.	२३	२५	पू	३३	३२	व	४८	३२	कौ	२३	२५	१९	१०	४२	१३	८	मीन [illegible]	[illegible]	[illegible]	कल्पादि
२२८	३०	सुस्थिरः	१०	सू.	१९	५	उ	३०	५१	सि	४१	५५	ग	१९	५	१७	११	४१	१४	९	मीन	[illegible]	[illegible]	म.[illegible] उप., B मोक्षदा११सर्वे, गीताजयंती,
२२९	१	मार्तंड	११	चं.	१४	१५	रे	२७	३०	व्य	३४	३६	वि	१४	१५	१५	१२	४२	१५	१०	मेष [illegible]	[illegible]	[illegible]	म.[illegible]या.,मार्गीअनुराधायांबुध[illegible]ग.[illegible],पंचक[illegible]या. B
२३०	२	अमृत	१२	मं.	८	५३	अ	२३	४१	व	२७	१	बा	८	५३	१३	१२	४२	१६	११	मेष	[illegible]	[illegible]	अयोध्याश्रीरामजन्मभूमि मुक्तिदिवस३ इवां प्रदोष,अनंगत्रयोदशीव्रत१३, C
२३१	३	काणः	१३	बु.	३	१०	भ	१९	३६	प	१९	१२	तै	३	१०	१२	१४	४२	१७	१२	वृषभ [illegible]	[illegible]	[illegible]	म.[illegible] उप.,ज्येष्ठायांरवि[illegible] पिशाचमोचन१४श्राद्धः,शिव१४व्रतप्रा.
०	०	०	१४	बु.	५७	२९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	C श्रीत्रिपुरभैरवजयं.,सौम्यवारी१३यमायव्रतदानं
२३२	४	[illegible]	१५	गु.	५१	२४	कृ	१५	२४	शि	११	१९	वि	२४	२५	११	१४	४२	१८	१३	वृषभ	[illegible]	[illegible]	म.[illegible]या., पूर्णिमाव्रतंपुण्यंच [illegible] गुज.,नौजलसेनादिव. D
																								D दत्तजयंति१५[illegible] व्यापिनी.

गोचर ग्रहाः

बुधोदयपूर्वे,भौमास्तप.

शुक्रोदयपूर्वे,शनि+बुधमार्गी

मार्गशीर्ष शु.८ शुक्रवार
गण २२६ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ २१ ५० ३८	७ १ ४२ १६	३ १ २ २३	७ ३ ३८ ५१	१० २५ १८ ५६	१० १८ ४७ ५१	४ १८ ४७ ५१
४३ ५५	२९ २२ मा	२ ४१ +	७५ २४	१ ५७ मा.	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

महिमा बड़े गुरुदेव की,पांच गुरु के वार। कहीं चाणक्य कहीं द्रोण है,कहीं कृष्ण गुरु साकार।१। मिगसिर सुदी सुं क्षय तिथि,लगते पांचों मास। जनरक्षक जगदीश है,छत्रभंग को जाँच।२। चौदस अंधारी मिगसरों,स्वाति नक्षत्र को देख। तब श्रावण वर्षे नहीं,इण में मीन न मेख।।३।। मिगसर वदी एकादशी,शनिवार संयोग। छत्रभंग जल शोष हो,प्रजानाश को भोग।४। चंद्रोदय जेष्ठा होवे, मिगसर केरे मास। छत्रभंग एकमास में,होवे राज विनाश।५। द्वै द्वै कुण्डल सुर शशि,एक समीप एक दूर। मेघा झड़ी लगावसी,नदियां चलसी पूर।।६।। शशि के कुण्डल एक है,रवि के कुण्डल दोय। दिवस तीसरे माघजी,निश्चय वर्षा होय।।७। धूम्र कुंड रजनीश के,एक समीप एक दूर। माघ कहे वर्षे नहीं,धरा उड़ावे धूर।।८।।

मार्गशीर्ष शुक्ला १५गुरु
गण २३२ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ २६ १४ १२	७ ५ ३२ ५२	३ ० ४६ १५	७ ११ ११ २०	१० २५ ३० ४५	१० १८ २८ ४६	४ १८ २८ ४६
४३ ५५	४६ ४३	२ ४१ +	७५ २४	१ ५७ मा	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गोचर ग्रहाः

भौमास्तप.,बुधोदयपू.

बुध,शनिमार्गी,शुक्रोदयपू.

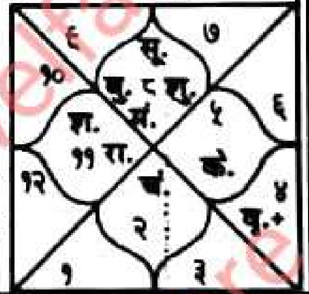

पौष कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण २३३से२४७)

दि.५ दिसम्बर से १९ दिसम्बर २०२५ ई.तक।
हेमंतऋतुः।रविर्देवता दक्षिणायनें,दक्षिणगोलेः।
(मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रे:)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योग	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टैण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
२३३	५	पद्म:	१.	शु.	४५	४३	रो	११	२३	सि	[illegible]	[illegible]	बा	१८	३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९	१४	मिथुन [illegible]	७ [illegible]	[illegible]	
२३४	६	छत्र:	२.	श.	४०	३२	मृ	७	४१	शु	४८	४४	तै	१३	७	८	१५	४३	२०	१५	मिथुन	७ [illegible]	[illegible]	
२३५	७	ध्वांक्ष:	३.	सू.	३५	५८	आ	४	२६	शु	४२	६	व	८	१५	७	१६	४३	२१	१६	कर्क ४७/३७	७ [illegible]	[illegible]	भ.१६उप.३५/५८या.,
२३६	८	धूम्र:	४.	चं.	३२	१२	पु	२	०	ब्र	३६	५	व	४	५	५	१७	४३	२२	१७	कर्क	७ [illegible]	[illegible]	ज्येष्ठायांशुक्र३२/२६ग७५/४० चतुर्थीव्रत चंद्रोदय२१बजे
२३७	९	प्रवर्धमान	५.	मं.	२६	२६	पु	[illegible]	[illegible]	ऐ	३०	५१	कौ	०	४६	४	१७	४३	२३	१८	सिंह [illegible]	७ [illegible]	[illegible]	मूलेधनेभौम२६/४ग४५/४४
२३८	१०	चर:	६.	बु.	२७	४६	म	६०	०	वै	२६	३२	व	२७	४६	३	१८	४४	२४	१९	सिंह	७ [illegible]	[illegible]	भ.३७/४६उप.५७/४या.,
२३९	११	मुसल:	७.	बृ.	२७	२१	म	०	२६	वि	२३	१०	बा	२७	२१	१	२०	४४	२५	२०	सिंह	७ [illegible]	[illegible]	
२४०	१२	सिद्धि:	८.	शु.	२८	१३	पू	२	२२	प्री	२०	४८	कौ	२८	१३	०	२०	४४	२६	२१	कन्या [illegible]	७ [illegible]	[illegible]	कालाष्टमी,अष्टकाश्राद्ध,रुक्मणीअष्टमी,
२४१	१३	उत्पात	९.	श.	३०	२५	उ	५	२६	आ	१९	२५	ग	३०	२५	[illegible]	२०	४४	२७	२२	कन्या	७ [illegible]	[illegible]	
२४२	१४	मानस:	१०.	सू.	३३	४७	ह	८	४७	सौ	१८	५७	व	२	६	५७	२२	४४	२८	२३	तुला [illegible]	७ [illegible]	[illegible]	भ. ३/६ उप.३३/४या., पौष१०नाकोड़ामेला श्रीपार्श्वनाथजयं.,
२४३	१५	मुद्गर	११.	चं	३८	६	चि	१५	४	शो	१९	१७	व	५	५६	५६	२२	४४	२९	२४	तुला	७ [illegible]	[illegible]	शुक्रास्तपू.४३/२५ ,सफला११व्रतंसर्वे
२४४	१६	ध्वज:	१२.	मं.	४३	५	स्वा	२१	६	अ	२०	१०	कौ	१०	३५	५५	२३	४५	३०	२५	तुला	७ [illegible]	[illegible]	मूलेधनेऽर्कः५८ सुरूपद्वादशी,मलमास प्रारंभ
२४५	१७	प्रजापति	१३.	बु.	४८	२८	वि	२७	२६	सु	२१	२५	ग	१५	४६	५३	२३	४५	१	२६	वृश्चि. [illegible]	८ ० [illegible]	[illegible]	भ.४६/२८उप.,ज्येष्ठायांबुध२४/६७ग७९/३,विच्छुड़ा१०/५३ उप प्रदोष
२४६	१८	आनंद:	१४.	बृ.	५३	४१	अ	३३	५६	धृ	२२	४२	वि	२१	५	५२	२५	४५	२	२७	वृश्चिक	८ [illegible]	[illegible]	भ.३/१या.,मूलेधनेशुक्र४५/४६ग७५/४०
२४७	१९	चर:	३०.	शु.	५८	२५	ज्ये	३८	५६	शू	२३	४३	च	२६	३	५१	२५	४५	३	२८	धनु [illegible]	८ [illegible]	[illegible]	विच्छुड़ा२६/१६या. ज्वालामुखी३६/५६उप.,देवपितृकार्येऽमा ,पावागढ़यात्रागुजरात

गोचर ग्रहाः

भौमास्तप.,बुधोदयपूर्वे
शुक्रोदय पूर्वे

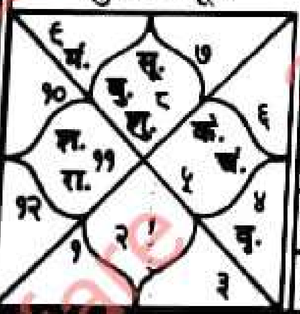

पौष कृष्णा ८ शुक्र
गण २४०, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	७	३	७	१०	१०	४
२	१२	०	२१	२५	१८	१८
६	१०	२४	१५	४६	३	३
२३	४०	४५	३६	२७	१६	१६
४५	४६	२	७५	१	३	३
१४	४३	४१	४०	५७	११	११
		+		मा		
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पौष कृष्णा १२ मंगल धनेऽर्क प्रवेशः। वारात् ३ मंदी सुभिक्षः। नक्षत्रात् ३ मंदी,सुभिक्षः। वार नाम महोदरी,चौर सुखी। नक्षत्र नाम महोदरी,चौर सुखी। संक्रांति काल पूर्वान्हे,विप्रराज सुखी। दक्षिणे मुख,वायव्ये दृष्टि पश्चिमे गमनं। कौलव करणे वक्री,तेजी। वाराह वाहन,बैल उपवाहन,पीड़ा। हरित वस्त्र,खड्ग आयुध,ताम्रपात्र शर्करा भोजन,चंदन लेपन,सर्पजाति बकुल पुष्प,मोती भूषण,हरित कंचुकी, तरुणी अवस्था,पश्चिम मुख,मृदंग वाद्य,इति अवस्था। हस्ते पीतफल, लक्ष्मी प्राप्ति। संक्रांति निवास संधि,वैश्य गृहे तेजी,खण्डवृष्टिः। मु. १५तेजी। संक्रांति पुण्यम् स्व दिने प्रथम् प्रहरे पुण्यकालः। वत्स निवास दक्षिणे। त्रैमासिक राहु पूर्वे। बुधोदय पूर्वे। शुक्रास्त पूर्वे।

पौष कृष्णा ३० शुक्र
गण २४७, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	७	३	८	१०	१०	४
७	१८	०	०	२६	१७	१७
२६	४५	५	५	०	४१	४१
६	१३	५६	२१	१०	४	४
४५	७६	२	७५	१	३	३
१४	३	४१	४०	५७	११	११
		+		मा		
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गोचर ग्रहाः

भौमास्तप.,बुधोदयपूर्वे
शुक्रास्तपूर्वे

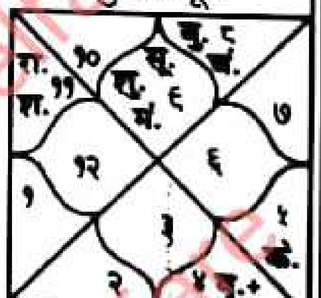

पौष शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण२४८ से २६२)

दिनांक २० दिसम्बर से ३ जनवरी २०२६ ई.तक। हेमंत/शिशिरऋतुः। रविर्देवता दक्षिण/उत्तरायनेः, दक्षिणगोलेः।

(पौष शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योग	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टैण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
२४८	२०	गद:	१.	श.	६०	०	मू	४५	११	गं	२४	१२	किं	३०	२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	२६	धनु	[illegible]	[illegible]	मकरेभानु: ६/३, छोटादिन रविउत्तरायणे शिशिरऋतुप्रा., ज्वालामुखी ६/५ या.
२४९	२१	शुभ:	१.	सू.	२	१६	पू	४६	२८	वृ	२३	५६	ब	२	१६	४८	२६	४६	५	३०	धनु	[illegible]	[illegible]	वर्कीपुन ३ मिथुनेगुरु ३/२६ ग ९/१ चंद्रोदयमु. ३० स्थिरता स्नानआरोग्यव्रत २,
२५०	२२	मृत्यु:	२.	चं.	५	११	उ	५२	३२	ध्रु	२२	५६	कौ	५	११	४६	२७	४७	६	१	मकर [illegible]	[illegible]	[illegible]	रज्जवमा. ७ मुस.,
२५१	२३	[illegible]	३.	मं.	६	४५	श्र	५४	२१	व्या	२०	५३	ग	६	४५	५१	२७	४७	७	२	मकर	[illegible]	[illegible]	म. ३/५ उप., किसान दिवस
२५२	२४	मित्र:	४.	बु.	७	२	ध	५४	५६	ह	१७	४६	वि	७	२	५२	२८	४८	८	३	कुंभ [illegible]	[illegible]	[illegible]	म. ९/२ या., बुधास्तपूर्वे ३/६, पंचक ३/८ उप.
२५३	२५	वज्र:	५.	गु.	६	३	श	५४	२०	व	१३	४६	बा	६	३	५३	२८	५०	६	४	कुंभ	[illegible]	[illegible]	ईसाजन्म क्रिसमसडे। A राजेन्द्रसुरीश्वरजी जन्म एवं निर्वाण दिन.
२५४	२६	ध्वांक्ष:	६.	शु.	३	५२	पू	५२	४३	सि	८	४८	तै	३	५२	५५	२८	५०	१०	५	मीन [illegible]	[illegible]	[illegible]	पूषायांभौम ४/५ ग ५/३ [illegible], गुरुगोविन्दसिंहजयंति
२५५	२७	धूम्र:	७.	श.	०	३६	उ	५०	१२	व्य	[illegible]	[illegible]	व	०	३६	५६	२६	५१	११	६	मीन	[illegible]	[illegible]	म. ३/६ उप. ३/३ या., मूलेधनेबुध ६/१२ ग ३/१० शाकंभरीनवरात्रारंभ: A
०	०	०	८.	श.	५६	२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	
२५६	२८	प्रवर्धमान	९.	सू.	५१	३७	रे	४७	०	प	४६	१४	बा	२४	२	५७	२६	५१	१२	७	मेष [illegible]	[illegible]	[illegible]	पंचक ४/० या.
२५७	२९	राक्षस:	१०	चं.	४६	१६	अ	४३	१६	शि	४१	४६	तै	१८	५६	५६	२६	५३	१३	८	मेष	[illegible]	[illegible]	पूषायांरवि ३/६, पूषायांशुक्र ३/१० ग ५/६
२५८	३०	मुसल:	११	मं.	४०	३३	भ	३६	१३	सि	३४	०	व	१३	२४	[illegible]	२६	५३	१४	९	वृषभ [illegible]	[illegible]	[illegible]	म. २/३ उप. ३/४ या., पुत्रदा १ व्रतंस्मार्ता, मन्वादि
२५९	३१	सिद्धि:	१२	बु.	३४	४२	कृ	३५	३	सा	२६	७	ब	७	३७	१	३०	५४	१५	१०	वृषभ	[illegible]	[illegible]	ईस्वी नववर्ष२०२६ प्रवेश मध्यरात्री पुत्रदा १ व्रतनिम्बार्क, मन्वादि,
२६०	१	उत्पात	१३	गु.	२८	४६	रो	३०	५८	शु	१८	२०	कौ	१	४५	३	२६	५५	१६	११	मिथुन [illegible]	[illegible]	[illegible]	प्रदोष
२६१	२	मानस	१४	शु.	२३	१७	मृ	२७	१०	ब्र	१०	४०	व	२३	१७	४	२६	५५	१७	१२	मिथुन	[illegible]	[illegible]	म. ३/३ उप. ६/१ या.,
२६२	३	मुद्गर	१५	श.	१८	११	आ	२३	५०	ऐ	[illegible]	[illegible]	व	१८	११	५	३०	५६	१८	१३	मिथुन	[illegible]	[illegible]	माघस्नान प्रा., शाकंभरीनवरात्रपूर्ण, पौषीपूर्णिमासर्वे.

गोचर ग्रहा:

बुधास्तपूर्वे, भौमास्तप.
शुक्रास्त पूर्वे

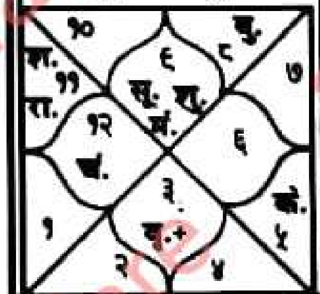

पौष शुक्ला७+८ शनि गण २५५, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ १३ २८ ११	७ २६ १७ ४३	२ २६ १६ २१	८ १० १० ४४	१० २६ १५ ५२	१० १७ १५ ३७	४ १७ १५ ३७
५५ ५२	७६ ३	७ १ +	७५ ४०	१ ५७ मा	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पांच भृगु इणमास में, बहु प्रजा सुभिक्ष। विवाह मंगलवार चहुं, कहीं कहीं होय दुर्भिक्ष।।१।। बन सूरज मंगल विनां, दुख दुर्भिक्ष जग जांण। मालव कर्णाटक देवगिरी, असी जन बन हांण।।२।। पड़वा पौष वद रोहिणी, छत्रभंग को जान। वदी पांचम भौम में, नृप मरण जन हान।।३।। ठंड पड़े पालो जमे, पौष माघ में जोय। रातूं कूके लोमड़ी, सही जमानो होय।।४।। रातो बोले कागला, दिन में बोले स्याल। छत्रभंग अन्न संग्रहो, पड़े अणचिंत्यो काल।।५।। बोले मोर डरावणां, कुत्ते रोवे बेढंग। अनहोनी घटना घटे, होवे रंग में भंग।।६।। कटकारो करड़ो वचन, प्रात समय कह कोय। जोणी बासी मुंह की, कबहुक सांची होय।।७।। जलते कालजे आप दे, ठंडे मन आशीष। वचन फले सत्त पुरुष का, माथे बिस्वा बीस।।८।।

पौष शुक्ला १५ शनि गण २६२, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ १८ ४६ १८	८ ११ २२ १३	२ २८ ३० १४	८ १६ १ ३६	१० २६ २६ ३६	१० १६ ५३ २१	४ १६ ५३ २१
४५ ५२	१०५ ३१	७ १ +	७५ ५६	१ ५७ मा	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गोचर ग्रहा:

भौमास्तप., बुधोदयपूर्वे
शुक्रास्त पूर्वे

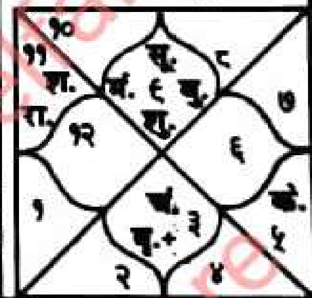

माघ कृष्णपक्षः श्रीविकम संवत् २०८२ शालिवाहन शक:१९४७ (लघुगण २६३से२७७)

दिनांक ४ जनवरी से १८ जनवरी २०२६ ई. तक। शिशिर ऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः, दक्षिणगोलेः। (पौष कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

लघुगण	तारीख	नाम योग	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टैण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	क्रां.	मिति	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
२६३	४	[illegible]	१.	सू.	१३	४२	पु	२१	१०	वै	५०	२१	कौ	१३	४२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९	१४	कर्क	[illegible]	[illegible]	पूषायांबुध ग
२६४	५	प्रजापति	२.	चं.	१०	३	पु	१६	२४	वि	४४	४१	ग	१०	३	८	३०	५८	२०	१५	कर्क	[illegible]	[illegible]	म. उप.,
२६५	६	आनंद	३.	मं.	७	२१	श्ले	१८	३३	प्री	४०	३	वि	७	२१	९	३०	५८	२१	१६	सिंह	[illegible]	[illegible]	प. या., सौभाग्यसुन्दरीव्रतं, चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय बजे तिलकुटी४, गौरी४
२६६	७	चरः	४.	बु.	५	४२	म	१८	५३	आ	३६	२१	बा	५	४२	११	३०	५६	२२	१७	सिंह	[illegible]	[illegible]	शत्त ३कुंभेराहुपूफा ९सिंहेकेतु
२६७	८	[illegible]	५.	गु.	५	२४	पू	२०	२८	सौ	३३	३८	तै	५	२४	१२	३१	५६	२३	१८	कन्या	[illegible]	[illegible]	मार्गीपूषा ३शनि ग श्रीरामानन्द जयंति,
२६८	९	शुभः	६.	शु.	६	२४	उ	२३	१८	शो	३१	५५	व	६	२४	१३	३१	५	२४	१९	कन्या	[illegible]	[illegible]	म. उप. या., उषायांशुक ग
२६९	१०	[illegible]	७.	श.	८	४१	ह	२७	२१	अ	३१	११	व	८	४१	१५	३१	१	२५	२०	तुला	[illegible]	[illegible]	स्वामीविवेकानंदजयं
२७०	११	[illegible]	८.	सू.	१२	७	चि	३२	२५	सु	३१	१६	कौ	१२	७	१६	३१	१	२६	२१	तुला	[illegible]	[illegible]	उषायांरवि, मकरेशुक
२७१	१२	छत्रः	९.	चं.	१६	३०	स्वा	३८	१८	धृ	३२	०	ग	१६	३०	१७	३२	२	२७	२२	तुला	[illegible]	[illegible]	म. उप., उषायांबुध ग A लोहड़ी पंजाब
२७२	१३	श्रीवत्सः	१०.	मं.	२१	३९	वि	४४	३६	शू	३३	१०	वि	२१	३९	१९	३२	३	२८	२३	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]	म. या., उषायांभौम ग, मकरेबुध, बिच्छुडा उप. A
२७३	१४	सौम्यः	११.	बु.	२६	५५	अ	५१	३०	गं	३४	२३	बा	२६	५५	२०	३२	४	२९	२४	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]	मकरेऽर्कः मकरसंक्रांतिपुण्य, मलमासपूर्ण, षट्तिला ११व्रतंसर्वे.
२७४	१५	कालः	१२.	गु.	३२	६	ज्ये	५७	३९	वृ	३५	३२	तै	३२	६	२१	३२	४	१	२५	धनु	[illegible]	[illegible]	बिच्छुडा या. थलसेना दिवस, तिलद्वादशी, माधवपूजा
२७५	१६	सुस्थिरः	१३.	शु.	३६	५२	मू	६०	०	ध्रु	३६	१५	ग	४	२९	२३	३२	५	२	२६	धनु	[illegible]	[illegible]	म. उप., प्रदोष, मेरु १३जैन
२७६	१७	[illegible]	१४.	श.	४०	४०	मू	३	७	व्या	३६	१९	वि	८	४६	२४	३२	६	३	२७	धनु	[illegible]	[illegible]	म. या., मकरेभौम
२७७	१८	शुभः	३०.	सू.	४३	२३	पू	७	३९	ह	३५	३४	च	१२	१	२५	३२	६	४	२८	मकर	[illegible]	[illegible]	वक्रीपुन२गुरु ग मौनीअमावस्या, दैवपितृकार्ये अमा., द्वापरयुगादि, B

B अमा. रविअर्धोदययोग स्नानदाने पुण्यदः।

गोचर ग्रहाः

भौमास्त प., बुधोदयपूर्वे
शुक्रास्त पूर्वे

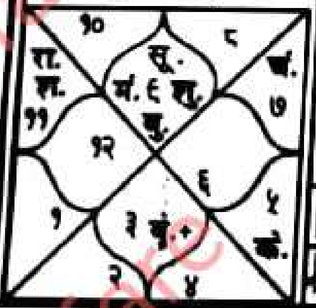

माघ कृष्णा ८ सूर्यवार गण २७०, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ २४ ५६ १८	८ २४ ५४ २६	२ २७ ३४ ६	८ २६ ८ ५०	१० २६ ५५ ४	१० १६ २७ ५५	४ १६ २७ ५५
४५ ५२	१०० ५३	७ १ +	७५ ४६	५ ३४	३ ११	३ ११
उषा.	उषा.	पुन.	उषा.	पूभा.	शत.	पूफा.
मीन	मीन	मीन	मीन	मीन	जल	जल

माघ कृष्ण पक्षः११ बुध मकरेऽर्क प्रवेशः। वारात् ७ मंदी, सुभिक्ष। नक्षत्रात् ३ सुभिक्ष मंदी। वारनाम मन्दाकिनी, नृपसुखी। नक्षत्र नाम मंदाकिनी, नृप सुखी। संक्रांति काल प्रदोषे, पिशाच सुखी। दक्षिणे मुख, ईशान दृष्टि, पश्चिमे गमनं। कौलव कर्णे खड़ी, तेजी। वाराह वाहन, बैल उपवाहन, पीड़ा। हरित वस्त्र, खड्ग आयुध, ताम्र पात्र, शर्करा भोजन, चंदन लेपन, सर्प जाति। बकुल पुष्प, मोती भूषण, हरित कंचुकी, तरुणी अवस्था, पश्चिम मुख, मृदंग वाद्य, ईति अवस्था। हस्ते रक्तफल, प्रजा दुखी। संक्रांति निवास समुद्रे, मालाकार गृहे, सुभिक्ष मंदी। मु.३० स्थिरता। वत्स निवास दक्षिणे। त्रैमासिक राहु पूर्वे। शुक्रोदय पूर्वे।

माघ कृष्णा ३० सूर्य गण २७७, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ ० १७ ४९	९ ५ ५७ ३८	२ २६ ४४ ५७	९ ७ ५९ १३	१० २७ ३४ ७	१० १६ ५ ३९	४ १६ ५ ३९
४५ ५७	१०३ ४४	७ १ +	७५ ४६	५ ३४	३ ११	३ ११
उषा.	उषा.	पुन.	उषा.	पूभा.	शत.	पूफा.
मीन	मीन	मीन	मीन	मीन	जल	जल

गोचर ग्रहाः

भौमास्तप., बुधोदयपूर्वे
शुक्रास्त पूर्वे

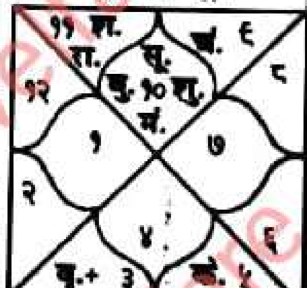

माघ शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण २७८से२९१)

ग.	तारीख	वार+नक्षत्र योग	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टैण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
२७८	१९	मृत्यु:	१	चं.	४४	५४	उ	११	२	व	३३	५०	कि.	१४	८	२६/२८	७/३२	[illegible]	४	२६	मकर	[illegible]	[illegible]
२७९	२०	धूम्र:	२	मं.	४५	१	श्र	१३	९	सि	३१	६	बा	१४	५७	२८	३२	८	६	३०	कुंभ ४३/३५	[illegible]	[illegible]
२८०	२१	मित्र:	३	बु.	४३	५४	ध	१४	२	व्य	२७	१४	तै	१४	४७	३१	३२	८	७	१	कुंभ	[illegible]	[illegible]
२८१	२२	वज्र:	४	बृ.	४१	३८	श	१३	४४	व	२२	३७	व	१२	४६	३४	३१	९	८	२	मीन १७/४१	[illegible]	[illegible]
२८२	२३	ध्वांक्ष:	५	शु.	३८	१८	पू	१२	२१	प	१७	६	ब	९	५८	३७	३१	९	९	३	मीन	[illegible]	[illegible]
२८३	२४	धूम्रा:	६	श.	३४	५	उ	१०	३	शि	१०	५२	कौ	९	११	४१	३०	१०	१०	४	मीन	[illegible]	[illegible]
२८४	२५	प्रवर्धमान	७	सू.	२९	१२	रे	७	०	सि	४/२	५३	ग	१	३८	४४	३०	१२	११	५	मेष ०	[illegible]	[illegible]
२८५	२६	राक्षस:	८	चं.	२३	४८	अ	३/२४	५६/५७	शु	४६	८	ब	२३	४८	४७	३०	१२	१२	६	मेष	[illegible]	[illegible]
२८६	२७	चर:	९	मं.	१८	१०	कृ	५५	१९	शु	४१	१८	कौ	१८	१०	५०	२९	१३	१३	७	वृषभ १३/२५	[illegible]	[illegible]
२८७	२८	शुभ:	१०	बु.	१२	८	रो	५१	१४	ब्र	३३	१७	ग	१२	८	५३	२८	१४	१४	८	वृषभ	[illegible]	[illegible]
२८८	२९	मृत्यु:	११	बृ.	६	२२	मृ	४७	२३	ऐ	२५	४४	वि	६	२२	५६	२८	१६	१५	९	मिथुन १६/१८	[illegible]	[illegible]
२८९	३०	पद्म:	१२	शु.	०	५१	आ	४३	५८	वै	१८	१८	बा	०	५१	५६	२८	१६	१६	१०	मिथुन	[illegible]	[illegible]
०	०	०	१३	शु	५५	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
२९०	३१	छत्र:	१४	श.	५१	०	पु	४१	११	वि	११	१७	ग	२३	२४	३/२७	२८	१६	१७	११	कर्क २६/५३	[illegible]	[illegible]
२९१	१	श्रीवत्स:	१५	सू.	४७	४६	पु	३६	११	प्री	४/५१	५६/८	वि	१६	२३	६	२७	१७	१८	१२	कर्क	[illegible]	[illegible]

दिनांक १९ जनवरी से १ फरवरी २०२६ई.तक।
शिशिरऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः,दक्षिणगोलेः।
(माघ शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

कुंभेभानु: ३६/३३, श्रवणेबुध ३४/२८ ग ०/१३, श्रवणेशुक्र ३४/२८ ग ४५/३३ गुप्तनवरात्रारंभ, A
पंचक ४३/३५ उप. चंद्रोदयमु. ३०स्थिरता A श्रीवल्लभजयंति
सावानमा.८मुस.,गौरीतृतीयाव्रतं.
म. १२/४६ उप. ४१/३८ या., तिलचतुर्थी प्रदोष व्यापिनी B नेताजीसुभाषजयंति
अभिजितरविप्रवेश ४/१३ वसंत पंचमी, श्रीसरस्वतीमहोत्सव, श्रीपंचमी, B
श्रवणेरवि १६/४, बुधोदयप. ३६/५ C मर्यादामहोत्सवजैन, अचलाव्पुत्रव्रतं,
म. ३६/२ उप. ४६/० या., अभिजितरविनिर्गतो ३, पंचक ७/० या. रथ७, मन्वादि, C
भीष्माष्टमी गणतंत्रदिवस७७वां.
धनेष्ठायांबुध ३६/२८ ग ६० कृतयुगादी
म. ३६/५ उप.,
म. ६/२५ या., जया१व्रतंसर्वे:, भिष्मद्वादशी,
श्रवणेभौम ४०/६ ग ४६/५७, धनेष्ठायांशुक्र ११/२ ग ७५/३४ अर्यमाआदित्य१व्रतं प्रदोष D
D विश्वकर्माजयंति, गुरुगोरखनाथ जयं., कल्पादि,
म. ५१/० उप., माघजयं., मेतावाणेश्वर बांसवाड़ा,
म. ३६/३ या., कुंभेबुध १/२, शुक्रोदयप. ३३/२६ होलिका(रोपणी)रोपणम्, E
E रामस्नेहिजयं. प्रयागराज माघस्नानपूर्ण, रविदासजयं., ललिताजयं.

गोचर ग्रहा:

बुधोदय प.,भौमास्त प.
शुक्रास्तपूर्वे

माघ शुक्ला ८ चंद्र
गण २८५, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ ९ २५ २८	९ २० ३१ ५७	२ २५ ५६ २०	९ १८ ३ ५५	१० २८ १८ ४५	१० १५ ४० १३	४ १५ ४० १३
४५ ५७	१०१ १३	५ ५९ +	७५ ३२	५ ३४	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
नीर	अमृत	नीर	अमृत	नीर	जल	जल

दुर्भिक्ष छत्रभंग भय,रविवार हो पांच। भ्रष्टाचार आतंक बढ़े, बाहुबली घर जांच।।१।। माघ अमावस पूर्णिमा,रवि शनि मंगलवार। शस्त्र गुरुराजा लड़े,रोग शोक अपार।।२।। रविवारी सप्तमी,माघ सुदी की देख। महाघोर दुर्भिक्ष भय,इण मे मीन न मेख।।३।। कर्क मकर संक्रांत जब,एक वार पढंत। माघ सुदी तिथि क्षय हुवे,छत्रभंग करंत।।४।। माघ अमावस बादला,भांत भांत देखाय। भादरवा की पूनमे,चार प्रहर वरसाय।।५।। वाय बीजली फाटै धरणी। दिवस दिखावे तारो तरणी। कहे माघजी काल स्वभाव। वर्षे धूल घाले वाव।।६।। होत चांदनी रात में,रक्त रंग आसमान। देश विग्रह छत्रभंग हो, माघ कहे जन हान।।७।।

माघ शुक्ला १५ सूर्य
गण २९१, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ ११ २ ३२	९ २९ ५० ४१	२ २५ २० २५	९ २५ ३७ १४	१० २८ ५२ १४	१० १५ २१ ८	४ १५ २१ ८
४६ ५७	९० २	५ ५९ +	७५ ३४	५ ३४	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अमृत	अमृत	नीर	अमृत	नीर	जल	जल

गोचर ग्रहा:

भौमास्तप.,बुधोदयप.
शुक्रोदयप.रात्री

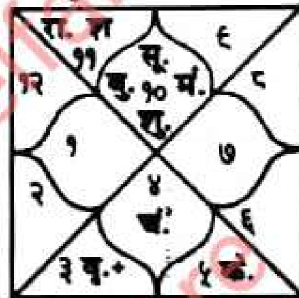

फाल्गुन कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण २९२ से ३०७)

दिनांक २ फरवरी से १७ फरवरी २०२६ई.तक।
शिशिर/वसंतऋतुः। रविर्देवता उत्तरायने:,दक्षिणगोलेः।
(माघ कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रे:)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योग	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेन्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	विवरण
२९२	२	सौम्य:	१.	चं.	४५	१२	[illegible]	३८	१२	सौ	५४	१३	बा	१६	१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६	१३	सिंह [illegible]	[illegible]	[illegible]	
२९३	३	काल:	२.	मं.	४३	४५	म	२८	१८	शो	५०	१३	तै	१४	२८	१२	२६	१८	२०	१४	सिंह	[illegible]	[illegible]	शब्बेबरात मु.,
२९४	४	सुस्थिर:	३.	बु.	४३	३५	पू	३६	३६	अ	४७	१२	व	१३	४०	१७	२४	२०	२१	१५	कन्या [illegible]	[illegible]	[illegible]	भ.[illegible]उप.[illegible]या.,कुंभेशुक्र[illegible]
२९५	५	मातंग:	४.	गु.	४४	५३	उ	४२	१५	सु	४५	११	ब	१४	१४	२१	२४	२०	२२	१६	कन्या	[illegible]	[illegible]	शत्तभिषायांबुध[illegible]ग[illegible] चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय[illegible]बजे,
२९६	६	अमृत:	५.	शु.	४७	१६	ह	४६	४	धृ	४४	११	कौ	१६	४	२४	२४	२२	२३	१७	कन्या	[illegible]	[illegible]	धनेष्ठायांरवि[illegible]
२९७	७	काण:	६.	श.	५०	४६	चि	५०	५६	शू	४४	२	गं	१९	१	२८	२३	२३	२४	१८	तुला [illegible]	[illegible]	[illegible]	भ.[illegible] उप., श्रीनाथजीपाटोत्सव(नाथद्वारा)
२९८	८	[illegible]	७.	सू.	५५	१२	स्वा	५६	४४	गं	४४	३२	वि	२२	५६	३१	२३	२३	२५	१९	तुला	[illegible]	[illegible]	भ.[illegible]या.,
२९९	९	[illegible]:	८.	चं.	६०	०	वि	६०	०	वृ	४५	३५	बा	२७	४७	३४	२२	२४	२६	२०	वृश्चि.[illegible]	[illegible]	[illegible]	शत्तभिषायांशुक्र[illegible]ग[illegible],विच्छुडा[illegible]उप. श्रीसीताष्टमी
३००	१०	श्रीवत्स:	८.	मं.	०	२२	वि	३	३	ध्रु	४६	५६	कौ	०	२२	३७	२२	२४	२७	२१	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]	A व्यापिनी छ्यामिषेषरात्रिजागरणम्,श्रीदयानन्दबोधोत्सवः
३०१	११	सौम्य:	९.	बु.	५	३८	अ	८	२७	व्या	४८	१२	ग	५	३८	४०	२३	२५	२८	२२	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]	भ.[illegible] उप., श्रीसमर्थरामदास९,
३०२	१२	काल:	१०.	गु.	१०	४७	ज्ये	१५	४४	ह	४६	७	वि	१०	४७	४३	१६	२५	२६	२३	धनु [illegible]	[illegible]	[illegible]	भ.[illegible]या.,कुंभे ऽर्कः[illegible] विच्छुडा[illegible]या.
३०३	१३	सुस्थिर:	११.	शु.	१५	२३	मू	२१	२४	व	४६	२८	बा	१५	२३	४६	१६	२५	१	२४	धनु	[illegible]	[illegible]	पूमा४मीनेशनि[illegible]ग[illegible], विजया११सर्वे
३०४	१४	मातंग:	१२.	श.	१९	९	पू	२६	११	सि	४६	२	तै	१६	९	४९	१८	२६	२	२५	मकर [illegible]	[illegible]	[illegible]	शनिप्रदोष महापुण्यद, गोविन्दपूजा, अतिरात्रयज्ञफल
३०५	१५	अमृत:	१३.	सू.	२१	४५	उ	२६	५२	व्य	४७	३६	व	२१	४५	५२	१७	२७	३	२६	मकर	[illegible]	[illegible]	भ.[illegible]उप.[illegible]या.,शत्तभिषा४बुध[illegible]ग.[illegible] महाशिवरात्रिव्रतं.मध्यरात्रि A
३०६	१६	सिद्धि:	१४.	चं.	२३	६	श्र	३२	१६	व	४५	२२	श	२३	६	५६	१७	२७	४	२७	मकर	[illegible]	[illegible]	धनेष्ठायांभौम[illegible]ग.[illegible]
३०७	१७	उत्पात:	३०.	मं.	२३	८	ध	३३	२६	प	४२	५	ना	२३	८	५८	१६	२८	५	२८	कुंभ [illegible]	[illegible]	[illegible]	मीनेभानु[illegible]वसंतऋतुप्रा.,पंचक[illegible]उप. दैवपितृकार्येऽमा, शिवखप्परपूजा

गोचर ग्रहा:

शुक्रोदयप., भौमास्तप. बुधोदय पश्चिमे

फाल्गुन कृष्णा ८ मंगल
गण ३०० इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ १८ ५ ६	१० १० ५६ ३४	२ २४ २६ ३३	१० ६ ५७ २०	१० २६ ४२ २७	१० १४ ५२ ३१	४ १४ ५२ ३१
४६ ५७	९८ ९६	५ ५६ +	७५ ३	५ ३४	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

फाल्गुन कृष्णा १० गुरु कुंभेऽर्क प्रवेशः। वाराद् २ सुभिक्ष,मंदी। नक्षत्राद् ३ सुभिक्ष मंदी। वार नाम मन्दा,द्विजसुखी। नक्षत्र नाम राक्षसी,चांडाल सुखी। संक्रांति काल प्रत्यूषे,पशु पालक सुखी। उत्तरे मुख,अग्निकोणे दृष्टि,पूर्वे गमनं। बालव कर्णे बैठी,सम। व्याघ्र वाहन,अश्व उपवाहन,भय। पीत वस्त्र,गदा आयुध,चांदी पात्र, क्षीर भोजन,कुंकुम लेपन,वणिक् जाति,जूही पुष्प,कंकण भूषण,पर्ण कंचुकी,कुमारी अवस्था,दक्षिणमुख,भेरी वाद्य,भोग अवस्था,हस्ते पीत फल,लक्ष्मी प्राप्ति। संक्रांति निवास तटे,रजक(धोबी) गृहे,सुभिक्ष,मंदी। मु.३० स्थिरता। संक्रांति पुण्यं पर दिने प्रथम प्रहरे पुण्यकालः। वत्स निवास दक्षिणे। त्रैमासिक राहु दक्षिणे। शुक्रोदय पश्चिमे।

फाल्गुन कृष्णा ३० मंगल
गण ३०७, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ २३ ३३ ३५	१० १६ ५६ २५	२ २३ ४४ ३६	१० १५ ४२ ४७	११ ० २६ ५	१० १४ ३० १५	४ १४ ३० १५
४६ १७	९८ १०	५ ५६ +	७५ ३	६ ४१	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गोचर ग्रहा:

भौमास्तप.,बुधोदयप. शुक्रोदयप.

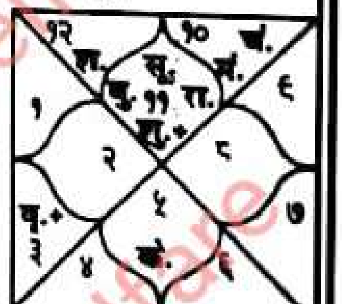

फाल्गुन शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण३०८से३२१)

दिनांक १८ फरवरी से ३ मार्च २०२६ ई. तक।
वसंतऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः,दक्षिणगोलेः।
(फाल्गुन शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

गण	तारीख	वार+नक्षत्र योग	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टैण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
३०८	१८	मानसः	१.	बु.	२१	५६	श	३३	२६	शि	३७	५१	ब	२१	५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६	२६	कुंभ	[illegible]	[illegible]	चंद्रोदयमु.४५मंवी, A फूलेरा दूज,रमजानमा.६मुस.,रोजात्योबारमु.,
३०९	१९	मुद्गरः	२.	गु.	१९	३३	पू	३२	२१	सि	३२	४२	कौ	१९	३३	६	१५	२६	७	१	मीन	[illegible]	[illegible]	शतभिषायांरवि पयोव्रतप्रारंभ(भारत)श्रीरामकृष्णपरमहंस जयंती, A
३१०	२०	ध्वजः	३.	शु.	१९	८	उ	३०	१५	सा	२६	४६	ग	१९	८	१०	१४	३०	८	२	मीन	[illegible]	[illegible]	भ.उप.,पूभायांशुक्र ग
३११	२१	प्रजापति	४.	श.	११	४८	रे	२७	२३	शु	२०	१०	वि	११	४८	१४	१३	३१	९	३	मेष	[illegible]	[illegible]	भ.या.,वक्रीपुनभगुरु ग,पंचक या.
३१२	२२	आनंदः	५.	सू.	६	४६	अ	२३	५५	शु	१३	३	बा	६	४६	१८	१२	३२	१०	४	मेष	[illegible]	[illegible]	रंगपंचमी याज्ञवल्क्यजयं., B ज्वालामुखी उप.
३१३	२३	चरः	६.	चं.	१	२४	भ	२०	२	ब्र	[illegible]	[illegible]	तै	१	२४	२२	१२	३२	११	५	वृषभ	[illegible]	[illegible]	भ.उप.,वक्रीबुध गु. ग होलाष्टक उप प्रारंभ B
०	०	०	७.	चं.	५५	३९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	
३१४	२४	[?]	८.	मं.	४६	४६	कृ	१५	५७	ऐ	५०	४	वि	२२	४३	२६	१०	३२	१२	६	वृषभ	[illegible]	[illegible]	भ.या.,ज्वालामुखी या.उप.
३१५	२५	धूम्रः [?]	९.	बु.	४३	५६	रो	११	५१	सि	४२	२१	बा	१६	५२	३०	९	३३	१३	७	मिथुन	[illegible]	[illegible]	कुंभेभौम ज्वालामुखी या. C मेवाड़,मेलाखाटूश्यामजीप्रा.
३१६	२६	मृत्युः	१०.	गु.	३८	२६	मृ	७	५७	प्री	३४	५६	तै	११	१४	३३	८	३४	१४	८	मिथुन	[illegible]	[illegible]	
३१७	२७	पद्मः	११.	शु.	३३	२३	आ	४	२६	आ	२७	५०	व	५	५६	३७	६	३४	१५	९	कर्क	[illegible]	[illegible]	भ.उप.या.,बुधास्तप. आमलकी१व्रतसर्व फूलडोलशाहपुरा C
३१८	२८	छत्रः	१२.	श.	२९	१	पु	[illegible]	[illegible]	सौ	२१	१५	ब	१	१२	४१	५	३५	१६	१०	कर्क	[illegible]	[illegible]	मीनेशुक्र राष्ट्रीयविज्ञान दिवस आदित्य१व्रत,
३१९	१	वज्रः	१३.	सू.	२५	३०	श्ले	५८	६	शो	१५	२०	तै	२५	३०	४५	४	३६	१७	११	सिंह	[illegible]	[illegible]	प्रदोष पयोव्रत पूर्ण,
३२०	२	ध्वांक्षः	१४.	चं.	२२	५९	म	५७	५८	अ	१०	१२	व	२२	५९	४९	३	३६	१८	१२	सिंह	[illegible]	[illegible]	भ.उप.या.,होलिकादहनंप्रदोषरात्रि उप.,ब्रह्ममुहूर्त
३२१	३	धूम्रः [?]	१५.	मं.	२१	३६	पू	५९	२	सु	५	५६	ब	२१	३६	५३	३	३७	१९	१३	सिंह	[illegible]	[illegible]	उभायांशुक्र ग,शनिअस्तप.पूर्णिमाव्रत,मन्वादि,गणगौरीव्रतारंभD
																								Dढुंढोत्सव,ग्रस्तोदित चंद्रग्रहण,वसंतोत्सव,फागछारड़ी,जमड़ा,

गोचर ग्रहाः

बुध+गुरुवक्री,भौमास्त-प.,बुध,शुक्रउदय प.

फाल्गुन शुक्ला ८ मंगल गण ३१४, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ २८ ५७ ३६	१० १८ ३५ १९	२ २३ ७ ७	१० २४ २७ २३	११ १ १३ २६	१० १४ ७ ५९	४ १४ ७ ५९
४६ ९७	१० २४ +	४ २७ +	७४ ४९	६ ४५	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पांच सोम इण मास में,जनता मे संतोष। धनधान्य हो मोकलां,बढ़े राज को कोष।।१।। क्रूरवारी अमावसी,फागुनमास की देख। कटाकटी हो द्वंद चहुं ,दुर्भिक्ष उपद्रव लेख।२। फागुणसुदी पड़वा तिथि,शतभिष सुगाल को लेख। आठम कृतिका सुभिक्ष हो,आद्रा वर्षन्तो देख।।३।। चंद्रग्रहण मंगलवार में,अमंगल करंतो देख। जगह जगह उदंगल करें, अग्नि विस्फोट को लेख।।४।। होली मंगले सोम की,हर्षित नर ओर नार। घर घर होय बधावणा, घर घर मंगलाचार।।५।। ग्रहण समय में बादला,अथवा बिजली गाज। अवगुण सारा गल गया,बजाओ मंगल साज।।६।। गज घोड़ा नाहर मुखा,नर वानर मुख होय। उष्ट्र अज शूकर श्वान मुख,राक्षस कहिये सोय।।७।। मांस भखै मद्यपान करे, धूम्रपान विषखाय। हीर कहे सुण माफजी,ये राक्षस लक्षय बताय।।८।।

फाल्गुन शुक्ला१५ मंगल गण ३२१, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० ४ २१ ३८	१० १७ २२ १९	२ २२ ३५ ४१	११ ३ ११ १२	११ २ ० ४६	१० १३ ४५ ४४	४ १३ ४५ ४४
४६ ९७	१० २४ +	४ २७ +	७४ ४६	६ ४५	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गोचर ग्रहाः

बुध,शनि,मंगलअस्तप.
शुक्रोदय पश्चिमे

चैत्र कृष्णपक्ष: श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शक: १९४७(लघुगण ३२२से३३६तक)

दिनांक ४ मार्च से १८ मार्च २०२६ई.तक।
वसंतऋतु:। रविर्देवता उत्तरायने:,दक्षिणगोले:।
(फाल्गुन कृष्ण पक्ष: गुजरात महाराष्ट्रे:)

गण	तारीख	नाम योग	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टैण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	ल.	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
३२२	४	प्रवर्धमान	१.	बु.	२१	३०	उ	६०	०	शू	२	४३	कौ	२१	३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०	१४	कन्या	[illegible]	[illegible]	पूभायांरवि
३२३	५	मातंग:	२.	गु.	२२	४०	उ	१	२१	शू	[illegible]	[illegible]	ग	२२	४०	[illegible]	३	३७	२१	१५	कन्या	[illegible]	[illegible]	म. उप.,शत्तभिषायांभौम ग संत तुकाराम जयंति
३२४	६	अमृत:	३.	शु.	२५	७	ह	४	५४	वृ	५८	५२	वि	२५	७	५	०	३८	२२	१६	तुला	[illegible]	[illegible]	म. या., चतुर्थीव्रत चंद्रोदय बजे कल्पादि
३२५	७	काण:	४.	श.	२८	४८	चि	६	३६	ध्रु	५६	१८	बा	२८	४८	६	[illegible]	३९	२३	१७	तुला	[illegible]	[illegible]	वक्रीशत्तभिषा३बुध ग
३२६	८	लुंबक:	५.	सू.	३३	१३	स्वा	१५	१२	व्या	६०	०	कौ	१	१	१३	५७	३८	२४	१८	तुला	[illegible]	[illegible]	श्रीरंगपंचमी, A केसरियाजीमेला मेवाड़,ऋषभदेवजयंति,
३२७	९	मित्र:	६.	च.	३८	१६	वि	२१	२६	व्या	०	१८	ग	५	४४	१७	५७	३८	२५	१९	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]	म. उप.,बिच्छुड़ा उप. एकनाथषष्ठी,
३२८	१०	ध्वज:	७.	मं.	४३	३५	अ	२८	४	ह	१	३४	वि	१०	५६	२१	५६	४०	२६	२०	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]	म. या., शीतला७पूजनबासोड़ा
३२९	११	ध्वांक्ष:	८.	बु.	४८	४०	ज्ये	३४	२२	व	[illegible]	५७	बा	१६	७	२५	५५	४१	२७	२१	धनु	[illegible]	[illegible]	शत्तभिषा२कुंभेराहुमघा४सिंहेकेतु,बिच्छुड़ा या. शीतलाष्टमी, A
३३०	१२	धूम्र	९.	गु.	५३	१०	मू	४०	१६	सि	४	४	तै	२०	५५	२६	५४	४२	२८	२२	धनु	[illegible]	[illegible]	नक्षत्र पुरुषव्रतमूलभे,इष्टावरात
३३१	१३	प्रवर्धमान	१०.	शु.	५६	४६	पू	४५	१७	व्य	४	३२	व	२४	५८	३२	५३	४१	२९	२३	धनु	[illegible]	[illegible]	म. उप. या.,रेवत्यांशुक ग दशामाताव्रत
३३२	१४	राक्षस:	११.	श.	५८	१७	उ	४६	१५	व	४	२६	व	२८	०	३६	५२	४२	३०	२४	मकर	[illegible]	[illegible]	मीने अर्क:,मार्गीगुरु वृ. ग ,वक्रीशत२बुध ग B
३३३	१५	गद:	१२.	सू.	६०	०	श्र	५२	१	प	३	३५	कौ	२८	५१	४०	५१	४३	१	२५	मकर	[illegible]	[illegible]	बुधोदयपूर्वे ,वैष्णव निम्बार्क११व्रतं
३३४	१६	शुभ:	१२.	चं.	०	२८	ध	५३	३०	शि	[illegible]	[illegible]	तै	०	२८	४४	४६	४३	२	२६	कुंभ	[illegible]	[illegible]	पंचक उप. प्रदोष,वारुणीयोग,सब ए कब,
३३५	१७	मृत्यु:	१३.	मं.	०	२४	श	५३	४६	सा	५४	५३	व	०	२४	४८	४८	४४	३	२७	कुंभ	[illegible]	[illegible]	म. उप. या., विष्णुपूजा पौण्डरीक यज्ञ फल
०	०	०	१४.	मं.	५६	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	B उभा११शनि ग पापमोचनी११व्रतं स्मार्त
३३६	१८	पद्म:	३०.	बु.	५६	३६	पू	५२	५४	शु	५०	४	च	२७	५०	५२	४८	४४	४	२८	मीन	[illegible]	[illegible]	उभायांरवि,मार्गीबुध वृ. ग देवपितृकार्ये अमा,मन्वादि

गोचर ग्रहा:

शनिअस्तप.,शुक्रोदयप.
भौमास्तप.,बुधास्तप.

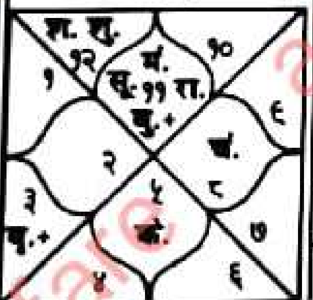

चैत्र कृष्णा ८ बुध
गण ३२९, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० १० ३३ २२	१० १४ ५० ४२	२ २२ ० ७	११ १३ ८ ११	११ २ ५४ ५३	१० १३ २० १७	४ १३ २० १७
४६ ३४	२७ ४७ +	४ २७ +	७४ ३७	६ ४५	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चैत्र कृष्ण पक्ष ११ शनिवार मीनेऽर्क प्रवेश:। वारात् ३ सुभिक्ष मंदी। नक्षत्रात् ३ सुभिक्ष मंदी। वार नाम राक्षसी,चांडाल सुखी। नक्षत्र नाम मंदा,द्विज सुखी। संक्रांति काल अर्धरात्री,राक्षस सुखी। पश्चिमे मुख, ईशान दृष्टि उत्तरे गमनं। बालव कर्णे बैठी,सम। व्याघ्र वाहन,अश्व उपवाहन,भय। पीतवस्त्र,गदा आयुध,चांदी पात्र,खीर भोजन,कुंकुम लेपन,वणिक् जाति,जूही पुष्प कंकण भूषण,पर्ण कंचुकी,कुमार अवस्था ,दक्षिणे मुख,भेरी वाद्य,भोग अवस्था। हस्ते कृष्णफल,मृत्युदाई। संक्रांति निवास पर्वते,कुंभकार गृहे,तेजी,अल्पवृष्टि। मु.४५ मंदी। संक्रांति पुण्य पर दिने प्रथम प्रहरे पुण्यकाल:। वत्स निवास पश्चिमे। त्रैमासिक राहु दक्षिणे। शुक्रोदय पश्चिमे।

चैत्र कृष्णा ३० बुध
गण ३३६ , इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० १५ ५६ २१	१० ११ ३२ १८	२ २२ २ ३०	११ २१ ५० १६	११ ३ ४३ १८	१० १२ ५८ २	४ १२ ५८ २
४६ ३४	२८ ४६ +	४ ५५ मा	७४ ३४	७ ५	३ ११	३ ११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गोचर ग्रहा:

गुरुमार्गी,बुधोदयपूर्वे
मंगल,शनिअस्तप.,

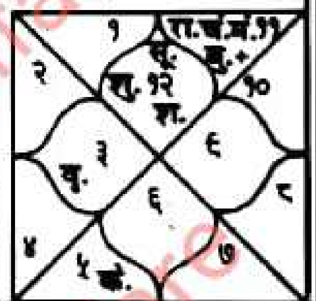

जनवरी मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (स्टेण्डर्ड टाइम घंटा मिनट)

ता	मेष दिवा		वृषभ दिवा		मिथुन दिवा		कर्क सांय		सिंह रात्रि		कन्या रात्रि		तुला रात्रि		वृश्चिक रात्रि		धनु रात्रि		मकर प्रात:		कुम्भ दिवा		मीन दिवा	
१	१	१०	२	४४	४	४१	६	५५	९	१३	११	२९	१	४७	४	५	६	२२	८	२७	१०	१२	११	४२
२	१	६	२	४०	४	३७	६	५१	९	९	११	२५	१	४३	४	०	६	१८	८	२३	१०	८	११	३८
३	१	२	२	३६	४	३३	६	४७	९	५	११	२१	१	३९	३	५७	६	१४	८	१९	१०	४	११	३४
४	१२	५८	२	३२	४	२९	६	४३	९	१	११	१७	१	३५	३	५३	६	१०	८	१५	१०	०	११	३०
५	१२	५४	२	२८	४	२५	६	३९	८	५७	११	१३	१	३१	३	४९	६	६	८	११	९	५६	११	२६
६	१२	५०	२	२४	४	२१	६	३५	८	५३	११	९	१	२७	३	४५	६	२	८	७	९	५२	११	२२
७	१२	४६	२	२०	४	१७	६	३०	८	४९	११	५	१	२३	३	४०	५	५८	८	३	९	४८	११	१८
८	१२	४२	२	१६	४	१३	६	२७	८	४५	११	१	१	१९	३	३७	५	५५	७	५९	९	४४	११	१४
९	१२	३८	२	१२	४	९	६	२३	८	४१	१०	५७	१	१५	३	३३	५	५०	७	५५	९	४०	११	१०
१०	१२	३४	२	८	४	५	६	१९	८	३७	१०	५३	१	११	३	२९	५	४६	७	५१	९	३६	११	६
११	१२	३०	२	४	४	१	६	१५	८	३३	१०	४९	१	७	३	२५	५	४२	७	४७	९	३२	११	२
१२	१२	२६	२	०	३	५७	६	१०	८	२९	१०	४५	१	३	३	२१	५	३८	७	४३	९	२८	१०	५८
१३	१२	२२	१	५६	३	५३	६	७	८	२५	१०	४१	१२	५९	३	१७	५	३४	७	३९	९	२४	१०	५४
१४	१२	१९	१	५३	३	५०	६	४	८	२२	१०	३८	१२	५६	३	१४	५	३१	७	३६	९	२१	१०	५१
१५	१२	१५	१	४९	३	४६	६	०	८	१८	१०	३४	१२	५२	३	१०	५	२७	७	३२	९	१७	१०	४७
१६	१२	११	१	४५	३	४२	५	५६	८	१४	१०	३०	१२	४८	३	६	५	२३	७	२८	९	१३	१०	४३
१७	१२	७	१	४१	३	३८	५	५२	८	१०	१०	२६	१२	४४	३	२	५	१९	७	२४	९	९	१०	३९
१८	१२	३	१	३७	३	३४	५	४८	८	६	१०	२२	१२	४०	२	५८	५	१५	७	२०	९	५	१०	३५
१९	११	५९	१	३३	३	३०	५	४४	८	२	१०	१८	१२	३६	२	५४	५	११	७	१६	९	०	१०	३१
२०	११	५५	१	२९	३	२६	५	४०	७	५८	१०	१४	१२	३२	२	५०	५	७	७	१२	८	५७	१०	२८
२१	११	५१	१	२५	३	२२	५	३६	७	५४	१०	१०	१२	२८	२	४६	५	३	७	८	८	५३	१०	२३
२२	११	४७	१	२१	३	१८	५	३२	७	५०	१०	७	१२	२४	२	४२	४	५९	७	४	८	४९	१०	१९
२३	११	४३	१	१७	३	१४	५	२८	७	४६	१०	३	१२	२०	२	३८	४	५५	७	०	८	४५	१०	१५
२४	११	३९	१	१३	३	१०	५	२४	७	४२	९	५८	१२	१६	२	३४	४	५१	६	५६	८	४१	१०	११
२५	११	३५	१	९	३	६	५	२०	७	३८	९	५४	१२	१२	२	३०	४	४७	६	५२	८	३७	१०	७
२६	११	३१	१	५	३	२	५	१६	७	३४	९	५०	१२	८	२	२६	४	४३	६	४८	८	३३	१०	२
२७	११	२७	१	१	२	५८	५	१२	७	३०	९	४६	१२	४	२	२२	४	३९	६	४४	८	२९	९	५९
२८	११	२३	१२	५८	२	५४	५	८	७	२६	९	४२	१२	०	२	१८	४	३५	६	४०	८	२५	९	५५
२९	११	१९	१२	५३	२	५०	५	४	७	२२	९	३८	११	५६	२	१४	४	३१	६	३६	८	२१	९	५१
३०	११	१६	१२	५०	२	४७	५	०	७	१८	९	३४	११	५३	२	११	४	२८	६	३३	८	१८	९	४८
३१	११	१२	१२	४६	२	४३	४	५६	७	१५	९	३०	११	४९	२	७	४	२४	६	२९	८	१४	९	४४

फरवरी मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (स्टेण्डर्ड टाइम घंटा मिनट)

ता	मेष दिवा		वृषभ दिवा		मिथुन दिवा		कर्क दिवा		सिंह सायं		कन्या रात्रि		तुला रात्रि		वृश्चिक रात्रि		धनु रात्रि		मकर रात्रि		कुम्भ प्रात:		मीन दिवा	
१	११	७	१२	४४	२	४१	४	५१	७	१३	९	२८	११	४४	२	२	४	१९	६	२४	८	६	९	३९
२	११	२	१२	४०	२	३७	४	४७	७	९	९	२४	११	३९	१	५७	४	१५	६	१९	८	४	९	३४
३	१०	५८	१२	३६	२	३३	४	४३	७	५	९	२०	११	३५	१	५३	४	११	६	१५	८	०	९	३०
४	१०	५४	१२	३२	२	२९	४	३९	७	१	९	१६	११	३१	१	४९	४	७	६	११	७	५६	९	२६
५	१०	५०	१२	२८	२	२५	४	३५	६	५७	९	१२	११	२७	१	४५	४	३	६	७	७	५२	९	२२
६	१०	४६	१२	२४	२	२१	४	३१	६	५३	९	८	११	२३	१	४१	३	५९	६	३	७	४८	९	१८
७	१०	४२	१२	२०	२	१७	४	२७	६	४९	९	४	११	१९	१	३७	३	५५	५	५९	७	४४	९	१४
८	१०	३८	१२	१६	२	१३	४	२३	६	४५	९	०	११	१५	१	३३	३	५१	५	५५	७	४०	९	१०
९	१०	३४	१२	१२	२	९	४	१९	६	४१	८	५६	११	११	१	२९	३	४७	५	५१	७	३६	९	६
१०	१०	३०	१२	८	२	५	४	१५	६	३७	८	५२	११	७	१	२५	३	४३	५	४७	७	३२	९	२
११	१०	२६	१२	४	२	०	४	११	६	३३	८	४८	११	३	१	२१	३	३९	५	४३	७	२८	८	५८
१२	१०	२२	१२	०	१	५७	४	७	६	२९	८	४४	१०	५९	१	१७	३	३५	५	३९	७	२४	८	५५
१३	१०	१८	११	५६	१	५३	४	३	६	२५	८	४१	१०	५५	१	१३	३	३१	५	३५	७	२०	८	५०
१४	१०	१४	११	५२	१	४९	३	५९	६	२१	८	३६	१०	५१	१	९	३	२७	५	३१	७	१६	८	४६
१५	१०	१०	११	४८	१	४५	३	५५	६	१७	८	३२	१०	४७	१	५	३	२३	५	२७	७	१२	८	४२
१६	१०	६	११	४४	१	४१	३	५१	६	१३	८	२८	१०	४३	१	१	३	१९	५	२३	७	८	८	३८
१७	१०	२	११	४०	१	३७	३	४७	६	९	८	२४	१०	३९	१२	५७	३	१५	५	१९	७	४	८	३४
१८	९	५८	११	३६	१	३३	३	४३	६	५	८	२०	१०	३५	१२	५३	३	११	५	१५	७	०	८	३०
१९	९	५४	११	३२	१	२८	३	३९	६	१	८	१६	१०	३१	१२	४९	३	७	५	११	६	५६	८	२६
२०	९	५०	११	२८	१	२५	३	३५	५	५७	८	१२	१०	२७	१२	४५	३	३	५	७	६	५२	८	२२
२१	९	४६	११	२४	१	२१	३	३१	५	५३	८	८	१०	२३	१२	४१	२	५९	५	३	६	४८	८	१८
२२	९	४२	११	२०	१	१७	३	२७	५	४९	८	४	१०	१९	१२	३७	२	५५	४	५९	६	४४	८	१४
२३	९	३८	११	१६	१	१३	३	२३	५	४५	८	०	१०	१५	१२	३३	२	५१	४	५५	६	४०	८	१०
२४	९	३५	११	१३	१	१०	३	२०	५	४२	७	५७	१०	१२	१२	३०	२	४८	४	५२	६	३७	८	७
२५	९	३१	११	९	१	६	३	१६	५	३८	७	५३	१०	८	१२	२६	२	४४	४	४८	६	३३	८	३
२६	९	२७	११	५	१	२	३	१२	५	३४	७	४९	१०	४	१२	२२	२	४०	४	४४	६	२९	७	५९
२७	९	२३	११	१	१२	५८	३	८	५	३०	७	४५	१०	०	१२	१८	२	३६	४	४०	६	२५	७	५५
२८	९	२०	१०	५८	१२	५५	३	५	५	२६	७	४२	९	५८	१२	१५	२	३३	४	३७	६	२२	७	५२
२९	९	१८	१०	५६	१२	५१	३	३	५	२३	७	३९	९	५६	१२	११	२	३०	४	३५	६	२०	७	५०

दैनिक स्टेण्डर्ड टाईम लग्न सारिणी :-इनमें अंग्रेजी मास के क्रम से प्रत्येक तारीख के मेषादि लग्नों के प्रवेश काल दिया है। जैसे कि १ जनवरी स्टेण्डर्ड समय दिनांक १.१० से मेष लग्न प्रारंभ तथा २.४४ से वृषभलग्न प्रारंभ,यह क्रम समझें। यह लग्न सारिणी जोधपुर के लग्न पत्र से तैयार है।

मार्च मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (स्टेण्डर्ड टाइम घंटा मिनट)

ता	मेष दिवा		वृषभ दिवा		मिथुन दिवा		कर्क दिवा		सिंह दिवा		कन्या सायं		तुला रात्रि		वृश्चिक रात्रि		धनु रात्रि		मकर रात्रि		कुम्भ रात्रि		मीन प्रातः	
१	९	१५	१०	५४	१२	४७	३	१	५	१९	७	३८	९	५३	१२	१०	२	२८	४	३३	६	१८	७	४८
२	९	११	१०	५०	१२	४३	२	५७	५	१५	७	३४	९	४९	१२	७	२	२४	४	२९	६	१४	७	४४
३	९	७	१०	४६	१२	३९	२	५३	५	११	७	३०	९	४५	१२	३	२	२०	४	२५	६	१०	७	४०
४	९	३	१०	४२	१२	३५	२	४९	५	७	७	२६	९	४१	११	५९	२	१६	४	२१	६	६	७	३६
५	८	५९	१०	३८	१२	३१	२	४५	५	३	७	२२	९	३७	११	५५	२	१२	४	१७	६	२	७	३२
६	८	५५	१०	३४	१२	२७	२	४१	४	५९	७	१८	९	३३	११	५१	२	८	४	१३	५	५८	७	२८
७	८	५१	१०	३०	१२	२३	२	३७	४	५५	७	१४	९	२९	११	४७	२	४	४	९	५	५४	७	२४
८	८	४७	१०	२६	१२	१९	२	३३	४	५१	७	१०	९	२५	११	४३	२	०	४	५	५	५०	७	२०
९	८	४३	१०	२२	१२	१५	२	२९	४	४७	७	६	९	२१	११	३९	१	५६	४	१	५	४६	७	१६
१०	८	३९	१०	१८	१२	११	२	२५	४	४३	७	२	९	१७	११	३५	१	५२	३	५७	५	४२	७	१२
११	८	३५	१०	१४	१२	७	२	२१	४	३९	६	५८	९	१३	११	३१	१	४८	३	५३	५	३८	७	८
१२	८	३१	१०	१०	१२	३	२	१७	४	३५	६	५४	९	९	११	२७	१	४४	३	४९	५	३४	७	४
१३	८	२७	१०	६	११	५९	२	१३	४	३१	६	५०	९	५	११	२३	१	४०	३	४५	५	३०	७	०
१४	८	२३	१०	२	११	५५	२	९	४	२७	६	४६	९	१	११	१९	१	३६	३	४१	५	२६	६	५६
१५	८	१९	९	५८	११	५१	२	५	४	२३	६	४२	८	५७	११	१५	१	३२	३	३७	५	२२	६	५२
१६	८	१५	९	५४	११	४७	२	१	४	१९	६	३८	८	५३	११	११	१	२८	३	३३	५	१८	६	४८
१७	८	११	९	५०	११	४३	१	५७	४	१५	६	३४	८	४९	११	७	१	२४	३	२९	५	१४	६	४४
१८	८	७	९	४६	११	३९	१	५३	४	११	६	३०	८	४५	११	३	१	२०	३	२५	५	१०	६	४०
१९	८	३	९	४२	११	३५	१	४९	४	७	६	२६	८	४१	१०	५९	१	१६	३	२१	५	६	६	३६
२०	७	५९	९	३८	११	३१	१	४५	४	३	६	२२	८	३७	१०	५५	१	१२	३	१७	५	२	६	३२
२१	७	५५	९	३४	११	२७	१	४१	३	५९	६	१८	८	३३	१०	५१	१	८	३	१३	४	५८	६	२८
२२	७	५१	९	३०	११	२३	१	३७	३	५५	६	१४	८	२९	१०	४७	१	४	३	९	४	५४	६	२४
२३	७	४७	९	२६	११	१९	१	३३	३	५१	६	१०	८	२५	१०	४३	१	०	३	५	४	५०	६	२०
२४	७	४३	९	२२	११	१५	१	२९	३	४७	६	६	८	२१	१०	३९	१२	५६	३	१	४	४६	६	१६
२५	७	३९	९	१८	११	११	१	२५	३	४३	६	२	८	१७	१०	३५	१२	५२	२	५७	४	४२	६	१२
२६	७	३५	९	१४	११	७	१	२१	३	३९	५	५८	८	१३	१०	३१	१२	४८	२	५३	४	३८	६	८
२७	७	३१	९	१०	११	३	१	१७	३	३५	५	५४	८	९	१०	२७	१२	४४	२	४९	४	३४	६	४
२८	७	२७	९	६	१०	५९	१	१३	३	३१	५	५०	८	५	१०	२३	१२	४०	२	४५	४	३०	६	०
२९	७	२३	९	२	१०	५५	१	९	३	२७	५	४६	८	१	१०	१९	१२	३६	२	४१	४	२६	५	५६
३०	७	१९	८	५८	१०	५१	१	५	३	२३	५	४२	७	५७	१०	१५	१२	३२	२	३७	४	२२	५	५२
३१	७	१५	८	५४	१०	४७	१	१	३	१९	५	३८	७	५३	१०	११	१२	२८	२	३३	४	१८	५	४८

अप्रैल मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (स्टेण्डर्ड टाइम घंटा मिनट)

ता	मेष प्रातः		वृषभ दिवा		मिथुन दिवा		कर्क दिवा		सिंह दिवा		कन्या दिवा		तुला सायं		वृश्चिक रात्रि		धनु रात्रि		मकर रात्रि		कुम्भ रात्रि		मीन रात्रि	
१	७	१२	८	४८	१०	४४	१२	५८	३	१६	५	३२	७	४८	१०	७	१२	२३	२	२९	४	१४	५	४४
२	७	८	८	४३	१०	४०	१२	५४	३	१२	५	२८	७	४४	१०	३	१२	१८	२	२५	४	१०	५	४०
३	७	४	८	३९	१०	३६	१२	५०	३	८	५	२४	७	४०	९	५९	१२	१४	२	२१	४	६	५	३६
४	७	०	८	३५	१०	३२	१२	४६	३	४	५	२०	७	३६	९	५५	१२	१०	२	१७	४	२	५	३२
५	६	५६	८	३१	१०	२८	१२	४२	३	०	५	१६	७	३२	९	५१	१२	६	२	१३	३	५८	५	२८
६	६	५२	८	२७	१०	२४	१२	३८	२	५६	५	१२	७	२८	९	४७	१२	२	२	९	३	५४	५	२४
७	६	४८	८	२३	१०	२०	१२	३४	२	५२	५	८	७	२४	९	४३	११	५८	२	५	३	५०	५	२०
८	६	४४	८	१९	१०	१६	१२	३०	२	४८	५	४	७	२०	९	३९	११	५४	२	१	३	४६	५	१६
९	६	४०	८	१५	१०	१२	१२	२६	२	४४	५	०	७	१६	९	३५	११	५०	१	५७	३	४२	५	१२
१०	६	३७	८	१२	१०	९	१२	२३	२	४१	४	५७	७	१३	९	३२	११	४७	१	५४	३	३९	५	९
११	६	३३	८	८	१०	५	१२	१९	२	३७	४	५३	७	९	९	२८	११	४३	१	५०	३	३५	५	५
१२	६	२९	८	४	१०	१	१२	१५	२	३३	४	४९	७	५	९	२४	११	३९	१	४६	३	३१	५	१
१३	६	२५	८	०	९	५७	१२	११	२	२९	४	४५	७	१	९	२०	११	३५	१	४३	३	२७	४	५६
१४	६	२१	७	५६	९	५३	१२	७	२	२५	४	४१	६	५७	९	१६	११	३१	१	३९	३	२३	४	५३
१५	६	१८	७	५३	९	५०	१२	४	२	२२	४	३८	६	५४	९	१३	११	२८	१	३५	३	२०	४	५०
१६	६	१४	७	४९	९	४६	१२	०	२	१८	४	३४	६	५०	९	९	११	२४	१	३१	३	१६	४	४६
१७	६	१०	७	४५	९	४२	११	५६	२	१४	४	३०	६	४६	९	५	११	२०	१	२७	३	१२	४	४२
१८	६	६	७	४१	९	३८	११	५२	२	१०	४	२६	६	४२	९	१	११	१६	१	२३	३	८	४	३८
१९	६	२	७	३७	९	३४	११	४८	२	६	४	२२	६	३८	८	५७	११	१२	१	१९	३	४	४	३४
२०	५	५८	७	३३	९	३०	११	४४	२	२	४	१८	६	३४	८	५३	११	८	१	१५	३	०	४	३०
२१	५	५४	७	२९	९	२६	११	४०	१	५८	४	१४	६	३०	८	४९	११	४	१	११	२	५६	४	२६
२२	५	५०	७	२५	९	२२	११	३६	१	५४	४	१०	६	२६	८	४५	११	०	१	७	२	५२	४	२२
२३	५	४६	७	२१	९	१८	११	३२	१	५०	४	६	६	२२	८	४१	१०	५६	१	३	२	४८	४	१८
२४	५	४२	७	१७	९	१४	११	२८	१	४६	४	२	६	१८	८	३७	१०	५२	१२	५९	२	४४	४	१४
२५	५	३८	७	१३	९	१०	११	२४	१	४२	३	५८	६	१४	८	३३	१०	४८	१२	५५	२	४०	४	१०
२६	५	३४	७	९	९	६	११	२०	१	३८	३	५४	६	१०	८	२९	१०	४४	१२	५१	२	३६	४	६
२७	५	३०	७	५	९	२	११	१६	१	३४	३	५०	६	६	८	२५	१०	४०	१२	४७	२	३२	४	२
२८	५	२६	७	१	८	५८	११	१२	१	३०	३	४६	६	२	८	२१	१०	३६	१२	४३	२	२८	३	५८
२९	५	२२	६	५७	८	५४	११	८	१	२६	३	४२	५	५८	८	१७	१०	३२	१२	३९	२	२४	३	५४
३०	५	१८	६	५३	८	५०	११	४	१	२२	३	३८	५	५४	८	१३	१०	२८	१२	३५	२	२०	३	५०

पता:- त्रिकाल ज्योति पंचांग कार्यालय, बालोतरा (राज.) ३४४ ०२२ फोन नं. (O.) २२४२३०

मई मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (स्टेण्डर्ड टाइम घंटा मिनट)

ता.	मेष रात्रि		वृषभ प्रातः		मिथुन दिवा		कर्क दिवा		सिंह दिवा		कन्या दिवा		तुला दिवा		वृश्चिक सायं		धनु रात्रि		मकर रात्रि		कुम्भ रात्रि		मीन रात्रि	
१	५	१३	६	५०	८	४६	१०	५८	१	१९	३	३५	५	५०	८	७	१०	२५	१२	२९	२	१४	३	४८
२	५	८	६	४६	८	४२	१०	५३	१	१५	३	३१	५	४६	८	३	१०	२१	१२	२५	२	१०	३	४४
३	५	४	६	४२	८	३८	१०	४९	१	११	३	२७	५	४२	७	५९	१०	१७	१२	२१	२	६	३	४०
४	५	०	६	३८	८	३४	१०	४५	१	७	३	२३	५	३८	७	५५	१०	१३	१२	१७	२	२	३	३६
५	४	५६	६	३४	८	३०	१०	४१	१	३	३	१९	५	३४	७	५१	१०	९	१२	१३	१	५८	३	३२
६	४	५२	६	३०	८	२६	१०	३७	१२	५९	३	१५	५	३०	७	४७	१०	५	१२	९	१	५४	३	२८
७	४	४८	६	२६	८	२२	१०	३३	१२	५५	३	११	५	२६	७	४३	१०	१	१२	५	१	५०	३	२४
८	४	४४	६	२२	८	१८	१०	२९	१२	५१	३	७	५	२२	७	३९	९	५७	१२	१	१	४६	३	२०
९	४	४०	६	१८	८	१४	१०	२५	१२	४७	३	३	५	१८	७	३५	९	५३	११	५७	१	४२	३	१६
१०	४	३६	६	१४	८	१०	१०	२१	१२	४३	२	५९	५	१४	७	३१	९	४९	११	५३	१	३८	३	१२
११	४	३२	६	१०	८	६	१०	१७	१२	३९	२	५५	५	१०	७	२७	९	४५	११	४९	१	३४	३	८
१२	४	२८	६	७	८	३	१०	१४	१२	३६	२	५२	५	७	७	२४	९	४२	११	४६	१	३१	३	५
१३	४	२५	६	३	७	५९	१०	१०	१२	३२	२	४८	५	३	७	२०	९	३८	११	४२	१	२७	३	१
१४	४	२१	५	५९	७	५५	१०	६	१२	२८	२	४४	४	५९	७	१६	९	३४	११	३८	१	२३	२	५७
१५	४	१७	५	५५	७	५१	१०	२	१२	२४	२	४०	४	५५	७	१२	९	३०	११	३४	१	१९	२	५३
१६	४	१३	५	५१	७	४७	९	५८	१२	२०	२	३६	४	५१	७	८	९	२६	११	३०	१	१५	२	४९
१७	४	९	५	४७	७	४३	९	५४	१२	१६	२	३२	४	४७	७	४	९	२२	११	२६	१	११	२	४५
१८	४	५	५	४३	७	३९	९	५०	१२	१२	२	२८	४	४३	७	०	९	१८	११	२२	१	७	२	४१
१९	४	२	५	४०	७	३६	९	४७	१२	९	२	२५	४	४०	६	५७	९	१५	११	१९	१	४	२	३८
२०	३	५८	५	३६	७	३२	९	४३	१२	५	२	२१	४	३६	६	५३	९	११	११	१५	१	०	२	३४
२१	३	५४	५	३२	७	२८	९	३९	१२	१	२	१७	४	३२	६	४९	९	७	११	११	१२	५६	२	३०
२२	३	५०	५	२८	७	२४	९	३५	११	५७	२	१३	४	२८	६	४५	९	३	११	७	१२	५२	२	२६
२३	३	४६	५	२४	७	२०	९	३१	११	५३	२	९	४	२४	६	४१	८	५९	११	३	१२	४८	२	२२
२४	३	४२	५	२०	७	१६	९	२७	११	४९	२	५	४	२०	६	३७	८	५५	१०	५९	१२	४४	२	१८
२५	३	३८	५	१६	७	१२	९	२३	११	४५	२	१	४	१६	६	३३	८	५१	१०	५५	१२	४०	२	१४
२६	३	३४	५	१२	७	८	९	१९	११	४१	१	५७	४	१२	६	२९	८	४७	१०	५१	१२	३६	२	१०
२७	३	३०	५	८	७	४	९	१५	११	३७	१	५३	४	८	६	२५	८	४३	१०	४७	१२	३२	२	६
२८	३	२६	५	४	७	०	९	११	११	३३	१	४९	४	४	६	२१	८	३९	१०	४३	१२	२८	२	२
२९	३	२२	५	०	६	५६	९	७	११	२९	१	४५	४	०	६	१७	८	३५	१०	३९	१२	२४	१	५८
३०	३	१८	४	५६	६	५२	९	३	११	२५	१	४१	३	५६	६	१३	८	३१	१०	३५	१२	२०	१	५४
३१	३	१४	४	५२	६	४८	८	५९	११	२१	१	३७	३	५२	६	९	८	२७	१०	३१	१२	१६	१	५०

जून मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (स्टेण्डर्ड टाइम घंटा मिनट)

ता.	मेष रात्रि		वृषभ रात्रि		मिथुन प्रातः		कर्क दिवा		सिंह दिवा		कन्या दिवा		तुला दिवा		वृश्चिक दिवा		धनु सायं		मकर रात्रि		कुम्भ रात्रि		मीन रात्रि	
१	३	१२	४	४७	६	४४	८	५८	११	१६	१	३२	३	४६	६	८	८	२५	१०	२६	१२	१४	१	४५
२	३	८	४	४३	६	४०	८	५४	११	१२	१	२८	३	४२	६	४	८	२१	१०	२२	१२	१०	१	४१
३	३	५	४	४०	६	३७	८	५१	११	९	१	२५	३	३९	६	१	८	१८	१०	१९	१२	७	१	३८
४	३	१	४	३६	६	३३	८	४७	११	५	१	२१	३	३५	५	५७	८	१४	१०	१५	१२	३	१	३४
५	२	५७	४	३२	६	२९	८	४३	११	१	१	१७	३	३१	५	५३	८	१०	१०	११	११	५९	१	३०
६	२	५३	४	२८	६	२५	८	३९	१०	५७	१	१३	३	२७	५	४९	८	६	१०	७	११	५५	१	२६
७	२	४९	४	२४	६	२१	८	३५	१०	५३	१	९	३	२३	५	४५	८	२	१०	३	११	५१	१	२२
८	२	४५	४	२०	६	१७	८	३१	१०	४९	१	५	३	१९	५	४१	७	५८	९	५९	११	४७	१	१८
९	२	४१	४	१६	६	१३	८	२७	१०	४५	१	१	३	१५	५	३७	७	५४	९	५५	११	४३	१	१४
१०	२	३७	४	१२	६	९	८	२३	१०	४१	१२	५७	३	११	५	३३	७	५०	९	५१	११	३९	१	१०
११	२	३३	४	८	६	५	८	१९	१०	३७	१२	५३	३	७	५	२९	७	४६	९	४७	११	३५	१	६
१२	२	२९	४	४	६	१	८	१५	१०	३३	१२	४९	३	३	५	२५	७	४२	९	४३	११	३१	१	२
१३	२	२५	४	०	५	५७	८	११	१०	२९	१२	४५	२	५९	५	२१	७	३८	९	३९	११	२७	१२	५८
१४	२	२१	३	५६	५	५३	८	७	१०	२५	१२	४१	२	५५	५	१७	७	३४	९	३५	११	२३	१२	५४
१५	२	१७	३	५२	५	४९	८	३	१०	२१	१२	३७	२	५१	५	१३	७	३०	९	३१	११	१९	१२	५०
१६	२	१३	३	४८	५	४५	७	५९	१०	१७	१२	३३	२	४७	५	९	७	२६	९	२७	११	१६	१२	४६
१७	२	९	३	४४	५	४१	७	५५	१०	१३	१२	२९	२	४३	५	५	७	२२	९	२३	११	१२	१२	४२
१८	२	६	३	४१	५	३८	७	५२	१०	१०	१२	२६	२	४०	५	२	७	१९	९	२०	११	८	१२	३९
१९	२	२	३	३७	५	३४	७	४८	१०	६	१२	२२	२	३६	४	५८	७	१५	९	१६	११	४	१२	३५
२०	१	५८	३	३३	५	३०	७	४४	१०	२	१२	१८	२	३२	४	५४	७	११	९	१२	११	०	१२	३१
२१	१	५४	३	२९	५	२६	७	४०	९	५८	१२	१४	२	२८	४	५०	७	७	९	८	१०	५६	१२	२७
२२	१	५०	३	२५	५	२२	७	३६	९	५४	१२	१०	२	२४	४	४६	७	३	९	४	१०	५२	१२	२३
२३	१	४६	३	२१	५	१८	७	३२	९	५०	१२	६	२	२०	४	४२	६	५९	९	०	१०	४८	१२	१९
२४	१	४२	३	१७	५	१४	७	२८	९	४६	१२	२	२	१६	४	३८	६	५५	८	५६	१०	४४	१२	१५
२५	१	३८	३	१३	५	१०	७	२४	९	४२	११	५८	२	१२	४	३४	६	५१	८	५२	१०	४०	१२	११
२६	१	३४	३	९	५	६	७	२०	९	३८	११	५४	२	८	४	३०	६	४७	८	४८	१०	३६	१२	७
२७	१	३०	३	५	५	२	७	१६	९	३४	११	५०	२	४	४	२६	६	४३	८	४४	१०	३२	१२	३
२८	१	२६	३	१	४	५८	७	१२	९	३०	११	४६	२	०	४	२२	६	३९	८	४०	१०	२८	११	५९
२९	१	२३	२	५८	४	५५	७	९	९	२७	११	४३	१	५७	४	१९	६	३६	८	३७	१०	२५	११	५६
३०	१	१९	२	५४	४	५१	७	५	९	२३	११	३९	१	५३	४	१५	६	३२	८	३३	१०	२१	११	५२

पता:- त्रिकाल ज्योति पंचांग कार्यालय, बालोतरा (राज.) ३४४ ०२२ फोन नं. (O) २२४२३०

जुलाई मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (स्टेण्डर्ड टाइम घंटा मिनट)

ता	मेष रात्रि		वृषभ रात्रि		मिथुन रात्रि		कर्क प्रात		सिंह दिवा		कन्या दिवा		तुला दिवा		वृश्चिक दिवा		धनु सायं		मकर रात्रि		कुम्भ रात्रि		मीन रात्रि	
१	१	१४	२	५२	४	४९	६	५९	९	२१	११	३७	१	५१	४	९	६	२७	८	३१	१०	१६	११	४६
२	१	१०	२	४८	४	४५	६	५५	९	१७	११	३३	१	४७	४	५	६	२२	८	२७	१०	१२	११	४२
३	१	६	२	४४	४	४१	६	५१	९	१३	११	२९	१	४३	४	१	६	१८	८	२३	१०	८	११	३८
४	१	२	२	४०	४	३७	६	४७	९	९	११	२५	१	३९	३	५७	६	१४	८	१९	१०	४	११	३४
५	१२	५८	२	३६	४	३३	६	४३	९	५	११	२१	१	३५	३	५३	६	१०	८	१५	१०	०	११	३०
६	१२	५४	२	३२	४	२९	६	३९	९	१	११	१७	१	३१	३	४९	६	६	८	११	९	५६	११	२६
७	१२	५०	२	२८	४	२५	६	३५	८	५७	११	१३	१	२७	३	४५	६	२	८	७	९	५२	११	२२
८	१२	४६	२	२४	४	२१	६	३१	८	५३	११	९	१	२३	३	४१	५	५८	८	३	९	४८	११	१८
९	१२	४२	२	२०	४	१७	६	२७	८	४९	११	५	१	१९	३	३७	५	५४	७	५९	९	४४	११	१४
१०	१२	३८	२	१६	४	१३	६	२३	८	४५	११	१	१	१५	३	३३	५	५०	७	५५	९	४०	११	१०
११	१२	३४	२	१२	४	९	६	१९	८	४१	१०	५७	१	११	३	२९	५	४६	७	५१	९	३६	११	६
१२	१२	३०	२	८	४	५	६	१५	८	३७	१०	५३	१	७	३	२५	५	४२	७	४७	९	३२	११	२
१३	१२	२६	२	४	४	१	६	११	८	३३	१०	४९	१	३	३	२१	५	३८	७	४३	९	२८	१०	५८
१४	१२	२३	२	१	३	५८	६	८	८	३०	१०	४६	१	०	३	१८	५	३५	७	४०	९	२५	१०	५५
१५	१२	१९	१	५७	३	५४	६	४	८	२६	१०	४२	१२	५६	३	१४	५	३१	७	३६	९	२१	१०	५१
१६	१२	१५	१	५३	३	५०	६	०	८	२२	१०	३८	१२	५२	३	१०	५	२७	७	३२	९	१७	१०	४७
१७	१२	११	१	४९	३	४६	५	५६	८	१८	१०	३४	१२	४८	३	६	५	२३	७	२८	९	१३	१०	४३
१८	१२	७	१	४५	३	४२	५	५२	८	१४	१०	३०	१२	४४	३	२	५	१९	७	२४	९	९	१०	३९
१९	१२	३	१	४१	३	३८	५	४८	८	१०	१०	२६	१२	४०	२	५८	५	१५	७	२०	९	५	१०	३५
२०	११	५९	१	३७	३	३४	५	४४	८	६	१०	२२	१२	३६	२	५४	५	११	७	१६	९	१	१०	३१
२१	११	५५	१	३३	३	३०	५	४०	८	२	१०	१८	१२	३२	२	५०	५	७	७	१२	८	५७	१०	२७
२२	११	५१	१	२९	३	२६	५	३६	७	५८	१०	१४	१२	२८	२	४६	५	३	७	८	८	५३	१०	२३
२३	११	४७	१	२५	३	२२	५	३२	७	५४	१०	१०	१२	२४	२	४२	४	५९	७	४	८	४९	१०	१९
२४	११	४३	१	२१	३	१८	५	२८	७	५०	१०	६	१२	२०	२	३८	४	५५	७	०	८	४५	१०	१५
२५	११	३९	१	१७	३	१४	५	२४	७	४६	१०	२	१२	१६	२	३४	४	५१	६	५६	८	४१	१०	११
२६	११	३५	१	१३	३	१०	५	२०	७	४२	९	५८	१२	१२	२	३०	४	४७	६	५२	८	३७	१०	७
२७	११	३१	१	९	३	६	५	१६	७	३८	९	५४	१२	८	२	२६	४	४३	६	४८	८	३३	१०	३
२८	११	२७	१	५	३	२	५	१२	७	३४	९	५०	१२	४	२	२२	४	३९	६	४४	८	२९	९	५९
२९	११	२३	१	१	२	५८	५	८	७	३०	९	४६	१२	०	२	१८	४	३५	६	४०	८	२५	९	५५
३०	११	१९	१२	५७	२	५४	५	४	७	२६	९	४२	११	५६	२	१४	४	३१	६	३६	८	२१	९	५१
३१	११	१५	१२	५३	२	५०	५	०	७	२२	९	३८	११	५२	२	१०	४	२७	६	३२	८	१७	९	४८

अगस्त मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (स्टेण्डर्ड टाइम घंटा मिनट)

ता	मेष रात्रि		वृषभ रात्रि		मिथुन रात्रि		कर्क रात्रि		सिंह प्रात:		कन्या दिवा		तुला दिवा		वृश्चिक दिवा		धनु दिवा		मकर सायं		कुम्भ रात्रि		मीन रात्रि	
१	११	१२	१२	५०	२	४७	४	५७	७	१९	९	३४	११	४९	२	७	४	२४	६	२९	८	१४	९	४६
२	११	८	१२	४६	२	४३	४	५३	७	१५	९	३०	११	४५	२	३	४	२०	६	२५	८	१०	९	४२
३	११	४	१२	४२	२	३९	४	४९	७	११	९	२६	११	४१	१	५९	४	१६	६	२१	८	६	९	३८
४	११	०	१२	३८	२	३५	४	४५	७	७	९	२२	११	३७	१	५५	४	१२	६	१७	८	२	९	३४
५	१०	५६	१२	३४	२	३१	४	४१	७	३	९	१८	११	३३	१	५१	४	८	६	१३	७	५८	९	३०
६	१०	५२	१२	३०	२	२७	४	३७	६	५९	९	१४	११	२९	१	४७	४	४	६	९	७	५४	९	२६
७	१०	४८	१२	२६	२	२३	४	३३	६	५५	९	१०	११	२५	१	४३	४	०	६	५	७	५०	९	२२
८	१०	४४	१२	२२	२	१९	४	२९	६	५१	९	६	११	२१	१	३९	३	५६	६	१	७	४६	९	१८
९	१०	४०	१२	१८	२	१५	४	२५	६	४७	९	२	११	१७	१	३५	३	५२	५	५७	७	४२	९	१४
१०	१०	३६	१२	१४	२	११	४	२१	६	४३	८	५८	११	१३	१	३१	३	४८	५	५३	७	३८	९	१०
११	१०	३२	१२	१०	२	७	४	१७	६	३९	८	५४	११	९	१	२७	३	४४	५	४९	७	३४	९	६
१२	१०	२८	१२	६	२	३	४	१३	६	३५	८	५०	११	५	१	२३	३	४०	५	४५	७	३०	९	२
१३	१०	२४	१२	२	१	५९	४	९	६	३१	८	४६	११	१	१	१९	३	३६	५	४१	७	२६	८	५८
१४	१०	२०	११	५८	१	५५	४	५	६	२७	८	४२	१०	५७	१	१५	३	३२	५	३७	७	२२	८	५४
१५	१०	१६	११	५४	१	५१	४	१	६	२३	८	३८	१०	५३	१	११	३	२८	५	३३	७	१८	८	५०
१६	१०	१२	११	५०	१	४७	३	५७	६	१९	८	३४	१०	४९	१	७	३	२४	५	२९	७	१४	८	४६
१७	१०	८	११	४६	१	४३	३	५३	६	१५	८	३०	१०	४५	१	३	३	२०	५	२५	७	१०	८	४२
१८	१०	४	११	४२	१	३९	३	४९	६	११	८	२६	१०	४१	१२	५९	३	१६	५	२१	७	६	८	३८
१९	१०	०	११	३८	१	३५	३	४५	६	७	८	२२	१०	३७	१२	५५	३	१२	५	१७	७	२	८	३४
२०	९	५७	११	३५	१	३२	३	४२	६	४	८	१९	१०	३४	१२	५२	३	९	५	१४	६	५९	८	३१
२१	९	५३	११	३१	१	२८	३	३८	६	०	८	१५	१०	३०	१२	४८	३	५	५	१०	६	५५	८	२७
२२	९	४९	११	२७	१	२४	३	३४	५	५६	८	११	१०	२६	१२	४४	३	१	५	६	६	५१	८	२३
२३	९	४५	११	२३	१	२०	३	३०	५	५२	८	७	१०	२२	१२	४०	२	५७	५	२	६	४७	८	१९
२४	९	४१	११	१९	१	१६	३	२६	५	४८	८	३	१०	१८	१२	३६	२	५३	४	५८	६	४३	८	१५
२५	९	३७	११	१५	१	१२	३	२२	५	४४	७	५९	१०	१४	१२	३२	२	४९	४	५४	६	३९	८	११
२६	९	३३	११	११	१	८	३	१८	५	४०	७	५५	१०	१०	१२	२८	२	४५	४	५०	६	३५	८	७
२७	९	२९	११	७	१	४	३	१४	५	३६	७	५१	१०	६	१२	२४	२	४१	४	४६	६	३१	८	३
२८	९	२५	११	३	१	०	३	१०	५	३२	७	४७	१०	२	१२	२०	२	३७	४	४२	६	२७	७	५९
२९	९	२१	१०	५९	१२	५६	३	६	५	२८	७	४३	९	५८	१२	१६	२	३३	४	३८	६	२३	७	५५
३०	९	१७	१०	५५	१२	५२	३	२	५	२४	७	३९	९	५४	१२	१२	२	२९	४	३४	६	१९	७	५१
३१	९	१३	१०	५१	१२	४८	२	५८	५	२०	७	३५	९	५०	१२	८	२	२५	४	३०	६	१५	७	४७

सितम्बर मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (स्टेण्डर्ड टाइम घंटा मिनट)

ता	मेष रात्रि		वृषभ रात्रि		मिथुन रात्रि		कर्क रात्रि		सिंह रात्रि		कन्या प्रातः		तुला दिवा		वृश्चिक दिवा		धनु दिवा		मकर दिवा		कुम्भ सायं		मीन रात्रि	
१	९	९	१०	४७	१२	४४	२	५७	५	१६	७	३२	९	४७	१२	४	२	२२	४	२६	६	११	७	४२
२	९	५	१०	४३	१२	४०	२	५४	५	१२	७	२८	९	४३	१२	०	२	१८	४	२२	६	७	७	३७
३	९	१	१०	३९	१२	३६	२	५०	५	८	७	२४	९	३९	११	५६	२	१४	४	१८	६	३	७	३३
४	८	५७	१०	३५	१२	३२	२	४६	५	४	७	२०	९	३५	११	५२	२	१०	४	१४	५	५९	७	२९
५	८	५३	१०	३१	१२	२८	२	४२	५	०	७	१६	९	३१	११	४८	२	६	४	१०	५	५५	७	२५
६	८	४९	१०	२७	१२	२४	२	३८	४	५६	७	१२	९	२७	११	४४	२	२	४	६	५	५१	७	२१
७	८	४५	१०	२३	१२	२०	२	३४	४	५२	७	८	९	२३	११	४०	१	५८	४	२	५	४७	७	१७
८	८	४१	१०	१९	१२	१६	२	३०	४	४८	७	४	९	१९	११	३६	१	५४	३	५८	५	४३	७	१३
९	८	३७	१०	१५	१२	१२	२	२६	४	४४	७	०	९	१५	११	३२	१	५०	३	५४	५	३९	७	९
१०	८	३३	१०	११	१२	८	२	२२	४	४०	६	५६	९	११	११	२८	१	४६	३	५०	५	३५	७	५
११	८	२९	१०	७	१२	४	२	१८	४	३६	६	५२	९	७	११	२४	१	४२	३	४६	५	३१	७	१
१२	८	२५	१०	३	१२	०	२	१४	४	३२	६	४८	९	३	११	२०	१	३८	३	४२	५	२७	६	५७
१३	८	२१	९	५९	११	५६	२	१०	४	२८	६	४४	८	५९	११	१६	१	३४	३	३८	५	२३	६	५३
१४	८	१७	९	५५	११	५२	२	६	४	२४	६	४०	८	५५	११	१२	१	३०	३	३४	५	१९	६	४९
१५	८	१३	९	५१	११	४८	२	२	४	२०	६	३६	८	५१	११	८	१	२६	३	३०	५	१५	६	४५
१६	८	९	९	४७	११	४४	१	५८	४	१६	६	३२	८	४७	११	४	१	२२	३	२६	५	११	६	४१
१७	८	५	९	४३	११	४०	१	५४	४	१२	६	२८	८	४३	११	०	१	१८	३	२२	५	७	६	३७
१८	८	१	९	३९	११	३६	१	५०	४	८	६	२४	८	३९	१०	५६	१	१४	३	१८	५	३	६	३३
१९	७	५७	९	३५	११	३२	१	४६	४	४	६	२०	८	३५	१०	५२	१	१०	३	१४	४	५९	६	२९
२०	७	५३	९	३१	११	२८	१	४२	४	०	६	१६	८	३१	१०	४८	१	६	३	१०	४	५५	६	२५
२१	७	४९	९	२७	११	२४	१	३८	३	५६	६	१२	८	२७	१०	४४	१	२	३	६	४	५१	६	२१
२२	७	४५	९	२३	११	२०	१	३४	३	५२	६	८	८	२३	१०	४०	१२	५८	३	२	४	४७	६	१७
२३	७	४१	९	१९	११	१६	१	३०	३	४८	६	४	८	१९	१०	३६	१२	५४	२	५८	४	४३	६	१३
२४	७	३७	९	१५	११	१२	१	२६	३	४४	६	०	८	१५	१०	३२	१२	५०	२	५४	४	३९	६	९
२५	७	३३	९	११	११	८	१	२२	३	४०	५	५६	८	११	१०	२८	१२	४६	२	५०	४	३५	६	५
२६	७	२९	९	७	११	४	१	१८	३	३६	५	५२	८	७	१०	२४	१२	४२	२	४६	४	३१	६	१
२७	७	२५	९	३	११	०	१	१४	३	३२	५	४८	८	३	१०	२०	१२	३८	२	४२	४	२७	५	५७
२८	७	२१	८	५९	१०	५६	१	१०	३	२८	५	४४	७	५९	१०	१६	१२	३४	२	३८	४	२३	५	५३
२९	७	१७	८	५५	१०	५२	१	६	३	२४	५	४०	७	५५	१०	१२	१२	३०	२	३४	४	१९	५	४९
३०	७	१३	८	५१	१०	४८	१	२	३	२१	५	३६	७	५१	१०	८	१२	२६	२	३०	४	१५	५	४५

पताः- त्रिकाल ज्योति पंचांग कार्यालय, बालोतरा (राज.) ३४४ ०२२ फोन नं. (O.) २२४२३०

अक्टूम्बर मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (स्टेण्डर्ड टाइम घंटा मिनट)

ता	मेष सायं		वृषभ रात्रि		मिथुन रात्रि		कर्क रात्रि		सिंह रात्रि		कन्या रात्रि		तुला प्रातः		वृश्चिक दिवा		धनु दिवा		मकर दिवा		कुम्भ दिवा		मीन दिवा	
१	७	१०	८	४८	१०	४५	१२	५९	३	१८	५	३३	७	४८	१०	५	१२	२३	२	२८	४	१२	५	४२
२	७	६	८	४४	१०	४१	१२	५५	३	१४	५	२९	७	४४	१०	२	१२	१९	२	२४	४	८	५	३८
३	७	२	८	४०	१०	३७	१२	५१	३	१०	५	२५	७	४०	९	५८	१२	१५	२	२०	४	४	५	३४
४	६	५८	८	३६	१०	३३	१२	४७	३	६	५	२१	७	३६	९	५४	१२	११	२	१६	४	०	५	३०
५	६	५४	८	३२	१०	२९	१२	४३	३	२	५	१७	७	३२	९	५०	१२	७	२	१२	३	५६	५	२६
६	६	५०	८	२८	१०	२५	१२	३९	२	५८	५	१३	७	२८	९	४६	१२	३	२	८	३	५२	५	२२
७	६	४६	८	२४	१०	२१	१२	३५	२	५४	५	९	७	२४	९	४२	११	५९	२	४	३	४८	५	१८
८	६	४२	८	२०	१०	१७	१२	३१	२	५०	५	५	७	२०	९	३८	११	५५	२	०	३	४४	५	१४
९	६	३८	८	१६	१०	१३	१२	२७	२	४६	५	१	७	१६	९	३४	११	५१	१	५६	३	४०	५	१०
१०	६	३४	८	१२	१०	९	१२	२३	२	४२	४	५७	७	१२	९	३०	११	४७	१	५२	३	३६	५	६
११	६	३०	८	८	१०	५	१२	१९	२	३८	४	५३	७	८	९	२६	११	४३	१	४८	३	३२	५	२
१२	६	२६	८	४	१०	१	१२	१५	२	३४	४	४९	७	४	९	२२	११	३९	१	४४	३	२८	४	५८
१३	६	२२	८	०	९	५७	१२	११	२	३०	४	४५	७	०	९	१८	११	३५	१	४०	३	२४	४	५४
१४	६	१८	७	५६	९	५३	१२	७	२	२६	४	४१	६	५६	९	१४	११	३१	१	३६	३	२०	४	५०
१५	६	१४	७	५२	९	४९	१२	३	२	२२	४	३७	६	५२	९	१०	११	२७	१	३२	३	१६	४	४६
१६	६	१०	७	४८	९	४५	११	५९	२	१८	४	३३	६	४८	९	६	११	२३	१	२८	३	१२	४	४२
१७	६	६	७	४४	९	४१	११	५५	२	१४	४	२९	६	४४	९	२	११	१९	१	२४	३	८	४	३८
१८	६	२	७	४०	९	३७	११	५१	२	१०	४	२५	६	४०	८	५८	११	१५	१	२०	३	४	४	३४
१९	५	५८	७	३६	९	३३	११	४७	२	६	४	२१	६	३६	८	५४	११	११	१	१६	३	०	४	३०
२०	५	५४	७	३२	९	२९	११	४३	२	२	४	१७	६	३२	८	५०	११	७	१	१२	२	५६	४	२६
२१	५	५०	७	२८	९	२५	११	३९	१	५८	४	१३	६	२८	८	४६	११	३	१	८	२	५२	४	२२
२२	५	४६	७	२४	९	२१	११	३५	१	५४	४	९	६	२४	८	४२	१०	५९	१	४	२	४८	४	१८
२३	५	४२	७	२०	९	१७	११	३१	१	५०	४	५	६	२०	८	३८	१०	५५	१	०	२	४४	४	१४
२४	५	३८	७	१६	९	१३	११	२७	१	४६	४	१	६	१६	८	३४	१०	५१	१२	५६	२	४०	४	१०
२५	५	३४	७	१२	९	९	११	२३	१	४२	३	५७	६	१२	८	३०	१०	४७	१२	५२	२	३६	४	६
२६	५	३०	७	८	९	५	११	१९	१	३८	३	५३	६	८	८	२६	१०	४३	१२	४८	२	३२	४	२
२७	५	२६	७	४	९	१	११	१५	१	३४	३	४९	६	४	८	२२	१०	३९	१२	४४	२	२८	३	५८
२८	५	२२	७	०	८	५७	११	११	१	३०	३	४५	६	०	८	१८	१०	३५	१२	४०	२	२४	३	५४
२९	५	१८	६	५६	८	५३	११	७	१	२६	३	४१	५	५६	८	१४	१०	३१	१२	३६	२	२०	३	५०
३०	५	१५	६	५३	८	५०	११	४	१	२२	३	३८	५	५३	८	११	१०	२८	१२	३३	२	१७	३	४७
३१	५	११	६	४९	८	४६	११	०	१	१९	३	३४	५	५०	८	७	१०	२४	१२	३०	२	१३	३	४४

नवम्बर मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (स्टेण्डर्ड टाइम घंटा मिनट)

ता	मेष दिवा	वृषभ सायं	मिथुन रात्रि	कर्क रात्रि	सिंह रात्रि	कन्या रात्रि	तुला रात्रि	वृश्चिक प्रात	धनु दिवा	मकर दिवा	कुम्भ दिवा	मीन दिवा
१	५ ९	६ ४४	८ ४१	१० ५५	१ १४	३ २८	५ ४३	८ ५	१० २२	१२ २७	२ ११	३ ४१
२	५ ५	६ ४०	८ ३७	१० ५१	१ ९	३ २५	५ ३९	८ १	१० १८	१२ २३	२ ७	३ ३८
३	५ १	६ ३६	८ ३३	१० ४७	१ ५	३ २१	५ ३५	७ ५७	१० १४	१२ १९	२ ३	३ ३४
४	४ ५७	६ ३२	८ २९	१० ४३	१ १	३ १७	५ ३१	७ ५३	१० १०	१२ १५	१ ५९	३ ३०
५	४ ५३	६ २८	८ २५	१० ३९	१२ ५७	३ १३	५ २७	७ ४९	१० ६	१२ ११	१ ५५	३ २६
६	४ ४९	६ २४	८ २१	१० ३५	१२ ५३	३ ९	५ २३	७ ४५	१० २	१२ ७	१ ५१	३ २२
७	४ ४५	६ २०	८ १७	१० ३१	१२ ४९	३ ५	५ १९	७ ४१	९ ५८	१२ ३	१ ४७	३ १८
८	४ ४१	६ १६	८ १३	१० २७	१२ ४५	३ १	५ १५	७ ३७	९ ५४	११ ५९	१ ४३	३ १४
९	४ ३७	६ १२	८ ९	१० २३	१२ ४१	२ ५७	५ ११	७ ३३	९ ५०	११ ५५	१ ३९	३ १०
१०	४ ३३	६ ८	८ ५	१० १९	१२ ३७	२ ५३	५ ७	७ २९	९ ४६	११ ५१	१ ३५	३ ६
११	४ २९	६ ४	८ १	१० १५	१२ ३३	२ ४९	५ ३	७ २५	९ ४२	११ ४७	१ ३१	३ २
१२	४ २५	६ ०	७ ५७	१० ११	१२ २९	२ ४५	४ ५९	७ २१	९ ३८	११ ४३	१ २७	२ ५८
१३	४ २१	५ ५६	७ ५३	१० ७	१२ २५	२ ४१	४ ५५	७ १८	९ ३४	११ ३९	१ २३	२ ५४
१४	४ १८	५ ५३	७ ५०	१० ४	१२ २२	२ ३८	४ ५२	७ १४	९ ३१	११ ३६	१ २०	२ ५१
१५	४ १४	५ ४९	७ ४६	१० ०	१२ १८	२ ३४	४ ४८	७ १०	९ २७	११ ३२	१ १६	२ ४७
१६	४ १०	५ ४५	७ ४२	९ ५६	१२ १४	२ ३०	४ ४४	७ ६	९ २३	११ २८	१ १२	२ ४३
१७	४ ६	५ ४१	७ ३८	९ ५२	१२ १०	२ २६	४ ४०	७ २	९ १९	११ २४	१ ८	२ ३९
१८	४ २	५ ३७	७ ३४	९ ४८	१२ ६	२ २२	४ ३६	६ ५८	९ १५	११ २०	१ ४	२ ३५
१९	३ ५८	५ ३३	७ ३०	९ ४४	१२ २	२ १८	४ ३२	६ ५४	९ ११	११ १६	१ ०	२ ३१
२०	३ ५४	५ २९	७ २६	९ ४०	११ ५८	२ १४	४ २८	६ ५०	९ ७	११ १२	१२ ५६	२ २७
२१	३ ५०	५ २५	७ २२	९ ३६	११ ५४	२ १०	४ २४	६ ४६	९ ३	११ ८	१२ ५२	२ २३
२२	३ ४६	५ २१	७ १८	९ ३२	११ ५०	२ ६	४ २०	६ ४२	८ ५९	११ ४	१२ ४८	२ १९
२३	३ ४२	५ १७	७ १४	९ २८	११ ४६	२ २	४ १६	६ ३८	८ ५५	११ ०	१२ ४४	२ १५
२४	३ ३८	५ १३	७ १०	९ २४	११ ४२	१ ५८	४ १२	६ ३४	८ ५१	१० ५६	१२ ४०	२ ११
२५	३ ३४	५ ९	७ ६	९ २०	११ ३८	१ ५४	४ ८	६ ३०	८ ४७	१० ५२	१२ ३६	२ ७
२६	३ ३०	५ ५	७ २	९ १६	११ ३४	१ ५०	४ ४	६ २६	८ ४३	१० ४८	१२ ३२	२ ३
२७	३ २६	५ १	६ ५८	९ १२	११ ३०	१ ४६	४ ०	६ २२	८ ३९	१० ४४	१२ २८	१ ५९
२८	३ २२	४ ५७	६ ५४	९ ८	११ २६	१ ४२	३ ५६	६ १८	८ ३५	१० ४०	१२ २४	१ ५५
२९	३ १८	४ ५३	६ ५०	९ ४	११ २२	१ ३८	३ ५२	६ १४	८ ३१	१० ३६	१२ २०	१ ५१
३०	३ १४	४ ४९	६ ४६	९ ०	११ १८	१ ३४	३ ४८	६ १०	८ २७	१० ३२	१२ १६	१ ४७

पता:- त्रिकाल ज्योति पंचांग कार्यालय, बालोतरा (राज.) ३४४ ०२२ फोन नं. (O.) २२४२३०

दिसम्बर मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (स्टेण्डर्ड टाइम घंटा मिनट)

ता	मेष दिवा	वृषभ दिवा	मिथुन सायं	कर्क रात्रि	सिंह रात्रि	कन्या रात्रि	तुला रात्रि	वृश्चिक रात्रि	धनु प्रात	मकर दिवा	कुम्भ दिवा	मीन दिवा
१	३ ९	४ ४७	६ ४४	८ ५८	११ १६	१ ३२	३ ४६	६ ५	८ २२	१० २६	१२ ११	१ ४१
२	३ ५	४ ४३	६ ४०	८ ५४	११ १२	१ २८	३ ४३	६ १	८ १८	१० २२	१२ ७	१ ३७
३	३ १	४ ३९	६ ३६	८ ५०	११ ८	१ २४	३ ३९	५ ५७	८ १४	१० १८	१२ ३	१ ३३
४	२ ५७	४ ३५	६ ३२	८ ४६	११ ४	१ २०	३ ३५	५ ५३	८ १०	१० १४	११ ५९	१ २९
५	२ ५३	४ ३१	६ २८	८ ४२	११ ०	१ १६	३ ३१	५ ४९	८ ६	१० १०	११ ५५	१ २५
६	२ ४९	४ २७	६ २४	८ ३८	१० ५६	१ १२	३ २७	५ ४५	८ २	१० ६	११ ५१	१ २१
७	२ ४५	४ २३	६ २०	८ ३४	१० ५२	१ ८	३ २३	५ ४१	७ ५८	१० २	११ ४७	१ १७
८	२ ४१	४ १९	६ १६	८ ३०	१० ४८	१ ४	३ १९	५ ३७	७ ५४	९ ५८	११ ४३	१ १३
९	२ ३७	४ १५	६ १२	८ २६	१० ४४	१ ०	३ १५	५ ३३	७ ५०	९ ५४	११ ३९	१ ९
१०	२ ३३	४ ११	६ ८	८ २२	१० ४०	१२ ५६	३ ११	५ २९	७ ४६	९ ५०	११ ३५	१ ५
११	२ २९	४ ७	६ ४	८ १८	१० ३६	१२ ५२	३ ७	५ २५	७ ४२	९ ४६	११ ३१	१ १
१२	२ २५	४ ३	६ ०	८ १४	१० ३२	१२ ४८	३ ३	५ २१	७ ३८	९ ४२	११ २७	१२ ५७
१३	२ २१	३ ५९	५ ५६	८ १०	१० २८	१२ ४४	२ ५९	५ १७	७ ३४	९ ३८	११ २३	१२ ५३
१४	२ १७	३ ५५	५ ५२	८ ६	१० २४	१२ ४०	२ ५५	५ १३	७ ३०	९ ३४	११ १९	१२ ४९
१५	२ १३	३ ५१	५ ४८	८ २	१० २०	१२ ३६	२ ५१	५ ९	७ २६	९ ३०	११ १५	१२ ४५
१६	२ १०	३ ४८	५ ४५	७ ५९	१० १७	१२ ३३	२ ४८	५ ६	७ २३	९ २७	११ १२	१२ ४२
१७	२ ६	३ ४४	५ ४१	७ ५५	१० १३	१२ २९	२ ४४	५ २	७ १९	९ २३	११ ८	१२ ३८
१८	२ २	३ ४०	५ ३७	७ ५१	१० ९	१२ २५	२ ४०	४ ५८	७ १५	९ १९	११ ४	१२ ३४
१९	१ ५८	३ ३६	५ ३३	७ ४७	१० ५	१२ २१	२ ३६	४ ५४	७ ११	९ १५	११ ०	१२ ३०
२०	१ ५४	३ ३२	५ २९	७ ४३	१० १	१२ १७	२ ३२	४ ५०	७ ७	९ ११	१० ५६	१२ २६
२१	१ ५०	३ २८	५ २५	७ ३९	९ ५७	१२ १३	२ २८	४ ४६	७ ३	९ ७	१० ५२	१२ २२
२२	१ ४६	३ २४	५ २१	७ ३५	९ ५३	१२ ९	२ २४	४ ४२	६ ५९	९ ३	१० ४८	१२ १८
२३	१ ४२	३ २०	५ १७	७ ३१	९ ४९	१२ ५	२ २०	४ ३८	६ ५५	८ ५९	१० ४४	१२ १४
२४	१ ३८	३ १६	५ १३	७ २७	९ ४५	१२ १	२ १६	४ ३४	६ ५१	८ ५५	१० ४०	१२ १०
२५	१ ३४	३ १२	५ ९	७ २३	९ ४१	११ ५७	२ १२	४ ३०	६ ४७	८ ५१	१० ३६	१२ ६
२६	१ ३०	३ ८	५ ५	७ १९	९ ३७	११ ५३	२ ८	४ २६	६ ४३	८ ४७	१० ३२	१२ २
२७	१ २६	३ ४	५ १	७ १५	९ ३३	११ ४९	२ ४	४ २२	६ ३९	८ ४३	१० २८	११ ५८
२८	१ २२	३ ०	४ ५७	७ ११	९ २९	११ ४५	२ ०	४ १८	६ ३५	८ ३९	१० २४	११ ५४
२९	१ १८	२ ५६	४ ५३	७ ७	९ २५	११ ४१	१ ५६	४ १४	६ ३१	८ ३५	१० २०	११ ५०
३०	१ १४	२ ५२	४ ४९	७ ३	९ २१	११ ३७	१ ५२	४ १०	६ २७	८ ३१	१० १६	११ ४६
३१	१ ११	२ ४९	४ ४६	७ ०	९ १८	११ ३४	१ ४९	४ ७	६ २४	८ २८	१० १३	११ ४३

रेखांश ८२.३० (I.S.T.) से रेल्वे स्टेण्डर्ड (मध्यान्तर) संस्कार पूर्वेधनं पश्चिम ऋणं रेल्वे टाइम् में करें।

संपूर्ण भारतोपयोगी पंचांग परिवर्तन सारिणी

जोधपुर रेखांश ७३।४ से देशान्तर पूर्वेधनं, पश्चिमे ऋणं तिथ्यादी में करने पर स्थानिक पंचांग होगा।

नगर नाम	अक्षांश उत्तर अंक	रेखांश पूर्व घ. प.	देशान्तर घ. प.	स्टेंडर्ड अन्तर मिनट
अजमेर	२६।२७	७४।४२	+०।१७	-३१
अलवर	२७।३४	७६।३८	+०।३७	-२३
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	+१।३२	-०१
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	+०।३८	-२३
अमृतसर	३१।३७	७४।५५	+०।१८	-३१
अमरावती	२०।५६	७७।४८	+०।४७	-१८
अलीगंज ढकुवा	२६।१२	८४।८	+१।५०	+०६
अहमदपुर	२९।१७	७१।३५	-०।१५	-४४
अल्मोड़ा	२९।३७	७९।४०	+१।०७	-११
अमरोहा	२८।५४	७८।१४	+०।५५	-१७
अखनूर (काश्मीर)	३२।५४	७४।३५	+०।१५	-३२
अनंतनाग (काश्मीर)	३३।४४	७५।१०	+०।२०	-३०
अलीगंज खीरी	२७।२०	७९।१२	+१।०२	-१३
अनूपशहर	२८।२१	७८।२३	+०।५२	-१७
अलीगढ़	२७।५४	७८।९	+०।५०	-१८
अमेठी	२६।७	८१।४७	+१।२७	-०३
अगरतला (त्रिपुरा)	२३।४९	९१।१७	+३।०२	+३५
अहमदनगर	१९।५	७४।४८	+०।१७	-३१
अहमदाबाद	२३।२	७२।३८	-०।०३	-३६
आबू	२४।४०	७२।४५	-०।०२	-३६
आकोला	२०।४२	७७।२	+०।४०	-२२
आगरा	२७।१०	७८।५	+०।५०	-१८
आसनसोल	२३।४२	८७।२०	+२।२२	+१६
आजमगढ़	२६।३	८३।१३	+१।४२	+०३
इटावा	२६।४७	७९।२	+१।००	-१४
इन्दौर	२२।४५	७५।५०	+०।२८	-२७
ईडर	२३।५०	७३।२	+०।००	-३८
उदयपुर मेवाड़	२४।३७	७३।४२	+०।०७	-३५
उज्जैन	२३।९	७५।४३	+०।२७	-२७
उन्नाव	२६।४८	८०।४३	+१।१७	-०७
ऊधमपुर (पंजाब)	३२।५६	७४।४३	+०।१७	-३१
उटकमण्ड	११।१७	७६।४२	+०।३७	-२३
एटा जलेसर	२७।३५	७८।४१	+०।५७	-१५
एलिचपुर	२१।१८	७७।३३	+०।४५	-२०
औरंगाबाद म रा	१९।५३	७५।२३	+०।२५	-२८
औरंगाबाद बिहार	२४।४५	८४।२५	+१।५५	+०८
कटक	२०।२८	८५।५४	+२।१०	+१४
कराची (पाकि.)	२४।५१	६७।४	-१।००	-३२
कन्नौज	२७।३	७९।५८	+१।१०	-१०
कलकत्ता	२२।३४	८८।२४	+२।३५	+२४
कठुआ (काश्मीर)	३२।२२	७५।३६	+०।२५	-२८
कपूरथला	३१।२३	७५।२५	+०।२५	-२८
कच्छभुज	२३।१५	६९।४०	-०।३३	-५१
कालीकट	११।१५	७५।४९	+०।२७	-२७

नगर नाम	अक्षांश उत्तर अंक	रेखांश पूर्व घ. प.	देशान्तर घ. प.	स्टेंडर्ड अन्तर मिनट
कायमगंज	२७।३५	७९।२१	+१।०२	-१२
कांची संघ	७।२०	८०।४५	+१।१७	-७
कालपी	२६।९	७९।४३	+१।०७	-११
काशी	२५।२०	८३।१०	+१।४०	+०२
काबुल अफगान	३४।२७	६९।९	-०।३९	-५३
काठमांडू नेपाल	२७।४२	८५।१२	+१।०२	+११
कानपुर	२६।२८	८०।२४	+१।१५	-०८
कालाबाग (पाकि.)	३२।५८	७१।३६	-०।१५	-१४
कांकरोली	२५।२	७३।५४	+०।१०	-३४
कांगड़ा	३२।९	७६।१८	+०।३२	-२५
किश्तवाड़ जम्मू	३३।१२	७५।४८	+०।२७	-२७
किशनगढ़ (राज.)	२६।३७	७४।४०	+०।१७	-३१
कुरुक्षेत्र	२९।५८	७६।४८	+०।३७	-२३
कुम्भकोणम्	१०।५८	७९।२५	+१।०२	-१२
कन्याकुमारी(तमिल)	८।९	७७।३४	+०।४५	-२०
कैम्बलपुर (पाकि.)	३३।४२	७२।१८	-०।०७	-११
कोलम्बो सिलोन	६।५६	७९।५६	+१।१०	-१०
कोल्हापुर	१६।४२	७४।१९	+०।१२	-३३
कोटा (राज.)	२५।१०	७५।५२	+०।२८	-२७
कोचीन बंदरगाह	९।५८	७६।१७	+०।३२	-२५
खैरपुर सिंध	२७।२८	६८।४४	-०।४२	-२५
खण्डवा	२१।५०	७६।१८	+०।३७	-२५
खंभात	२२।१९	७२।३६	-०।०५	-४०
गया	२४।४९	८५।१	+२।००	-१०
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	+०।५२	+१७
गाजीपुर	२५।३४	८३।३५	+१।४५	-०४
गिलगित	३५।५४	७४।२२	+०।१३	-३३
गिरडीह	२४।५१	८६।१७	+२।१०	+१४
गुरसहायगंज	२७।८	७९।४४	+१।०७	-११
गुरदासपुर	३२।२	७५।२७	+०।२५	-२८
गुजरात (पाकि.)	३२।३६	७४।५	+०।१०	-०४
गुजरांवाला (पाकि.)	३२।१०	७४।१४	+०।१२	-०३
गोरखपुर	२६।४५	८३।२७	+१।४५	+०४
गोंडा	२७।२८	८२।१	+१।३०	-०२
गोवा	१५।३०	७३।५७	+०।१०	-३४
गोहाटी (आसाम)	२६।११	९१।४५	+३।०७	+३७
गोकर्ण	१४।३३	७४।१८	+०।१२	-३३
चमन (क्वेटा पाकि.)	३०।३३	६६।३०	-१।०५	-३४
चम्बा	३२।३४	७६।१०	+०।३२	-२५
चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	+०।४०	-२२
चित्तौड़गढ़	२४।५४	७४।४२	+०।१७	-३१
चित्रकूट	२५।१५	८०।२८	+१।१५	-०८
चैनपुर	२५।२	८३।२०	+१।४२	+०३
चेरापूंजी	२५।१७	९१।४७	+३।१७	+३७

नगर नाम	अक्षांश उत्तर अंक	रेखांश पूर्व घ. प.	देशान्तर घ. प.	स्टेंडर्ड अन्तर मिनट
छपरा (बिहार)	२४।४७	८४।३१	+१।५७	+६
छतरपुर	२४।५४	७९।३८	+१।०७	-११
छिबरा मऊ	२७।१०	७९।२८	+१।०५	-१२
जगन्नाथपुरी	१९।४८	८५।४८	+२।०७	+१३
जमशेदपुर	२२।५०	८६।१०	+२।१२	+१५
जलपाईगुड़ी	२६।३२	८८।४६	+२।३७	+२५
जसमेरगढ़	३२।३०	७५।५८	+०।२२	-२९
जंजीरा	१८।१५	७३।१०	०।००	-३८
जबलपुर(म.प्र.)	२३।१०	८०।१	+१।१०	-१०
जयपुर	२६।५६	७५।५२	+०।२७	-२७
जम्मू	३२।४४	७४।५४	+०।२०	-३०
जालौर (राज.)	२५।२२	७२।३८	-००४	-३९
जहांगीरनगर	२६।५१	७८।५५	+१।००	-१४
जामनगर	२२।२७	७०।७	०।३०	-५०
जालन्धर	३१।१९	७५।१८	+०।२२	-२९
जाफराबाद	२०।५२	७१।२५	-०।१५	-४४
जूनागढ़(गुज.)	२१।३१	७०।३६	-०।२५	-४८
जैसलमेर	२६।५५	७०।५७	०।२०	-४६
जौनपुर	२५।४२	८२।४४	+१।३७	+१
जोधपुर	२६।१८	७३।४	०।०	-३८
झालावाड़ (राज.)	२४।३६	७४।९	+०।११	-३३
झांसी	२५।२७	७८।३७	+०।५५	-१६
झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	+०।३२	-२५
ट्रावनकोर	९।०	७७।०	+०।४०	-२२
टूंडला (आगरा)	२७।१३	७८।१३	+०।५२	-१७
टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	+०।२८	-२७
डलहौजी	३२।३०	७५।५४	+०।२८	-२७
डिब्रूगढ़	२७।२९	९४।५६	+३।४०	+५०
डिबाई	२८।१२	७५।१५	+०।५२	-१७
डेरागाजीखां (पाकि.)	३०।४	७०।४९	-०।२७	-१६
ढाका (बांग्लादेश)	२३।४३	९०।२६	+२।५५	+३२
त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४६	+०।५७	-१५
त्रिवेन्द्रम्	८।३०	७६।५४	+०।४०	-२२
दरभंगा	२६।१०	८५।५७	+२।१०	+१४
दार्जिलिंग	२२।२	८८।१८	+२।३२	+२३
द्वारका	२२।१४	६९।१	-०।४०	-५४
दिल्ली	२८।३८	७७।१२	+०।४२	-२१
देहरादून	३०।२०	७८।४	+०।५०	-१८
दौलताबाद	१९।५७	७५।१२	+०।२२	-२९
धनपुर(जौनपुर)	२९।४८	७७।५३	+०।५०	-१८
धर्मशाला	३२।१६	७६।२३	+०।३४	-२४
ध्रांगध्रा	२२।५९	७१।३२	-०।१५	-४४
धारवाड़	१५।२६	७५।१०	+०।२०	-३०
धार (म.प्र.)	२२।३६	७५।१२	+०।२२	-२९

नगर नाम	अक्षांश उत्तर अंक	रेखांश पूर्व घ. प.	देशान्तर घ. प.	स्टेंडर्ड अन्तर मिनट
धूलिया	२०।५८	७४।४२	+०।१७	-३१
नसीराबाद	२६।१८	७४।४६	+०।१७	-३१
नडियाद (गुज.)	२२।४१	७२।५५	-०।००	-३८
नासिक	२०।२	७३।५०	+०।०८	-३५
नाभा	३०।२३	७६।९	+०।३०	-२६
नागपुर	२१।९	७९।९	+१।०२	-१३
नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	+०।०८	-३५
नीमच	२४।२७	७४।५२	+०।१८	-३१
पटियाला	३०।२२	७६।२५	+०।३५	-२४
पटना	२५।३७	८५।१३	+२।२	+११
पाली (राज.)	२५।४९	७३।२५	+०।०४	-३६
प्रतापगढ़ (राज.)	२४।२	७४।५०	+०।१८	-३१
प्रयागराज	२५।२४	८१।५४	+१।२८	-०३
पानीपत	२९।२३	७७।१	+०।४२	-२१
पाटन (राज.)	२७।५९	७६।१	+०।३०	-२६
पाण्डीचेरी	११।५६	७९।५३	+१।१०	-१०
पीलीभीत	२८।४०	७९।५०	+१।०८	-११
पुरुलिया	२३।२०	८३।२५	+२।१५	+१६
पूना	१८।१९	७३।५५	+०।१०	-३४
पूर्णिया	२५।४९	८७।३०	+२।२५	+२०
पोरबंदर	२१।३७	६९।४९	-०।३२	-५१
पंढरपुर	१७।४१	७५।२३	+०।२४	-२८
फलोदी (राज.)	२७।९	७२।२२	-०।०७	-४०
फालना (राज.)	२५।१५	७२।५९	-०।०१	-३८
फतेहपुर (उ. प्र.)	२५।५५	८०।५२	+१।२०	-०६
फतेहपुर	२७।५२	७५।२	+०।२०	-३०
फाजिल्का	३०।२५	७४।४	+०।१०	-३४
फिरोजपुर	३०।५६	७४।४०	+०।१७	-३१
फैजाबाद	२६।४७	८२।१२	+१।३२	-०१
बड़ौदा(गुज.)	२२।१९	७३।१२	+०।०२	-३७
बदरीनाथ	३०।४४	७९।३२	+१।०५	-१२
बरेली	२८।२२	७९।२७	+१।०५	-१२
बम्बई	१८।५७	७२।५०	+०।०२	-३९
बाड़मेर (राज.)	२५।४५	७१।२५	-०।१७	-४४
बालोतरा (राज.)	२५।४९	७२।२१	-०।०७	-४०
बागलकोट	१६।१२	७५।४२	+०।२६	-२८
बांकीपुर	२५।४०	८५।१२	+२।२	+११
बांदा (उ. प्र.)	२५।२८	८०।२०	+१।१२	-०९
बांकुड़ा	२३।१४	८७।३	+२।२०	+१८
बांसवाड़ा	२३।३०	७४।२४	+०।१४	-३२
बिलासपुर (म. प्र.)	२२।५५	८२।१३	+१।३२	-०१
बिलासपुर (हि. प्र.)	३१।१९	७६।५०	+०।३७	-२३
बीजापुर	१६।५०	७५।४७	+०।२७	-२७
बीकानेर (राज.)	२८।१	७३।२२	+०।०२	-३७

संपूर्ण भारतोपयोगी पंचांग परिवर्तन सारिणी

रेखांश ८२.३० (I.S.T.) से रेल्वे स्टेण्डर्ड (मुम्बई) संस्कार पूर्वेधन पश्चिम ऋण रेल्वे टाइम में करें।

जोधपुर रेखांश ७३।४ से देशान्तर पूर्वेधन, पश्चिमे ऋण निष्पादी में करने पर स्थानिक पंचांग होगा।

नगर नाम	अक्षांश उत्तर अंक	रेखांश पूर्व घ. प.	देशान्तर घ. प.	स्टेंडर्ड अन्तर मिनट	नगर नाम
[illegible]	२७ ।२२	७२ ।२२	-० ।४	-४१	लाहौर (पाकि.)
[illegible]	२५ । ६	७३ ।५०	+० ।१	-३८	लुधियाना
बूंदी (राज.)	२५ ।२७	७५ ।४१	+० ।२७	-२७	[illegible]
[illegible]	२८ ।२४	७७ ।५४	+० ।५०	-१८	सियालकोट (पाकि.)
[illegible]	१२ ।१८	७७ ।३८	+० ।४७	-१९	[illegible]
[illegible]	२७ ।१५	७७ ।३०	+० ।४५	-२०	[illegible]
[illegible]	३० ।११	७५ ।०	+० ।२०	-३०	[illegible]
[illegible]	२१ ।४१	७३ ।०	-० ।०	-३८	[illegible]
[illegible]	२१ ।४६	७२ ।११	-० ।८	-४१	[illegible]
[illegible]	२५ ।१३	८६ ।५८	+२ ।२०	+१८	[illegible]
[illegible]	२० ।२८	८५ ।५४	+२ ।१०	+१४	[illegible]
[illegible] (राज.)	२५ ।११	७२ ।२२	-० ।११	-४१	[illegible]
[illegible] (राज.)	२५ ।२१	७४ ।३८	+११	-३१	[illegible]
[illegible]	२४ ।४४	८३ ।५८	+३ ।३०	+२६	[illegible]
[illegible]	३१ ।४०	७६ ।५८	+० ।४०	-२२	[illegible] (पाकि.)
[illegible]	१२ ।५	८० ।१७	+१ ।११	-६	[illegible] (म. प्र.)
[illegible]	२७ ।२८	७७ ।४१	+० ।४७	-१६	[illegible]
[illegible]	२० ।३१	७४ ।३०	+० ।१५	-३२	[illegible]
[illegible]	२५ ।५०	८१ ।५०	+१ ।२८	-३	[illegible]
[illegible]	२५ ।६	८२ ।३७	+१ ।३५	-०	[illegible]
[illegible]	२८ ।५०	७८ ।४६	+० ।५७	-१५	[illegible]
[illegible]	२५ ।२३	८६ ।३०	+२ ।१५	+१६	[illegible]
[illegible]	२५ ।३	७३ ।३६	+४	-३६	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

संकेत- यहां दिये गये पाकिस्तानी नगरों के स्टेण्डर्ड अंतरमिनट पाकिस्तान के स्टेण्डर्ड टाइम तथा स्थानीय टाइम का अंतर है। भारत और पाकिस्तान के स्टेण्डर्ड टाइम में ३० मिनट का अंतर है। भारत से ३० मिनट कम है।

लग्न प्रवेश संस्कार कोष्ठक

लग्न / शहर	मेष मिनट	वृषभ मिनट	मिथुन मिनट	कर्क मिनट	सिंह मिनट	कन्या मिनट	तुला मिनट	वृश्चिक मिनट	धन मिनट	मकर मिनट	कुंभ मिनट	मीन मिनट
अहमदाबाद	+२	+७	+९	+८	+५	+२	-२	-५	-७	-९	-१	०
अजमेर	-७	-७	-७	-७	-१२	-७	-७	-७	-७	-७	-७	-७
अगरतला	-१२	-७	-५	-६	-१०	-१५	-२०	-२१	-२७	-२१	-२२	-१७
अमृतसर	-१२	-१७	-२०	-१९	-१५	-९	-१	+२	+४	+३	०	-७
आगरा	-२१	-२२	-२२	-२२	-२२	-२०	-१९	-१८	-१८	-१७	-१८	-२०
औरंगाबाद	-४	+२	+५	+३	-२	-७	-१४	-२०	-२३	-२१	-१६	-११
इंदौर	-९	-५	-३	-४	-८	-११	-१५	-१९	-२३	-२०	-१६	-१३
उदयपुर	-२	०	+१	०	-२	-२	-३	-६	-७	-६	-४	-४
उज्जैन	-१०	-५	-११	-४	-७	-१०	-१४	-१७	-१९	-१८	-१५	-१२
कलकत्ता	-५९	-५५	-५३	-५४	-५८	-६१	-६५	-६९	-७१	-७०	-६६	-६३
कराची	-५	-३	-२	-३	-५	-५	-७	-९	-१०	-९	-७	-७
कोल्हापुर	+३	+९	+१२	+१०	-८	-४	-१३	-२१	-२४	-२२	-१६	-८
कानपुर	-२९	-२९	-२९	-२९	-२९	-२९	-२९	-२९	-२९	-२९	-२९	-२९
कोचीन	०	+१२	+२१	+१७	+५	-१०	-२१	-४०	-४९	-४३	-३१	-१९
डीसा (गुज.)	+५	+७	+८	+७	+६	+४	+१	-१	-२	-१	+१	+२
चंडीगढ़	-१९	-२३	-२५	-२४	-२२	-१९	-१३	-९	-७	-८	-११	-१५
चुरू (राज.)	-१०	-१२	-१२	-१२	-११	-८	-६	-४	-३	-३	-५	-८
जलगांव	-५	-१	+१	०	-४	-९	-१४	-१८	-२१	-२०	-१६	-११
जमशेदपुर	-५०	-४६	-४४	-४५	-४९	-५२	-४६	-६०	-६३	-६१	-५७	-५४
जयपुर	-११	-१२	-१२	-१२	-१२	-११	+१०	-१०	-१०	-९	-९	-११
जैसलमेर	+८	+७	+७	+७	+७	+८	+९	+९	+९	+१०	+१०	+८
[illegible]	-३	+११	+१८	+१४	+२	-११	-२९	-४३	-४९	-४६	-३४	-१९
दिल्ली	-१५	-२१	-२१	-२२	-२०	-१७	-१५	-१३	-१२	-१३	-१४	-१७
नागपुर	-२०	-१५	-१३	-१४	-१८	-२३	-२८	-३२	-३५	-३४	-३०	-२५
नासिक	+१	+५	+८	+७	+३	-२	-७	-११	-१४	-१३	-९	-४
पटना	-४८	-४८	-४७	-४८	-४९	-४८	-४९	-५०	-५०	-५०	-४९	-४९
प्रयाग	-३४	-३३	-३२	-३३	-३४	-३४	-३५	-३७	-३८	-३७	-३६	-३५
पूना	+२	+८	+१२	+१०	+४	-२	-१०	-१६	-२०	-१८	-१२	-६
पोरबंदर	+१७	+२२	+२४	+२३	+१९	+१४	+९	+५	+२	+३	+७	+१२
बालोतरा (राज.)	+३	+३	+४	+३	+२	+३	+२	+१	+१	+१	+२	+३
बैंगलोर	-७	+४	+१०	+७	-३	-१५	-२९	-४०	-४६	-४३	-३३	-२१
बनारस	-३८	-३६	-३५	-३६	-३७	-३९	-४२	-४४	-४५	-४४	-४२	-४१
बाड़मेर (राज.)	+७	+७	+८	+७	+६	+७	+६	+५	+५	+५	+६	+६
बम्बई	+७	+१३	+१७	+१५	+९	+३	-५	-११	-१५	-१३	-७	-२
भुज	+१४	+१९	+२१	+२०	+१७	+१४	+१०	+७	+५	+६	+९	+१२
भुवनेश्वर	-४७	-४१	-३८	-४०	-४५	-५०	-५७	-६३	-६६	-६४	-५९	-५४
मद्रास	-१५	-८	-२	-५	-१५	-२७	-३९	-५०	-५६	-५३	-४३	-३१
मदुरा	-२०	-२१	-२१	-२१	-२२	-१९	-१८	-१७	-१७	-१६	-१७	-१९
मैसूर	-४	+७	+१३	+१०	०	-१२	-२६	-३७	-४३	-४०	-३०	-१८
राजकोट	+११	+१८	+२०	+११	+१५	+१०	+५	+१	-२	-१	+१	+८
लखनऊ	-३२	-३३	-३३	-३३	-३३	-३२	-३२	-३१	-३१	-३०	-३०	-३२
बड़ोदरा	+२	+६	+८	+७	+३	०	-४	-८	-१०	-९	-५	-२
विजयवाड़ा	-२१	-१२	-७	-१०	-१८	-२८	-३९	-४८	-५३	-५०	-४२	-३२
सूरत	+५	+१०	+१२	+११	+७	+२	-३	-७	-१०	-९	-५	०
सोलापुर	-३	+३	+६	+४	-१४	-१०	-१९	-२७	-३०	-२८	-२२	-१४
बीकानेर	-१४	-२०	+१५	-२३	-१८	-८	०	+७	+११	+९	+४	-६
हैदराबाद	-११	-७	-४	-६	-२४	-२०	-२९	-३७	-४०	-३८	-३३	-२४
हुबली	०	+९	+१४	+११	+३	-७	-१८	-२७	-३२	-२९	-२१	-११

विवरण:- इस सारिणी में मेषादि लग्नों के नीचे शहरों के सामने मिनटों में धन ऋण से अंतर दिये हुए हैं। त्रिकाल ज्योति पंचांग में जोधपुर दैनिक लग्नों में यह धन ऋण संस्कार करने पर उस शहर का लग्न स्टेण्डर्ड समय में आवेगा।

तारीखो परि वेलान्तर कोष्ठक (मिनटों में)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
१	+४	+१४	+१२	+३	-३	-३	+३	+६	०	-९	-१६	-११
२	४	१४	१२	३	३	३	४	६	०	१०	१६	११
३	४	१४	१२	२	४	२	४	६	०	१०	१६	११
४	५	१४	१२	२	४	२	४	६	-१	१०	१६	१०
५	५	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
६	६	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
७	६	१४	११	१	४	२	४	६	२	११	१६	९
८	७	१५	१०	१	४	१	४	६	२	१२	१६	९
९	७	१५	१०	१	४	१	४	५	२	१२	१६	८
१०	८	१५	१०	१	४	१	५	५	३	१२	१६	८
११	८	१५	१०	+१	४	१	५	५	३	१२	१६	७
१२	८	१५	१०	०	४	-१	५	५	३	१३	१६	६
१३	९	१५	९	०	४	०	५	५	४	१३	१६	६
१४	९	१४	९	०	४	०	५	४	४	१३	१६	६
१५	१०	१४	९	०	४	०	५	४	४	१४	१६	५
१६	१०	१४	८	०	४	०	६	४	५	१४	१६	५
१७	१०	१४	८	-१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१८	११	१४	८	१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१९	११	१४	७	१	४	+१	६	४	६	१४	१५	३
२०	११	१४	७	२	४	१	६	३	६	१४	१५	३
२१	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१४	१४	२
२२	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१५	१४	२
२३	१२	१४	६	२	४	१	६	३	७	१५	१४	१
२४	१२	१४	५	२	-४	-१	६	३	७	१५	१४	-१
२५	१२	१३	५	२	३	२	६	२	७	१६	१४	०
२६	१३	१३	५	२	३	२	६	२	८	१६	१३	+१
२७	१३	१३	४	२	३	२	६	२	८	१६	१३	१
२८	१३	१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
२९	१३	+१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
३०	१४		४	-३	३	+३	६	१	-९	१६	१२	३
३१	१४		+४		-३		+६	+१		-१६	-१२	+३

नोट:- प्रत्येक नगर के स्टेण्डर्ड (रेलवे) टाइम में से स्टेण्डर्ड संस्कार मिनट जो लिखे है वे मिनट ऋण हो तो स्टेण्डर्ड टाइम में घटा देने से और धन हो तो जोड़ देने से स्थानिक मध्यकाल (लोकल टाइम) होगा। इस स्थानिक मध्यम टाइम में वेलांतर कोष्ठक से उस तारीख को वेलांतर लेकर ऋण हो तो जोड़े और धन हो तो घटाने से स्थानिक स्पष्टकाल (स्पष्ट लोकल टाइम) आवेगा। अपने अपने स्थान के नगरों को या पंचांग में दिये गये समीपस्थ नगरों के लोकल सूर्योदय पर स्पष्ट लोकल टाइम बनाकर इष्ट घटी बनावे। स्टेण्डर्ड रेखांश ८२°।३०' के स्टेण्डर्ड संस्कार तथा मध्यरेखांश ७५°।५०' से मध्यम संस्कार निकाले। एक रेखांश में ४ मिनट (१० पल) से अंतर आता है

यमदंडकालम् (अशुभ समय)

रविवार	दोपहर	१२-००	से	१-३०
सोमवार	सुबह	१०-३०	से	१२-००
मंगलवार	सुबह	९-००	से	१०-३०
बुधवार	सुबह	७-३०	से	९-००
गुरुवार	सुबह	६-००	से	७-००
शुक्रवार	दोपहर	३-००	से	४-००
शनिवार	सुबह	१-३०	से	३-००

दैनिक राहु काल

रविवार	१६-३०	से	१८-००
सोमवार	७-३०	से	०९-००
मंगलवार	१५-००	से	१६-३०
बुधवार	१२-००	से	१३-३०
गुरुवार	१३-३०	से	१५-००
शुक्रवार	१०-३०	से	१२-००
शनिवार	०९-००	से	१०-३०

गुलिककालम् (शुभ समय)

रविवार	दोपहर	३-००	से	४-३०
सोमवार	दोपहर	१-३०	से	३-००
मंगलवार	दोपहर	१२-००	से	१-३०
बुधवार	सुबह	१०-३०	से	१२-००
गुरुवार	सुबह	९-००	से	१०-३०
शुक्रवार	सुबह	७-३०	से	९-००
शनिवार	सुबह	६-००	से	७-३०

॥ क्रमांक १ चंद्र स्पष्ट सारिणी भभोग (सर्वक्ष) व भयातोपार ॥

सर्वक्ष	५३ ०	५३ ६	५३ ९	५३ १३	५३ १६	५३ २०	५३ २३	५३ २७	५३ ३०	५३ ३४	५३ ३८	५३ ४१	५३ ४५	५३ ४८	५३ ५२	५३ ५६	५३ ५९	५४ ३	५४ ७	५४ १०
गति	१५ ५	१५ ४	१५ ३	१५ २	१५ १	१५ ०	१४ ५९	१४ ५८	१४ ५७	१४ ५६	१४ ५५	१४ ५४	१४ ५३	१४ ५२	१४ ५१	१४ ५०	१४ ४९	१४ ४८	१४ ४७	१४ ४६
सर्वक्ष	५४ १४	५४ १८	५४ २१	५४ २५	५४ २९	५४ ३२	५४ ३७	५४ ४०	५४ ४४	५४ ४८	५४ ५१	५४ ५५	५४ ५९	५५ ३	५५ ६	५५ ११	५५ १४	५५ १७	५५ २१	५५ २५
गति	१४ ४५	१४ ४४	१४ ४३	१४ ४२	१४ ४१	१४ ४०	१४ ३९	१४ ३८	१४ ३७	१४ ३६	१४ ३५	१४ ३४	१४ ३३	१४ ३२	१४ ३१	१४ ३०	१४ २९	१४ २८	१४ २७	१४ २६
सर्वक्ष	५५ २९	५५ ३३	५५ ३६	५५ ४०	५५ ४४	५५ ४८	५५ ५२	५५ ५६	५६ ०	५६ ४	५६ ८	५६ १२	५६ १६	५६ २०	५६ २४	५६ २८	५६ ३२	५६ ३६	५६ ४०	५६ ४४
गति	१४ २५	१४ २४	१४ २३	१४ २२	१४ २१	१४ २०	१४ १९	१४ १८	१४ १७	१४ १६	१४ १५	१४ १४	१४ १३	१४ १२	१४ ११	१४ १०	१४ ९	१४ ८	१४ ७	१४ ६
सर्वक्ष	५६ ४८	५६ ५२	५६ ५६	५७ ०	५७ ४	५७ ८	५७ १२	५७ १६	५७ २०	५७ २४	५७ २८	५७ ३२	५७ ३६	५७ ४१	५७ ४५	५७ ५०	५७ ५४	५७ ५८	५८ २	५८ ६
गति	१४ ५	१४ ४	१४ ३	१४ २	१४ १	१४ ०	१३ ५९	१३ ५८	१३ ५७	१३ ५६	१३ ५५	१३ ५४	१३ ५३	१३ ५२	१३ ५१	१३ ५०	१३ ४९	१३ ४८	१३ ४७	१३ ४६
सर्वक्ष	५८ ११	५८ १५	५८ १९	५८ २३	५८ २८	५८ ३२	५८ ३६	५८ ४०	५८ ४५	५८ ४९	५८ ५४	५८ ५८	५९ ३	५९ ७	५९ ११	५९ १६	५९ २०	५९ २४	५९ २९	५९ ३३
गति	१३ ४५	१३ ४४	१३ ४३	१३ ४२	१३ ४१	१२ ४०	१३ ३९	१३ ३८	१३ ३७	१२ ३६	१३ ३५	१३ ३४	१३ ३३	१३ ३२	१३ ३१	१३ ३०	१३ २९	१३ २८	१३ २७	१३ २६
सर्वक्ष	५९ ३८	५९ ४२	५९ ४७	५९ ५१	५९ ५५	६० ०	६० ४	६० ९	६० १३	६० १८	६० २२	६० २७	६० ३१	६० ३६	६० ४१	६० ४६	६० ५०	६० ५५	६० ५९	६१ ४
गति	१३ २५	१३ २४	१३ २३	१३ २२	१३ २१	१३ २०	१३ १९	१३ १८	१३ १७	१३ १६	१३ १५	१३ १४	१३ १३	१३ १२	१३ ११	१३ १०	१३ ९	१३ ८	१३ ७	१३ ६
सर्वक्ष	६१ ८	६१ १३	६१ १७	६१ २२	६१ २७	६१ ३२	६१ ३७	६१ ४१	६१ ४६	६१ ५१	६१ ५६	६२ १	६२ ६	६२ १०	६२ १५	६२ २०	६२ २५	६२ ३०	६२ ३५	६२ ३९
गति	१३ ५	१३ ४	१३ ३	१३ २	१३ १	१३ ०	१२ ५९	१२ ५८	१२ ५७	१२ ५३	१२ ५५	१२ ५४	१२ ५३	१२ ५२	१२ ५१	१२ ५०	१२ ४९	१२ ४८	१२ ४७	१२ ४६
सर्वक्ष	६२ ४४	६२ ४९	६२ ५४	६२ ५९	६३ ४	६३ ९	६३ १४	६३ १९	६३ २४	६३ २९	६३ ३४	६३ ३९	६३ ४४	६३ ४९	६३ ५४	६४ ०	६४ ५	६४ १०	६४ १५	६४ २०
गति	१२ ४५	१२ ४४	१२ ४३	१२ ४२	१२ ४१	१२ ४०	१२ ३९	१२ ३८	१२ ३७	१२ ३६	१२ ३५	१२ ३४	१२ ३३	१२ ३२	१२ ३१	१२ ३०	१२ २९	१२ २८	१२ २७	१२ २६
सर्वक्ष	६४ २६	६४ ३१	६४ ३६	६४ ४१	६४ ४६	६४ ५२	६४ ५७	६५ ३	६५ ८	६५ १३	६५ १८	६५ २४	६५ २९	६५ ३४	६५ ४०	६५ ४५	६५ ५१	६५ ५६	६६ १	६६ ७
गति	१२ २५	१२ २४	१२ २३	१२ २२	१२ २१	१२ २०	१२ १९	१२ १८	१२ १७	१२ १६	१२ १५	१२ १४	१२ १३	१२ १२	१२ ११	१२ १०	१२ ९	१२ ८	१२ ७	१२ ६
सर्वक्ष	६६ १२	६६ १८	६६ २३	६६ २९	६६ ३४	६६ ४०	६६ ४६	६६ ५२	६६ ५८	६७ ५	६७ ११	६७ १८	६७ २३	६७ ३०	६७ ३७	६७ ४३	६७ ५०	६७ ५७	६८ ३	+ +
गति	१२ ५	१२ ४	१२ ३	१२ २	१२ १	१२ ०	११ ५९	११ ५८	११ ५७	११ ५६	११ ५५	११ ५४	११ ५३	११ ५२	११ ५१	११ ५०	११ ४९	११ ४८	११ ४७	+ +

क्रमांक २ चन्द्र स्पष्ट अथः नक्षत्र समाप्त राश्यादि सारिणी

अश्व.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुनर्व.	पुष्य.	आश्ले.	मघा.	पू.फा.	उ.फा.	हस्त.	चित्रा.	स्वात.	विशा.	अनु.	ज्येष्ठ	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	०
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

विधि: सूत्र १. घटी ६०-गत नक्षत्र+इष्टघटी = भयात् सूत्र २. घटी ६०-गत नक्षत्र + वर्तमान नक्षत्र = भभोग (सर्वक्ष:) भयोग (सर्वक्ष) घटीपल अंकतुल्य या समकक्ष अंक सारिणी नं. १ के कोष्ठक के नीचे की गति को भयात् से गुणा करें। ऊपर भाग ६० से अंशात्मक ३ फल लेवें। इनको गत नक्षत्र राश्यादि सारिणी नं. २ में अंशात्मक जोड़ने पर तात्कालिक चन्द्र स्पष्ट होगा। गति स्पष्ट: भयोग (सर्वक्ष) तुल्यांक कोष्ठक के नीचे की गति की कला को ६० गुणा + विकला युक्त करने पर स्पष्ट गति होगी ।

स्पष्ट चन्द्र से विंशोत्तरी दशा भुक्त प्रकार सारिणी नं.१

स्पष्ट चन्द्र से राशि, अंश कलावत् कोष्ठक लेवें। ऊपर राशियों के नीचे दशा भुक्त दिया है अ. राशि के सामने अंश कलावत् कोष्ठक लेवें। शेष कला, विकला का फल सारिणी २ से लेवें।

चन्द्र राशि अंश कला	भुक्त काल मेष सिंह धनु वर्ष मास दिन	भुक्त काल वृष कन्या मकर वर्ष मास दिन	भुक्त काल मिथुन तुला कुंभ वर्ष मास दिन	भुक्त काल कर्क वृश्चिक मीन वर्ष मास दिन
०।०	०।०	१।६।०	३।६।०	१२।०।०
	केतु	सूर्य		
०।२०	०।२।३	१।७।२४	३।८।३	१२।४।२४
०।४०	०।४।६	१।९।१८	३।१०।६	१२।९।१८
			मंगल	गुरु
१।०	०।६।९	१।११।१२	४।०।९	१३।२।१२
१।२०	०।८।१२	२।१।६	४।२।१२	१३।७।६
१।४०	०।१०।१५	२।३।०	४।४।१५	१४।०।०
२।०	१।०।१८	२।४।२४	४।६।१८	१४।४।२४
२।२०	१।२।२१	२।६।१८	४।८।२१	१४।९।१८
२।४०	१।४।२४	२।८।१२	४।१०।२४	१५।२।१२
३।०	१।६।२७	२।१०।६	५।०।२७	१५।७।६
३।२०	१।९।०	३।०।०	५।३।०	१६।०।०
				शनि
३।४०	१।११।३	३।१।२४	५।५।३	०।५।२१
४।०	२।१।६	३।३।१८	५।७।६	०।११।१२
४।२०	२।३।९	३।५।१२	५।९।९	१।५।३
४।४०	२।५।१२	३।७।६	५।११।१२	१।१०।२४
५।०	२।७।१५	३।९।०	६।१।१५	२।४।१५
५।२०	२।९।१८	३।१०।२४	६।३।१८	२।१०।६
५।४०	२।११।२१	४।०।१८	६।५।२१	३।३।२७
६।०	३।१।२४	४।२।१२	६।७।२४	३।९।१८
६।२०	३।३।२७	४।४।६	६।९।२७	४।३।९
६।४०	३।६।०	४।६।०	७।०।०	४।९।०
			राहु	
७।०	३।८।३	४।७।२४	०।५।१२	५।२।२१
७।२०	३।१०।६	४।९।१८	०।१०।२४	५।८।१२
७।४०	४।०।९	४।११।१२	१।४।६	६।२।३
८।०	४।२।१२	५।१।६	१।९।१८	६।७।२४
८।२०	४।४।१५	५।३।०	२।३।०	७।१।१५
८।४०	४।६।१८	५।४।२४	२।८।१२	७।७।६
९।०	४।८।२१	५।६।१८	३।१।२४	८।०।२७
९।२०	४।१०।२४	५।८।१२	३।७।६	८।६।१८
९।४०	५।०।२७	५।१०।६	४।०।१८	९।०।९
१०।०	५।३।०	६।०।०	४।६।०	९।६।०
		चन्द्र		
१०।२०	५।५।३	०।३।०	४।११।१२	९।११।२१
१०।४०	५।७।६	०।६।०	५।४।२४	१०।५।१२
११।०	५।९।९	०।९।०	५।१०।६	१०।११।३
११।२०	५।११।१२	१।०।०	६।३।१८	११।४।२४
११।४०	६।१।१५	१।३।०	६।९।०	११।१०।१५
१२।०	६।३।१८	१।६।०	७।२।१२	१२।४।६
१२।२०	६।५।२१	१।९।०	७।७।२४	१२।९।२७
१२।४०	६।७।२४	२।०।०	८।१।६	१३।३।१८
१३।०	६।९।२७	२।३।०	८।६।१८	१३।९।९
१३।२०	७।०।०	२।६।०	९।०।०	१४।३।०
१३।४०	शुक्र ०।६।०	२।९।०	९।५।१२	१४।८।२१
१४।०	१।०।०	३।०।०	९।१०।२४	१५।२।१२
१४।२०	१।६।०	३।३।०	१०।४।६	१५।८।३
१४।४०	२।०।०	३।६।०	१०।९।१८	१६।१।२४
१५।०	२।६।०	३।९।०	११।३।०	१६।७।१५
१५।२०	३।०।०	४।०।०	११।८।१२	१७।१।६
१५।४०	३।६।०	४।३।०	१२।१।२४	१७।६।२७
१६।०	४।०।०	४।६।०	१२।७।६	१८।०।१८
१६।२०	४।६।०	४।९।०	१३।०।१८	१८।६।९
१६।४०	५।०।०	५।०।०	१३।६।०	१९।०।०
				बुध
१७।०	५।६।०	५।३।०	१३।११।१२	०।५।३
१७।२०	६।०।०	५।६।०	१४।४।२४	०।१०।६
१७।४०	६।६।०	५।९।०	१४।१०।६	१।३।९
१८।०	७।०।०	६।०।०	१५।३।१८	१।८।१२
१८।२०	७।६।०	६।३।०	१५।९।०	२।१।१५
१८।४०	८।०।०	६।६।०	१६।२।१२	२।६।१८
१९।०	८।६।०	६।९।०	१६।७।२४	२।११।२१
१९।२०	९।०।०	७।०।०	१७।१।६	३।४।२४
१९।४०	९।६।०	७।३।०	१७।६।१८	३।९।२७
२०।०	१०।०।०	७।६।०	१८।०।०	४।३।०
			गुरु	
२०।२०	१०।६।०	७।९।०	०।४।२४	४।८।३
२०।४०	११।०।०	८।०।०	०।९।१८	५।१।६
२१।०	११।६।०	८।३।०	१।२।१२	५।६।९
२१।२०	१२।०।०	८।६।०	१।७।६	५।११।१२
२१।४०	१२।६।०	८।९।०	२।०।०	६।४।१५
२२।०	१३।०।०	९।०।०	२।४।२४	६।९।१८
२२।२०	१३।६।०	९।३।०	२।९।१८	७।२।२१
२२।४०	१४।०।०	९।६।०	३।७।६	७।७।२४
२३।०	१४।६।०	९।९।०	४।०।०	८।०।२७
२३।२०	१५।०।०	१०।०।०		८।६।०
		मंगल		
२३।४०	१५।६।०	०।२।३	४।४।२४	८।११।३
२४।०	१६।०।०	०।४।६	४।९।१८	९।४।६
२४।२०	१६।६।०	०।६।९	५।२।१२	९।९।९
२४।४०	१७।०।०	०।८।१२	५।७।६	१०।२।१२
२५।०	१७।६।०	०।१०।१५	६।०।०	१०।७।१५
२५।२०	१८।०।०	१।०।१८	६।४।२४	११।०।१८
२५।४०	१८।६।०	१।२।२१	६।९।१८	११।५।२१
२६।०	१९।०।०	१।४।२४	७।२।१२	११।१०।२४
२६।२०	१९।६।०	१।६।२७	७।७।६	१२।३।२७
२६।४०	२०।०।०	१।९।०	८।०।०	१२।९।०
	सूर्य			
२७।०	०।१।२४	१।११।३	८।४।२४	१३।२।३
२७।२०	०।३।१८	२।१।६	८।९।१८	१३।७।६
२७।४०	०।५।१२	२।३।९	९।२।१२	१४।०।९
२८।०	०।७।६	२।५।१२	९।७।६	१४।५।१२
२८।२०	०।९।०	२।७।१५	१०।०।०	१४।१०।१५
२८।४०	०।१०।२४	२।९।१८	१०।४।२४	१५।३।१८
२९।०	१।०।१८	२।११।२१	१०।९।१८	१५।८।२१
२९।२०	१।२।१२	३।१।२४	११।२।१२	१६।१।२४
२९।४०	१।४।६	३।३।२७	११।७।६	१६।६।२७
	सूर्य	मंगल	गुरु	बुध
३०।०	१।६।०	३।६।०	१२।०।०	१७।०।०

चन्द्रकला विकलोपरि सारिणी नं. २

चन्द्र स्पष्ट की शेष कलावत् कोष्ठक लेवें वह दिनघटी होगा व विकलादि यही कोष्ठक घटी पल होगा। घटी पल को ६० भाग, दिन को ३० भाग देवें।

कला	सूर्य दि घ	चन्द्र दि घ	मंगल केतु	राहु दि घ	गुरु दि घ	शनि दि घ	बुध दि घ	शुक्र दि घ
१	२।४२	४।३०	३।९	८।६	७।१२	८।३३	७।३९	९।०
२	५।२४	९।०	६।१८	१६।१२	१४।२४	१७।६	१५।१८	१८।०
३	८।६	१३।३०	९।२७	२४।१८	२१।३६	२५।३९	२२।५७	२७।०
४	१०।४८	१८।०	१२।३६	३२।२४	२८।४८	३४।१२	३०।३६	३६।०
५	१३।३०	२२।३०	१५।४५	४०।३०	३६।०	४२।४५	३८।१५	४५।०
६	१६।१२	२७।०	१८।५४	४८।३६	४३।१२	५१।१८	४५।५४	५४।०
७	१८।५४	३१।३०	२२।३	५६।४२	५०।२४	५९।५१	५३।३३	६३।०
८	२१।३६	३६।०	२५।१२	६४।४८	५७।३६	६८।२४	६१।१२	७२।०
९	२४।१८	४०।३०	२८।२१	७२।५४	६४।४८	७६।५७	६८।५१	८१।०
१०	२७।०	४५।०	३१।३०	८१।०	७२।०	८५।३०	७६।३०	९०।०
११	२९।४२	४९।३०	३४।३९	८९।६	७९।१२	९४।३	८४।९	९९।०
१२	३२।२४	५४।०	३७।४८	९७।१२	८६।२४	१०२।३६	९१।४८	१०८।०
१३	३५।६	५८।३०	४०।५७	१०५।१८	९३।३६	१११।९	९९।२७	११७।०
१४	३७।४८	६३।०	४४।६	११३।२४	१००।४८	११९।४२	१०७।६	१२६।०
१५	४०।३०	६७।३०	४७।१५	१२१।३०	१०८।०	१२८।१५	११४।४५	१३५।०
१६	४३।१२	७२।०	५०।२४	१२९।३६	११५।१२	१३६।४८	१२२।२४	१४४।०
१७	४५।५४	७६।३०	५३।३३	१३७।४२	१२२।२४	१४५।२१	१३०।३	१५३।०
१८	४८।३६	८१।०	५६।४२	१४५।४८	१२९।३६	१५३।५४	१३७।४२	१६२।०
१९	५१।१८	८५।३०	५९।५१	१५३।५४	१३६।४८	१६२।२७	१४५।२१	१७१।०
२०	५४।०	९०।०	६३।०	१६२।०	१४४।०	१७१।०	१५३।०	१८०।०
३०	८१।०	१३५।०	९४।३०	२४३।०	२१६।०	२५६।३०	२२९।३०	२७०।०
४०	१०८।०	१८०।०	१२६।०	३२४।०	२८८।०	३४२।०	३०६।०	३६०।०
५०	१३५।०	२२५।०	१५७।३०	४०५।०	३६०।०	४२७।३०	३८२।३०	४५०।०
६०	१६२।०	२७०।०	१८९।०	४८६।०	४३२।०	५१३।०	४५९।०	५४०।०

उदाहरण:- चन्द्र स्पष्ट ०।२६।५७।५७ में विंशोत्तरी भुक्त लाना है सारिणी नं. १ में चन्द्र मेष राशि के सामने २६ अंश ४० कला पर वि शुक्र के २० वर्ष पूरे हो गये है आगे सूर्य महादशा प्रवेश हो गई है। शेष १७ कला कादिनादि कोष्ठक ४५ दिन ५४ घटी लिया। फिर ५० विकला का घट्यादि १३५ घटी। लिया ऊपर ७ विकला का १८ घटी।५४ पल लिया व तीनों को जोड़ दिया १।१८।२७।५४ सूर्य का भुक्त आया

।। प्रसिद्ध नगरों का दिनमान घटी। पल में व सूर्योदयास्त स्टैण्डर्ड समय घंटा। मिनट में

नगर		श्रीनगर अक्षां. ३४।६ रेखा. ७४।५१			दिल्ली अक्षां. २८।३८ रेखा. ७७।१२			लखनऊ अक्षां. २६।५५ रेखा. ८०।५६			जयपुर अक्षां. २६।५५ रेखा. ७५।५२			गोहाटी अक्षां. २६।११ रेखा. ९१।४५			काशी अक्षां. २५।२० रेखा. ८३।०			बालोतरा अक्षां. २५।५६ रेखा. ७२।२१			मणिपुर अक्षां. २४।४४ रेखा. ९३।५८		
तारीख		दिनमान	उदय	अस्त	दिनमान	उदय	अस्त	दिनमान	उदय	अस्त	दिनमान	उदय	अस्त	दिनमान	उदय	अस्त	दिनमान	उदय	अस्त	दिनमान	उदय	अस्त	दिनमान	उदय	अस्त
जनवरी	१	घ.२४/प.३८	घं.७/मि.२९	५/२१	२५/४१	७/१५	५/३३	२५/५६	६/५६	५/२१	२५/५६	७/२०	५/४२	२६/४	६/१४	४/४०	२६/११	६/४८	५/१६	२६/११	७/२१	५/५८	२६/१६	६/२	४/३४
	११	५६	४०	३८	५५	१८	४०	२६/६	७/०	२८	२६/६	२१	४६	१७	१६	४६	२४	४६	२३	२४	३२	६/६	३१	४	४०
	२१	२५/३८	३६	४३	२६/१३	१८	४८	२७	१	३५	२७	२२	५६	३४	१६	५४	४०	५०	३०	४०	३३	१३	४८	४	४८
	३१	२६/१	३३	५७	४८	१३	५७	५६	६/५५	४४	५६	१७	६/५	२७/१	१२	५/७	२७/११	४६	३८	२७/११	२६	२१	२७/१९	१	५५
फरवरी	१०	४४	२४	६/१	२७/२२	७	६/१	२७/३२	५०	५०	२७/३२	११	११	३६	६	८	४१	४०	४४	४१	२३	२७	४७	५/५५	६/१
	२०	२७/२८	१६	१६	५६	७/०	१२	२८/६	४४	५८	२८/६	५	१६	२८/१०	६/०	१६	२८/१४	३४	५२	२८/१४	१७	३५	२८/१२	४	८
मार्च	१	२८/१७	४	२२	२८/३८	६/४८	१७	४३	३३	६/३	४३	६/५४	२८	४५	५/५०	२०	४८	२४	५६	४८	७	३६	५०	४०	१२
	११	२९/११	६/५१	३१	२९/२१	३६	२३	२९/२३	२३	६	२३	४४	३०	२९/२५	४०	२६	२९/२६	१५	६/१	२९/२६	६/५८	४४	२९/२७	३१	१७
	२१	३०/५	३६	२४	३०/४	२६	२८	३०/४	११	१३	३०/४	३२	३४	३०/४	२८	३०	३०/४	३	५	३०/४	४६	४८	३०/४	१६	२१
	३१	३१/४	२२	४८	३०/५३	१५	३५	३०/४६	६/०	२०	३०/४६	२१	३१	३०/४७	१८	३६	३०/४६	५/५३	११	३०/४६	३६	५४	३०/४४	६	२७
अप्रेल	१०	५३	११	५७	३१/३१	६	४२	३१/२५	५/४२	२६	३१/२५	१३	४७	३१/२३	६	४३	३१/२०	४५	१७	३१/२०	२८	७/०	३१/१७	२	३२
	२०	३२/४६	५/५६	७/२	३२/१३	५/५२	४६	३२/५	३८	२६	३२/२	५/५६	५०	३२/१	५/४७	४५	५७	३३	१६	५७	१६	२	३१/५४	४/४८	३५
	३०	३३/३५	४७	६	४५	४५	५१	३५	३२	३४	३५	५२	५५	२६	५०	५०	३२/३५	२६	२४	३२/३५	६	७	३२/१६	४३	३६
मई	१	२६	४६	१०	४८	४४	५२	३८	३१	३५	३८	५२	५६	३२	५०	५०	२८	२५	२५	२८	८	८	२२	४३	३६
	११	३४/१२	३७	१७	३४/३१	३६	५८	३३/१०	२४	४०	३३/१०	४५	७/१	३३/४	४२	५६	५८	१८	३०	५८	१	१३	५२	३६	४४
	२१	५१	२६	२५	५५	३०	६/४	४१	१८	४६	४१	२६	७	३३	३६	६/१	३३/२७	१३	३५	३३/२७	५/५५	१८	३३/१६	३०	२०
	३०	३५/८	२६	३०	३४/८	२८	८	५३	१६	५०	५३	३७	११	४५	३५	५	३६	११	३६	३६	५४	२२	३०	२६	५३
जून	१०	२६	२५	३५	२२	२८	१२	३४/७	१६	५४	३४/११	३७	१५	५६	३४	१०	५१	११	४३	५१	५४	२६	४२	२६	५७
	२०	४२	२६	४०	३५	२७	१७	१६	१५	५६	१६	३६	२०	३४/१०	३४	१४	३४/१	१०	४८	३४/१	५३	३१	५३	२८	६/२
	३०	३०	३८	४०	२५	३१	१७	६	१६	५६	६	४०	२०	१	३८	१४	३४/११	१४	४८	३४/११	५७	३१	४४	३२	२
जुलाई	१	२८	२६	४०	२३	३१	१७	८	१६	५६	८	४०	२०	०	३८	१४	५३	१४	४८	५३	५७	३१	४३	३२	२
	११	१०	३४	३८	६	३६	१६	३३/५५	२४	५८	३३/५५	४५	१६	३३/५७	४३	१२	४०	१६	४७	४०	६/२	३०	३१	३७	१
	२१	३४/४८	३८	३६	३३/४७	४०	१४	४३	२७	५७	४३	४८	१८	३३	४७	१३	२६	२२	४६	२६	५	२६	२०	४०	६/०
	३१	१६	४६	२८	२६	४६	८	१४	३३	५१	१४	५४	१२	७	५२	६	१	२८	४०	१	११	२३	३२/५५	४५	५/५५
अगस्त	१	१२	४७	२७	२३	४६	८	१०	३४	५०	१०	५५	१२	४	५२	६	३२/५८	२८	४०	३२/५८	११	२३	५२	४६	५४
	११	३३/२६	५४	१८	३२/४८	५२	७/०	३२/१८	३६	४३	३२/३८	६/०	४	३२/३२	५८	६/५८	२८	३३	३३	२८	१६	१६	२२	५१	४७
	२१	३२/४	६/०	८	१७	५७	६/५१	६	४३	३५	६	४	६/५६	४	५/५	५१	०	३७	२५	०	२०	८	३१/५६	५४	४०
	३१	३१/५६	८	६/५६	३१/४४	६/१	४१	३१/२६	४६	२५	३१/२६	१०	४६	३१/२७	७	४१	३१/२४	४२	१६	३१/२४	२५	६/५८	२१	५६	३१
सितम्बर	१०	१०	१४	४२	३०/५६	७	२६	३०/५४	५२	१४	३०/५३	१३	३५	३०/५३	१०	३०	३०/४६	४५	५	३०/४८	२८	४८	३०/४५	५/१	२९
	२०	३०/१५	२२	२८	१३	१२	१८	१२	५८	२	१२	१६	२३	१२	१५	१६	११	५०	५/५४	११	३३	३७	११	६	१०
	३०	२९/४६	३०	१४	२९/४०	१८	६	२९/१०	६/१	५/५१	२९/१०	२४	१२	२९/३३	२०	८	२९/३३	५४	४४	२९/३४	३७	२७	२९/३४	१०	०
अक्टूम्बर	१	१२	३१	१३	२५	१६	५	२७	४	५०	२७	२५	११	२६	२०	८	३०	५५	४३	३०	३८	२६	३१	११	४
	११	२८/४८	३८	६/५	२८/५२	२५	५/४६	२८/२९	६	३६	२८/२९	३०	०	२८/५२	२५	४/५३	२८/५२	६/०	३२	२८/५९	४३	१८	२८/५४	५	४६
	२१	२८/१६	४७	५/४६	२८/१८	३१	४३	६	१५	२६	६	३६	५/४०	१०	३१	४७	१४	५	२३	१४	४८	६	१७	२१	३६
	३१	२७/४४	५४	३६	२२	३७	३३	२७/४६	२०	२०	२७/४१	४१	४१	२७/४१	३६	३८	२७/४१	१०	१४	२७/४१	५३	५/४७	२७/४७	२५	३१
नवम्बर	१०	१	७/१	२७	२७/१५	४६	२७	२६/१६	२६	१४	२६/१६	४७	३५	६	४२	३२	११	१६	८	११	५६	५१	१७	३१	२५
	२०	२६/३८	१२	२०	१३	५१	२१	२७	३४	८	२७	५५	२६	२६/४०	४६	२७	२६/४०	२३	३	२६/४०	७	४६	२६/३५	३७	२८
	३०	२६/२४	२०	१८	२६/२५	५८	२०	६	४०	८	६	७/१	२६	१७	५६	२६	२४	२६	३	२४	१२	४६	३१	४४	२०
दिसम्बर	१	५४	२१	१६	५३	५६	२१	८	४१	६	८	२	३०	१६	५७	२७	२३	३०	४	२३	१३	४७	३०	४५	२१
	११	३६	२६	१६	३६	६/०	२२	२५/५५	४८	१०	२५/५५	६	३१	३	६/१	२६	१०	३७	५	१०	२०	४७	१८	५१	२३
	२१	१६	३८	२०	२४	१४	२४	४०	५६	१२	४०	१७	३३	२५/४८	११	३१	२५/४८	४५	७	२५/४८	२८	५०	६	५६	२५
	३१	३६	३६	२६	३६	१६	३२	५५	५८	१६	५५	१६	४१	२५/५०	१३	३६	२५/५०	४६	१४	२५/५०	३०	५८	१८	६/१	३३

।। प्रसिद्ध नगरों का दिनमान घटी। पल में व सूर्योदयास्त स्टैण्डर्ड समय घंटा। मिनट में

नगर →		उज्जैन अक्षां २३।११ रेखा ७५।५०			अहमदाबाद अक्षां २३।२ रेखा ७२।३८			कलकत्ता अक्षां २२।३४ रेखा ८८।२४			जगन्नाथपुरी अक्षां १९।४८ रेखा ८५।५०			बम्बई अक्षां १८।५७ रेखा ७२।५०			मद्रास अक्षां १३।०४ रेखा ८०।१७			मैसूर अक्षां १२।१८ रेखा ७६।४२		
	तारीख ↓	दिनमान	उदय	अस्त	दिनमान	उदय	अस्त	दिनमान	उदय	अस्त	दिनमान	उदय	अस्त	दिनमान	उदय	अस्त	दिनमान	उदय	अस्त	दिनमान	उदय	अस्त
जनवरी	१	घ.२६ प.४०	७ ११	५ ५१	२६ ४०	७ २३	६ ३	२६ ४५	६ १५	५ १	२७ ६	६ २५	५ १७	२७ १८	७ १४	६ ११	२८ ११	६ ३४	५ ५१	२८ १८	६ ४७	६ ७
	११	५१	१३	५७	५१	२५	९	५५	२१	७	१९	२७	२३	२७	१८	१६	१७	३८	५६	२४	५०	१२
	२१	२७ ५	१४	६ ४	२७ ५	२६	१९	२७ ९	२२	१४	३१	२९	२९	३८	१९	२३	२५	४०	६ १	३१	५३	१७
	३१	३२	११	११	३२	२३	२३	३५	१९	२१	५३	२६	३६	२८ ०	१७	२९	४०	३९	७	४४	५२	२२
फरवरी	१०	५९	५	१७	५९	१७	२९	२८ १	१४	२६	२८ १९	२२	४०	२१	१३	३३	५४	३६	१०	५७	५०	२४
	२०	२८ २७	१	२३	२८ २७	१३	३५	२९	९	३३	४०	१८	४६	४३	९	३९	२९ १०	३४	१४	२९ ११	४८	२८
मार्च	१	५७	६ ५२	२६	५७	४	३८	५८	६ ०	३६	२९ ९	१०	४८	२९ ८	१	४१	२६	२८	१४	२७	४२	२८
	११	२९ ३०	४३	३१	२९ ३०	६ ५४	४२	२९ ३१	५ ५२	४०	३४	२	५२	३५	६ ५४	४४	४४	२२	१६	४४	३६	३०
	२१	३० ३	३२	३४	३० ३	४३	४५	३० ३	४१	४३	३० ३	५ ५२	५४	३० ३	४४	४६	३० २	१५	१५	३० २	२९	२९
	३१	३० ४०	२३	३९	३० ४०	३४	५०	३० ३६	३२	४८	३० ३४	४३	५७	३० ३३	३६	५०	३० ३३	९	१७	३० २५	२२	३०
अप्रेल	१०	३१ १०	१९	४४	३१ १०	२७	५५	३१ ६	२५	५३	३१ ०	३८	६ ३	५७	३१	५३	३८	५	१९	३७	१९	३३
	२०	४३	४	४६	४३	१६	५८	४१	१४	५४	२८	२७	३	३१ २४	२०	५४	५५	५ ५६	१८	५३	१०	३२
	३०	३२ ७	५ ५६	४९	३२ ७	११	७ १	३२ ४	८	५८	४९	२२	६	४३	१५	५७	३१ ६	५२	२०	३१ ५	७	३३
मई	१	६	५८	५०	६	१०	२	७	८	५८	५१	२२	६	४५	१५	५७	१०	५२	२०	७	७	३३
	११	३६	५२	५४	३६	४	६ ३	३३	१	६ ३	३२ १४	१६	१०	३१ ७	१०	७ ०	२५	४८	२२	२०	३	३५
	२१	३३ १	५७	७ ६	३३ १	५ ५९	११	५७	४ ५७	७	३५	१२	१४	२७	६	४	३९	४५	२५	३३	६ ०	३८
	३०	११	४६	२	११	५८	१४	३३ ७	५६	१०	४३	११	१७	३५	५	७	४४	४५	२६	३७	१	३९
जून	१०	२३	४५	७	२३	५७	१९	१७	५६	१४	५३	११	२१	४३	५	११	५०	४६	३०	४३	१	४३
	२०	३३	४५	११	३३	५७	२३	२७	५६	१८	३३ १	१२	२४	५१	६	१४	५५	४७	३३	४७	३	४५
	३०	२५	४९	११	२५	६ १	२३	१९	५९	१९	३२ ५५	१५	२५	४५	९	१५	५१	५०	३४	४४	५	४७
जुलाई	१	२४	४९	११	२४	१	२३	१८	५९	१९	५४	१५	२५	४४	९	१५	५१	५०	३४	४३	५	४७
	११	१२	५४	१०	१२	६	२२	८	५ ३	१९	४४	१९	२५	३६	१३	१५	४५	५३	३५	३८	८	४८
	२१	३३ १	५७	९	३३ १	९	२१	३२ ५५	६	१८	३६	२२	२४	२८	१५	१५	३९	५५	३५	३३	१०	४८
	३१	३२ ६	६ २	४	३२ ६	१४	१६	३५	११	१३	१६	२६	२०	९	१९	११	२६	५८	३२	२१	१३	४५
अगस्त	१	३३	२	४	३३	१४	१६	३३	११	१३	१४	२६	२०	७	२०	१०	२५	५८	३२	२०	१३	४५
	११	७	७	६ ५७	७	१९	९	७	१६	६	३१ ५१	३०	१४	३१ ५५	२३	५	१०	६ ०	२८	७	१५	४१
	२१	३१ ४५	९	५१	३१ ४५	२१	३	३१ ४१	१८	०	३१	३२	८	२६	२५	६ ५५	३० ५७	१	२३	३० ५५	१५	३७
	३१	१३	१३	४३	१३	२५	६ ५५	१२	२३	५ ५१	३	३५	१	०	२८	५२	४०	२	१८	३८	१६	३२
सितम्बर	१०	३० ४३	१५	३३	३० ४३	२७	४५	३० ४२	२५	४१	३० ३७	३७	५ ५१	३० ३६	२९	४३	२२	१	११	२३	१५	२५
	२०	१०	१९	२३	१०	३१	३५	१०	२८	३२	९	३९	४३	८	३१	३५	५	२	४	५	१९	१८
	३०	२९ ५७	२३	१३	२९ ५७	३५	२५	२९ ५७	३२	२२	२९ ४०	४२	३४	२९ ५१	३४	२६	२९ ४७	३	५ ५७	२९ ४८	१६	१२
अक्टूम्बर	१	३३	२३	१३	३३	३५	२५	३४	३२	२२	३७	४३	३३	३८	३४	२६	४६	३	५७	४६	१५	११
	११	०	२७	३	०	३९	१५	१	३६	१२	८	४५	२५	११	३७	२७	२८	३	५१	२९	१७	५
	२१	२८ २७	३२	५ ५४	२८ २७	४४	६	२८ २६	४०	४	२८ ४०	४९	१७	२८ ४१	४४	१४	१०	५	४५	११	१९	५ ५९
	३१	२७ ५९	३५	४७	२७ ५९	४७	५ ५९	१	४४	४ ५६	१९	५२	१०	२१	४३	३	२८ ५४	६	४०	२८ ५७	२०	५४
नवम्बर	१०	३२	४१	४१	३२	५३	५३	२७ ३५	४९	५१	२७ ५४	५६	६	०	४७	५ ५६	४०	९	३७	४४	२२	५२
	२०	५	४७	३७	५	५९	४९	९	५५	४७	३१	६ २	२	२७ १८	५२	५६	२५	१३	३५	३१	२६	५०
	३०	२६ ५१	५३	३७	२६ ५१	७ ५५	४९	२६ ५५	६ १	४७	१९	७	३	२७	५८	५६	१७	१८	३६	२४	३०	५२
दिसम्बर	१	५०	५४	३८	५०	६	५०	४८	२	४८	१८	८	४	२६	५९	५७	१७	१९	३७	२३	३१	५३
	११	३८	७ ०	४०	३८	१२	५२	४४	८	५०	८	१४	६	१८	७ ४	६ ०	११	२४	४०	१८	३६	५४
	२१	२९	८	४२	२९	२०	५४	३२	९	५२	२६ ५५	२१	९	८	११	३	४	३०	४४	१२	४३	५९
	३१	३८	१०	५०	३८	२२	५ ३	४४	१९	५ ०	२६ ५७	२४	१६	१८	१४	१०	११	३४	५०	१८	४५	६ ५

विवरण:- इस सारिणी में प्रत्येक मास में १० दिन के अंतर से दिनमान घटी। पल व रवि उदय अस्त घंटा। मिनट में दिये गये है। ऊपर नीचे के दिनों के अंतर से अनुपातद्वारा प्रत्येक दिन के निकाल देवे। अभिष्ट नगर के अक्षांश इस सारिणी में जिस नगर के समकक्ष है। उसके समान ही दिनमान अभिष्ट नगर के भी होंगे। सारिणी नगर व अभिष्ट नगर के देशान्तर स्टैण्डर्ड समय का परस्पर अंतर का उदयास्त में संस्कार करने पर अभिष्ट नगर के उदयास्त आ जायेंगे। जैसे काशी व बालोतरा एक रेखीय अक्षांश२५ पर है। देशांतर के परस्पर अंतर से ४३ मिनट बाद काशी से बालोतरा में रवि उदयास्त होगा। सूत्र-(१) ६० घटी- दिनमान = रात्रिमान (२) दिनमान÷५ सूर्यास्त लोकल(३) १२ घंटा-सूर्यास्त लोकल=सूर्योदय लोकल (४) लोकल रविउदयास्त+देशांतर± वेलांतर=स्टैण्डर्ड सूर्योदयास्त (५) दिनमान=स्वस्थानिक लग्न सारिणीमें सूर्य राशि अंश की लाईन के कौष्टक को उसकी ७वीं राशि के उतने अंश में से ऋण करने से दिनमान आएगा।

तेजी मंदी

(सर्वधातु,अनाज,रसकस,तिलहन,शेयर,किराना के विशेष चांस)

(1) शनि की वस्तुयें- काली वस्तुये लोहा,तेल तिलहन,ऐरण्डी,कोयला,काली मीर्च,शेयर,सीमेन्ट, खनीज आदि। शनि कुंभ राशि पर ता.८ जून २०२५ तक व ता.६ अगस्त से १३ फरवरी २०२६ तक। **कुंभ राशि की वस्तुयें**-सूत कपड़ा, मशीनरी, नशीली वस्तुयें, नमक, पोस्त चर्म, रंगीन वस्तुयें,लकड़ी का सामान, लोहे की वस्तुयें,लोहे की वस्तुये,नीलम,आयरन शेयर,कस्तुरी,लोहे के बर्तन, बिजली का सामान। **मीन राशि की वस्तुयें**- सोना चांदी जवाहरात, खनीज, पत्थर, चना, घी मक्खन, जलज वस्तुयें, सीप, मोती, मत्स्य, इन्तर, सुगंधित वस्तुयें, पीली वस्तुयें, हवाई जहाज, टीन,रबड़, प्लास्टिक की वस्तुये, तारगोटा आदि। मीन पर शनि ता.८ जून से ६ अगस्त २०२५ तक आगे ता.१३ फरवरी २०२६ से अगले वर्ष में भी। इस वर्ष शनि कुंभ,मीन दो राशियों पर चलेगा। क्रूर ग्रहों के संयोग से भारी तेजी व सौम्य ग्रहों के संयोग से मंदी रहेगी। **गुरु की वस्तुयें**- पीली वस्तुयें,सोना चांदी,ग्वार,अलसी,घी,मक्खन,बैंक बीमा शेयर्स, ऐयर सर्विस, किराणा, बारदाना, रसकस हल्दी, स्टेशनरी, कागज, ग्वार अलसी, रबड़ आदि **वृष राशि वस्तुयें**- गुरु ता.९ मई २०२५तक रहेगा। कंगन, चीन,कांच,सौन्दर्यवस्तुयें,शेयर,मेवें,सफेदवस्त्र,पुष्प,सरसों,गेहूं,बैल,गायें,महिष, रुई,जूट,शक्कर,कपूर,इलायची,काजू ,बिनौला,चांदी,कांसी,वाद्ययन्त्र,जड़ी बूटियां आदि। **मिथुन राशि की वस्तुयें**- गुरु ता.९ मई से ता.७ अक्टूम्बर २०२५ तक व ता.२१ जनवरी से अगले वर्ष भी गुरु रहेगा जिससे सूत, कपड़ा,सूतली, बारदाना, ग्वार, रुई, बाजरा, ज्वार, मक्का,सौंफ,जीरा,कामाशक्ति वस्तुयें, घी, जायफल, अजवायन,दालें,जस्ता,कांगनी,अखबार आदि वस्तुयें। **कर्क राशि की वस्तुयें**- ता.७ अक्टूम्बर२५ से ता.२१ जनवरी २०२६ तक गुरु कर्क पर रहेगा जो - तंबाकुं , चांदी, मशालें, कांच, पानी, पेयपदार्थ, जलोत्पन्न वस्तुयें, सौन्दर्य वस्तुयें, सफेद वस्त्र आदि प्रभावित होगी। **चंद्र की वस्तुयें**- चंद्रमा करीब ढाई दिन से बदलता रहता है जो क्रूर ग्रहों से तेजी, सौम्य ग्रहों से मंदी करता है अत: सफेद वस्तुये ऑयल शेयर्स,सफेद कपड़ा, पेट्रोलियम शेयर्स,चांदी,कांच,शराब, चीनी गुड़,सूत,रेशमीवस्त्र,पानी,बर्फ,सौन्दर्यवस्तुये आदि वस्तुये प्रभावित होती है।

बुध की वस्तुयें- हरी वस्तुयें,रुई चांदी,सिल्क टेक्सटाईल शेयर, दालें, अनाज, कठोल, ग्वार, मटर,जूट,वनस्पति घी,कागज ,अखबार, सौंफ, जीरा, बारदाना, धनियां, राई सरसों,पिस्ता,बाजरा,कामाशक्ति,पन्ना जवाहरात।

चैत्र शुक्ल पक्ष:- पांच शनि का मास तेजीप्रद। १४ दिन का पक्ष चांदी अनाज,घी तेज। ता.३०.३.२०२५को १ रविवारी फल फूल धान्य तेज। चंद्रोदय मु.३० (स्थिरता)चंद्रोदय मेष पर जौ गेहूं तेज। सूर्य रेवती रुई अच्छी तेज। कुंभे बुध रसकस मंदे। वर्ष प्रवेश से ता.५ मार्च तक बुध,शुक्र वक्री,शनि युत,मंगल दृष्ट होने से सफेद,हरी वस्तुयें,रुई चांदी,शक्कर,सिल्क टेक्सटाईल शेयर,दालें,अनाज, ग्वार,मटर,जूट,सौन्दर्य वस्तुयें,सफेद कपड़ा,स्टील ऐरण्डी में अच्छी तेजी। ता.३१ रेवत्या रवि सफेद पीली वस्तुयें,रुई चावल चांदी,लवण,सरसों,अलसी,लाख,गेहूं, चणा तेज। २ सोमवारी मूंग घी तेज। ता.१ बुधोदय पू.मंदी का झटका। १ से ३ तक वृषे चं.+वृ.युति चंद्र,गुरु की वस्तुयें मंदी। ता.४,५मिथुने चं.+मं.वस्तुयें तेज। लाल वस्तुयें मंदी। वर्ष प्रवेश से ता.२५ तक मीने सू.+रा.युति सोना चांदी, जवाहरात,दवाईयां,पत्थर,सीमेण्ट,प्याज,लसण,लोहा सीसा तेज। ४ क्षया मूंग,घी तेज। ता.३ अप्रेल से १८ मई तक <u>अंगारक योग</u> बाजार भड़केगा(भारी तेजी) संभलकर धंधा करें। ता.३ ६गुरुवारी सब वस्तु १ मास तेजी। वर्ष प्रवेश से वृषे गुरु ता.९ मई तक होने से गुरु की वस्तुयें मंदी मे रहेगी। वर्ष प्रवेश से ता.१२ अप्रेल तक मिथुने मंगल से सफेद व हरी वस्तुयें,सूत कपड़ा,सुतली बारदाना आदि तेजी मे रहेगी। ता.५ अप्रेल मार्गी बुध बाजार में घटाबढ़ी। ता.८ से १३ अप्रेल तक मीने बु.+सू.+रा.से हरी वस्तुयें,रुई चांदी,शक्कर,सिल्क,टेक्सटाईल शेयर,दालें,अनाज,ग्वार आदि तेज। ता.९ मार्गी शुक्र मंदी का झटका,गाय बैल आदि पशु मंदे। ता.१२ से १५ शनिवारी रुई १ मास मंदी। ता.८ जून तक कर्क मंगल से शनि का षडाष्टक काली लाल वस्तुयें,शेयरों में भारी तेजी आयेगी। शनि की वस्तुयें विशेष प्रभावित होगी।

वैशाख कृष्ण पक्ष:- पांच रवि का मास तेजी मे रहेगा। ता.१३ अप्रेल २०२५ को १ रविवारी लाल वस्तुयें तेज। ता.१४ अप्रेल से ता.१४ मई तक मेष(उच्च) सूर्य पर शनि की दृष्टि से लाल वस्तुये,जवाहरात मुद्रा,दवाईयां,सोना, चमड़ा, पत्थर, शेयर,कठोल,मशीनरी,बिजली का सामान में अच्छी तेजी रहेगी। ता.१३ से १९ अप्रेल तक मीने बु.+रा.से रुई चांदी,शक्कर,सिल्क, टेक्सटाईल, शेयर, दालें, ग्वार, जूट,कागज तेज,लसण प्याज लोहा सीसा में मंदी। ता.१५ मार्गी बुध मंदी का झटका। ता.१६ मार्गी मीने शुक्र मंदीका झटका। ता.१९ से ३० अप्रेल

तक मीने बु.+शु.+रा.युति से सफेद हरी वस्तुयें,सौन्दर्य वस्तुयें,स्त्रियोचित वस्तुयें सोना, चांदी जवाहरात खनीज वस्तुयें,सीमेण्ट,घी मक्खन,प्याज लसण सीसा,लोहा,स्टील में मंदी। ता.२१ रेवत्यां बुध रसकस,तेल तिलहन मंदे। ता.२२ पुष्ये भौम सोना तेज। पंचक मंगलवारी तेजी का झटका। ता.२२ से २८ तक चंद्र पापाक्रांत से चंद्रमा की वस्तुयें तेज। ता.२५ योगक्षय घी तेज। १३ क्षय घी ,रुई तेज। अफीम मंदा। ता.२७ अमा.रविवारी भारी तेजी,अनाज संग्रह से लाभ,रुई तेज। भरण्यां रवि रसकस तेज।

वैशाख शुक्ल पक्ष:- ता.२८ अप्रेल २५ को १ सोम १३ शनिवारी गेहूं तेज। ता. २९ चंद्रोदय मु.३० स्थिरता। ता.२९,३० वृषे चं.+वृ.से मंदी का झटका,चंद्रे,गुरु वस्तुये मंदी। आगे ता.१ मई तक चंद्र की लिखी वस्तुये मंदी। ता.३० अप्रेल को कुंभे राहु सिंहे केतु ता.८ जून तक श.+रा.युति से शनि की सब वस्तुयें तेज व लसण प्याज सीसा,हरी चर्बी मे भी भारी तेजी। ता.१ मई ४ गुरुवारी रुई अवश्य तेज। मार्गी शुक्र रसकस सोना,चांदी,जवाहरात,जलज वस्तुयें,खनीज पत्थर,शेयर, सौन्दर्य वस्तुये मंदे। ता.४ से ७ तक चंद्र पापाक्रांत चंद्र की वस्तुये तेज। ता.३ मेषे बुध+सु. युति ता.१४ मई तक शनि दृष्ट हरी वस्तुयें,रुई,चांदी,शक्कर,सिल्क टेक्सटाईल शेयर,दालें,अनाज,ग्वार,मटर,जूट,कागज,सरसों,कठोल,रसकस तेज। ता.५ बुधास्त पू.तेजी। ता.६ को ९ मंगल मघा से तेजी का झटका। ता.८ से १० तक चंद्र की सम वस्तुयें मंदी। ता.९ मई से ११ जून तक मिथुने गुरु से गुरु की सब वस्तुओं में मंदी का झटका। बुध की हरी वस्तुये,किराण में मंदी। ता.१० भरण्यां बुध धान्य मंदे। १३ शनिवारी तेजी का मास। ता.१० से १५ तक चंद्र की वस्तुये तेज। ता.११ कृत्तिका रवि कठोल,मिट्टी बर्तन तेज। रवि+व्यतिपात से रुई अवश्य मंदी।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष:- पांच मंगल तेजी का मास। ता.१३ मई २०२५ को १ मंगली लाल वस्तुयें तेज। ता.१४ वृषेऽर्क बुधवारी चांदी मे घटबढ़। रुई,कपास,सूत कपड़ा,सोना तेज। २बुध ६ शनि १० गुरुवारी से घी अवश्य तेज। ता.१५ से १७ तक चंद्र,गुरु की वस्तुओं में मंदी का झटका। ता.१८ से २१ तक चंद की वस्तुयें तेज। ता.१८ को ६ रविवारी अनाज घी,रुई तेज। अफीम मे घटाबढ़ी। आश्लेषा भौम रुई मंदी,अनाज तेज। कृत्तिका बुध रुई,चांदी मंदी। रेवत्यां शुक्र रसकस रुई,कपास,चांदी मंदे। ता.१९ पंचक सोमवारी मंदी। ता.२० मई से ४ जून तक वृषे सू.+बु.युति सर्वधातु ,हरी वस्तुयें,रुई चांदी,दाले,ग्वार,जूट मटर,सिल्क टेक्सटाईल शेयर,कागज मे घटबढ़ से तेजी। लल वस्तुये,सोना,जवाहरात,पत्थर, मुद्रा,मंदे। ता.२२ से ३० तक चंद्र की व बुध,शुक्र,गुरु की सब वस्तुओं में मंदी का झटका। ता.२२ को १० गुरुवारी घी तेज। ता.२४ पंचक शनिवारी शेयर तेज। बाजार में तेजी। ता.२५ को रोहिण्यां रवि कठोल,रसकस,तेल तिलहन,सूत सन,बाजरा तेज। चांदी मंदी। योगक्षय घी तेज। रोहिण्यां बुध सोना चांदी रसकस तेल तिलहन,वस्त्र तेज। ता.२६ को १४ सोमवारी रुई मंदी। ता.२७ अमा.मंगली व रोहिणी में रोहिणी तेजी का झटका। अनाज संग्रह से लाभ। ता.२५ से २८ तक लालवस्तुये मंदी,चंद्र की वस्तुओं में तेजी का झटका।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष:- १ मंगल क्षया तिथि रजस्वला पक्ष तेजी का पक्ष। मूंग घी,धान्य तेज। ता.२८ चंद्रोदय मु.३० स्थिरता। मिथुने चंद्रोदय कपास सूत धान्य तेज। २ बुध ६ रवि १० गुरुवारी घी अवश्य तेज। ता.३० मई से ४ जून तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.३१ मेषे शुक्र सोना चांदी,गेहूं,जौ,चणा आदि अन्न,घी तेज। ता.१ जून मृगेबुध रुई तेज,तिल सरसों उड़द मंदे। ६ रविवारी घी,अनाज,चावल, रुई कपास सूत तेज। ता.४ से १५ जून तक मिथुने बु.+वृ.से गुरु बुध की सब वस्तुयें मंदी,मंदी का अच्छा झटका। ता.४ से ता.९ तक चंद्र की वस्तुये मंदी। मंदी का झटका। ता.५ को १० गुरुवारी घी तेज। ता.८ को १२ तिथि वृद्धि रुई मंदी,घी भाव उल्टे। मृगे रवि सोना चांदी मे घटबढ़ से मंदी। आर्द्रा बुध कठोल,तेल तिलहन मंदे। बुधोदय प.रुई मंदी। ता.११ जून गुरु अस्त प.से ता. १२ जुलाई तक रहेगा गुरु की सभी वस्तुयें तेज। तेजी के झटके से सावधानी रखें। कुछ वस्तुओ का बाजार एक तरफा तेजी मे रहेगा। ता.९ से ११ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.११ से ३० जुलाई तक सिंहे मं.+के.की युति से लाल वस्तुयें, खनीज वस्तुयें,रेल्वे शेयर,सोना चावल तेल तिलहन मशीनरी कॉफी चाय, किराणा, अलसी,अरण्ड,मूंगफली,धातु ,प्याज,लसण,हड्डी चर्बी,रसकस, मुद्रा ,पीतल, केशर,तेज।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष:- पांच गुरु शस्त्रास्त्र तेज। १४ दिन का पक्ष चांदी तेज,रुई अनाज मंदे। ता.१२ जून २०२५ को १ मूल तेजी। ता.१२ से १६ तक चंद्र की वस्तुये मंदी। ता.१३ जून भरण्यां शुक्र सोना,चांदी मंदी,रुई,तुष,धान्य तेज। २ शुक्रवारी मंदी। ता.१५ मिथुनेऽर्क रविवारी लालवस्तुयें,सोना चांदी,तेल तिलहन, कठोल, धान्य,सूत तेज। पुनर्वसु बुध रुई ,कपास,सन,चांदी मंदी। ता.१५ से २२ जूनतक मिथुने सू.+बु.+वृ.युति सूत कपड़ा,सूतली,बारदाना,ग्वार,रुई, बाजरा, ज्वार मक्का सौंफ,जीरा,कामाशक्ति वस्तुयें,सिल्क शेयर,दालें तेज। ता.१६ पंचक सोमवारी मंदी। ता.१६ से २० तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.१९ को क्षया घी

तेज। ता.२० से २४ तक चंद की वस्तुये मंदी। ता.२२ आद्रा रवि रसकस,मणी मोती रत्न,अलसी,सरसों,तिलहन तेज। कर्के बुध रसकस तेल तिलहन,सोना तेज। चांदी रुई मे घटाबढ़ी। ता.२३ आद्रा २ गुरु रुई मे मंदी,सोना,चांदी में घटाबढ़ी। ता.२२ से २६ तक चंद की वस्तुये तेज। ता.२४ को १४ मंगल रोहिणी तेजी। ता.२४ जून से १६ जुलाई तक मिथुने सू.+वृ.युति गुरु की वस्तुयें तेज। ता.२५ पुक्षे बुध मंगल हरी वस्तुये चांदी मंदी। कृत्तिका शुक्र सरसों मे मंदी। अमाबुधवारी चांदी रुई अनाज मंदे।

आषाढ शुक्ल पक्ष:- ता.२६ जून २०२५ को चंद्रोदय मु.४५ मंदी। मिथुने चंद्रोदय कपास, सूत.धान्य तेज। १ गुरुवारी चांदी मंदी। ता.२७ मोहर्रम शुक्रवारी गेहूँ सस्ते बाकी अन्न महंगे होवे। २ शुक्री व ६ शुक्रवारी अन्न सस्ता,रुई तेज। ता.२७,२८ चंद्र की वस्तुये मंदी। ता.२६ जून से ३ जुलाई तक चंद्र की वस्तुये तेज। ता.१ जुलाई ६ मंगली गुड गेहूँ लाल वस्तुये तेज। ता.३ पूषायां भौम रसकस, नमक,तेल,तिलहन तेज। ता.४ से १३ तक चंद्र की वस्तुयें घटाबढ़ी से मंदी में रहेगा। ता.५ जुलाई से ता.६ अगस्त तक मीने शनि वक्र से मीन राशि की सभी वस्तुये तेज। एक तरफा तेजी। ता.६ पुनर्वसु रवि सोना,चांदी,कटोल, तिलहन,केसर,सुगंधित वस्तुये,लाल वस्तुयें तेज। ता.७ से १६ जुलाई तक रोहिणी शुक्र वाहन,स्त्रियोचित सौन्दय वस्तुयें,सफेद वस्तु , सफेद वस्त्र,स्टील, शेयर तेज। ता.८ आद्रा ३ गुरु रुई मंदी। ता.१० वक्री बुध रसकस,धान्य,रुई धातुओं में तेजी। १५ पूषा.से गेहूं,मूंगफली मंदी। ता.१ अगस्त तक बुध,शनिवक्र तेजी,मूंगफली तेज।

श्रावण कृष्ण पक्ष:- शुक्र पांच सुभिक्ष। १४ दिन का पक्ष चांदी तेज,रुई,अनाज मंदे। ता.१२ जुलाई २०२५को गुरु उदय पू.से गुरु व मिथुन की वस्तुयें मंदी। ता. १३ बुधास्त प.रुई,हरी वस्तुयें,शक्कर,सिल्क टेक्सटाईल शेयर,दालें तेज। पंचक रविवारी+धनेष्ठा से अचानक तेजी। बाजार तेजी का। ता.१३ से १७ तक चंद्र की वस्तुये तेज। ता.१६ कर्के ऽर्क बुधवारी चांदी तेज,धान्य मंदे। ता.१६ जुलाई से १७ अगस्त तक कर्के सू.+बु.से सफेद हरी वस्तुयें मशाले,चांदी सफेद वस्त्र,कांच जलोत्पन्न वस्तुयें,सौन्दर्य वस्तुयें,सिल्क टेक्सटाईल शेयर तेज। ता.१६ मृगे शुक्र रसकस धान्य तेज। कटोल मंदे। ता.१८ से २४ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.२० पुक्षे रवि तेल तिलहन घी,रसकस,ज्वार,सुपारी,नारियल,मशाले तेज। १० रविवारी घी गेहूं तेज। ता.२१ को १२ क्षय रुई घी तेज। ता.२२ आद्रा ४ गुरु सोना चांदी मोती मूंगा जवाहरात मंदे। ता.२३ वक्री पुक्ष १ बुध सोना चांदी रुई मंदी। ता.२४ मिथुने शुक्र ता.१६ तक मिथुने वृ.+शु.युति से सोना चांदी व गुरु की वस्तु मे भारी उठा पटक मंदी से तेजी। अमा.गुरुवारी रुई चांदी अनाज मंदे।

श्रावण शुक्ल पक्ष:- ता.२५.७.२०२५ को उफायां भौम रसकस तेज। १ शुक्रवारी रुई तेज। ता.२६ चंद्रोदय मु.३० सम.शनिवारी धान्य तेज। सिंह चंद्रे रसकस धान्य तेज। २ शनिवारी रुई तेज। ता.२८ से ३१ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.२८ बुधोदय पूर्वे हरी वस्तुयें,रुई चांदी,शक्कर,सिल्क टेक्सटाईल शेयर, दालें,अनाज,ग्वार,मटर,जूट मंदे। ता.२६ को ५ मंगली चांदी लालवस्तुयें तेज। ता.३० आद्रायां शुक्र अन्नों मे अचानक मंदी। कन्यायां भौम लालवस्तुयें,मशाले, पाट बारदाना,सोना चांदी,चंदन,रुई,सूत तेज। ता.११ अगस्त मार्गी बुध चांदी, कपड़ा,चावल,रुई पाट शेयर मंदे। जलज वस्तुयें तेज। ता.१ से ८ अगस्त तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.३ आश्लेषा रवि रसकस तेल तिलहन कटोल,सोना चांदी तेज। ता.६ वक्री पूभा.३ कुंभे शनि धान्य तिलहन तेल कटोल तेज। ता.७ पुनर्वसु १ गुरु अनाजों में तेजी,रुई में अचानक मंदी। ता.७ जुलाई से १५ अगस्त तक अंगारक योग बाजार भड़के,चाल देखकर चले। ता.८ पंचक शनिवारी तेजी। १५ शनिवारी रुई १ मास मंदी। श्रवण नक्षत्र से रसकस तेज।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष:- पांच रवि गर्मी १४ दिन का पक्ष चांदी तेज,रुई,अनाज मंदा, प्रजा बढ़े। ता.१० अगस्त २०२५ को पुनर्वसु शुक्र बालकों में पीड़ा, रुई, कपास, सूत सन चांदी मंदी। अनाज तेज। पंचक रवि धनेष्ठा से रुई अचानक तेज। ता.१० से १६ तक चंद्र की वस्तुये तेज। ता.११ मार्गी पुक्ष २ बुध हरी वस्तुये सोना चांदी,बुध की वस्तुओं मे घटाबढ़ी से मंदी। ता.११ को २ सोमवारी भाद्रपद कृष्णा द्वितीया द्वितीय वार योगतः। धान्य निष्पत्तिद रतुला सम्पदा स्युश्च चतुष्पदे।।१।। धानय उत्पत्ति श्रेष्ठ,पशु सुखी। ता.१३ को ५क्षया घी तेज,अन्यों मे मंदी। ता.१५ हस्ते भौम हस्त निर्मित वस्तुयें,रसकस,नमक घी तेज। ता.१६ को ८ शनिवारी गुड़ ३ मास बाद तेज। ता.१६ से २० तक चंद्र की वस्तुये मंदी। ता.१७ सिंहेऽर्क रविवारी व ता.२२ तक सू.+के.युति से व १४ सितम्बर तक अंगारक योग से लाल वस्तुयें,रसकस,तेल तिलहन,रत्न शेयर,मशाले तेज। अनाज मंदे। आश्लेषा बुध तुष धान्य अच्छा। रसकस मंदे। ता.१६ से २६ तक कर्के बु.+शु.युति से सफेद हरी,जलज वस्तुयें,कटोल,सौन्दर्य वस्तुयें,रसकस,बुध की वस्तुओं में मंदी का झटका। ता.२२ से शरद् ऋतु प्रारंभ। पुक्षे शुक्र रसकस,सफेद वस्तुयें,जलज वस्तुयें,लाख,चमड़ा मंदे। सूत,सन,ऊन तेज। ता. २३ को अमा.शनिवारी अनाज संग्रह से लाभ,तिल तेल,शनि वस्तुयें तेज।

पुनर्वसु २ गुरु रुई अचानक मंदी। ता.२३ से २७ तक चंद्र की वस्तुये तेज।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष:- ता.२४ अगस्त २०२५ को चंद्रोदय मु.३० स्थिरता, पूफायां कन्या चंद्रोदय किराणा,तेज,धान्य सस्ता। रुई मे घटाबढ़ी। ता.२५ को २ सोमवारी तेजी। ता.२६ सिंहे बुध हरी वस्तुयें,बुध की वस्तुये तेज। ता.२८ अगस्त से ५ सितम्बर तक चंद्र की वस्तुओं में मंदी का झटका। ता.३१ पूफायां रवि मे लाल वस्तुयें,दवाईयां,घी,ऊनी वस्त्र,जवाहरात,मुद्रा,चावल,चमड़ा, पत्थर तेज। रवि+वैधृत से रुई अवश्य मंदी। ता.१ सितम्बर बुधास्त पू.बुध की वस्तुये तेज। ता.२ से ७ तक आश्लेषा शुक्र कठोल,तुष धान्य,रुई मंदी। सफेद वस्तुयें, सौन्दर्य वस्तुये व चंद्र की वस्तुओं में मंदी का झटका। ता.४ चित्रायां भौम चित्रान्न (तुष धान्य) स्त्रियोचित वस्तुयें,धातु व बुध की वस्तुयें तेज। पूफायां बुध अनाज,रसकस मंदे। ता.६ पंचक शनिवारी रुई,अनाज तेज। बाजार तेजी में। ता.७ को खग्रास चंद्र ग्रहण कुंभ पर शनि वस्तुयें तेज व चांदी की वस्तुये भी तेज। रविवारी ग्रहण अच्छी तेजी। १५ रविवारी सरसू तेज,रुई घटबढ़,अलसी मंदी। धान्य संग्रह से लाभ।

आश्विन कृष्ण पक्ष:- पांच सोम मंदी का मास,जनता में शांति। १४ दिन का पक्ष चांदी तेज,रुई,अनाज मंदे। ता.८ सितम्बर२०२५ को योगक्षय घी मंदा। ता.८ से १२ तक चंद्र वस्तुओं मे घटाबढ़ी व ता.१३ से १८ तक चंद्र वस्तुयें मंदी। ता.११ उफायां बुध हरी वस्तुयें बुध की वस्तुयें तेज। चांदी मंदी, रुई में घटाबढ़ी। ता.१३ उफायां रवि लाल वस्तुयें,मेवे,तेल तिलहन तेज। ता.१३,१४कन्या बु.+मं. से बुध की वस्तुयें तेज। ता.१४ से ३० तक तुले मंगल से बाजार तेज। तेल तिलहन, ऐरण्डी, मेवे,रंगीन वस्त्र तेज। ता.१४ को अष्टमी क्षय मंदी। ता.१५ को योगक्षय घी मंदा। ता.१७ कन्यायां ऽर्क बुधवारी मेवे लाल वस्तुयें,तेल तिलहन मंदे। ता.१७ सितम्बर से १ अक्टूम्बर तक कन्या सू.+बु.युति से बुध की वस्तुये तेज। ता.१९ हस्ते बुध हाथ निर्मित (हेण्डीक्राफ्ट) वस्तुयें अनाज मंदे। ता.१९ से २६ तक चंद्र की वस्तुये तेज। ता.२१ अमा.रविवारी अनाज संग्रह से लाभ।

आश्विन शुक्ल पक्ष:- १६ दिन का पक्ष चांदी मंदी,प्रजा बढ़े। ता.२३.९.२०२५ को चंद्रोदय मु.३० स्थिरता मंगलवारी से तेजी। कन्या चंद्रे पशुओं का नाश, ब्राह्मणों को पीड़ा,बुध की वस्तुयें तेज। ता.२४ पूफायां शुक्र गेहूँ ,कठोल,बाजरा मंदे। सौन्दर्य वस्तुयें तेज। स्वात्यां भौम चांदी में घटबढ़,सोना में थोड़ी मंदी। सफेद वस्तुयें तेज, लाल वस्तुयें मंदी। ता.२६ हस्ते रवि शनिवारी हेण्डीकाफ्ट वस्तुये, किराणा, दालें, बुध की वस्तुयें, सोना, मुद्रा, जवाहरात तेज। चित्रायां बुध चित्रान्न(कठोल) तेज। रुई चांदी मे घटबढ़। ता.२७ से ता.३ अक्टूम्बर तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.२८ को ६रवि ज्येष्ठा से सब धान्य से लाभ। रुई,घी,अनाज, चावल,रुई सूत तेज। ता.२९ को ७ सोमवारी तेजी। ता.१ अक्टूम्बर से ता.१७ तक तुले मं.+बु.युति गुरु से दृष्ट से मंगल,बुध की वस्तुयें लाल हरी वस्तुयें,मेवे मशालें, रेल्वे शेयर,सोना तेल तिलहन, किराणा, हल्दी, कॉफी, चाय में तेजी से मंदी। ता.२ को १० गुरुवारी घी तेज। ता.३ को बुधोदय प. से बुध की वस्तुये मंदी। भूकम्प। पंचक मंदी। ता.४ से ७ तक चंद्र की वस्तुये तेज। ता.४ स्वात्यां बुध रुई मे मंदी। ता.५ उफायां शुक्र धान्य तेज,चादी मे घटाबढ़ी। ता.६ अक्टूम्बर से पुनर्वसु कर्के गुरु ता.२१ दिसम्बर तक उच्च का गुरु होने से गुरु व चंद्र की वस्तुयें मंदी में रहे परन्तु उच्च का गुरु सोना आदि में ऊँचे भाव भी संभव है। लाईन देख कर चलें। कन्यायां शुक्र ता.१७ तक कन्या सू.+शु.युति में स्त्रियोचित वस्तुये,आभूषण आदि तेजी मे रहे।

कार्तिक कृष्ण पक्ष:- पांच मंगली मास १ क्षया तिथि रजस्वला मास मे उठापटक व तेजी रहेगी। १४ दिन का पक्ष चांदी तेज,रुई अनाज मंदे। ता.७.१०.२०२५ को १क्षय घी तेज। ता.८ से २बुध,६रवि,१०गुरुवारी घी अवश्य तेज। योगक्षय घी तेज। ता.११ को चित्रायां रवि को शनिवारी से चित्रान्न(कठोल),लाल वस्तुयें, रसकस,सोना चांदी,जवाहरात,मुद्रा,दवाईयां,चमड़ा,पत्थर तेज। ता.७ से १७ तक कन्या सू.+शु.की युति शुक्र नीचस्थ स्त्रियोचित वस्तयें,सौन्दर्य वस्तुयें, मशाले, मेवों में अच्छी मंदी संभव है। सूर्य युति तेजीप्रद है बाजार,देखकर चलें। ता.१२ को ६रविवारी अनाज,घी,रुई तेज,अफीम में घटाबढी। ता.८,९ चंद्र की वस्तुयें तेज आगे ता.१० से ता.१६ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.१४ विशाषा भौम लाल वस्तुयें,कपास रुई,गेहूं ,रंगीन कपड़ा तेज। विशाषा बुध ता.२८ तक तुले मं.+बु.(विशापा) पर होने से तेल तिलहन,ऐरण्डी,मेवे,रंगीन वस्त्र तेजी से मंदी व बुध वस्तुयें मंदी से तेज रहेगी। ता.१५ हस्ते शुक्र हस्त उद्योग (हेण्डीकाफ्ट) तेजी से मंदी में रहेगा। ता.१६ से २३ तक चंद्र की वस्तुये तेज ता.१७ तुलेऽर्क शुक्रवारी मंदी परन्तु ता.२५ तक तुले सू.+मं.+बु.युति से बुध की वस्तुयें तेज होगी। ता.२० दीपावली सोमवारी मंदी व शांतिप्रद। ता.२१ अमा. मंगलवारी अनाज संग्रह से लाभ। तेजी।

कार्तिक शुक्ल पक्ष:- ता.२२.१०.२५ को हेमन्त ऋतु प्रारंभ। कार्तिक व्यापारी

नववर्ष १ बुधवारी शुभ व चांदी,अफीम,अनाज,घी तेज। १ बुध ५ रविवारी से गेहूँ तेज,पूर्णिमा से तेजी। ता.२३ चंद्रोदय मु.४५ मंदी। गुरुवारी से अफीम,रुई कुछ तेज, घी शक्कर मंदे। तुले चंद व्यापारी सुखी। ता.२४ स्वात्यां रवि,शुक्रवारी से सफेद वस्तुयें,ऐरण्डी,मेवे,रंगीन वस्त्र,रसकस तेज। लाल वस्तुयें,जवाहरात,मूंगा,सोया,घास,चमडा,पत्थर मंदे। ता.२५ से २८ तक वृश्चिके बुध पर गुरु,शनि की दृष्टि से बुध की वस्तुओं में उछाल पटक ज्यादा,तेल तिलहन में मंदी। ता.२४ से ३० तक चंद्र की वस्तुयें तेजी से मंदी में रहेगी। ता.२६ चित्रायां शुक्र चित्रान्न (कठोल) सोना चांदी,सफेद वस्तुयें,स्त्रियोचित वस्तुयें मंदी। मेवे,तेल तिलहन तेज। ता.२७ को ६ सोमवारी गुड़,गेहूं ,लाल वस्तु तेज। ता.२८ अनुराधा बुध सोना,चांदी,रुई,सूत,सन मंदे। ता.२८ अक्टूम्बर से १६ नवंबर तक वृश्चिके मं.+बु युति से लाल वस्तुयें,रसकस,शस्त्र,केमीकल्स,चमड़ा,मूंगफली,अरण्ड,तेजाब,सुपारी,बिल्डिंग का सामान व बुध की वस्तुयें तेज। ता.२९ से वर्ष पर्यन्त भौमास्त प.तेज रहने से लाल वस्तुयें,मशाले,खनीज वस्तुयें,रेल्वे शेयर,सोना चावल,तेल तिलहन, अरण्ड, अलसी, मूंगफली,धातु ,शस्त्रास्त्र, मशीनरी, कॉफी, चाय, हल्दी, किराणा आदि में एक तरफा तेजी रहेगी। ता.२९ को ८ बुधवारी चांदी अनाज, तेज,अफीम में घटाबढ़ी। ता.३० से १ नवम्बर तक चंद्र की वस्तुयें तेजी। ता.३१ को १० शुक्रवारी रुई तेज। ता.१ से १६ तक तुले सू.+शु.युति से सफेद वस्तुयें, तेल,तिलहन,ऐरण्ड,मेवे,रंगीन वस्त्र,शक्कर शेयर,टैक्सआइल शेयर,सोना चांदी, सौन्दर्य वस्तुयें,स्टील,कांच तेज,लाल वस्तुयें मंदी। वक्री बुध से बुध की वस्तुयें तेज। ता.२ से ३ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.४ से ८ तक चंद्र की वस्तुये तेज। ता.२ अनुराधा भौम लाल वस्तुयें,गेहूं ,मशाले तेज। ता.४ वक्री विशाखा बुध ता.२४ तक ता.५ से २१ नवंबर तक बुधास्त प.से बुध की वस्तुयें अच्छी तेज। ता.५ को १५ बुधवारी अनाज तेज,रुई मंदी। शतभिषा ४ कुंभे राहु से काली वस्तुयें, प्याज लसण,सीसा,लोहा तेज।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष:- पाच गुरु का मास मंदी। ता.६.११.२०२५ को विशाखा रवि गुरुवारी लाल वस्तुयें,रसकस,तेल तिलहन मंदे। स्वात्यां शुक्र अनाज मंदे। ता.७ को २ शुक्रवारी चांदी मंदी। ता.८ को १२ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.१२ नवम्बर से ता.१४ मार्च २०२६ तक गुरु वक्री से गुरु की सब वस्तुयें व ता.२१ दिसम्बर तक चंद्र की सब वस्तुयें आगे बुध की सब वस्तुयें एक तरफा तेज रहेगी। कुछ दिनों में मार्केट देखकर चलें। ता.१२ से २१ नवम्बर तक बुध,गुरु, शनि तीनों वक्र तीनों की वस्तुयें में एक तरफा तेजी रहेगी। ता.१५ को ११ शनिवारी कपास,सूत खरीदें वैशाख में लाभ होवे। ता.१६ वृश्चिके ऽर्क रविवारी लाल वस्तुयें तेज। ता.१३ से २२ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.१६ से २५ तक वृश्चिके सू.+मं.+बु.से बुध की सब वस्तुयें व मेवे,रसकस,तेल तिलहन,किराणा, मकान निर्माण सामग्री ,शस्त्रास्त्र,केमीकल्स,सुपारी आदि तेज। ता.१६ विशाखा शुक्र धान्य,रुई मंदी,तुष धान्य तेज। ता.१९ अनुराधा रवि गेहूं जौ चणा आदि अनाज तेज। ता.२० ज्येष्ठायां भौम चांदी मंदी,रुई में घटाबढ़ी। अमा.गुरुवारी चांदी रुई अनाज मंदे।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष:- १४ दिन का पक्ष रुई चांदी,अनाज,घी तेज। प्रजा बढ़े। ता.२१.११.२०२५ को १ शुक्रवारी रुई तेज। बुधोदय पू.मंदी। मार्गी शनि विपरीत बाजार(तेजी से मंदी)। चंद्रोदय मु.१५ तेजी। वृश्चिक चंद्रे। रुई में घटाबढ़ी से तेजी। ता.२२ को २ शनिवारी रुई तेज। ता.२२ से २६ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.२४ मार्गी बुध विपरीत बाजार। ता.२५ वृश्चिके शुक्र जो ता.९ दिसंबर तक वृश्चिके सू.+मं.+बु.+शु.यति में सफेद वस्तुयें, सौन्दर्य वस्तुयें, शक्कर टेक्सटाईल शेयर कठोल रुई चांदी, जूट, ऐरण्डी, कांच, सफेद कपड़ा, स्टील तेज। ता.२६ को ६ बुधवारी अनाज १ मास तेज। ता.२७ से २९ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.२७ अनुराधा शुक्र रसकस चावल,नमक मंदे। योगक्षय घी मंदा। पंचक गुरुवारी मंदी। ता.२७ से २९ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.३० को १० रविवारी रुई ,घी,अनाज तेज। ता.१ दिसम्बर अनुराधा बुध एरण्ड,बिनौला तेज,सोना चांदी रुई सूत सन मंदे। ता.२९ से ता.१ दिसम्बर तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.३ ज्येष्ठा रवि बुधवारी से लाल वस्तुयें,कठोल रसकस, हींग, ऐरण्ड, गुग्गल मंदे। ता.१ से ५ तक वचंद्र की वस्तुयें तेज। १४ क्षया मूंग,घी तेज। ता.४ को १५ गुरुवारी मंदी।

पौष कृष्ण पक्ष:- पांच शुक्र का महिना मंदी। ता.५ दिसम्बर २०२५ को १ शुक्रवारी अन्न मंदे। १ रोहिणी से धान्य संग्रह से ७ वें मास में लाभ। ता.६ से ९ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.९ मूले धने भौम ता.१५ तक किराणा,सभी धातु , हल्दी,रबड़ प्लास्टिक व पीली वस्तुयें तेज। ता.१० से १२ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। आगे ता.१७ तक चंद्र की वस्तुये मंदी। ता.१५ दिसम्बर से ता.१ फरवरी २०२६ तक शुक्रास्त पू.से सफेद वस्तुयें,सौन्दर्य वस्तुयें,सफेद कपड़ा,स्टील,कांच रुई चांदी, शक्कर व टेक्सटाईल शेयर, ऐरण्डी तेज। ता.१६ मूले धने ऽर्क मंगलवारी से लाल वस्तुयें,मशाले मेवे रसकस,तेल,मसूर,लाल वस्त्र तेज। ता.१७

से २१ तक चंद्र की वस्तुये तेज। ता.१६ से १९ तक वृश्चिके चं.+बु.+शु.युति गुरु दृष्ट से बुध,शुक्र,चंद्र की वस्तुये घटाबढ़ी से मंदी। बाजार देखकर चलें। ता.१८ से २७ तक धनु सू.+मं.+शु.युति से लाल वस्तुये मंदी व सफेदवस्तुये, सफेद कपड़ा,सौन्दर्य वस्तुये शेयर,रसकस, रुई चांदी,स्टील तेज। ता.१७ ज्येष्ठा बुध गुड़,ईख,खांड,घी,चावल तेज। ता.१८ मूले धने शुक्र कंदमूल फल,औषधी,चंदन, सोना चांदी,तांबा तेज। ता.१९ अमा.शुक्रवारी मंदी। अमा.ज्येष्ठा अन्न,तृण तेज।

पौष शुक्ल पक्ष:- ता.२०.१२.२०२५ को १ शनिवारी रुई अनाज तेज। ता.२१ चंद्रोदय मु.३० स्थिरता धनु चंद्रे रुई में घटाबढ़ी से मंदी। ता.२१ वक्री पुन.३ मिथुने गुरु से गुरु की व मिथुन राशि की वस्तुयें तेज। ता.२२ से २४ चंद्र चंद्र की वस्तुये मंदी। ता.२४ बुधास्त पू.बुध की वस्तुयेंव सप्त धातु तेज। ता.२५,२६ चंद्र की वस्तुये तेज। आगे ता.२७ से ६तक चंद्र की वस्तुये घटाबढ़ी से मंदी। ता.२६ पूषायां भौम लाल वस्तुयें सोना चांदी,चावल,घी,मूगफली,उड़द तेज,धान्य मंदे। ६ शुक्रवारी सब वस्तु १ मास तेज। ता.२७ को शनि पंचक व्यतिपात शेयर एकदम तेज। ता.२७ दिसम्बर से १४ जनवरी २०२६ तक धने सू.+मं.+बु.+शु.युति गुरु दृष्ट से कंद मूल किराणा,सप्तधातु,स्टील,हल्दी,प्लास्टिक,रबड़ तेजी से मंदी। ८ क्षया मूंग घी तेज। ता.२९ पूषायां रवि सोमवारी से सर्दी बढ़े। तेल तिलहन रसकस,हल्दी,मेवे,गुग्गल,चांदी,कपूर,ऊनी वस्त्र,सन तेज। ता.३१ दिसम्बर से ८ फरवरी २०२६ तक सर्दी का चालीसा,सर्दी पड़े। पूषायां शुक्र कठोल मंदे। ता.३ को १५ शनिवारी शेयर,अनाज तेज,रुई मंदी।

माघ कृष्ण पक्ष:- पांच रवि का मास तेजी कारक है। ता.४ जनवरी २०२६ को पूषायां बुध धान्य,सोना चांदी मंदे,तेल तेज। रोग उपद्रव ज्यादा। रवि+वैधृत से रुई अवश्य मंदी। ता.६ से ८ तक चंद्र वस्तुयें तेज। ता.७ शत्त.३ कुंभे राहु पूफा१ सिंहे केतु से चणा,कठोल में लाभ। ता.८ पूभा.३शनि धान्य तेल,तिलहन, कठोल,मेवे,मशाले तेज। ता.९ से १५ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.९ उषायां शुक्र सफेद वस्तुयें,सौन्दर्य वस्तुयें,अनाज तेज। रसकस सोना मंदा। ता.११ उषायां रवि रविवारी से लाल वस्तुयें,तुष धान्य,रसकस तेज। मकरे शुक्र सफेद व सौन्दर्य वस्तुयें,शक्कर टेक्सटाईल शेयर,मशाले,रुई चांदी,सोना ऐरण्ड,मेवे मंदी। ता.१२ उषायां बुध हरी वस्तुयें,बुध की वस्तुयें मंदी। ता.१३,१४ को मकरे बु.+शु. से मंदी का झटका। ता.१३ उषायां भौम ता.१८ तक मंगल,बुध,शुक्र तीनों उषा पर होने से बाजार में भारी घटाबढ़ी रहे। ता.१४ से १७ तक मकरे सू.+बु.+शु.युति से हरी व सफेद वस्तुयें तेजी,लाल वस्तुयें मंदी रहे। ता.१६ से ता.२२ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.१७ जनवरी से १ फरवरी तक मकरे सू.+मं.+बु.+शु. से लाल वस्तुये मिर्च मशाले मंदे,सफेद वस्तुयें तेज। ता.१८ वक्री पुन.२गुरु रुई में अचानक मंदी,अनाज तेज। अमा.रविवारी अनाज संग्रह से लाभ। ता.१८ से ३० जनवरी तक अंगारक योग बाजार में भारी तेजी आग लगे।

माघ शुक्ल पक्ष:- १४ दिन का पक्ष रुई चांदी अनाज घी तेज। ता.१९.१.२०२६ को श्रवणे बुध+श्रवणे शुक्र ता.२४ तक सफेद,हरीवस्तुयें,सफेद कपड़ा,सौन्दय वस्तुयें आभूषण,सोना चांदी में मंदी का झटका व ता.२३ से २ फरवरी तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.२७ तक श्रावण पर सूर्य,बुध,शुक्र होने से लाल वस्तुयें मंदी व सफेद हरी वस्तुये तेज। ता.२४ बुधोदय प.हरी वस्तुयें,पिस्ता मेवा कठोल में मंदी। ता.२५ को ७ रवि+ रेवती व रुई में अच्छी तेजी। ता.२७ धनेष्टा बुध सोना, चांदी,मेवे मंदे,रुई में घटाबढ़ी। ता.३० श्रवणे भौम धान्य मंदे,सोना चांदी आदि धातु तेज। धनेष्टा शुक्र गेहूं मंदे,सोना चांदी,रुई कपास,कठोल ज्वार बाजरा तेज। १३क्षय रुई मंदी,घी तेज। ता.१ फरवरी शुक्रोदय प.सफेद वस्तुयें,सौन्दर्य वस्तुयें,आभूषण,शक्कर,टेक्सटाईल शेयर,स्टील आदि में विपरीत बाजार तेजी से मंदी। १५ रविवारी रुई घटाबढ़,अलसी मंदी,सरसू तेज। ता.१ से ४ फरवरी तक कुंभे बु.+श.+रा.से हरी वस्तुयें,मेवे तेज। काली वस्तुयें,प्याज लसण मंदे।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष:- पांच सोम का मास मंदी। १६ दिन का पक्ष रुई गेहूं तेज,चांदी मंदी। ता.३ से ४ फरवरी २०२६ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.२४ कुंभे शुक्र ता.१२ फरवरी तक कुंभे बु.+शु.+श.+रा.युति से काली वस्तुयें मंदी, हरी सफेद वस्तुयें,सौंदर्य आभूषण,मेवे मशाले शेयर तेज। ता.५ से १४ तक चंद्र की वस्तुये मंदी। ता.६ धनेष्टा रवि लाल वस्तुयें,मशाले मेवे मंदे। ता.९ शत्तभिषा शुक्र सफेद वस्तुये रसकस,रुई,कपास,सोना चांदी,आभूषण तेज। ता.१० को ८ वृद्धि तेजी। ता.१२,१३ तक कुंभे सू.+बु.+शु.+श.+रा. व ता.१७ फरवरी सू.+बु.+शु.+रा.युति से बाजार में उठा पटक तेजी। ता.१३ फरवरी से वर्ष पर्यन्त मीने शनि से मीन राशि की सब वस्तुये तेज परन्तु कुछ शनि की वस्तुओं में ६ मास तक मंदी का वातावरण रहता है। बाजार देख कर चलें। ता.१५ रविवारी+व्यतिपात रुई अवश्य मंदी। ता.१५ से २१ तक चंद्र की वस्तुये तेज। ता.१६ धनेष्टा भौम रसकस सप्तधातु तेज। ता.१७ पंचक मंगली प्रत्येक

वस्तु तेज। अमा.मंगली अनाज संग्रह से लाभ,१ मास मे गेहू तेज।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष:- १४ दिन का पक्ष रुई चांदी अनाज,घी तेज,प्रजा बढे। ता.१८ फरवरी २०२६ को चंद्रोदय पृ.४५ मंदी। शतभिषा पर अन्न तेज। १ बुधवारी चांदी,अफीम,अनाज,घी तेज। ता.१८ शतभिषा रवि को गुरुवारी से लालवस्तुये मंदी,मेवे रसकस,मशाले तेज। ता.२० पूभाया शुक्र रुई तेज,धान्य मंदी। ता.२१ वक्री पुनःगुरु रुई मे अचानक मंदी। कुंभे सू.+बु.+शु.+रा.युति ता.२० से २५ तक आगे ता.२८ फरवरी तक कुंभे सू.+म.+बु.+शु.+रा.युति से बाजार तेज। ता.२२ से १ मार्च तक चंद्र की वस्तुये मंदी। ता.२३ वक्रीबुध रसकस तेज,अन्न मंदा। ७क्षय बाजार तेज। ता.२५ कुंभे भौम सोना रसकस तेज। रुई चांदी मे घटाबढी। ता.२७ बुधास्त प.हरी वस्तुये मेवा,मशाले,तेज,रुई मंदी। ता.२८ मीने शुक्र तेल तिलहन,रसकस मंदे। रुई चांदी,सफेद वस्त्र,आभूषण तेज। ता.२ से ६ मार्च तक चंद्र की वस्तुये तेज। ता.३ खग्रास चंद्र ग्रहण मंगलवारी लाल वस्तुयें, सफेद वस्तुये तेज। उभायां शुक्र मूल फलफूल तेज। शनि अस्त प.होने से मीन राशि की सभी वस्तुयें तेज। सुगंधित पदार्थ,चंदन केसर तेज।

चैत्र कृष्ण पक्ष:- पांच बुध का मास तेजी। ता.४ मार्च २०२६ को १ बुधवारी अफीम चांदी मे घटाबढी। पूभाया रवि रुई,सूत,सोना,चांदी,रसकस,कटोल,रेशम गुग्गल तेज। ता.५ शतभिषा भौम लाल काली वस्तुये तेज। धान्य मंदे। ता.७ वक्री शतभिषा ३ बुध हरी वस्तुये,तेज। सोना चांदी,गेहू मंदे। ता.७ से १६ तक चंद्र की वस्तुये मंदी। ता.८ योग वृद्धि घी तेज। ता.१० शन.२ कुंभे राहु मघा ४ सिंहे केतु चणा,छीला,गेहू,गुड,जौ मे लाभ। ता.१३ रेवत्यां शुक्र रुई,कपास,चांदी,चावल,रसकस मंदी। ता.१४ मीनार्क शनिवारी लाल वस्तुये,सोना चांदी,रसकस,कपास,शक्कर तेज। मार्गी गुरु मंदी। उभा.१शनि सुगंधित वस्तुये,धान्य केसर,चंदन,चांदी तेज। ता.१५ बुधोदय पू.मंदी। ता.१४ से वर्ष पर्यन्त मीने सू.+शु.+श.युति व १६ से १८तक कुंभे च.+म.+बु.+रा.युति से लाल वस्तुओं मे मंदी,सफेद,हरी,वस्त्राभूषण मे तेजी। ता.१६ पंचक सोमवारी मंदी। १२ वृद्धि घी रुई मंदी। योगक्षय घी तेज। १४ क्षया रुई घी तेज। ता.१६ से २० तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.१८ उभाया रवि रुई सोना चांदी रुई रसकस गेहू तेज। मार्गी बुध सरसों,सोंठ,लाट व चमड़ा मशाले मंदे। आठ दिन घटबढ़ से गेहूं तेज। अमा.बुधवारी चांदी,रुई ,अनाज मंदे।

□□□

दृष्टि दोष नाश मंत्राः

(इस मंत्र से बालक को झाड़ फूंक करनें पर निजर(दृष्टि दोष)ठीक हो जाती है।)

ॐ अंजनी गर्भ संभूतं कुमारं ब्रह्मचारिणम्।
दृष्टि दोष विनाशाय हनुमन्तं स्मराम्यहम्।।1।।
अन्नं ब्रह्मा रसो विष्णु भोक्ता देवो महेश्वरः।
इति संचिन्त्य भुंजानं दृष्टि दोषो न बाधते।।2।।

गर्भरक्षा यंत्र

४	२	१
२	३	२
१	२	४

इस यंत्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर गर्भिणी स्त्री की कटि में बांधनें से गर्भ की रक्षा होती है।

४	२	२
२	४	२
२	२	४

यदि गर्भिणी को दु:स्वप्न दिखे,रात को डरे, चौंके, तो इस यंत्र को लाल चंदन से कोरे वस्त्र पर लिख कर उस गर्भिणी को दिखा कर जलानें से गर्भ सुरक्षित रहता है व भय दूर हो जाता है।

इक्कीसा यंत्र-

४	५	५	७
८	४	८	१
६	३	६	६
३	६	२	७

यह यंत्र अनुभव से प्रमाणित है इस यंत्र को यदि कोई गंगाजल से भोजपत्र पर लिख कर किसी गर्भवती स्त्री को 21 दिन तक धोकर पानी का पान करावे तो उसको प्रसव के समय वेदना नहीं होती है और प्रसव बिना किसी पीड़ा के हो जाता है।

वार्षिक राशि भविष्य संवत् २०८२
(सन् 2025-2026 ई.)

विशेष:- स्त्री,पुरुष,देश ग्राम वस्तु चर अचर की राशि का भविष्य भी निम्न अनुसार प्रभावी होगा।

मेष:- चू चे चो ला ली लू ले लो अ(ल =लृ,अ=अं,आ)

इस वर्ष में आपका भाग्येश गुरु वृष,मिथुन,कर्क तीन राशि पर चलेगा। वर्ष प्रवेश से ता.६.५.२०२५ई. तक **वृष पर गुरु** दूसरे भाग्य में आर्थिक लाभ व आकस्मिक लाभ देगा। आगे **मिथुने गुरु** ता.७.१०.२०२५ई. तक तीसरे पराक्रम वृद्धि,भाग्योदय,संतान सुख,स्त्री सुख,प्रदेश से आर्थिक लाभ देगा। आगे **कर्क गुरु उच्चस्थ** अतिचारी होकर ता.२१.१२.२०२५तक चौथा चलेगा जो भूमि माकान, वाहन सम्पत्ति सुख,भाग्य में उच्चस्थिति,आकस्मिक लाभ के संयोग देगा। आगे पुनः गुरु **मिथुन राशि** पर तीसरे शेष पूरे वर्ष चलेगा जो परीश्रम से भाग्योदय,भाई सुख, स्त्री सुख,शुभकार्यों में खर्च,संतान चिंता दूर होगी। वस्तुतः गुरु इस वर्ष तीन बार भाग्य को प्रभावित करेगा,शुभकार्य होते रहेंगे। भाग्योदय वर्ष है। इस वर्ष में राज्येश लाभेश शनि भी कुंभ,मीन दो राशियों पर चलेगा। वर्ष प्रवेश से आपके **११ वें कुंभे** शनि ता.८.६.२०२५ई. तक व ता.६.८.२५ से १३.२.२६तक होने से राजकीय व व्यावसायिक लाभ सर्वारिष्ट नाशक रहेगा। आगे आपके १२वें मीने शनि ता.८.६.२५ से ६.८.२६ से **शेष पूरे वर्ष साढ़े साती पनोती** की झलक दिखायेगा। लोह का पाया,सियार वाहन पर होने से खर्च की अधिकता,देश विदेश में यात्रा प्रवास,शुभकार्यों में खर्च, प्रदेश से आर्थिक लाभ, शत्रुनाशक,भाग्य में परीश्रम से सफलता देगा। आर्थिक धोखा, विश्वास में धोखे से सावधान रहें। ता.१३.२.२६ से शनि साढ़े साती में विशेष प्रभावी होगी।

इस वर्ष में राहु भी मीन,कुंभ व केतु भी कन्या,सिंह राशियों पर चलेगा। वर्ष प्रवेश से आपके १२वां राहु व ६ठां केतु ता.३०.४.२५तक होने से खर्च की अधिकता,आर्थिक धोखा,शोक संवेदना,अस्थिरता,स्थान परिवर्तन,स्वास्थ्य चिंता, उदर पीड़ा,रियेक्शन होगा। आगे आपके ११वें राहु व ५वें केतु शेष पूरे वर्ष तक चलेंगे। राहु सर्वारिष्ट नाशक व केतु राजयोगद प्रभावी रहेगा। गत नुक्सान,खर्च की वापिस भरपाई कर देगें।

निष्कर्षतः- इस पूरे वर्ष में आकस्मिक लाभ,भाग्योदय,सफलता,सम्पन्नता, स्त्री संतान सुख के साथ उपलब्धि देगा। ग्रहों की अनुकूलता के लिये रुद्राभिषेक, प्रदोषव्रत, सर्पशांति, ग्रहशांति यज्ञ, हनुमान उपासना, गायों को घास व धार्मिक शुभकार्यों में खर्च करनें से रुके कार्य बनेंगे। दूर्वा,कुशा,समी (खेजड़ी)समिधा यज्ञ से प्रगति बनें,रुके कार्य बने। मूंगा,मोती,पुखराज रत्न धारण से लाभ होगा। नीलम,गोमेद,लहसुनियां भूल करके भी नहीं पहनें। अंक १,५,९ एवं लाल पीली गुलाबी वस्तुओं में लाभ बनेगा।

वृषभ:-ई उ ए ओ वा वी वू वे वो(व = ब)

इस वर्ष प्रवेश से आपकी **वृषभ राशि पर गुरु** ता.६.५.२०२५ तक होने से आर्थिक लाभ,मनोबल वृद्धि,धार्मिक शुभकार्य,स्त्री संतान सुख,आकस्मिक लाभ बनेगा। पहला गुरु भाग्य में अवरोध व चिंता भी देगा। आगे आपके २रें **मिथुने गुरु** ता.७.१०.२५ तक आकस्मिक धन लाभ,रुकेकार्य बनेंगे। रुका हुआ धन आयेगा। राजकीय चिंता भी रहेगी। आगे ३रें **कर्क का उच्च गुरु** ता.२१.१२.२०२५तक उच्च पराक्रम वृद्धि देगा। स्त्री संतान सुख,आर्थिक लाभ,भाई सुखद,विजय कारक होगा। आगे पुनः २रें मिथुने गुरु अतिचारी होकर आयेगा। शेष पूरे वर्ष में बाकी रही आर्थिक लाभ व उपलब्धी को देगा। उटा पटक में भी लाभ सफलता मिलेगी। वर्ष प्रवेश से १०वें **कुंभे शनि** ता.८.६.२०२५ तक राजयोगद,आर्थिक लाभ,व्यवसाय में प्रगति प्रद रहेगा। आगे ११वें **मीने शनि** ता.६.८.२०२५ तक भाग्य में आर्थिकलाभ,आकस्मिक लाभ, मनोबल वृद्धि,संतान सुख व सर्वारिष्ट नाशक रहेगा। आगे पुनः१०वें **कुंभे शनि** १३.२.२०२६ तक राजकीय,व्यावसायिक लाभ देगा। पारीवारिक संघर्ष,कलह, चिंता, पैर में चोट,खर्च की अधिकता रहेगी। आगे पुनः **मीने शनि** वर्ष भर ११वें

सर्वारिष्ट नाशक व आर्थिक लाभ की उपलब्धियों को पूरा करेगा। भाग्योदय होगा। आपके वर्ष प्रवेश से ता.३०.४.२५ तक **मीने राहु ११वें व सिंहे केतु** ६ठें होने से सर्वारिष्ट नाशक,लाभ, प्रगति देंगे। आगे वक्रगामी राहु पूरे वर्ष १०वें कुंभ पर व केतु चौथे सिंह पर चलेंगे जो प्रबल राजयोगद व्यावसायिक सम्पन्नता,नये कार्यों को सफल बनायेंगे।

निष्कर्षतः- इस वर्ष मे गुरु,शनि,राहु विशेष सफलता,लाभ उपलब्धिप्रद है तथापि ग्रहों की प्रसन्नता हेतु रुद्राभिषेक, शिव उपासना, सर्पशांति, सुन्दरकांड पाठ, प्रदोष व्रत, ग्रहशांति, दुर्गायज्ञ से विजय लाभ सफलता प्रगति मिलेगी। मंदिर पर ध्वज चढ़ाना,दुर्वायज्ञ,मयूर मछलियों,चीलों व कुत्तों को भोजन देनें से राहु केतु आदि अपग्रह शांत होंगे। गायों को घास अपंग, अपाहिजों को भोजन देनें से शुभ रहेगा। हीरा पन्ना नीलम रत्न धारण से लाभ होगा। अंक २,६,११ व सफेद,हरी,पीली,काली वस्तुओं से लाभ बनेंगा। स्त्रियोचित वस्तुयें व सौन्दर्य प्रसाधन के व्यवसाय में लाभ होगा। घी,मक्खन, दूध,छाछ आदि से लाभ बनेगा।

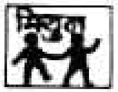

मिथुनः-का की कू घ ड छ के को ह(क=कं,का,ह=हं,हा)

आपको वर्ष प्रवेश से आपके १२वें **वृषभ गुरु** पर ता.६.५.२०२५ तक शुभकार्यों में खर्च,यात्रा प्रवास,आर्थिक धोखाप्रद है। आगे **मिथुने गुरु** ता.७.१०.२५ तक मनोबल वृद्धि,स्त्री संतान सुख,राजकीय व्यावसायिक लाभ देगा। आगे अतिचारी ता.२१.१२.२०२५ तक कर्के गुरु २रें उच्चधन लाभ,राजकीय प्रगति,व्यावसायिक सम्पन्नता, शत्रुनाश,विजय देगा, गुप्तपीड़ा,गुप्त धोखे से सावधान रहें। आगे पुनः मिथुने गुरु आपकी राशि पर पूरे वर्ष मनोबल वृद्धि के साथ शेष कार्य पूरे होंगे। खुशियां मिलेगी।

वर्ष प्रवेश से ९वें **स्व कुंभे शनि** ता.८.६.२०२५ तक भाग्योदयप्रद है। आगे १०वें मीन शनि ता.६.८.२०२५ तक स्थान वृद्धिप्रद राजकीय,व्यावसायिक समृद्धि, सफलता,लाभप्रद है। यात्रा प्रवास,भूमि मकान वाहन,स्त्री सुखद है। आगे पुनः **कुंभे शनि** १३.२.२६ तक भाग्य में आकस्मिक लाभ,गुप्तलाभ व भाग्योदय के शेष कार्य पूरे करेगा। तथापि भ्रातृ कष्ट,आर्थिक धोखा,उदरपीड़ा व शत्रु पैदा होंगे व स्वतः नष्ट होंगे। आगे पुनः मीने शनि १०वें शेष पूरे वर्ष चलेगा जो स्थान वृद्धि करो शनि के अनुसार राजयोगद,व्यावसायिक सफलता,भूमि मकान वाहन सम्पत्ति सुख विदेश यात्रा शत्रु नाशक होगा। वर्ष प्रवेश से आपको १०वें मीन राहु व चौथे कन्या केतु ता.३०.४.२०२५ तक होने से राजयोगद,व्यावसाय में वृद्धि,सम्पत्ति भूमि मकान वाहन सुखद रहेंगे। आगे ९वें कुंभे राहु व ३रें सिंहे केतु पूरे वर्ष तक भाग्योदय,पराक्रम वृद्धि, सर्वारिष्ट नाशक व सफलता देगें।

निष्कर्षतः यह वर्ष सफलता,भाग्योदय,पराक्रम वृद्धि देगा। मनोबल बढ़ेगा। तथापि ग्रहों की अनुकूलता हेतु शिवउपासना, रुद्राभिशेष ,सर्पशांति, दुर्गायज्ञ, त्रिपुरापूजा, सुन्दर काण्ड पाठ, मंदिर पर ध्वजा चढ़ना,दुर्वा कुशा समी(खेजड़ी) समिधाओं के यज्ञ से रुके कार्य बनेंगे। मयूर, मछलियां, चीलों,कुत्तों,कीड़ी मकोड़ी, गायों को भोजन देनें से **"धर्मेण हन्यते व्याधिः"** कष्ट दूर होंगे। अपंग अपाहिजों व ब्राह्मणों को भोजन देनें से रुके कार्य बनेंगे। सफेद,हरी,नीली रंग की वस्तुओं में लाभ होगा। विलासिता की वस्तुयें,सौन्दर्य वस्तुयें,सौन्दर्य प्रसाधन,स्त्रियोचित वस्तुओं के व्यवसाय में लाभ बनेगा। अंक ३,७,११ आपके लिये शुभ है। पन्ना,हीरा रत्न धारण से मनोबल बढ़ेगा। नीलम रत्न परीक्षण के बाद लाभ हो तो धारण करे, भाग्योदय बनें।

कर्कः- ही हु हे हो डा डी डू डे डो

आपके वर्ष प्रवेश से **कुंभे स्व.शनि ८वें ता.८.६.२०२५** तक व आगे ता. ६.८.२०२५ से ता.१३.२.२०२६ तक यह **ढैय्या शनि पनोती लोह का पाया,वृषभ वाहन पर चलेगी** धन कमाने की अति लालचा,भोग विलासिता में अति खर्च,भ्रष्टाचार में फंसना,आर्थिक धोखा देगी। सीधे रास्ते व न्याय पर चलने वालों को शनि ऊँचे शिखर पर चढ़ायेगा। अतःअनीति से बचे नीति पर चले। इस पनोती में भी ९वें मीने शनि ता.६.८.२०२५ तक व ता.१३.२.२०२६ से शेष पूरे वर्ष,ढैय्या पनौती उतरने से भाग्योदय,भाग्य में वृद्धि,पराक्रम वृद्धि,आर्थिक लाभ में **"स्थान वृद्धि करो शनि"** का प्रभाव दिखेगा। वर्ष प्रवेश से ११वें वृषे गुरु ता.६.५.२०२५ तक भाग्य में

आर्थिक लाभ,संतान सुखद,पराक्रम वृद्धि देगा। स्त्री चिंता रहेगी। आगे १२वें **मिथुने गुरु** ता.७.१०.२०२५ई तक शुभकार्यों में खर्च,यात्रा प्रवास,शत्रुनाश,विजयप्रद,गुप्त चिंता पीड़ा देगा। आगे आपकी राशि पर उच्चे कर्क गुरु ता.२१.१२.२०२५ तक उच्च मनोबल उच्च भाग्योदय,संतान की प्रगति,संतान सुखद,स्त्री चिंताप्रद रहेगा। आगे पुनः **१२वें मिथुने गुरु** पूरे वर्ष चलेगा। खर्च की अधिकता,सम्पत्ति चिंता,गुह्यपीड़ा तथापि विजयप्रद रहेगा। वर्ष प्रवेश से आपके ९वें मीने राहु व ३रें **कन्या केतु** ता.३०.४.२०२५ तक होने से भाग्य में प्रगति,पराक्रम वृद्धि, सर्वारिष्ट नाशक होगा। आगे ८वें **कुंभे राहु** व **२रें सिंहे केतु** पूरे वर्ष चलेगा जिससे गुप्तलाभ,गुप्त भेद से आर्थिक धोखा,राजकीय धरपकड़ बने।

निष्कर्षतः वर्ष उठापटक के साथ लाभहानि,यश अपयश,उतार चढ़ाव का है । आप शिवउपासना, सर्पशांति,ग्रहशांति यज्ञ,दुर्गायज्ञ, सुन्दर काण्ड पाठ, गोपाल सहस्त्रनाम व विष्णुसहस्त्रनाम पाठ,मंदिर पर ध्वज चढ़ानें से शुभ रहेगा। कीड़ी मकोड़ी,चीलों कुत्तों, गायों,अपंग अपाहिजों व मयूर,मछलियों को भोजन देनें से विजय लाभ सफलतायें मिलेगी। दूर्वा,कुशा के हवन से राहु केतु की शांति होगी।मोती, माणक, पुखराज रत्नधारण से मनोबल बढ़ेगा। अंक४,८,१२,१,२में लाभ व सफेद,पीली, लाल, गुलाबी रंग की वस्तुओं में व पानी, समुद्रीय वस्तुयें,सौन्दर्य प्रसाधनों से लाभ बनेंगा।

सिंहः- मा मी मु मे मो टा टी टू टे (म = मं,मा)

वर्ष प्रवेश से **वृषे गुरु** १०वें ता.६.५.२०२५तक विद्या बुद्धि से राजयोग, व्यवसाय में आकस्मिक लाभ,राजकीय प्रगति,भूमि मकान वाहन सुख,उदरपीड़ा,गुप्त शत्रुप्रद रहेगा। आगे ११वें मिथुने गुरु ता.७.१०.२५ई. तक स्त्री संतान सुख,आकस्मिक लाभ,पराक्रम वृद्धि देगा। आगे ता.२१.१२.२५ तक १२वें कर्के उच्च गुरु **शुभकार्यों** में अच्छा खर्च,उच्च यात्रा प्रवास,उच्च आकस्मिक लाभ,भूमि मकान वाहन **सुखद है।** परन्तु उदर पीड़ा,विश्वास से धोखा,मित्रशत्रु से धोखा बनेगा। आगे पुनः **११वें मिथुने** गुरु पूरे वर्ष लाभप्रद,संतान सुख प्रगति पराक्रम वृद्धि देगा। स्त्री चिंता, किसी स्त्री से धोखा बदनामी से सावधान रहे। वर्ष प्रवेश से ७वें कुंभ स्व शनि ता.८.६.२०२५ तक स्त्री सुख,गुप्तलाभ,स्वास्थ्य चिंता,पैर में चोट,सम्पत्ति विवाद, भाग्य में धोखा बनता है। आगे ६.८.२५ तक ८वें **मीने शनि ढैय्या पनोती लोह पाया वृषभ वाहन** पर शत्रु वर्धक,गुप्त पीड़ा,पारीवारिक संघर्षप्रद परन्तु गुप्तलाभ,राजकीय लाभ,व्यावसाय में लाभ देगी। पनोती के झटके से भी सावधान रहें। आगे पुनः ७वें कुंभे शनि ता.१३.२.२६ तक स्त्री सुखद है पर घातपात, धोखे से सावधान रहें। आगे मीने शनि ढैय्या पनोती पूरे वर्ष चलेगी। **स्थान वृद्धि करो शनि** का प्रभाव न्याय पर चलने वालों को आकस्मिक लाभ,राजकीय प्रगति, व्यवसाय अच्छा चलेगा। तथापि शनि पनोती शुभ अशुभ फल देगी।आपकी राशि पर ८वें **मीने राहु** व **२रें कन्या केतु** ता.३०.४.२५ तक होने से स्वास्थ्य चिंता,ऐलर्जी, विषमय,आर्थिक धोखा, मार्केश के समान प्रभावी रहेंगे। आगे शेष पूरे वर्ष में ७वें **कुंभे राहु व पहला सिंह केतु** होने से प्रगति लाभ,विजय,शोक संवेदना,गुप्त पीड़ा,स्वभाव में तेजी उग्रता,अस्थिरता रहेगी।

निष्कर्षतः स्वास्थ्य चिंता, गुप्तपीड़ा, गुप्तधोखा, संघर्षप्रद है अतः **धर्मेण हन्यते ग्रहाः** ग्रहों को शांत करने के लिये शिव उपासना, रुद्रयज्ञ, रुद्राभिशेष , हनुमान जी पर तेल सिंदूर चढ़ाना, सुन्दर काण्ड पाठ, सूर्योपासना, दुर्गायज्ञ, से मनोनुकूल कार्य बनेंगे। कीड़ी मकोड़ी,चीलों गायों मछलियों कुत्तों,को भोजन देने से रुके कार्य बनेंगे। लाल पीली,गुलाबी वस्तुओं में लाभ बनें। अंक ५,६,१,२,३, ८में शुभ है। मांणक,मोती, पुखराज रत्न धारण से लाभ बनेगा।

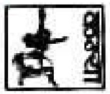

कन्याः- टो पा पी पू ष ण ठ पे पो(प = पं,पा)

इस वर्ष प्रवेश में ९वें वृषे गुरु ता.६.५.२५ तक स्त्री संतान सुख,भूमि मकान सम्पत्ति सुख,धार्मिक शुभ मनोबल वृद्धिः,संतान चिंताप्रद समय रहेगा। आगे **१०वें मिथुने गुरु** ता.७.१०.२५ तक होने से राजयोग,व्यापार लाभ,सम्पत्ति सुख,स्त्री संतान सुख,भाग्य में आकस्मिक लाभ होगा। आगे **११वें कर्के उच्च गुरु** ता.२१.१२.२५ तक उच्च लाभ,स्त्री भाग्य से उच्च लाभ,भूमि सम्पत्ति से उच्च लाभ, पराक्रम

वृद्धिप्रद समय है संतान चिंता रहे। आगे पुन: १०वें **मिथुने गुरु** शेष पूरे वर्ष चलने से शेष बचे राजकीय कार्य,व्यापारिक कार्य लाभ देंगे,पूरे होंगे। मनोबल बढ़ेगा। स्त्री संतान सुख रहेगा। वर्ष प्रवेश में ६ठें स्व **कुंभे शनि** ता.८.६.२५ तक शत्रुनाशक, विजयप्रद. है गुप्तपीड़ा,विश्वास से आर्थिक धोखा,पैरों में पीड़ा,मातृ चिंता रहेगी। आगे ७वें मीने शनि ता.६.८.२५ तक **स्थान वृद्धि करो शनि** से स्त्री संतान सुख,भाग्य में प्रगति लाभ, मनोबल बढ़ेगा, भूमि मकान वाहन सम्पत्ति सुख बढ़ेगा। आगे ता.१३.२.२६ तक पुन: कुंभे शनि ६ठें चलेगा जो शत्रु नाशक,विजयप्रद है। घातपात सावधानी रखें। आगे पूरे वर्ष मीने शनि ७वें स्थान वृद्धिप्रद शुभ है स्त्री संतान सुख,गुप्तलाभ भाग्य में सम्पन्नता,सम्पति सुखद श्रेष्ठ है।वर्ष प्रवेश में आपके ७वें **मीने राहु व पहला कन्या केतु** ता.३०.४.२०२५ तक होने से स्त्री चिंता, गुप्तपीड़ा, मानसिक अशांति,अस्थिरता, संघर्ष,विवाद,धोखा शोक संवेदना,संघर्षप्रद है। आगे ६ठा कुंभे राहु व १२ वे सिंहे केतु शेष वर्ष भर चलेंगे जो विजय, शत्रुनाश, खर्च की अधिकता, प्रगति,प्रवास,विश्वास से धोखा,शोक संवेदनाप्रद है।

निष्कर्षत: राजकीय,न्यायिक कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रुओं का पराभव होगा। भाग्योदय,व्यापार में लाभ होगा,रुके कार्य बनेंगे। ग्रहों को प्रसन्न करने हेतु ग्रहशांति शिवोपासना रुद्राभिशेष, सर्पशांति, दुर्गायज्ञ, त्रिपुरा पूजन,श्रीयंत्र पूजन,गोपाल सहस्त्रनाम व विष्णुसहस्त्रनाम पाठ से परेशानियां,अनिष्ट दूर होंगे। ब्राह्मण कन्या विवाह या गरीब कन्या विवाह से अशुभ ग्रहों का प्रभाव शांत होगा। हनुमानजी को तेल सिंदूर चढ़ाने से व सुन्दरकाण्ड पाठ से क्रूर ग्रह शांत होंगे। हीरा पन्ना रत्न धारण से लाभ होगा। नीलम अनुकूल होवे तो धारण करें वरना नहीं। अंक २,३,४,६ व हरी नीली,काली वस्तुयें व सौंदर्य प्रसाधन, स्त्रियोचित व्यवसाय में लाभ बनेगा।

तुला:- रा री रु रे रो ता ती तु ते(र = ऋ, त = तृ,त्रि)

इस वर्ष प्रवेश से ५वें **कुंभे स्व शनि** ता.८.६.२५ तक विद्या,बुद्धि व संतान सुख श्रेष्ठ। भूमि मकान वाहन सम्पत्ति सुख,स्त्री चिंता,आर्थिक धोख बने। आगे ६ठें मीने शनि ता.६.८.२५तक सर्वारिष्ट नाशक,शत्रुनाशक,विजय,सफलता,पराक्रम वृद्धि, आकस्मिक लाभ बने। आगे पुन: **कुंभे स्व शनि ता.१३.२.२६** तक आयेगा जो संतान व सम्पत्ति के शेष कार्य पूरे करेगा,विद्या बुद्धि से अच्छी सफलता मिलेगी। घातपात,धोखे से सावधान रहें। आगे पुन: **मीने शनि** शेष पूरे वर्ष तक शत्रुनाशक, पराक्रम वृद्धि,विजय प्रद,सर्वारिष्ट नाशक होगा। उदरपीड़ा भी बने। वर्ष प्रवेश से आपके ८वें वृषे गुरु ता.६.५.२०२५ तक स्वास्थ्य चिंता,पारीवारिक परेशानियां रहेगी। तथापि आकस्मिक लाभ के संयोग भी बनेंगे। आगे आपके ९वें **मिथुने गुरु** ता.७.१०.२५ तक चलेगा जो भाग्य में लाभ,धार्मिक शुभकार्य,विद्या बुद्धि से भाग्योदय,संतान सुख ,पराक्रम वृद्धि,मनोबल वृद्धि,भाई,सुख बनेगा। आगे आपके १०वें **उच्च कर्क गुरु** ता.२१.१२.२५ तक होने से उच्च राजयोग,उच्च व्यवसाय में लाभ,शत्रुओं पर विजय, रुके कार्य बनेंगे परन्तु पारीवारिक चिंता,सम्पत्ति विवाद भी बनेंगे। आगे पुन: मिथुने गुरु ९वें वर्ष पर्यन्त गतिशील होगा जो धार्मिक शुभकाम,भाग्योदय,पराक्रम वृद्धि, मनोबल वृद्धि,संतान चिंता को दूर करेगा। आपके वर्ष प्रवेश से ६ठें मीने राहु व कन्या केतु ता.३०.४.२५ तक होने से उदर पीड़ा,खर्च ज्यादा,अस्थिरता,स्थान परिवर्तन देगा परन्तु सर्वारिष्ट नाशक राहु सभी बाधाओं को पार कर सफलता देगा। आगे ५वें कुंभे राहु व सिंहे केतु वर्ष पर्यन्त चलेंगे जिससे विद्या बुद्धि से अच्छी सफलता,राजयोग, भाग्योदय करेंगे। केतु सर्वारिष्ट नाशक सभी बाधाओं को दूर कर अच्छी सफलता देगा।

निष्कर्षत: वर्ष में शत्रुओं पर विजय,सफलता,राजयोग व रुके कार्य बनेंगे। तथापि क्रूर ग्रहों को प्रसन्न करने के लिये रुद्राभिशेष, शिवउपासना, गुप्त तुलादान,प्रदोषव्रत, शनिवार व्रत, दुर्गा यज्ञ,ग्रहशांति यज्ञ, विष्णु सहस्त्रनाम व गोपाल सहस्त्रनाम पाठ, सुन्दरकाण्डपाठ, हनुमान जी को तेल सिंदूर चढ़ावें। कीड़ी मकोड़ी, गाय, कुत्तों,मछलियों,ब्राह्मणों को भोजन देनें से रुके कार्य बनें,सफलता मिले। पन्ना,हीरा रत्नधारण से लाभ होगा। नीलम अनुकूल हो तो ही पहिनें वरना नहीं। अंक ३,४, ५, ७,११ व सफेद,हरी,नीली,काली वस्तुयें, दवाईयाँ, वस्त्राभूषण के व्यवसाय में लाभ होगा।

वृश्चिक-तो ना नी नू ने नो या यी यू(न=नं,ना/य=यं,या)

वर्ष प्रवेश में चौथा स्व **शनि की ढैय्या पनोती लोह के पाया अश्व वाहन पर** ता.८.६.२५ तक व कुछ समय तक पनौती उतर कर पुनः ता.६.८.२५ से ता.१३.२.२६ तक कुंभे शनि संघर्ष,वैर विरोध,राजकीय उठापटक,चिंता, घातपात, उदर पीड़ा देगी। परन्तु स्व.शनि से पराक्रम वृद्धि,विजय,भूमि मकान वाहन सम्पत्ति सुख, मनोबल वृद्धि देगी। शनि ५वें मीन राशि पर ता.८.६.२५ से ता.६.८.२५ तक व आगे ता.१३.२.२०२६ से वर्ष पर्यन्त तक पनोती का प्रभाव कम कर शनि चलेगा। संतान सुख,विद्या बुद्धि से अच्छी सफलता,आर्थिक लाभ,राजकीय क्षेत्र में व व्यापारिक क्षेत्र में लाभ होगा। वर्ष में **शनि कुंभ,मीन दो राशियों** को प्रभावित करेगा,जो उठा पटक करके अग्नि परीक्षा में सफल करेगा। वर्ष प्रवेश से ५वें मीने राहु व ११वें कन्या केतु ता.३०.४.२०२५ तक चलेंगे जो अच्छी सफलता,प्रगति प्रबल राजयोगद, सर्वारिष्ट नाशक होगे। आगे वर्ष पर्यन्त **कुंभे राहु व सिंहे केतु** चलेगे। भूमि मकान वाहन सम्पत्ति सुख,राजकीय प्रगति,व्यावसायिक लाभ बनेगा। संघर्षो के बाद भी सफलता मिले व प्रगति होवे। वर्ष प्रवेश से आपके ७वें **वृषे गुरु** ता.९.५.२०२५ तक स्त्री संतान सुख, मनोबल वृद्धिः,आर्थिक लाभ व रुके कार्य होंगे। भ्रातृ चिंता रहेगी। आगे ८वें **मिथुने गुरु** ता.७.१०.२०२५ तक चलेगा जिससे स्वास्थ्य चिंता,संतान चिंता,दवाईयों में ज्यादा खर्च,तीर्थाटन,प्रवास,आकस्मिक लाभ,गुप्तलाभ बनेंगे। जमीन जायदाद विवाद, पारीवारिक संघर्ष रहेगा। आगे ९वें उच्च **कर्क गुरु** ता.२१.१२.२५ तक होनें से उच्च भाग्योदय,धार्मिक कार्यो में यश,मनोबल वृद्धिः,संतान सुख व संतान को उच्च सफलता मिलेगी। भाई चिंता रहेगी। आगे पुनः ८वें मिथुने गुरु वर्ष पर्यन्त संघर्ष,चिंता,नर्मागमी, आकस्मिक लाभ,ज्यादा खर्च करवाता रहेगा। इस प्रकार तीन राशियों को प्रभावित गुरु संघर्ष,उपलब्धि दोनों देगा।

<u>**निष्कर्षतः**</u> वर्ष में उठापटक के साथ वर्ष सफलता देगा,**मनोबल मजबूत रहेगा,रुके** कार्य होंगे। आप ग्रहों की प्रसन्नता हेतु रुद्राभिशेष, शिवउपासना, सर्पशांति, दुर्गायज्ञ, गणपति पर दूर्वानुष्ठान, ग्रहशांति यज्ञ, सुन्दरकाण्ड पाठ, मंगल चंडिका पाठ से समस्यायें दूर होगी। विष्णुसहस्त्र नाम व गोपालसहस्त्रनाम पाठ से आर्थिक लाभ होगा। गायों, मछलियों, मयूरों व कीड़ी मकोडीयों को भोजन देनें से रुके कार्य बनेंगे। मूंगा, पुखराज, मोती रत्न धारण से लाभ होगा। अंक ४,५,६,८ व लाल पीली, सफेद,गुलाबी वस्तुओं में लाभ होगा। बिजली का सामान,रंग रोगान,दवाईयां, जहर, कीट नाशक, शस्त्र,रंगीन कपड़ा व लाल रंग की वस्तुओं के व्यवसाय में लाभ बनेगा।

धनु:-ये यो भा भी भू धा फा ढा भे

इस वर्ष में आपका राश्येष गुरु तीन राशियों को स्पर्श करता संकट हरण व उच्च मनोबल,उच्चपद देगा। आपको ६ठें **वृष गुरु** ता.९.५.२५ तक शत्रु वर्धक, विश्वास से धोखा,स्वास्थ्य चिंता,दवाईयों में ज्यादा खर्च,यात्रा प्रवास,धार्मिक शुभकार्य व भाग्योदय प्रद रहेगा। आगे ७वें **मिथुने गुरु** ता.७.१०.२५तक स्त्री,संतान सुख, आर्थिक लाभ,पराक्रम वृद्धि,भूमि मकान वाहन सुख,मनोबल मजबूत रहेगा। आगे ८वें उच्च कर्के गुरु ता.२१.१२.२५ तक आकस्मिक उच्च लाभ,उच्च मनोबल,सम्पत्ति सुख, देश विदेश की यात्रा होगी। परन्तु विश्वास से आर्थिक धोखा बनेगा, सावधान रहे। आगे पुनः७वें मिथुने गुरु वर्ष पर्यन्त चलेगा जो शत्रु मर्दक सफलता,मान सम्मान प्रद है। मनोकामनायें पूर्ण होगी। वर्ष प्रवेश से ३रें कुंभे स्व शनि ता.८.६.२५ तक पराक्रम वृद्धि,सर्वारिष्ट नाशक,आर्थिक लाभप्रद है परन्तु आर्थिक धोखा बने,वाद विवाद से सावधान रहें। आगे **चौथा शनि ढैय्या पनोती लोह का पाया,अश्व वाहन पर** ता.६.८.२५ तक व ता.१३.२.२६ से वर्ष पर्यन्त तक चलेगी जो पारीवारिक संघर्ष, वैर विरोध,शत्रु वृद्धिप्रद रहेगी। तथापि शत्रुनाश,भूमि मकान वाहन सम्पत्ति वृद्धिः, राजकीय व्यापारिक सफलता लाभ देगी। **स्थान वृद्धि करो शनि** मनोबल बढ़ायेगा। उपलब्धि देगा। ता.६.८.२५ से १३.२.२६ तक कुंभ स्व शनि रुके कार्य पूरे करेगा, आर्थिक लाभ,पराक्रम वृद्धि करेगा। वर्ष प्रवेश से **चौथा मीने राहु** व १०वां **कन्याकेतु** ता.३०.४.२५ तक संघर्षों के बाद भी सफलता देगा। भूमि सम्पत्ति पारीवारिक व राजकीय विवादों से बचते हुए चले लाभ होगा। राजकीय प्रगति,व्यवसाय में वृद्धि होगी। आगे ३रें कुंभे राहु ९वें सिंहे केतु वर्ष पर्यन्त चलेंगे। विजय, सफलता,

astro welfare

प्रगति बने। सर्वारिष्ट नाशक राहु भाग्य में उठापटक के बाद भी सफलता देगा।

निष्कर्षत: नीति पर चलें,अनैतिक कार्यों से दूर रहें। यश सफलता मिलेगी। धर्मेण हन्यते ग्रहा: के लिये ग्रहशांति दुर्गायज्ञ, सर्पशांति, शिवउपासना, रुद्राभिशेष, सुन्दरकाण्ड पाठ,मंदिर पर ध्वजा चढ़ाने से कष्ट दूर होवे। गाय कुत्तों,कीड़ी मकोड़ी, मयूर, मछलियों को भोजन देने से समस्यायें दूर होगी। अंक १,५,६,७,६ व पीली सफेद,लाल,गुलाबी वस्तुयें, वस्त्राभूषण, रत्न, सोना चांदी सौन्दर्य वस्तुयें, शस्त्र, कागज, स्टेशनरी के व्यापार में लाभ होगा। पुखराज, मोती, माणक रत्न धारण से प्रगति होवे। मूंगा रत्न अनुकूल हो तो धारण करें,वरना नहीं पहिनें।

मकर:-भो जा जी जु जे जो खा खी खु खे खो ग गी (ग=ज्ञ, क्ष=ख)

आपका राश्यैष शनि इस वर्ष में कुंभ व मीन दो राशियों को प्रभावित करेते हुए दोनों राशियों का फल देगा। २रें स्व शनि ता.८.६.२५ तक **पैरों पर साढ़े साती पनोती चांदी के पाया पर काग वाहन पर** रोग चिंता,घातपात,पारीवारिक अशांति,सम्पत्ति विवाद देगी परन्तु उतरती पनोती स्व.शनि आर्थिक लाभ,मनोबल वृद्धिः व प्रभावशाली बनायेगी। आगे ३रें मीने शनि ता.६.८.२५तक **शनि पनोती** का दुष्प्रभाव कम करेगी व विजय लाभ पराक्रम वृद्धि देगी। सर्वारिष्ट नाशक शनि अकस्मात लाभ देगा। आगे पुन: कुंभे स्व शनि की उतरती साढ़े साती पनोती का प्रभाव ता.१३.२.२६ तक पुन: दिखेगा। आर्थिक धोखा,भूमि विवाद,से अशांति रहेगी। अनीति से दूर रहें,नीति पर चलेंगे तो बचाव होगा। आगे शनि की साढे साती पनोती उतर जायेगी। तीसरा शनि सर्वारिष्ट नाशक भाग्योदय,राजयोगद,विजय,पराक्रम वृद्धि,आर्थिक लाभ देगा,रुके कार्य बनेंगे। वर्ष प्रवेश से आपके ३रें **मीने राहु** व ६वें **कन्या केतु** ता.३०.४.२५ तक चलेंगे,जो भाग्योदय,प्रगति,धनलाभ देंगे। सर्वारिष्ट नाशक राहु बचाव करता रहेगा। आगे २रें कुंभे राहु व ८वें सिंहे केतु वर्ष पर्यन्त होने से आर्थिक धोखा,नर्मागर्मी शोक संवेदना देगा। तथापि आकस्मिक लाभ,राजकीय प्रगति,शत्रुनाशक व विजय देगा। वर्ष प्रवेश में ५वें वृषे गुरु ता.६.५.२५ तक स्त्री संतान सुखद,भाग्य में प्रगति आर्थिक लाभ देगा तथापि खर्च की अधिकता,चिंतायें रहेगी। आगे मिथुने ६ठे गुरु ता ७.१०.२५ तक खर्च की अधिकता,विश्वास से धोखा,मित्र शत्रु बनेंगे। सावधान रहें आगे ७वें उच्च कर्के गुरु ता.२१.१२.२५तक आकस्मिकलाभ,स्त्री संतान सुख पराक्रम वृद्धि,देश विदेश की यात्रा,धार्मिक कार्यों में यश आदि आकस्मिक कार्य होंगे। तथापि चिंतायें भी रहेंगी। आगे पुन: ६ठें मिथुने गुरु वर्ष पर्यन्त चलेगा। अत: मित्र शत्रुओं से सावधान रहे,विश्वास से धोखा बने। तथापि तीर्थयात्राओं से शुभ समय रहेगा।

निष्कर्षत: उठा पटक व उतावलापन से परेशान रहेंगे। धीरज से काम लें, अनुकूल समय का लाभ लें क्रूरग्रहों की शांति हेतु शिवउपासना, रुद्राभिशेष, सर्पशांति, सुन्दरकाण्डपाठ, मंदिर पर ध्वजा चढ़ानें,ग्रहशांति यज्ञ में दूर्वा,कुशा की समीधाओं के हवन से शांति बनें। दुर्गायज्ञ, श्रीसूक्त पाठ से आर्थिक लाभ बनें। मंदिर पर ध्वजा चढ़ानें से राहु केतु की शांति होवे। मयूरों, मछलियों,गायों,कुत्तों व कीड़ी मकोड़ी को भोजन देनें से कष्ट दूर होवे। तुलसी, पीपल रोपण पूजन से सुख समृद्धि होवे। तुलसी विवाह,ब्राह्मण कन्या का विवाह में सहयोग करनें से मनोकामनाएं पूर्ण होवे। पन्ना,हीरा,नीलम रत्न धारण करनें से लाभ होगा। अंक २,६,७,८ व काली,सफेद,हरी,नीली व जलज वस्तुओं के व्यवसाय से लाभ होगा।

कुंभ:- गु गे गो शा शी शु शे शो द (स=श, श्र, द=दं, दा)

इस वर्ष आपका राश्येष शनि कुंभ मीन दो राशियों को प्रभावित करते उतावली में है। वर्ष में पहला कुंभे स्व.शनि **साढ़े साती पनोती में सोना का पाया बकरा वाहन पर** ता.८.६.२५ तक व आगे ता.६.८.२५ से १३.२.२६ तक पेट भराने का काम करेगा। भ्रातृ चिंता,स्त्री चिंता भी रहेगी। भाग्य में उच्चत्व बनेगा। शनि २रें **मीन राशि का पैरों पर साढ़े साती पनोती चांदी के पाया व काग वाहन पर** होने से ता.८.६.२५ से ता.६.८.२५ तक व आगे ता.१३.२.२६ से वर्ष पर्यन्त उतरती पनोती का प्रभाव भ्रमणशील,रोग,चिंता,स्त्री धोखा,भोगविलासिता में बदनामी देगा,

सावधान रहे। उतरती शनि पनोती "**स्थान वृद्धि करो शनि**" आर्थिक लाभ,भूमि, वाहन से लाभ बनेगा। अनैतिकता,भ्रष्टाचार में लिप्त रहेंगे तो उतरता शनि नुक्सान देगा,सब खाया पीया निकाल देगा,सावधान रहें। **वर्ष प्रवेश में २रें मीने राहु** व ८वें **कन्या केतु** ता.३०.४.२५ तक चलेंगे जो स्वास्थ्य चिंता,आर्थिक धोखा,संघर्ष, शोक संवेदना,अस्थिरता देगा। आगे पहला **कुंभे राहु** व **७वां केतु** वर्ष पर्यन्त चलेंगे जो मनोबल वृद्धि,प्रगति मान सम्मान,भाग्योदय,संतान सुख देंगे। स्त्री चिंता,अन्य स्त्रीके लांछन बदनामी से सावधान रहें। वर्ष में चौथे वृषे गुरु ता.६.५.२५ तक धोखा,सम्पत्ति विवाद,स्वास्थ्य चिंता,प्रवास में कष्ट,खर्च की अधिकता बने। तथापि राजकीय प्रगति, व्यापार में लाभ,बनें। आगे ५वें **मिथुने गुरु** ता.७.१०.२५ तक चलेगा,स्त्री संतान सुख,धार्मिक कार्यों में यश,विद्या बुद्धि से भाग्योदय व लाभ बने। आगे ६ठें **कर्के उच्च गुरु** ता.२१.१२.२५ तक होने से उच्च राजयोग,दबाया धन मिलेगा,व्यवसाय में लाभ बनेगा। खर्च पर अंकुश रखें। आगे पुनः ५वें मिथुने गुरु वर्ष पर्यन्त होने से भाग्य में आर्थिक लाभ,स्त्री संतान सुख, विद्या बुद्धि से सफलता ,भाग्योदय होगा।

निष्कर्षत: उतालापन नहीं करें। जिद्द से बचे। अभिमान से धोखा खायेंगे। **धर्मेण** हन्यते ग्रहाः को देखते शिव उपासना रुद्राभिशेष, ग्रहशांति, दुर्गायज्ञ, सुन्दरकाण्ड पाठ, हनुमानजी को तेल सिंदूर चढ़ाने से शुभ रहेगा। गणपति पर दुर्वाभिशेष कुश, शमी समीधाओं से यज्ञ मनोबल बढ़ायेगा, सफलता देगा। पानी से भरा कुंभ दान,कीड़ी मकोड़ी,चीलों,कुत्तों,गायों को भोजन देने से रुके कार्य दूर होंगे। श्री सूक्तपाठ, विष्णु सहस्त्रनाम व गोपाल सहस्त्र नाम पाठ से लक्ष्मी बढ़ेगी। पन्ना व नीलम रत्न पहनने से लाभ होगा। अंक ३,७,८,११ में लाभ बनें। काली,हरी,नीली,सफेद वस्तुओं में व स्टील, लोहा,हार्डवेयर,मशीनरी,तेल,तिलहन,पैट्रोल आदि के व्यवसाय में लाभ होगा।

मीन :- दी दू थ झ ञ दे दो च ची (च = चं,चा)

आपका राश्येष गुरु इस वर्ष में **वृषभ,मिथुन,कर्क तीन राशियों** को प्रभावित कर रहा है ३रें वृषे गुरु ता.६.५.२५ तक पराक्रम वृद्धि,स्त्री संतान सुख, भाग्योदय प्रद है लाभ में अवरोध,धोखा बने। आगे **चौथा मिथुन गुरु** ता.७.१०.२५तक पारीवारिक चिंता संघर्ष,सम्पत्ति विवाद,स्वास्थ्य चिंताप्रद है। तथापि राजकीय लाभ,प्रगति बने व्यवसाय अच्छा रहेगा। आगे ५वें कर्के उच्च गुरु ता.२१.१२.२५ तक उच्च राजयोग, विद्या बुद्धि से उच्च सफलता,भाग्योदय मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक धोखा बने। वर्ष प्रवेश से पहला **मीने राहु** व ७वां **कन्या केतु** ता.३०.४.२५ तक स्वास्थ्य चिंता,स्थान परिवर्तन ,स्त्री कष्ट,गुप्त पीड़ा,एलर्जी,रियेक्शन,विषभय,शोक संवेदना बने तथापि प्रगति नया धंधा के संयोग बनेंगे। आगे १२वें कुंभे राहु व ६ठे केतु वर्ष पर्यन्त चलेंगे अस्थिरता,गुप्तशत्रु,उदरपीड़ा,खर्च की अधिकता,स्थान परिवर्तन,प्रगति बने। आपके १२वें कुंभे स्व.शनि ता.८.६.२५ तक **सिर पर शनि की साढ़े साती पनोती लोह के पाया,सियार वाहन पर** कष्ट,भय,उदरपीड़ा,धननाश प्रद है। सिर को भ्रमित करती है। तथापि स्व.शनि से प्रदेश में लाभ व आकस्मिक लाभ भी बने। आगे पहला मीने **शनि साढ़े साती में पेट पर** सोना के पाया,बकरा वाहन पर ता.६.८.२५ तक चलेगी। पेटे शनि पेट भराती है परन्तु विश्वास से धोखा भी मिलता है। आगे पुनः१२वें कुंभे शनि पनोती सिर पर ता.१३.२.२६ तक सिर को भ्रमित रखेगी। घातपात,वाद विवाद,आर्थिक धोखा,दंत नैत्र पीड़ा से अशांति रहेगी। स्व.शनि प्रदेश में लाख,रुका धन प्राप्त होता है आगे पुनः पहला मीने शनि वर्ष पर्यन्त चलेगा। स्थान वृद्धि करो शनि के अनुसार पेटे पनोती पेट भरायेगी। पराक्रम वृद्धि,स्त्री सुख, राजयोग, व्यवसाय में लाभ बनेगा। अतः अधिक लालच,उतावली नहीं करें।

निष्कर्षत: आपकी राशि को शनि व राहु का उत्पिड़न संघर्ष,भ्रम ,कष्टप्रद है। धर्मेण हन्यते ग्रहा को देखते शिव उपासना, रुद्राभिशेष, सर्पशांति, मंदिर पर ध्वजा चढ़ानें से सफलता प्राप्त करेंगे। गणपति पर दुग्धाभिशेष ,दुर्गायज्ञ, ग्रहशांति, दुर्वा व कुशा समीधाओं का यज्ञ करनें से प्रगति बनें,रुके कार्य पूर्ण होंगे। गायों, चीलों, मछलियों, मयूरों, कुत्तों व अपंग अपाहिजों को भोजन देनें से मनोरथ पूर्ण होगें। कन्यादान से लक्ष्मी बढ़े। पुखराज, मूंगा,मोती रत्न धारण से लाभ होगा। अंक ४,८,६,१२ व सफेद,पीली,लाल, गुलाबी रंग की वस्तुयें, सोना, चांदी, आभूषण, जवाहरात,जलज वस्तुयें,सौन्दर्य वस्तुयें, एक्सपोर्ट आदि व्यवसाय में लाभ होगा।

वास्तु विज्ञान

लेखक-अरुण कुमार दवे (वास्तुविज्ञ:स्नातक)

{मोबाईल नं 9414688805}

गृह,फैक्ट्री,दुकान,क्वाटर,उद्योग धंधे आदि सभी प्रकार के निर्माण में व ग्राम नगर निवास, बाग, बगीचा, बावडी, कुंआ, देवस्थान, दुर्ग निर्माणादि में भी वास्तु विज्ञान के अनुसार कार्य करने से आर्थिक सम्पन्नता, सुख संतोष व समृद्धि: कीर्ति की प्राप्ति होती है। अत: दिशानुसार निम्न बातो का ध्यान रखना अत्यावश्यक है:-

(१) पूर्व दिशा:-वर्गांक १ अ वर्ग (अ ई उ ए = गरुड़) स्वरांक ८, नगर के पूर्व दिशा में **ब्राह्मणवास**, जलाशय (नदी,तालाब,नाला,कुंआ, बावडी,बोरवेल,पानी का टांका,पानी की निकासी) स्नानघर, पूजाघर, बालकनी,बरामदा,पार्किंग,सड़के एक या दो,मुख्य कार्यालय नीचा,छोटी मशीनीरी,छोटागोदाम,तराजु(कांटा) छत का ढलाव,कैंटिन (अल्पाहार स्थान), भूमि विस्तार,मुख्यद्वार- **पूर्वदिशा के नौभाग करके ईशान से तीसरे चौथे भाग में बनावें**। वृक्ष- नाग,वट,बरगद, आम,केतकी के श्रेष्ट है। वैश्य का पूर्व द्वार मुख श्रेष्ठ। मेष सिंह धनुराशि। पीपल भय कारक। घोड़ा मुख नेष्ट।

(२) पूर्वअग्निकोण के बीच-दधीमंथन,अर्कशाला,मंथन,आलौडनस्थान।

(३) अग्निकोण में-वर्गांक २ क (क ख ग घ ङ=बिलाव), स्वरांक ५,सोनार,लुहार,आदि अग्निजीवियों का वास,पाकशाला,विद्युतगृह, बिजलीघर,जेनरेटर, बॉयलर, ट्रांसफार्म, एयर कंडीशनींग, कूलिंग टॉवर, चिमनी, कैंटिन (अल्पाहार स्थान)। टॉयलेट ब्लाक, चौकीदार कक्ष,गैराज, पार्किंग,स्टाफघर ऊंचे वा नीचे,गोदाम। केशर,अनार के वृक्ष। कुंआ भय से दाह।

(४) **अग्निदक्षिण के बीच**-घी रखने का स्थान। भैंस भेड़ श्रेष्ट।

(५) दक्षिण में-वर्गांक ३ च वर्ग(च,छ,ज,झ,ञ=सिंह),स्वरांक ६, क्षत्रियवास। शयनकक्ष,मेहमान कक्ष, भण्डार (स्ट्रोर), तिजोरी, स्नानघर, शौच घर,पूर्व उत्तर मुख, सीढ़ीयां, जीना गार्डरूम, कार्यालय ऊँचा, स्टाफ क्वाटर ऊँचें व नीचे, भारी मशीनरी, गोदाम बड़ा,तैयार माल का स्थान, चिमनी, स्क्रेपयार्ड, प्रबंधक, मालिक या चेयर मेन का स्थान। वृक्ष नींबू, गूलर (उदंबर), नारियल, बेल,वट,शुभ। **मुख्यद्वार बीचों बीच में रखें। शूद्रों का दक्षिण द्वार मुख श्रेष्ठ।** वृषभ कन्या मकर राशि। पाकर वृक्ष पराजय।

(६) दक्षिण नैऋत के बीच- पाखाना,वृक्ष-जामुन,कदंब।

(७) नैऋत में -वर्गांक ट वर्ग (ट ठ ड ढ ण=श्वान),स्वरांक ४, अन्त्यज,चमार वैश्यावास। वस्त्र,शस्त्रघर,शयनकक्ष,तिजोरी,सीढीयां, गार्डरूम, स्ट्रोर, मुख्यकार्यालय ऊँचा,स्टाफघर ऊँचें,सड़कें दो,भारी मशीनरी,बड़ागोदाम, तैयार माल स्थान, स्क्रेपयार्ड,प्रबंधककक्ष। अनार,इमलीवृक्ष। कुँआ से बालक मरे।

(८) नैऋतपश्चिम केबीच-अभ्यासस्थान,विद्या आदि अभ्यासस्थल।

(९) पश्चिम दिशा में- वर्गांक ५ त वर्ग (त,थ,द,ध,न= सर्प), स्वरांक ७,जलाशय (नदी, तालाब, कुआ, बोरवेल,पानी का टैंक,पानी की टंकी) भोजनशाला, डायनिंग,शयनकक्ष,तिजौरी, स्नानघर,शौचघर पूर्व उत्तर मुख, सीढ़ीया,गार्डरूम, स्ट्रोर,मुख्य कार्यालय ऊँचा,स्टाफघर ऊँचे,सड़क एक या दो,भारी मशीनरी,बड़ा गोदाम,तैयार माल,स्क्रेपयार्ड,प्रबंधककक्ष,मुख्य द्वार बीच में रखें। अशोक पीपल आम केतकी के वृक्ष शुभ वट अशुभ। ब्राह्मण का पश्चिम द्वार श्रेष्ट। मिथुन,तुला,कुंभराशि। बड़ नेष्ट। घोड़ामुख नेष्ट।

(१०) पश्चिम वायव्य के बीच- रोदन कक्ष,संवेदन कक्ष।

(११)वायव्य कोण में- वर्गांक ६ वर्ग (प फ ब भ म= मूषक), स्वरांक१,व्याध,शिकारीजातियां,भील,डोम कोली,आदि का वास। अन्नभण्डार, पशुशाला,पाखाना,पाकशाला(रसोईघर)मेहमान कक्ष,भंडार(स्ट्रोर) शौचघर पूर्व उत्तरमुख, सीढ़ीयां, चौकीदार कक्ष, सेप्टीक टैंक, बालकनी,बरामदा,गैराज, कार्यालय व नीचा पार्किंग, स्टाफघर नीचे, सड़क दो,विद्युत घर,हल्की मशीनरी,छोटा गोदाम,तराजु (कोटा),कलिंग टावर,चिमनी छत ढलाव,टायलेट ब्लॉक, कैंटिन,मुख्य सड़क। चमेली,बेल का वृक्ष। कुँआ से स्त्रियों की हानि।

(१२) वायव्य उत्तर के बीच-रतिकक्ष।

(१३) उत्तर दिशा में-वर्गांक ७ वर्ग (य,र,ल,व=हिरण),स्वरांक ३ शूद्र वर्ग का वास। भंडार (स्ट्रोर), जलाशय पानी का टांका, पूजाघर, शयनकक्ष, बालकानी, बरामदा,कार्यालय नीचा, पार्किंग, स्टाफ घर नीचे, हल्की मशीनरी, छोटा गोदाम, तराजु छत का ढलाव, पानी की निकासी,कैंटिन,मुख्य सड़क, भूमि विस्तार,मुख्यद्वार **उत्तर दिशा के नौभाग कर वायव्य से उत्तर के बीच तीसरे चौथे भाग में बनावें**। वृक्ष केशर, कैथ, पाकर, नारियल, बेल, वट, पीपल श्रैष्ठ है। क्षत्रिय का उत्तर द्वार घर। कर्क वृश्चिक मीन राशि। गूलर से नैत्र रोग।

(१४) उत्तर ईशान के बीच-औषध,दवाईयां।

(१५) ईशान कोण में-वर्गांक ८ श वर्ग (श ष स ह=मेढ़ा), स्वरांक २, रंगरेज, जुलाह, धोबी, आदि का वास। देवस्थान, जलाशय, शयनकक्ष, सेप्टीक टैंक, बरामदा, सड़कें दो,तराजु पानी का बहाव,भूमि विस्तार, मुख्यद्वार। गुलाब, केला,आंवला के शुभ।

(१६)ईशानपूर्व के बीच में-सर्वधाम,शयनकक्ष ऊंट,गधा स्थान शुभ,वृक्ष-कटहल,

(१७) मध्य में- बनिये,दुकानें, राजद्वार, मन्दिर। आंगन, पार्किंग, छोटी मशीनरी, छोटा गोदाम चंदन बिल्व के वृक्ष घर के पास खैर शत्रु,अंक अरंड धन नाश, आम्र फलनाश। अशोक, नीम शुभ। ❒❒❒

हमारे नवीन प्रकाशन

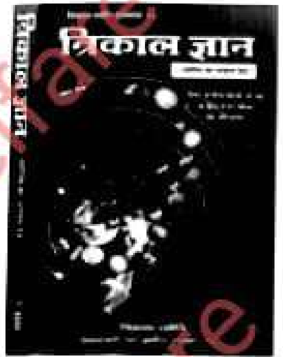

उपलब्ध पुस्तकें- (1) त्रिकाल संध्या(नवीन प्रकाशन) -मूल्य 50रु.
(2) श्रीमहालक्ष्मी पूजन (नवीन प्रकाशन विविध प्रयोगों सहित)-मूल्य 50 रु.
(3) अन्त्येष्टि कर्म सम्पूर्ण भाग - मूल्य 120 रु.
अन्त्येष्टि भाग प्रथम - मूल्य 60 रु., अन्त्येष्टि भाग द्वितीय - मूल्य 60 रु.
अन्त्येष्टि भाग तृतीय - मूल्य 40 रु.
(4) वर्षीकर्म - मूल्य 70 रु. (5) त्रिकाल ज्योति लघु पंचांग-मूल्य 25रु.
(6) वैदिक विवाह पद्धति - मूल्य 200 रु.
(7) त्रिकाल ज्ञान(ज्योतिषीय अनुपम ग्रंथ)- मूल्य 300 रु.
(8) त्रिकाल ज्योति पाक्षिक समाचार पत्र - वार्षिक शुल्क 60 रु.
(9) जेबी पॉकेट पंचांग - मूल्य 20 रुपये (10) त्रिपिण्डी श्राद्ध कर्म - 100रु.
(11) ब्रह्मार्पणम् -मूल्य 10 रुपये

नोटः- (अ) अग्रिम मूल्य डाक द्वारा एम.ओ.प्राप्त होनें पर पुस्तकें तत्काल वी.पी. पोस्ट से रवाना कर दी जाएगी (पोस्टेज खर्च ग्राहक का होगा) (ब) कृपया आपका पता साफ सुथरे अक्षरों में लिख कर भेजें पिन कोड अवश्य लिखें तथा मोबाईल या टेलीफोन नम्बर भी लिखें। (स) एक हजार रुपये से अधिक मूल्य की पुस्तकें खरीदनें पर ही 10 प्रतिशत कमीशन देय होगा।

सम्पर्क करें - पं.पृथ्वीराज द्विवेदी
त्रिकाल ज्योति कार्यालय, लौहणों का चौक, बालोतरा
जि.बाड़मेर। (राज.)पिन.344022 (ऑ.02988 224230)

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

ANNAPURNA TEXOFIN PVT.LTD.
अन्नपूर्णा
Regd. office : 1, Mullick Street, Geeta Katra 2nd Floor, KOLKATA - 700 007 (WB)
Factory : Tilwara Road, Industrial Area, JASOL - 344 024 (Raj.)

SHIVANI COTEX PVT.LTD.
III PHASE, INDUSTRIAL AREA, BALOTRA - 344022.
SHIVANI

SHAILJA® *Texprints*
An Iso 9001:2008 Certified Company
H.O. : 1, Mullick Street, 2nd Floor, KOLKATA - 700 007 (West Bengal)
Fact. : E-241, 3rd Phase, Industrial Area, BALOTRA-344 022 (Raj.)
e-mail : shailjablt@yahoo.co.in

GIRIJA FABRICS PVT. LTD.
GIRIJA D-524, RIICO Industrial Area, 4th Phase, BALOTRA 344022 (Raj.)

astro welfare

भारत सरकार समाचार पत्र रजिस्ट्रेशन नं.43583/81 "त्रिकाल ज्योति" समाचार पत्र का विशेषांक पोस्टल रजि. पोस्टल रजि.नं. BAM/13/2024-26

त्रिकाल ज्योति

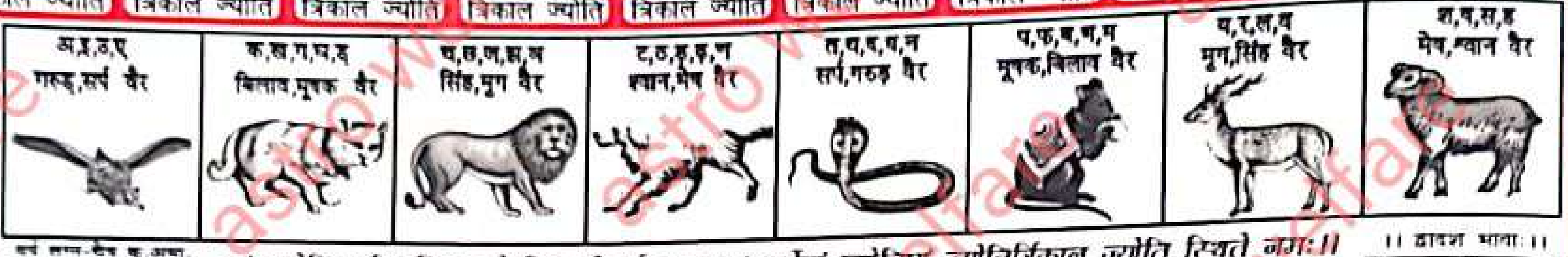

त्वं ज्योतिः श्री रविश्चन्द्रो विद्युत्सौवर्ण तारकाः। सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिर्त्रिकाल ज्योति स्थिते नमः॥

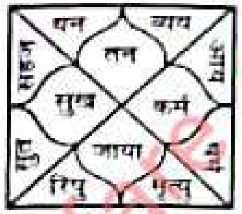

पंचांगीय क्षेत्र में अनुपम **त्रिकाल ज्योति** ब्रह्मपक्षीय पंचांग

यह पंचांग जोधपुर अक्षांश २६/१९ रेखांश ७३/४ के आधार पर बनाया गया है। इस वृहद् त्रिकाल ज्योति पंचांग में रवि उदयास्त स्टैण्डर्ड टाइम में है शेष तिथ्यादि घटीपल में दिये गये है। लघु त्रिकाल ज्योति पंचांग संपूर्ण घंटा मिनट में अलग से प्रकाशित किया गया है। विशुद्ध भारतीय गणित व विविध शास्त्रीय विषयों से समलंकृत सर्व जनहिताय सर्व जन सुखाय धर्मकृत्योपयोगी है। सरल सुलभ लघु जेबी पंचांग भी उपलब्ध है।

इस पंचांग में पुनर्मुद्रणादिक सर्वाधिकार प्रकाशक के अधिनस्थ है।

प्रकाशक व मुद्रक-पं.पृथ्वीराज द्विवेदी-त्रिकाल ज्योति पंचांग कार्यालय,बालोतरा

विक्रेता:- अचलेश्वर बुक सेलर, जालोरी गेट - जोधपुर **मूल्य120/-रुपये**

त्रिकाल ज्योति

प्रकाशक व मुद्रक- पं.पृथ्वीराज द्विवेदी,मुद्रणालय-भण्डारी ऑफसेट जोधपुर,फोटो टाईप सेटिंग-शुभ लक्ष्मी कम्प्यूटर बालोतरा,संपादक - अरुण दवे।